तने श्रौर कौन बड़ भागी । ब्रम्ह धयौ नरतन जिन लागी ॥
न्दौ नन्द महर के चरणा । सहित जसोमति मंगल करणा ॥
नकी महिमा भाग्य बड़ाई । निगमागम शिव शारद गाई ॥
न्दौ रोहिणि पद जलजाता । कृस्नाग्रज बल देवकी माता ॥
ीरति युत वृषभान गोप वर । वन्दौं चरण कमल जसिर धर ॥
त मात राधा रानी के ॥ त्रिभुवन ठाकुर ठकुरानी के ॥
ृस्न कमल हगा कौ कमला के । कलुष विभंजन सब विमला के ॥
न्दौ श्रीराधा अंबुज जिन ॥ जिनके ध्यान मिटत श्रघ सेहून ॥
ीत कृस्न सहज हि वस ताके । प्रेम सहित गुण गावत जाके ॥
न्दौं सो वृषभान दुलारी ॥ कृस्न प्राण जीवन धन प्यारी ॥

दो० राधा कृस्न पदांबुजन वन्दौं महि सिर टेक ।
ब्रज विलास सहि दोय तन प्रगट किये हैं एक ॥
सो० वन्दौं युगुल किशोर रूप रासि आनंद घन ॥
दोऊ चन्द चकोर प्रीति रीति रस बस सदा ॥

श्रपर गोप गोपी गोपाला ॥ जिनके संग विचरहि नंदलाला ॥
गाय वच्छ बालक ब्रजवासी । जिनके सखा कृस्न अविनासी ॥
श्रौर जाति जो ब्रज हि निवासी । वन्दौं सकल सुकृत की रासी ॥
मथुरा पुरी नारि नर नागर ॥ गोकुलादि जो ग्राम उजागर ॥
श्री यमुना सरि परम पुनीता । जासु दरस नहि यमपुर भीता ॥
परवत वापी कूप तड़ागा ॥ श्री वृंदावनादि वन बागा ॥
खग मृग जलचर जीव विभागा । वन्दौं सकल सहित अनुरागा ॥
वन्दौं गिरि गोवर्द्धन देवा ॥ अपर देव तिन सम नहि केवा ॥
सुरपति मेटि चाहि हरि पूजा । आन देव तिन सम को दूजा ॥
अति रमनीय रेत यमुना तट । उपवन रमित सुभग वंसीवट ॥
जहं जहं श्री हरि धेनु चराई । सुंदर स्यामल कुंवर कन्हाई ॥

कीनो बाल विनोद नंद जसोमति के अजिर

गर्ग आद लक्षण पुनि भाषे
पुनि बालनि संग खेल निलागे। बाल खेल लीला अनुरागे
विप्र पाप जैसे क्षुद्र कीनो॥ चंदा हेत बहुरि हठ
कनछेदन लीला सुखदाई॥ कहिहौ सब आनंद बधाई
पुनि ह्वै खेलत माटी खाई। जसुमति ले सांटी उठि धाई
माता आरौ जिमि सुखधार्यो।
सालिग्राम मेलि मुख लीन्हों। नंदहि पूजा मैं सुख दीन्हों॥
सन्ध्यावन हित जिमि अकुलाये
ग्वाल संग बहुरि अनुरागे॥ माखन चोरी के रस पागे॥
बहुरि माता क्रोध उपायो॥ भक्त हेत दावरी बंधायो॥
यमला अर्जुन वृक्ष छुडाये धनद सुतन के पाप नसाये।
पुनि बन गोचारन मन आन्यो। ग्वालन संग जान हठ ठान्यो

दो० बहुरि जाय बन मैं हन्यो वत्सासुर नंदनंद
ग्वाल संग आनंद सहित घर आये सुखकंद
सो० सो करि कै विस्तार प्रेम सहित सब बरनिहौ
निज मति के अनुसार ब्रजवासी प्रभु के गुणन॥

गोदोहन जैसे पुनि कीनो॥ तात मात ब्रजजन सुख दीनो
मोती बये नंद के धामे॥ सुर नर लखि चकृत भये जामे॥
बहुरि जाय बन नंदकुमारा। बका असुर का बदन बिदारा
बहुरौ बाल चरित चित दीने। भौंरा चकई खेलन लीने॥
श्री राधा सौं प्रीति दृढाई॥ कीने चरित ललित सुखदाई॥
अघा असुर मार्यो पुनि जाई। ग्वालन संग छाक बन खाई॥
भयो मोह जिमि विधि के मन मैं। बालक बच्छ हरे तिन बन मै॥
तिनको रूप आप प्रभु कीने॥ ब्रज के बासिन को सुख दीने॥

सो सब कहिहौं करि विस्तारा। अघनासन प्रभु चरित उदारा।
श्रीवृषभानलली पुनि आई। जैसे हरि सौं गाय दुहाई॥
कहिहौं सो रस कथा सुहाई। अति विचित्र जन मन सुखदाई।
वहुरौं धेनुक कौ वध कीनो॥ विष जल तें ग्वालन रख लीनो।

दो० पुनि नाथ्यौ कालो उरग जल मैं पैठि मुरारि॥
जमुना जल निर्मल कियो व्रज तें दियो निकारि।
सो० कियो दावा नल पान राखि लिये व्रज लोग सब
जिनके कृपा निधान सदा भक्त संकट हरण॥

वहुरि प्रलंब असुर व्रज आयो। खेलन मैं हरि ताहि नसायो॥
पनघट जमुना तट पुनि जाई। गोपिन सौं रस कियो कन्हाई।
चीर हरण लीला पुनि कीन्ही। कहिहौं सकल प्रेम रस भीनी।
पुनि वृंदावन मैं सुख शीला॥ ग्वालन संग करी जो लीला।
वृंदावन की महत वडाई॥ श्री मुख श्रीवल जू सौं गाई॥
ऋषि पत्निन सौं भोजन लीनो॥ भक्ति दान तिनकौं प्रभु दीनो।
पुनि श्री गोवर्द्धन गिरि राई॥ व्रज थापे सुरपतिहि मिटाई।
सुरपति कोप कियो यह जानी। वरख्यौ प्रलय काल को पानी।
तव प्रभु गिरि कर धरि व्रज राख्यौ। जै जै सब व्रजवासिन भाख्यौ।
सो सब अनुपम कथा सुहाई॥ कृष्ण कृपा तें कहिहौं गाई॥
नंदहि पकरि वरुण के दासा॥ जिमि लै गये वरुण के पासा।
ल्याये श्याम तहां तें जाई॥ व्रज मैं भई अनंद वधाई॥

दो० वहुरौं पुर वैकुंठ जो आनि पुनीत निजधाम
व्रजवासिन कौं करि कृपा दिखरायौ घनश्याम॥
सो० सो सब कथा अनूप अति विचित्र पावन परम
कहिहौं मति अनुरूप संत जनन मन भाविनी॥

पुनि जो करी श्याम सुख शीला॥ अति अद्भुत व्रज मैं रस लीला।

श्री राधा वृषभानदुलारी ॥ और सकल व्रज गाय कुमारी॥
तिनसों मिलि श्रीकुंजविहारी रस सिंगार लीला विस्तारी॥
आनंद भई सकल सुखकारी गायनरन भव सब नरनारी
जिमि गोपिन हरिसों मन लायौ प्रेम पंथ दृढ कोरि दिखरायौ
गोरस ले निकसी व्रज नारी॥ जिमि दांध दान लियवनवारी
भई प्रेम उन मन शुधारी॥ लोक लाज तन दशा बिसारी
बहुरि चरित्र कुंवर राधाके परम पवित्र हरन बाधा के॥
जैसें मिली श्याम सों जाई। बहुरौं जैसें प्रीति दृढाई॥
पुनि मके चरित्र विविधिवर किये प्रया प्रीतम स्नान सुंदर
गर्व विरह अभिलाषपरस्पर अति रहस्य लीला सुदरवर
कहिहौं सकलकथा सुखदाई भक्तिरसजन के मन भाई॥

दो॰ देखि मुकर में ग्वालिनी पुनि जैसें निजरूप
विवस भई सो गाइहौं लीला परम अनूप॥
सो॰ पुनि नैना अनुराग अरु मुरलीकी प्रियकथा
कहिहौं सहित विभाग प्रेम सुधारस सो भरी

बहुरौं शरद रैन अतिपावन श्रीवृंदावन परम सुहावन
तहां श्याम बासुरी बजाई॥ घर घर ते व्रजनारि बुलाई
कियो राज रस रसिक विहारी भई प्रेम गर्विन तह नारी॥
अन्तर्ध्यान चरित नव कीनो गर्व गोपकनिकौ हरि लीनो
कियो महा मंगल पुनि रासा बढ्यो परम आनंद हुलासा
पुनि जलकेलि करी पतिभावन कहिहौं चरित सकल अतिपावन
मान चरित लीला सुखदाई॥ कहौं बहुरि जिमि कुंवर कन्हाई
विस्तर सहित कहौं सो बरनी भरी प्रेमरस आनंद करनी॥
बहुरि जाइ हिंडोरा झूले॥ भये सकल गोपिन अनुकूले
ऋतु वसंत फागुन जब आयौ कियो फागु रंग नव सनभायौ

सो रस कथा सकल सुख दानी ॥ मानि समान सब कहौ बषानी
पुनि विद्या धर आय नसायौ ॥ अजगर तन तैं नाहिं नचायौ

दो॰ संषचूड़ मार्यौ बहुरि अधम निशाचर नीच
पुनि मार्यौ वृषभासुर हरि ब्रजवासिन बीच ॥
सो॰ वध्यौ बहुरि गोपाल केसी भौमासुर जिम
दुष्टदलन नंदलाल कहिहौं चरित पुनीत सब ॥

बहुरि आय नारद यश गायौ ॥ सुनि के स्याम बहुत सुष पायौ
तबहि कंस अक्रूर पठायौ ॥ लेन कृस्न कौ सो ब्रज आयौ ॥
भये सुनत ब्रजलोग उदासी ॥ मधुपुर चले बहुत सुख रासी
जब अक्रूर हृदय सुख पायौ ॥ तब हरि जल मैं दरस दिखायौ
भये सुखी लखि प्रभु प्रभुताई ॥ सो सब चरित कहौं सुखदाई
गये बहुरि मथुरा दधि दानी ॥ मार्यौ प्रथम रजक अभिमानी
वसन लुटाय सखन पहिराये ॥ बहुरि सुदामा के घर आये
कुवजा नें चंदन हरि लीनौं ॥ ताकौं रूप अनूपम दीनौं ॥ ॥
तोर्यौ धनुष असुर बहु मारे ॥ द्विरद जीत पुनि दंत उषारे ॥
भिरे बहुरि मल्लन सौं जाई ॥ किये युद्ध तिन सौं दोउ भाई ॥
जीति सबन कहं असुर संघारे ॥ डर्यौ कंस लखि अति बलभारे
गये नृपति पहं तब दोउ भाई ॥ दयौ मंच नें भूमि गिराई ॥

दो॰ मारि कंस पुनि केस धरि दियो यमुन जल डारि
उग्रसेन राजा कियो चमर छत्र सिर ढारि ॥
सो॰ बहुरि दियो सुख जाय वंदि काटि पितु मातु की
सुन्दर दरश दिखाय भयो तहां मंगल परम ॥

कहिहौं चरित सकल विस्तारी ॥ भौ भै भंजन मंगलकारी ॥
करि मधुपुरि के लोग सनाथा ॥ कुवजा सदन बसे ब्रजनाथा ॥
नंद विदा करि ब्रजहि पठाये ॥ विकल तब ब्रजवासिन दुख पाये ॥

हरि तजनंद आये ब्रज जबहीं । भई जसोधा व्याकुल तबहीं ॥
गोपिन सुनि हित कुविजा ही को । कियो परेखो अतिगिरधर को ॥
भई विरहवस पुनि ब्रजबाला । कहिहौं सो सब प्रेम विशाला ॥
पुनि कुलरीति जानि वसुदेऊ । हरि हलधर कों कियो जनेऊ ॥
विद्यानिधि पुनि जानन राई । विद्या पढन गये दोउ भाई ॥
पूरण काम गुरू के कीने । मरे पुत्र प्रभु तिन को दीने ॥
ज्ञान गर्व ऊधो मन जानी । पठये ब्रज हित स्याम सुखमानी ॥
सो ऊधौ गोपी संवादा । प्रेम भक्ति गोपिन की मर्यादा ॥
कही सो कथा विचित्र सुहाई । भक्ति जनन को अति सुखदाई ॥

दो॰ पुनि ऊधौ जैसे गये प्रेम भक्ति कों पाइ ।
ब्रजवासिन की व्यवस्था कही श्याम सों जाय ॥

सो॰ ब्रज तजि हरि है ब्रजराज ब्रजवासिन के प्रेमवस ।
किये सुरन के काज धारि चतुर्भुज रूप पुनि ॥

सो द्वारिका चरित्र सुहाये । प्रगट पुरानन मे सब गाये ॥
अति विचित्र हरि चरित अपारा । काहू पाय लह्यौ नहि पारा ॥
संत समान बुधजन सब गावें । गाय गाय तन पाप नसावें ॥
हरि पद पंकज प्रीति बढावें । मन चंचल कों तहां रमावें ॥
ब्रजविलास हरि को अतिपावन । रस माधुर्य चरित्र सुहावन ॥
तातें कछुक कहत हौं गाई । सब संतन के पद शिर नाई ॥
यामें कछु बुद्धि नहिं मेरी । युक्ति युक्ति सब सूरहि केरी ॥
कियौ सूर रस सिंधु उदारा । तामें प्रेम तरंग अपारा ॥
हरि के चरित रत्न विधि नाना । ब्रजविलास सो सुधा समाना ॥
पद रचना करि सूर बखान्यौ । कोमल विमल मधुर रस सान्यौ ॥
समय समय के राग सुहाये । अति विस्तार भाव मन भाये ॥
ताकौ स्वाद कह्यौ नहिं जाई । कहत सुनत श्रवनन सुखदाई ॥

दो॰ आनँद राय करौं मोहन मनहिं संग गुणन के संग
कहत विनय तामें नहीं क्रम सों कथा प्रसंग।
सो॰ मेरे मन अभिलाष प्रभु प्रेरित ऐसो भयो।
कहिहौं यह रस भाव क्रम सौं कथा प्रसंग सव।

तातन निज मन की रुचि जानी। इहि विधि करौं प्रवंध सुवानी
द्वादश चौपाई प्रति दोहा॥ तहँ पुनि एक सोरठा सोहा
कहूँ कहूँ सुभ छंद सुहाये॥ भाषा सरल न अर्थ दुराये॥
कहत सुनत समुझत मन भाई। ध्यान रूप मैं कथा सुहाई॥
धर्म धर्म नहिं नीति वषानी॥ केवल भक्ति प्रेम सुखदानी॥
जानि कृष्ण के चरित पुनीता। कहिहैं सुनिहैं संत सुप्रीता॥
वहुरि कहत दोऊ कर जोरी॥ सुनियो विनय कृपा करि मोरी
चूक परी जो मो तन होई॥॥ सुजन सुधारि लीजियो सोई
मैं नहिं कविन सुजान कहाऊं। कृष्ण विलास प्रीति कर गाऊं
सो विचारि कै अवगुन कीजे। काव्य दोष गुण मन नहिं दीजे
ऐसें सव कौं विनय सुनाई॥ कृष्ण चरित वरनों सुखदाई
कृष्ण चरित आनंद को रासा। मंगल करण हरण भव वासा

दो॰ विघन विनासन सुभ करन तापत्रय उर सूल॥
चरित ललित नँदनंद के सकल सुखन के मूल॥
सो॰ चरण कमल उर धार श्रीराधा नँदलाल के।
सुंदर रस आगार व्रजविलास अव वरणि हौं॥

संवत सुभ पुराण सत जानों। तापर और नक्षत्र न आनों॥
माघ सुमास पक्ष उजियारा॥ तिथि पंचमी सुभग शशिवारा
श्री वसंत उत्सव दिन जानी। सकल विश्व मन आनँद दानी
मन में करि आनंद हुलासा॥ व्रजविलास को करि प्रकाशा
वन्दौं प्रथम कमल पद नीके। श्रीवल्लभ उर आचरज जीके

श्रीलक्ष्मण भट्टकुँवर उदारा॥ जन उद्धारन हित अवतारा॥
माया वाद मिटाय अनेका॥ कियो प्रेम मारग दृढ एका॥
श्रीगोकुल वस सुख उपजायो॥ कृष्ण नाम को दान चलायो॥
विरहानल में सुभग शरीरा॥ वानी प्रेम सिंधु गंभीरा॥
हरि प्रापतिकी रीति वताई॥ विरह रूप करि प्रगट दिखाई॥
विरह भयो जिनको सब नेमा॥ विरह रूप करि जिनको प्रेमा॥
विरहे भरी भक्ति विस्तारी॥ ताते गोकुल गेल नियारी॥

दो॰ द्वापर तन धरि सुरन हित कृष्ण सँघारे दुष्ट,
श्रीवल्लभ वपु धरि कियो प्रेमपंथ कलि पुष्ट॥

सो॰ मन वच क्रम सो चित्त श्रीवल्लभ चरणन नयो,
एही आस वही चित्त वहि साधन वहि युक्ति फल॥

हृदे श्रीवल्लभ कुँवर मनाऊँ॥ चरणकमल तिनको सिर नाऊँ॥
श्रीगोकुल में जिनको धामा॥ विश्वविदित सुंदर सुणग्रामा॥
प्रेम भक्ति की ज्योति विराजै॥ तेज प्रताप जगत पर राजै॥
जिनके सदन रहैं ये ऐसे॥ नंद महर के सुनियत जैसे॥
नहीं कृष्ण की नित नवलीला॥ वाल विनोद भरी सुख शीला॥
तिनकी शरण जीव जे आवै॥ नेह दृढ भक्ति कृष्ण को पावै॥
देत अभय वर अति सुखदाई॥ कृष्ण नाम रस सुधा पियाई॥
भक्तिदान को परम उदारा॥ जगत विदित श्रीगोकुल द्वारा॥
नाम हंस गवल वर्ष मरारी॥ परम कृपाल दीन दुख हारी॥
श्रीमोहन जी नाम सुहाई॥ सुन्दर श्याम श्याम की नाई॥
परम विशाल कमल दल लोचन॥ दया दृष्टि उर ताप विमोचन॥
मधुर मनोहर शीतल वानी॥ प्रेम सुधा रस सों लपटानी॥

दो॰ तिन तोरथ पति भाधि दियो कलनाम मोहि दान,
दीन मानि गह्यो शरण लगि के मैं रूकान॥

सो॰ तिनके पद उर राखि ब्रजविलास वरणन करौं
मो मन को अभिलाष पूरण करि हैं जान जन ॥

वंदन हौं अब सूर सुजानै ॥ तिन्हैं सूर सम सब कोऊ जानै
प्रेम रूप वाणी परकासा ॥ प्रफुल्लित अंबुज सुनि ही तासा
कृष्ण रूप बिन और न देख्यो ॥ जगत विषै तन सम करि लेख्यो
राखे नैन सदा करि ध्याना ॥ दिव्य दृष्टि ही सुयश बखाना
लीला ब्यास जनम भरि गाई ॥ रहसि केलि सब प्रगट जनाई
वाणी भाँति अनेक बखानी ॥ कृष्ण प्रेमरस सों लपटानी ॥
वड़े कठोर मोह बस जेऊ ॥ होत प्रेमवश सुनि कै तेऊ ॥
कीनों अति उपकार जगत कौ ॥ मारग दियो चलाय भगत कौ
मोहि बड़ाई करि नहि आवै ॥ जिनको गायो सब कोऊ गावै
चरण सीस धरि तिन्है मनाऊं ॥ यह अपराध क्षमा करि पाऊं ॥
मोतें यह अति होत ढिठाई ॥ करत विष्णु पद की चौपाई ॥
सो मम दोषन उर में धरिये ॥ सुफल मनोरथ मेरो करिये ॥

दो॰ अब संतन की मंडली वंदत हौं सिर नाय ॥
विना कृपा जिनकी भये हरि यश गाय न जाय ॥

सो॰ करिहैं मोहि सहाय गुण गाहक पर हित करन
तिनको सहज सुभाय संतन संत कृपाल चित ॥

संत मंडली कों सिर नाऊं ॥ जिनकी कृपा विमल मति पाऊं
जिनकी कृपा विघ्न सब नासैं ॥ जिनकी कृपा कृष्ण गुण भासैं
जिनकी प्रेम प्रीति फल पाई ॥ जिनकी कृपा कुमति मिटि जाई
जिनकी कृपा होइ गुण नाना ॥ जिनकी कृपा सर्व कल्याना ॥
जिनकी कृपा मोह तम नासै ॥ जिनकी कृपा ज्ञान परकासै ॥
जिनकी कृपा सकल सुख मूला ॥ होहु सुसंत मोहि अनुकूला ॥
जै जै जै श्री कुंज बिहारी ॥ नंद नंदन वृषभान दुलारी ॥

मंगल मूरति आनंदकारी । लीला ललित भक्त भयहारी ।
रूप निधान प्रेम की रासी ॥ अखिल नाम ब्रज कुञ्ज विलासी ।
अखिल नाम गुण सुख के धामा । पूरणकाम स्याम अरु स्यामा ।
युगल किशोर ध्यान उर धीमें । सुभग कमल पद स्वछन्न करीं ।
ब्रजविलास रस परम हुलासा । गावत हैं ब्रजवासी दासा ॥

अथ कथाप्रसंगवर्णनम् ॥

दो॰ तन्नमामि पद परम गुरु पुरुषोत्तम जगदीस ॥
कृष्ण कमल लोचन सुखद सकल देव मणि सीस ॥
सो॰ वन्दो नंद किशोर वृंदा वन वासी सदा ॥
श्री राधा चित चोर आनद घन मय मन हरण ॥

कहौं कथा सुन्दर सुख देनी। अघ हरणी वैकुंठ नसैनी ॥
कृष्ण चरण पंकज रति देनी। जन पावन करता जिमि वेनी
श्री कालिंद तनया तट पावन। वसत मधुपुरी परम सुहावन
जाकी महिमा सुर मुनि गावैं। तीनि लोक पर वेद वतावैं ॥
दरसन ते नर पावन होई। कृष्ण कृपा विन सुलभ न सोई
उग्रसेन तहां वसे नरेसा ॥ नीति निपुन सह सह धर्म सुवेशा
ताकौ सुवन कंस अति पापी। असुर बुद्धि भव निम्व संतापी॥
कियौ तात गहि वंदी शाला। आपन भयो कंस भूपाला ॥
लाल अनुज तहां देवक नामा। सुता तासु देवकी ललामा ॥
दई कंस वसुदेवहि ताही। लोक वेद की रीति विवाही
दायज दियौ अनेक विधाना। हय गज रथ पट भूषण नाना ॥
दासी दास वहुत संग दीने। दान मान पर पूरण कीने ॥ ॥

दो॰ तव चढाय रथ देवकी आप भयौ रथ मान ॥
पहुंचावन अनिह्नन सों चल्यौ सहित अभिमान
सो॰ तेहि छिन गिरा विशाल होत भई आकाश तें
होय कंस कौ काल देवकी कौ सुत आठवौं ॥

कंस असुर सुनि वचन अकासा। भयो चकित मन मिट्यो हुलासा
शत्रु समान देवकी मानी ॥ रथ तें उतरि पर्यो अभिमानी॥
खड्ग निकास हाथ में लीन्हो। यह विचार अपने मन कीन्हो
अवहीं याहि मारि दुख मेटौं। पुनि कलेश काहे कौ भेटौं ॥
केकपकारि देवै गति तानी। नहिं कछु कान न चाहन पीकीनी

तब वसुदेव दीन ह्वै कहही । नृप संबोधन तौ भूप यश लहही
कहौं यह पुनि सखा निहारी । राजन कीजे काज विचारी ॥
सुनि वसुदेव भई नभ बानी । तुमहू सुनी कछु नाहि छिपानी
ताते अब सोच किन कारिये ॥ साचे कहे तो दुख भारिये ॥
वृक्ष फलै जो विषफल भारो । नाहि अनेपु हि वेही त्यागो ॥
जो न हिं हतौ आज यह बाला । मिटै न डरत शोच त्रिकाला ॥
कन्या जो स्याही तोहि दैहौं । याहि मारि उर शोच न सैहौं ॥

दो० मुनि जन गुरु जन सगजन तिन्ह कि कह्यौ निहि काल
वृथा होति है सत्य फल यह नृ उक्ति महिपाल
सो० ये हैं तुम्हरे मान आनकदुंदुभी देवकी ॥
इन्हें न हानिये जान वेद विरोधन कीजिये ॥

पुनि वसुदेव कह्यौ कर जोरी । राजन सुनिय विनय कछु मोरी
अया देवकी कौ जिन मारौ ॥ याकौ सुत है शत्रु तुम्हारौ ॥
सब सुत याके हम यै दीजें । जीवदान याकौ प्रभु दीजे ॥
यह वाचा हम तुमते भाखै ॥ चंद सूर्य साखी द्वै राखै ॥
भली बात यह सबहिन जानी । भावी विवश कंसहू मानी ॥
हरि कीनो चाहै सोइ होई ॥ ताहि मिटावन हारन कोई
तिन्हें सहित नृप घर फिरि आये । करि अगोट दोऊ रखवाये ॥
प्रथम पुत्र जब देवकी जायौ ॥ लै वसुदेव कंस पर आयौ
बालक देखि कंस हँसि दीनो । इनतौ कछु अपराध न कीन्हौ
अठवौं गर्भ शत्रु है मेरौ ॥ सो दीजो तुम मोहि सबेरौ ॥
यह कहि अपनो पाप कमायौ । तब वसुदेव हर्ष कौ पायौ ॥
ऐसे बालक फेरि सुदीनो ॥ वसुदेव गवन भवन को कीनो

दो० तब तहाँ पै नारद ऋषि पहँ लिये हस्त तल बीन
गुण गावत गोविंद के आये परम प्रवीन ॥

सो॰ उठ्यौ देखि कै कंस सीस नाय पद वंदि करि
बैठारे पर संस शुभ आसन ऋषि नारदहि ॥

समाचार जो कछु ह्वै आये ॥ सो सब ऋषि कों कंस सुनाये
सुनि नृप वचन विहँसि ऋषि बोले तुम कत रहत शत्रु सों भोले ॥
जाके भय तुम अति भय मान्यौ आठवौं कौन सु तुम कछु जान्यौ
जो वह प्रथम माहि आयो होई । देव चरित्र जान कछु कोई ॥
आठ लकीर खैंचि दिखराई ॥ गिनती मैं सब आठौं आई ॥
यह समुझाय गये ऋषि ज्ञानी कंस असुर उर अति भय मानी
तिहि क्षण बालक फेरि मँगायौ लै वसुदेव तुरत ही आयौ ॥
लियौ मूढ़ गहि कर मैं ताही फटकट भयौ शिला पर वाही
याही विधि आठ बालक मारे मात पिता अति भये दुखारे ॥
कहत अहो श्रीपति असुरारी तुम बिन कासौं करहुँ पुकारी
यह संताप मिटै कब भारी ॥ वेगि लेहु प्रभु सुरति हमारी
केहि विधि नाथ राखिये प्राना करत कंस निर्वंस निदाना ॥

दो॰ विपति विनासन दुखदमन जनरंजन सुरराय ॥
अब हम कौं कोऊ नहीं तुम बिन और सहाय ॥
सो॰ विनती प्रभुहि सुनाय सत मन दंपति दुखित अति
होत न प्रगट जनाय कंस असुर के त्रास तें ॥

भई भूमि जब अधिक दुखारी बढ्यो पाप असुरन कौं भारी ॥
सहि न सकी तब गौ तन धारी शिव विरंचि पह जाय पुकारी
सकल सुरन मिलि कियो विचारा हम तैं नाहि उतरै भुव भारा ॥
विनय करीय चलि श्रीपति पाहीं कृपा करैं तब सब दुख जाहीं
भूमि सहित सुर सकल सिधारे क्षीरसिंधु तट जाय पुकारे ॥
जहँ श्रीपति श्री सहित निवासी पुरुषोत्तम अविगत अविनाशी
येनु अयकरि विनय सुनाई ॥ जै जै जै त्रिभुवन के साईं ॥

जै सुखकंद संत हितकारी॥ जै जगवंद भूमि भै हारी॥
जै जै असुर समूह निकंदन जै जै भक्तन के उर चंदन॥
जै जै जै प्रणतारत मोचन। दैत्य दलन सुर शोच विमोचन
जै जै जै प्रभु अंतरजामी सुनिय विनय सचराचर स्वामी
करिये प्रभु सो बेग उपाई॥ हरिये नाथ भूमि गरुआई॥

दो॰ धरिय मनुज तन दनुज हति करिये धरणि उद्धार
परसत पद पंकज मिटहिं सकल भूमि अघ भार॥
सो॰ पाहि पाहि भगवन शरणागत वत्सल हरे॥
कृपा करहु आनंत दीन दुखित जन जानि हरि

दीन वचन जब धेनु पुकारी भई गिरा नभ मंगल कारी॥
जाहु सकल सुर घर भय त्यागी धरिहौं नर तनु तुम हित लागी॥
प्रथम जन्म देवै वसुदेवा॥ मो सन माँगि लियो करि सेवा।
तुम सम पुत्र हमारे होई॥ मैं तिन्ह कौं वर दीन्हो सोई॥
तेई नंद जसोदा जानो॥ ॥ दूध पियावन उन हित मानो
गर्भ देवकी के अवतरिहौ बाल चरित गोकुल में करिहौ
तुमहू गोप भेष धरि होऊ॥ मम संग सुख पावो सब कोऊ।
यह कहि सुरनि बिदा हरि कीन्हो आयसु पुनि शक्तिहि दीन्हौं
सप्तम गर्भ देवकी केरा॥ तहाँ शेष मम अंस वसेरा॥
सो आकर्षण करि क्षणमाहीं राखौ गर्भ रोहिनी पाहीं॥
शक्ति जब हि हरि आयसु पायो तत क्षण ता हित हीं पहुँचायो
हरि इच्छा विन कछु जानन कोई जो कछु करन चहें सो होई

दो॰ तब कृपाल जन के सुखद पचि माँ सित समलोकन
निज आगम दैयकि उदर दियो जनाय भगवंत॥
सो॰ तन दुति वढी अपार परम प्रकाशित भवन सब
आनन मुकुर निहारि अति प्रसन्न मन देवकी॥

निज मुख मुकर देवकी देख्यो। सरद चंद पूरण सम लेख्यो॥
मिटौ तिमिर भ्रम अति सुख पायो। जान्यो कंस काल हरि आयो॥
प्रभु आगमन जान कर देवा। आये सकल जनावन सेवा॥
नभ ते गर्भ स्तुति सब करहीं। जै जै जै जै जै उच्चरहीं॥
जै ब्रह्मा शिव सेव्य सदाई। जै वेदान्त वेद सुर साई॥
जै तीरथ पद भवनिधि बोहित। प्रणत पाल जै दीनन के हित॥
जै संकल्प सत्य गुण धामा॥ जै जन वांछित पूरण कामा॥
जै गो द्विज हित नर तनु धारी। जै संतन पति गति अपहारी॥
जै कृपाल आनंद वरूथा॥ वंदित चरण सकल सुर यूथा॥
जै पुरुषार्थ अमित अनूपा। महा पुरुष सचराचर भूपा॥
जै अहीश नित नव गुण गावैं। तदपि नाथ गुण अंत न पावैं॥
जो मुनि जन मन ध्यान न आवै। भक्त अधीन वेद यश गावैं॥

अलख अरूप अनीह अज प्रभु अद्वैत अनादि।
गर्भ वास सो देवकी कौतुक निधि सर्वादि॥
सो किनहु न पायो भेव शेष महेश गणेश विधि
नमो नमो नहिं देव पार विचित्र चरित्र प्रभु॥

कर विनती सुर सदन सिधारे॥ परमानंद मगन मन भारे॥
तव देवै पति पास बखाने॥ कोमल वचन प्रेम सों साने॥
हो पिय सो उपाय कछु कीजै। अब कै यह बालक रख लीजै॥
बुधि बल छल पीकीजै सोई। जामैं कुल को नास न होई॥
मैं मन वच अब कै यह जाना। है मम उदर देव भगवाना॥
कहा करौं कछु यत्न न पाऊं॥ कौन भांति यह गर्भ दुराऊं॥
सत्य धर्म वरु जाय तो जाऊं। पति यह सुत हित करिय उपाऊ॥
कंस धर्म सब हारि हित भाखैं॥ सो हरि तजि कहु धर्महिं राखैं॥
सुनहु प्रिया अस को हितकारी। जो यह बालक लेहि उबारी॥

सिर ऊपर बैठे रखवारे ॥ पायन परे निगड़ अति भारे ॥
सुनहु असुर उग्र वंस विनासन । केहि विधि सेउ परे निय सासन ॥
ऐसो को समरथ जग माहीं । जो यह औसर होइ सहाई ॥

दो॰ घट बालक वध सुनि करी दंपति दुखित विचार ।
अति व्याकुल भय कंस के द्रगन चली वहि धार ॥

सो॰ करुणासिंधु दयाल तात मात अति दीप तलोष ।
प्रगट भये तेहि काल दुख मोचन लोचन सुखद ॥

योग शक्ति हरि आयसु पाई । प्रगटी नंद भवन सो जाई ॥
ताके प्रगट नहो नर नारी ॥ भये नींद वस देह विसारी ॥
भादौं कारी निशि अति पावन ॥ आठैं बुध रोहिणी सुहावन ॥
अखिल लोक पति निज जन सुखदायक । आवै जन्म लियौ सुर नायक ॥
सीस मुकट कल कुंडल कानन । सरद मयंक सरस सुभ आनन ॥
चारु चरण पंकज दल लोचन । चितवन सुखद त्राय त्रय मोचन ॥
कुटिल अलक भ्रू मेचक नाई ॥ जन मन हरन परम सुखदाई ॥
पीत वसन तन स्यामल माला ॥ उर श्रीवत्स चारु मणि माला ॥
भुजा विशाल मनोहर चारी ॥ शंख चक्र गद अंबुज धारी ॥
अंग अंग भूषण सब नीके ॥ परम विचित्र भावने जी के ॥
चरण सरोज उदित नख जोती । कमल दलन राखे जनु मोती ॥
परम प्रताप सुभग शिशु भेषा ॥ अद्भुत रूप देवकी देखा ॥

दो॰ देखि असित छवि चकित मति पति हि लियो बुलाय ।
दंपति परमानंद मन परे हर्ष सुत पाय ॥

सो॰ भरे प्रेम जल नैन अति सनेह व्याकुल शिथल ।
बोले गद गद बैन जोर पाणि विनती करत ॥

प्रभु केहि विधि स्तुव गुण निधाना । तुव माया वस तुम्हहि न जानों ॥
सहसानन जाके गुण गावैं । नेति नेति जेहि निगम बतावैं ॥

जाका भ्रूविलास अनआसा । अखिल लोक उपजे अरु नासा
जो स्वरूप मुनि ध्यान लगावैं । कृपा करहु नव दरसन पावैं ॥
जो सबतें परब्रज अविनासी । सो किमि कहिय उदर समवासी
परम पवित्र चरित्र तुम्हारे ॥ मोहत हैं प्रभु मनहि हमारी
तात मात के वचन सुहाये ॥ सुने प्रेम रस प्रभु मन भाय
बोले तात मात सुख दानी ॥ मधुर मनोहर अमृत बानी ॥
सुनहु मात मैं तुमहिं सुनाऊं । प्रथम जन्म की कथा बताऊं
तुम जाच्यो मोहि करि तप भारे । तुम समान सुत होय हमारे ॥
जन हित बिरद मोर श्रुति गायो । सो कैसे करि जात लजायो ॥
तातें मैं वर तुमकौं दीनौं ॥ सो हम आय सत्य सब कीनौं

दो॰ शिव ब्रह्मा सनकादि मुनि ध्यान सकहि नहि पाय
सो मैं तुम्हरे प्रेम वस दियो दरस निज आय ॥ ॥
सो॰ कौतुकनिधि सुरराय करन चरित सुनि मन हरण
महा मोह उरलाय दियो बहुरि पितु मात मन ॥

करहु तात अब वेग उपाई ॥ हमहिं कंस तें लेहु बचाई ॥
गोकुल हमहिं देहु पहुंचाई । जहां जसोदा कन्या जाई ॥ ॥
मोहि राखि जसुदा के पासा । कन्या ले आवहु अब यासा ॥
सो कन्या ले कंसहि दीजे ॥ तात हमारो नाम न लीजे ॥
ऐसेहि मात पितहि समुझाई । भये तुरत शिशु यदुकुलराई
देखि चरित सुनि प्रभु की बाता । विस्मय हर्ष विवश पितु माता
सुत उठाय उर सों लपटायो ॥ प्रेम विवश लोचन जल छायो
कहति देवकी पति सुनि लीजे । गवन वेग गोकुल को कीजे ॥
जब लगि सुन हिन वह हत्यारो । मन वच क्रम नृप कौन पत्यारो
बने नाथ उर धीरज धारे ॥ नाहिन इतने भाग्य हमारे ॥
जाय यह सुख नैनन पुर पीजे । ऐसे सुत को यश सुनि लीजे ॥

दरसनसुखितदुखितमहतारी सोचतिविकलकसभयभारी

दो॰ अनिसेंधियारीअधनिशिभट घेरे चहुंओर
कौनभांतिजैहे दई पाइनिगड़ अतिघोर॥
सो॰ वाषतअतिजलजोर घनमाजवकम्कलपपव
वीचयमुनअतिजोर पारस्फवर्नाविधि पाइहैं॥

कहाकरौंअबकाहिपुकारौ कौनभांति धीरज उर धारौ
कंस सरोस नवहि किनमारो विनतीकर पतिअयाउबारे
ऐसोसुतविछुरत महतारी कौनभांतिजीवै दुखभारी॥
कृपासुसुद्र भक्तसुखदानी सुननमातकीआरत बानी॥
कृपाकरीसबभ्रम भय टारे गिरेनिगड़ पायन ते भारे॥
तबबसुदेव हरषितेहि ठाहीं लक्षधेनु मनसी मन माहीं॥
पुत्रगोदलै तुरत सिधाये॥ द्वारक पाट खुले सब पाये॥
रखवारे सब सोवत देखे॥ सपदिचलेउर हरषविशेषे
तबहीं मघवारोष निवारी मंद समीर भईभ्रम हारी॥
हरिमुखचंद प्रभातमनासे॥ दामिनिदमकिनपंथपरकासै
प्रभुपर शेष छाहफन छाई॥ आगेसिंह डहाकत जाई॥
सोवसुदेवनजानत भेवा॥ पहुंचेजाययमुनतट देवा॥

दो॰ सरिसदेषिगभीर अतिमनमे सोचविचारि
गोकुल के सन्मुख धस्यौ प्रभुप्रताप उर धारि॥
सो॰ यमुनापतिपहिचानि मनआनंदहुलसौंस्यो
परसन हित पद पानि अतिप्रवाह ऊच्यौ उठ्यौ

गुलफजघकटिलौंजल आयौ तबहीं कोकछुउर्द्ध उठायौ
ज्यौंज्यौंसुत वसुदेव उठावैं त्यौंत्यौं जलऊपर चढ़ि आवैं
नाकपरियतनीर जब आयौ तबहरि पद नभकौं लटकायौ
परसिनीरहंकारहिं दीनो॥ तुरतहिभयो गुलफतें झीनो॥

भयो पार लै के घन स्यामहिं। गये वसुदेव नंद के धामहिं
तहां सकल जन सोवत पाये। सुत लै जसुमति पास सिधाये
कन्यां तहां पुनीत निहारी॥ लई उठाइ राषि दै त्यारी॥
फिरि फिरि सुत कौ वदन निहारी। चले तुरत भै कंस विचारी॥
जो संपति निगमा गम गाई॥ योगी जनन जानि नहिं पाई
सनकादिक सव सविधि सयाना। शंकर जासु धरत हैं ध्याना
सारद नारदादि जस गावैं॥ सहस वदन हू पार न पावैं॥
अहो विलोकहु भाग्य वड़ाई सोई सोवत जसुमति पाई॥

जहां देवकी प्रेम वस अति व्याकुल अकुलात
वालक अरु वसुदेव कहिं पठय वहुत पछतात
वैठत उठत अधीर व्याकुल सौरी सेज पर॥
मोचत नैनन नीर वोल सकत नहिं कंस भय

मन मन सुर मनाय सन मानै मत यह भेद दई कोउ जानै
रखवार कहुं जानन जाहीं॥ मत कोउ दुष्ट मिलै मग माहीं
यातें अधिक सोच मोहि भारी क्यों दुरि है शशि मुख उजियारी
मग महं यमुना अति गंभीरा कोहि विधि पहुंचैं गेउ हू तीरा
गोकुल पहुंचे धौं मग माहीं भई वेर पति आये नाहीं॥
एहि विधि सोच विवस अकुलाई इक छन कल्प समान विहाई
पहुंचे वसुदेव तेहि छन जाई पूछन उठी पुत्र कुशलाई॥
कोहि विधि पुत्र राषि पति आये समाचार वसुदेव सुनाये॥
कन्या दई देवकी हिं जवहीं। द्वारक पाद गये लग तवहीं।
वेरी हुइ गइ पग तन काला। कन्या रोय उठी तेहि काला॥
चहुं दिस जाग परे रखवारे॥ तुरत कंस पहिं जाय पुकारे॥
सुनतहि तंव भनि असुर आयो लीने खड्ग तहां चलि आयो
कन्या लै तव देवकी [illegible]॥

दीन वचन आधीन ह्वै कंसहि दियो सुनाय ॥

सो॰ अहो भ्रात यह दान तुम हम कौं अब दीजिये
है कन्या जिय जान यातें भय तुम कौं नही ॥ ॥

सुनत कंस भगनी की बानी ॥ मृत्यु त्रास तें सठ रिस मानी
यामें कछू होइ छल कोई ॥ को जाने विधना गति गोई ॥
यह विचार कन्या गहि लीनी पटकन की मसा नें हि कीनी
कर तें छूट गई आकासा । दिव्य रूप तहें कियो प्रकासा
बोलत भई गगन तें बानी अरे मंद मति अधम अज्ञानी
मम हत्या तें कछु बस नाहीं ॥ तेरो रिपु प्रगट्यो ब्रज माहीं
सर्पग्रसित जिमि दादुर होई साखी खान चहत सठ सोई
तैसे तू चहे मारन मोही ॥ आयो काल निकट सठ तोही
ऐसें कहि कर स्वर्ग सिधारी कंसहि सोच भयो सुनि भारी
पर्यो देवकी चरणन माहीं मैं मारे तुव पुत्र वृथा ही ॥
छमा करो मेरी अपराधा ॥ है विधि की गति अलख अगाधा
बसुदेवहु सन छमा कराई ॥ निगड़ दिये पग ते कटवाई

भयो सोच व्याकुल सदन परे ते सेज पर जाहि ।
जागत ही बीती निसा नींद परी नहिं ताहि ॥

सो॰ हरि के चरित अनूप असुर विमोहन सुख द
तरन परत भव कूप से जे प्रेम गावहि सुनहि

जसुदा जब सोवन तें जागी सुत मुख देखन ही अनुरागी
पुलक अंग उर आनंद भारी देखि रही मुखससि उजियारी
गद्गद कंठ न कछु कहि आयो हरषवंत ह्वै नंद बुलायो
आय हु अब पुत्र मुख देखो बड़ो भाग्य अपनो करि लेखो
भये प्रसन्न आज सब देवा सुफल भई सबहिन की सेवा
फूल नंद पिय निय की बानी प्रेम मगन तन दसा भुलानी

हर्षति उठि अति आतुर आयौ। जसुमति सुत कौ वदन दिखायौ।
देखत सुख उर सुख भयौ जैसौ। कहि न सकहिं श्रुति सादर तैसो।
कहा कहौं तिहि छण की शोभा। मनहुं महा छवि कंतरू के गोभा।
आनंद मगन नंद मन माहीं। जानत नाहिं हम कौ कोहि ठाहीं।
रोय उठे तब नंद के लाला॥ जागि परे सब ग्वालनि ग्वाला।
जित तित ते हर्षित उठ आये। मनहुं रंक धन लूटन आये॥

दो०—देहिं वधाई नंद कौ परे जसोधा पाय॥ ॥
कहैं पियारे लाल कौं नैक हमहिं दिखराय॥
सो०—अति हर्षित नंदराय कह्यौ वजावन सोहिलो।
नारि उठीं सब गाय लाग्यौ वजन वधावरो॥

छंदः सुर सिद्ध मुनिंदा परम अनंदा सुनि गोकुल हरि आये।
दुंदभी वजावत मंगल गावत तियन सहित उठि धाये।
विद्याधर किन्नर सुघर कंठ वर करत गाव सचुपाये।
गरजन तिहिं काला मधुर रसाला घन गर्जित जनाये।
वाजत करताला वरखत माला सुरतरू सुमन सुहाये॥
सब करैं कलोलें हर्षित डोलें जै जै जै सुख पाये॥
नभ महं धुनि होई सुन सब कोई भये सबन मन भाये।
संतन हितकारी असुर संघारी आवत क्षिति सुष छाये।
शिव ब्रह्मादिक मुनि सनकादिक परम प्रफुल्लित गाता।
गुणगण सब गावैं प्रभुहिं सुनावैं आनंद उर न समाता।
भये मन चीते सब भय बीते प्रगटे दनुज निपाता॥
अति मन महं हर्षे पुनि पुनि वर्षे सुमन जु सुरतरू जाता।
सुर तिय मन माहीं निरषि सिहाहीं जसुमति के बड़े भागा।
हम सम हम नाहीं पुन्यन माहीं कहैं सहित अनुरागा।
योगी जेहि ध्यावैं ध्यान न आवैं करि करि योगादि यागा।

छं०जो वेदन जाने नेति वषाने सो सुत ह्वै रस भाग
दो०परे परम आनंद सुर उपजावत अनुराग॥
वार वार वरणन करे नंद जसोमति भाग॥
सो०अहे सदन सुर भूलि गोकुल कौ उत्सव निरषे
जके मंगल मूल ब्रजवासी हर्षित सबैं॥

ब्रजवासिन सबहिन सुन पायो॥	नंद महर घर ढोटा जायौ॥
परम्न नंद लोग सब धाये॥	नंदराय नव विप्र बुलाये॥
कान्हि लग्नि ग्रह योग सिधायो	अति विचित्र सब दुजन सुनायो
करत वेद धुनि अति सुख पाई	देहिं नंद कौं सकल वधाई॥
तव स्नान महर उठि कीनो	भाल तिलक चंदन ले दीनो॥
जाति कर्म करि पितर पुजाये	भूषण वसन द्विजन पहिराये
गैया वत्स सवत्स सुहाई॥	वाढ़ी दूधन वीन मंगाई॥
सव विधि सकल फल कृत कीनी	करि संकल्प द्विजन कौं दीनी
सुदिन विप्र सव देय असीसा	चिरजीवहु सुत कोटि वरीसा
हंसि हंसि वहुरि महर नंदराई	हितु कुटुंव सवनि कटकुलाई
वहु सुगंध साथ तिलक वनाये	भूषण वसन विविधि पहिराये
हुते जो कुल मे वृद्ध जिठेरे॥	तिन सो पाय परे सव केरे॥

दो०वंदी मागध सूतगण भरे भुवन वहु भाय॥
लै लै नाम बुलाय सव परतोषे नंदराय॥
सो०मन वांछित सव लेहिं जो जाके भावे मनहिं
नंद भरे रस देहिं किये अजाची जाचकनि

सुनि सुनि धाई व्रज की नारी॥	लेकर कमलन कंचन थारी
मंगल साज साजि सव लीने॥	सहज सिंगार सुभग तन कीने
चारु चपल नयन कजरारे॥	भाल तिलक कचों सिंथ लसवारे
मांगि सेंदुर ऐना आनन॥	गोरी रंग किये कछु आनन॥

अंगिया अंग कसे छवि छाजै । विविध भांति उर हार बिराजै
अति आनंद मगन मन फूली । अंचल उड़त सम्हारन भूली ॥
निज निज मेल मिली सब आवैं । विरहति नंद धाम कौं आवैं
इक भीतर इक आंगन माहीं । इक द्वारे मग पावत नाहीं ॥
सब कौं जसुमति निकट बुलावैं । मुख उघार सुत कौं दिखरावैं
देहिं असीस परो शिशु पायन । जीवहु जब लगि नभ तारायन
पूरण काम भयौ व्रज सारौ ॥ धन्य जसोदा भाग्य तिहारौ ॥
धन सो कोख जहां सुत राख्यौ । पुन्य तिहारौ जात न भाख्यौ ॥

दो॰ धन्य दिवस धन रात यह धन्य लग्न तिथि वार
जहं जायौ ऐसौ सुवन थिर थाप्यौ परिवार ॥

सो॰ पुनि पुनि सीस नवाय देहिं असीस मनाय सुर
जियहु सुवन नंदराय रूप अचल कुल की धुरी

परमानंद नंद अनुरागे ॥ चित्र विचित्र वस्त्र बहु मांगे
सारी सुरंग कसब के लहंगे । अति चटकीली मोल न मंहगे
सिगरी वधू बोलि पहिराई । जो जैसी जाके मन भाई ॥
देहिं असीस मुदित व्रजनारी । फूली कमल कली सी न्यारी
एक हंसि निज निज गृह जाहीं । इक हुलसी आवैं गृह माहीं
एक कहै एकन सौं धाई ॥ हौं यह बात भली सुनि आई
महरि जसोदा ढोटा जायौ ॥ नंद द्वार सखि बजत बधायौ
चलहु वेगि सखि देखिये सोई । विधिना चाह गही है जोई ॥
इक नाचैं इक ढोल बजावैं ॥ एक नंद को गारी गावैं ॥
एक साथिये द्वार बनावैं ॥ एक वदन कौं वारि बधावैं ॥
ध्वज पताक तोरण छवि छाई । घर घर होत अनंद बधाई ॥
पुनि पुनि सुमन देव बरषावैं । फूलन सौं सब गोकुल छावैं ॥

दो॰ ध्वज पताक तोरण कलस बंदनवार दुवार

गोपन के घर घर बंधी घर घर मंगलचार ॥ ॥

सो॰ नंदसदन सविचार वरनिसके सो कौनकवि
लियो जहां अवतार छविसागर त्रिभुवन धनी

ग्वालवृंद सब सुनिउठि धाये । बालवृंद सब निकट बुलाये ॥
खचितवन धातु चित्र सब कीने । गुंजाभूषित भूषण लीने ॥
मयूरपिच्छ भूषण तन माहीं । नयपिच्छहिरन गुंजमुहाहीं
एक कहैं एकन समुझाई ॥ आजु कन्हाई को ऊनहिं जाई ॥
गैयोलेयन सहस्त्र वनावो ॥ चित्र विचित्र वेगि लै ल्यावो
पूत नंद के घर है जायौ ॥ भयो सबन को मन को भायो
करतहौ गहर करत विन काजा । वेग चलौ मंघ सब्हिनै समाजा
दधिमाखन के माट भराये ॥ कछुइक हरदी रंग मिलाये ॥
लिये सीस पर कौतिक गावैं ॥ कौतिक ताल मृदंग बजावै ॥
मिलमिल निजनिज यूथनमाहीं । नंद सदन निरखत सबआहीं
दौरिनंद अतिआनंद पावै ॥ हँसि हँसि सबकौनिकट बुलावैं
छुइछुइ चरणा भेटधर आगे ॥ दैहिं बधाई अति अनुरागे ॥

दो॰ नाचत गावत मगन भइनंदसदन आनंभीर
जनु आये उत्साहसब धरि धरि गोप शरीर ॥

सो॰ देह धरे आनंद मनहुं नंद तिनमधि लसे ॥
जनमे आनंद कंद कहन सकहिं सुखसहसमुख

इकनाचत इक गावत ठाढे ॥ इककूदत अति आनंद बाढे
छिड़कत एक दूधदधि डोलैं । एक कुलाहल करत कलोलैं ॥
मचौनंद घर दधिकौ कांदौ ॥ चाखत दूध दही जनु मादौ ॥
एक धाय एकन पै जाहीं ॥ एकै मिलन डार गल बाहीं ॥
एक एक के पायन परहीं ॥ इकदधि दूध अक्षत सिर धरहीं
अतिउछाह सबके मन माहीं । रक्षा पवगवन कछु नाहीं ॥

गोकुलमध्यदेखियेजितहीं । करतगोपकौतूहलतितहीं
एक लूट नंद कौं लेहीं ॥ एकै एकन कौं धन देहीं ॥
एकन हित करि नंद वुलावें । पटभूषणतिनकौं पहिरावें
एककहैं हमतवकछुलेहैं । जवलालनसुखदेखनपैहैं
एकजोएकन तें कछुलेहीं ॥ तेनिसंक एकन कौं देहीं ॥
अतिआनंदमगनपसुपालक । नाचततरुणवृद्धअरुवालक

दो० गोकुलकौआनंदसवकापैवरनौजाय ॥
जहांपरमआनंदमें लियोजनम हरिआय ॥
सो० नितनवहोयविलासहरिमकुंदकेजनमतें ॥
व्रजसंपदासुपाससुरसुनहोकौतुक निरखि ॥

जवतेंजन्मलियो हरिआई ॥ सुखसंपतिव्रजघर घर छाई
येसवउदासस पर वीना ॥ सवसुन्दरसवरोगविहीना ॥
मुदितजहांतहं सवव्रजवासी । सवजसुमतिसुत प्रेम उपासी
संगसदनवरन्यौकिमिजाहीं । सतसुरसलखिविभ्रमजाहीं
अतिप्रकास मंदिरकेमाहीं । केलिरही हरि छविकी छाहीं
ग्यालगायगोपन की भीरा ॥ कहूंदधिकहूंमाखनहूं छीरा
भूमिवागवन गिरिरमनीया । खगमृगसरसवाककमनीया
विटपवेलिसवसहितफूलफल । दिशाप्रकाशितनिरमलजलथल
सुरभी सुरसुरभी सम तूला ॥ भयोसकलव्रज मंगल मूला
विभव भेद यह कोउ न जानैं । आदिहिवें हम ऐसें मानैं ॥
कृस जन्मआनंद वधाई ॥ सुरनरनागतिहूं पुर गाई ॥
व्रजवासिनमनअधिकउछाहू ॥ कोहनहिंसकहिसहसमुखकाहू

दो० व्रजकोसुखकोकहिसकै सुखमावधिअपार ॥
सुखनिधानभगवानजहंलियो मनुज अवतार ॥
प्रगटे गोकुल चंद संतकुमुद वन मोद कर ॥ ॥

तस कुल असुर निकंद व्रजजन चारु चकोर हित

नितनव भीर नंद के द्वारे ॥ जाचकजन सब होहि सुखारे
गाँव गाँव ते सुनि सुनि आवैं मन भायौ सब कोऊ पावै ॥
पाँच दिवस इहि विधि सुख पायौ छठयौ दिवस छठी कौ आयौ
मंदिर सकल सुवास लिपायौ जहाँ तहाँ चित्रित करवायौ
चौकी चारु सुगंधि सिचाई द्वारे वंदन वार सुहाई ॥
जाति कुटुंब मित्र हितु जेते नंदराय न्यौते सब तेते ॥
ठौर ठौर बहु व्यंजन होई ॥ द्वारन वंदन वार सु होई ॥
गोपवधू सब बनि बनि आवैं लालन कौ पहिरावन ल्यावैं
जरकसि कुरता भूषण टोपी रत्न समेत प्रेम रँग ओपी ॥
रोरी अक्षत पान मिठाई ॥ चौकी धरि कंचन थारनि ल्याई
गावहिं मंगल कोकिल बानी नंद भवन आवहिं हरषानी
करि आदर जसुदा बैठावैं ॥ देखि स्याम घन सब सुख पावैं

दो० वृषभानादिक गोप वर व्रजवासी समुदाम
आये सब नंदराय गृह भूषण वसन बनाय ॥
सो० अति आदर कर नंद सुभ आसन दीने सघन
सबके मन आनंद बजत दुंदुभी नचत नट ॥

कहूँ ग्वाल गावत हैं होरी कहूँ बिलावत गाय घनेरी
बंस प्रसंसा भाट सुनावैं ॥ किन्हूँ ढाढी ढाढिन गावैं ॥
देहि गोपगन तिन कौं दाना भूषण वसन धेनु मणि नाना
परजा सकल खिलौना ल्यावैं अति अद्भुत कापै कहि आवैं
धरहिं नंद के आगे आनी ॥ राखहिं सब अति प्रिय सुख मानी
तिनहीं देहिं निछावर हीर की कोमल स्याम सुंदर वपु की
विस्वकर्मा पलना गढ़ि ल्यायौ रत्नजटित सुरंग सुहायो ॥
लागे विविध खिलौना जामैं देखत मूर्ति रहे मन जामैं ॥

लालन हित सौं नंद रखायौ । विस्वकरमा मन वांछित पायौ
ऐसें दिवस याम युग पायौ। तब सब गोपन नंद जिमायौ
छिरकि सुगंध पान कर दीनौ। तब सब गोपन भोजन कीनौ
मंगल मैं रजनी जब आई॥ गाय उठी सब नारि सुहाई॥

दो० कुरता टोपी पीत रंग लालन को पहिराय॥
लै उछंग पूजन छठी बैठी हर्षित गाय॥

सो० करि कुल कौ व्यौहार करी आरती स्याम की
करत निछावर नारि तन मन धन शशि मुख निरखि

नेग योग सब नेगिन पायौ॥ दियो सबनि जसुदा मन भायौ
प्रातहि उठि लालन अन्हवायौ सुदिन सोधि पलना पौढ़ायौ
निरखि निरखि जसुदा बलजाई अरुण चरण कर कोमलताई
ब्रजवासी जीवन नंदलाला मात सुमंगल फल मदन गोपाला
नित नव मंगल होहिं सुहाये मंगल निधि जब तें हरि आये
नंद सुकृत वर्षा ऋतु सोई॥ जसुमति सुकृत अकाश बनोई
लह घनस्याम स्याम तन उनये मंद हँसनि दामिनि दुति जुनये
रुदन मंद मधुर किलकारी॥ ब्रजजन मोरन आनंद कारी॥
दादुर गुणगण गावहिं दासा परम प्रीति अम परम हुलासा
पलना पचरंग मणि छवि छाई इंद्र धनुष उपमा तिन पाई॥
राज सुकृत कील र लटकाई। सोई मानों बगपांति सुहाई॥
द्रुग घर घर सुख संपति छाई सोई मनहुं भूमि हरी आई॥

वर्षत परमानंद जल नंद सदन जग माहिं॥
ध्यान भूमि हरि सरित मग जन उर सिंधु समाहिं
पूरण होत सुनाहिं जद्यपि निसिवासर नरन॥
बढ़त लहरि पुलकाहिं हरि मुख शशि एक निरखि

कंसहिं वहां नींद सुख नाहीं। आतं चिंता व्याकुल मन माहीं

ऐसौ निकसि सभा उठि प्राता। मंत्री बोलि कही यह बाता॥
मेरो रिपु प्रगट्यौ व्रज माहीं। कौन भाँति पहिचानौ ताहीं॥
जानैं जाय वेगि वह मारौ। ऐसो तुम कछु मंत्र विचारौ॥
दिन दिन बढ़ौ होय सब सोई। को जानै फिरि कैसो होई॥
बोल्यौ एक असुर सुनि राजा। क्यौं डरपत इतने के काजा॥
मोपै एक मंत्र सुनि लीजै। धर्मकाज कछु होन न दीजै॥
जप तप होम होन नहिं पावै। विप्रन साधन असुर सतावै॥
सो वह देव होइगो कोई। सोह नहिं सकहि प्रगट है सोई॥
सब तहँ असुर आय संहारैं। या विधि शत्रु तुम्हारो मारैं॥
बोल्यौ एक बात यह नीकी। औरौं सुनहु हमारे जी की॥
देश देश कौं असुर पठावौ। बालक मास एक के जे पावौ॥

सो॰ तिन सब छिन कौं बध करैं बचन न पावै कोइ।
इनहीं मैं वह होइगो मारो जैहै सोइ॥
सो॰ कह्यौ कंस हरषाइ कहे मंत्र दोउ भले॥
पठवहु असुर निकाय जाय करौ कारज सँभार।

या विधि असुर विदा बहु कीनौं। बाल बधन कौं आयसु दीनौं॥
कह्यौ जाय ब्रज वेगिहि सोई। तहाँ के बालक मारै जोई॥
कह्यौ पूतना आयसु पाऊँ॥ तौ यह काज मैं करि ल्याऊँ॥
सकल गोप सिसु जाय नसाऊँ। जो कहिये तो जीवत ल्याऊँ॥
छिन मैं रूप मोहनी धारौं॥ वसीकरण पढ़ि सब पर डारौं॥
धसि कंकोल दरो जन ल्याऊँ। ब्रजवासिन के बाल पियाऊँ॥
तौ पूतना नाम कहवाऊँ॥ औ नृप कौ काज करि आऊँ॥
तुरत कंस नेहि आयसु दीनौ। सुनतहिं वचन गवन तिन कीनौ॥
ता दिन नंद मधुपुरी आये॥ राजअंस फलु नृप कहँ ल्याये॥
नृप दरबार ताहि पहुँचायौ। समाचार वसुदेव कौं पायौ॥

छोंड़ि वंद तैं नृपतैं राखे ॥ हते मित्र सुन के अभिलाखें
मिलन गये तिन कों नंदराई उठि वसुदेव मिले हरषाई

दो० कुसलपूछिकेपरसपर वारवार स प्रीति
वैठारे नंदराय ढिग करिके आदर रीति ॥
सो० तव वोले नंदराय सुनिये दैव भावी प्रवल
तासों कछुन वसाय जगत भ्रमत जाके विवस

तुम अति कष्ट कंस तें पायो सुनि सुनि वचननि भयो पछितायो
आजु देषि के चरण तिहारे भये हमारे नैन सुखारे ॥
तव वसुदेव कही मृदुवानी अहो नंद तुम सत्य वषानी॥
कर्म रेख नहिं जात मिटाई॥ विधिकी गति कछु कही न जाई
कह्यौ नंद सुत भयो तुह्मारे। तवतें अति सुख भयो हमारे
तुम को जरा आय नियराई॥ वड़ी वैस विधि भयो सहाई॥
तव नंद हलधर जन्म सुनायो॥ प्रथमहिं तिनहिं रोहिणी जायो
तिनकों उत्सव प्रगट न कीन्हौं कंस त्रास अपने उर लीन्हौं ॥
सुनि वसुदेव वहुत सुख पायो तव ऐसें कहि वचन सुनायो
सुनहुं नंद तुम नीके जानों॥ कंस नृपति कृत नाहिं छिपानों
तातें अव वे दोऊ वालक ॥ अपने मान करौ प्रति पालक
अव तुम वेगि गोकुलहि जाहू वालक हित पतियाहु न काहू

अथ पूतना वध लीला ॥

दो० जित तित पठये कंसके करत असुर अनरीति
प्रजालोग के वालकनि तातें हैं अति भीति॥
सो० गई पूतना आज व्रज कों वालक घातनी
कीहै कछु अकाज वेगि धाम सुधि लीजिये
सुनि वसुदेव वचन नंदराई। भये विदा तुरतै भय पाई॥
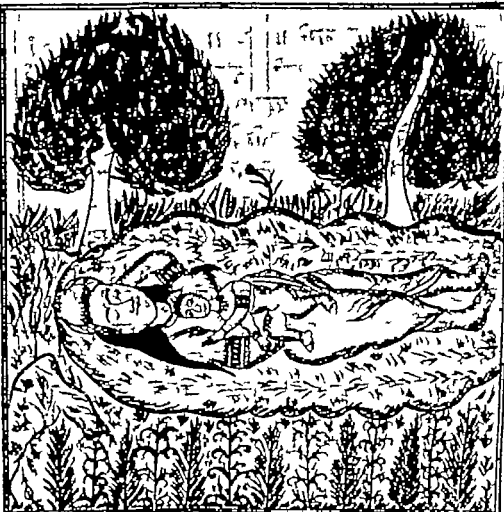
निकसतशकुनअसुभभयमानो तातेअधिकसोच उर आनो ॥
सिशुचलेकछुसुधितननाहीं वालककेचितामनमाही ॥
इहांपूतना ब्रज मैं आई ॥ रूपमोहनीप्रगटवनाई ॥
गरलक्षाटिकुचसौलपटायो ऊपरसरलसिंगारवनायो ॥
अतिहींकपटछवीलीसोहै। जोदेखैताकोमनमोहै ॥
इत उतहै नंदधामहिआई। देषिरूपजसुधामनभाई
देखिरहीमुखसुन्दरताई ॥ कैयहनरकैसुरकीजाई ॥
काकीवधूकौनकीवेटी ॥ अवलौंमनमैंकवहुनभेटी

विन पोंहि वाने आदर कीनों ॥ वैठन कों शुभ आसन दीनों ॥
अहो महरपाल यान मेरे ॥ मैं आई सुत देखन तेरे ॥
हरि पलना पर मन मुसकाई ॥ जसुमत कछु गृह काज सिधाई ॥

दो॰ ॥ तवहिं रांडि सी दुष्ट मति पलना के ढिग जाय ॥
निरखि वदन मुख चूमि कै लीनों अंग उठाय ॥

सो॰ ॥ दियो कमल मुख माहि विषलपट्यो अस्तन दुर ॥
पकर दुहू कर माहि लगे करन पय पान हरि ॥

पय संग प्राण खिंचे जव वाके ॥ है गय सिथल अंग तव ताके ॥
तव सो लगी कुड़ावन वालक ॥ सो कों छुटे दुष्ट कुल घालक ॥
पय संग प्राण खेंचि हरि लीन्हा ॥ पठे स्वर्ग जननी गति दीन्हा ॥
परी मृतक है असुर सुनारी ॥ जोजन लों निजतन विस्तारी ॥
जसुमति धाय देखि गृह गयो ॥ पालन पर बालक नहि पायो ॥
त्राहि त्राहि करि ब्रजजन धाई ॥ व्याकुल विपुल नंद गृह आई ॥
अति व्याकुल जसुमति महतारी ॥ ढूंढहिं स्याम हिं रोवत भारी ॥
हरि ताकी छाती लपटाने ॥ करत चरित्र जो अचरज साने ॥
ढूंढत ढूंढत उर पर पाये ॥ लै उठाय माता उर लाये ॥
दुख सुख ताको कह्यो न जाई ॥ जिमि मणि गई भुजंग न पाई ॥
सुखित भई तव ब्रज की वाला ॥ कहति वच्यो अति नंद को लाला ॥
नंद जसोमति भाग्य वड़ेरी ॥ सुत की करवर टरी करेरी ॥+॥

दो॰ ॥ आई अद्भुत रूप धरि अति विपरीत कुनारि ॥
कपट हेत नहिं लहि सकी तेहि मारयौ करतार ॥

सो॰ ॥ कहति जसोमति माय पुनि पुनि सवके पांय परि ॥
उवरयो आजु कन्हाइ तुम पंचन के पुण्य ते ॥

वड़े कष्ट यह सुत मैं पायो ॥ आज विधाता वहुत वचायो ॥
कोउ कहै भागवंत नंदराई ॥ कुल के देवन करी सहाई ॥+॥

कोउ कहै नेकु सुतहि मोहि देरी । देखहु सुख मैं पुनि तूं लेरी ॥
कोउ सुख चूमि बलैया लेई ॥ ले उछंग पुनि जसुदहि देई ॥
बच्यौ कान्ह सब ब्रज सुधि पाई । घर घर बजी अनंद बधाई ॥
तबहि नंद गोकुल में आये । देखि पूतनहि अति भय पाये ॥
जो बसुदेव कही ही बानी । सो सब मन में सांची जानी ॥
तहं सब ब्रजवासी जुरि आये । समाचार सब प्रगट सुनाये ॥
तब सुख पाय गये नंद धामहिं । देख्यो जाय सुवन घनस्यामहिं ॥
बदन बिलोकि हरषि उर लाये । बहु बहु दान दै देव मनाये ॥
तब ब्रजवासी सकल बुलाये । अंग पूतना के कटवाये ॥
बाहिर एक ठौर सब कीने ॥ अग्नि लगाय फूंकि तिन्ह दीने ॥

सो॰ अति सुगंध तासंग तें कीनो धूम प्रकास ॥
हरि अस्पर्स प्रताप ते ब्रज सब भयो सुवास ॥
सो॰ रहे अचंभो पाय ब्रजवासी थकृत सबै ॥
चरणकमल चित लाय नंद सुवन महिमा गुनत

हौ ऐसे माया की कनिया । दूध पियायो तब नंदरनियां ॥
पुनि पलना पौढ़ाय झुलावें ॥ हुलरावें दुलराय मल्हावें ॥
लालन के हित नींद बुलावें । मधुर सुर कछु जोइ सोइ गावें ॥
रे लालन की आव निंदरिया । तोहि बुलावत स्यामसुंदरिया ॥
जो कर कपट लाल को आवै ॥ ताहि बकी लौ विधि विनसावै ॥
सहो देवता या कुल केरे ॥ मैं पूजिहौ कमल पद तेरे ॥
वेगि बड़ो कर दे यह बालक ॥ ब्रजजन प्राण पूतना घालक ॥
दुतिया के शशि ज्यौं शिशु बाढ़े । आवा यौ आंखें ढोरनि निवाढे ॥
सोवै मेरो बाल कन्हाई ॥ ॥ माता सुख की बलवन जाई ॥
सोवत देख मौन गहि रहई ॥ जागत दोख बहु कछु कहई ॥
अंग फरकाय अरमा मुसकाने । ता छवि की उपमा को जाने ॥

वार वार शिसुवदन निहारे ॥ जसुमति अपनो भाग्य विचारे

दो॰ हुलरावन गावन मधुर हरि के वाल विनोद
जो सुख सुर मुनि को अगम सो सुख लेत जसोद

सो॰ कवहूं लेत उछंग उर लगाय चूमति सुखहि
निरषि मनोहर अंग कवहुं झुलावत पालने ॥

दरसन कौं नित सुर मुनि आवैं ॥ वाल विनोद निरषि सुख पावैं
कहैं परस्पर सुर नर नारी ॥ हरि के अद्भुत चरित निहारी ॥
अलख अगोचर अज अविनासी पुरुष पुरातन विश्व विनासी
जाको भेद न शिव मुनि जाने ॥ ब्रह्मा पढिपढि वेद वखाने
सो हुलरावत नंद की घरनी ॥ पूरण भई पुरानन करनी ॥
मन अभिलाष वढावति भारी हुलसत हंसत देत किलकारी
वरषि प्रसून हरषि मन माहीं धन्य धन्य कह व्रज घर जाहीं
नित नव कौतुक होंहि प्रकासा व्रजवासिन मन अमित हुलासा
जसुदा नित नव लाड़ लड़ावैं निरषि निरषि व्रजजन सुख पावैं
नित नव मंगल नंद के धामा नित नव रूप श्याम अभिरामा
भक्तवत्सल संत हितकारी भक्तन हित नाना तन धारी ॥
भजत संत यह हृदे विचारी ॥ जन व्रजवासी है वलिहारी

दो॰ जव हरि मारी पूतना सुनि डरप्यौ नृप कंस
प्रगट भयो व्रज शत्रु मम यह जानी निरसंस ॥

सो॰ वसो तासु उर माहिं ताही क्षण ते अचल हरि
भूलत इक क्षण नाहिं शत्रु भाव लाग्यो भजन

अथ कागासुर वध वरनन

कागासुर नृप निकट वुलायो ॥ ताहि सतो सव कहि समुझायो
आवहु वेग नंद सुत मारी ॥ कीयह कारज वुद्धि विचारी

आयसु परिसिर गर्वबढायो ॥ कागरूपतेहि असुरबनायो
वेगिप्रविउठि गोकुल आयो ॥ औरिनकोलसबथनिपरायौ
वैक्यौनंदधाम पर आई + ॥ पलना पौढे बालकन्हाई ॥
वाकौ आवनहीं हरिजान्यो ॥ कागनहोय असुरमहिमान्यौ
जसुदा हरिकौ सोवतजानी ॥ कछुगृहकाजमेंलपटानी ॥
तबहि असुरपलनापरआयौ ॥ चाहतहरिकौंचोच चलायौ ॥
कंठपकरिहरिकरसोलीनौं ॥ नैकमरोरि फेक तब दीनौं ॥
पसौंजाय नृपपास उतान्यो ॥ यहब्रजवासी काहुनजान्यो ॥
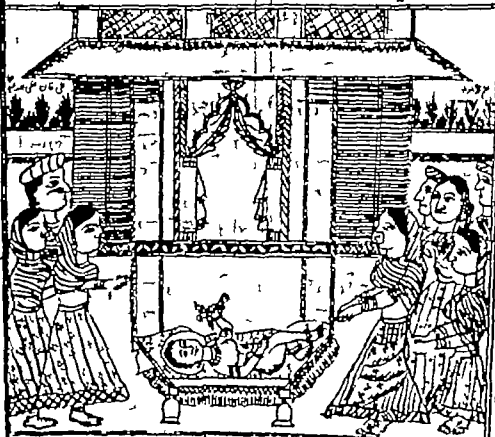
तुरतकंसतेहि वृन्नधायो ॥ वीतेजामवोलिनव आयो ॥
सुनहुकंसवुह बालनहोई ॥ है अवतार महा वल कोई ॥

दो०॥एक हांथ सों पकरि मोहिं फेंक दियो तुम पास
है है तुमरो काल वुह मैं कीनो विश्वास ॥५॥
सो०॥सुनि डरप्यो महिपाल कागासुर के वचन सुनि
वुह सो गयो विशाल जग्यो जो उर मैं सोच तरु॥

सभा मध्य सब असुर सुनाई ॥ वारवार सिर धुनि पछिताई
ब्रज मैं उपज्यो मेरो काला ॥ ताके अवहीं ते इह हाला॥
दनुज सुता पूतना पठाई ॥५॥ ताकौ इक छरा मारु नसाई॥
कागा सुर के ऐसे हाला॥५॥ सो नौ दिन दिन होत विशाला
है कोउ वीर जु ताहि नसावे ॥ मम कारज करि आप वचावे॥
ऐसो कौन कहौ मैं जासों ॥ अवके जाय भिरे जो तासों ॥
असुरन कौं यो नृपति सुनायो॥ सकटासुर मन गर्व वढायो ॥
उठि के पान नृपति सों मागे ॥ कहा काम यह मेरे आगे ॥५
तुम प्रताप तेहि पल मैं मारौं ॥ कहौ तौ सव ब्रज कौ संघारौं ॥
कंस हर्ष तेहि वीरा दीन्हो ॥ सूर सराहि विदा तेहिं कीन्हों॥
इहां श्याम पलना पर खेलें ॥ कर गहि पग अंगुठा मुख मेलें॥
अपने मन यह करत विचारा॥ इह मम पद सन्तन आधारा ॥

दो०॥ये पद पंकज सखी उर निरखत शंभु सुजान ॥
इनकौ रस मन मधुप करि करत निरंतर पान ॥५॥
सो०॥पुनि इक पद के ध्यान मगन ब्रह्म सनकादि मुनि
लक्ष्मी अति सुख मान उरतें छरा टारत नहीं ॥५॥

इन पद पंकज रस अनुरागा॥ मगन सकल सुर नर मुनि नागा
रस जो धौं कारस इन माहीं ॥ सो तौ मोहि विदित कछु नाहीं
मोकौ इह रस दुर्लभ भारी ॥ देखौं धौं मैं ताहि विचारी ॥५॥
ता ते पद अंगुठा मुख मेले ॥ लै लै स्वाद मगन रस खेलै ॥
ता अवसर सकटासुर आयो ॥ मगन रूप कान्हन लखि पायो

भारेसकट नंद यह केरे ॥ पलना के ढिग हुते घनेरे॥
तिनसें सो सठ आय समान्यो नंद सुवन तबही यह जान्यो
ताकों हरि इक लात चलाई गिरो सकट तब अति हर्षाई
दनुज निधन काहू नहिं जान्यो गिरो सकट ग्रह सबहिन मान्यो
सुनत शब्द अति व्याकुल धाये, नंदादिक सब जुरि तहं आये॥
जसुमति दौरि स्याम कौं लयेऊ सबके मन अति विस्मय भयेऊ
कारन कहा कहै नर नारी॥ गिरो सकट अपुनि तें भारी

दो॰ पलना ढिग खेलत हुते कछुक गोप के बाल॥
तिनन कह्यौ डार्यो सकट पलना तें नंद लाल॥
सो॰ सो नहिं करी प्रतीति काहू बालन कौं कह्यौ॥
यह तौ कछु विपरीति भई कुशल अति स्याम की

जसुमति अति मन मन पछताई भये आजु कुल देव सहाई॥
बार बार उर सों सुत लाई॥ निरषि नंद पुनि पुनि बलजाई॥
मेरे निधनी के धन छैया॥ लगो मोहि तेरी रोग बलैया॥
ऐसे बहु विधि लाड लड़ाये पय पियाय पलना पौढाये॥
मंद मंद कर ठोक सुलावैं। कछु यक मधु समधुर सुर गावै
सोवत स्याम सुभग सुंदर वर चौंकि चौंकि शिशु सदा प्रगटकर
लये मात कनियां उपटाई॥ मनी फणि मणि उर माहिं दुराई
प्रात निरषि सुख आनंद कीनो चूमि वदन सुत कौं पय दीनों
कोमल धाम अजिर अवआयौ तहं तुम पलना पर पौढायौ
आय मथन दधि भवन पिधारी नंद हि सुत के ढिग बैठारी॥
निरषि नंद सुत आनंद भारी। कमल वदन छवि रहे निहारी
चुटकी दै दै सुतहिं खिलावैं निरषि निरषि सुख अति सुष पावै

किलकि उठे लषि तात सुष कर पद हुलसत गाय
रूप रसद कि उलटे परे सुख निधि त्रिभुवन राय

सो॰ सो छवि कहि न्यन जाय निरषि नंद टेरत महरि
आपुन सकत उठाय अति कोमल मन सकुच मन

नंदहि टेरत सुनि नंदरानी॥ तजी तुरत दधमथन मथानी
जाने महरि गिरे सुखदाई तातें अति आतुर उठि धाई
नंदहि देषि हंसत तिन पासा नव धीरज धरि कियो हुलासा
उलटि पयो सुत देखौ आई उठन सकत कर से जल गाई॥
सो छवि निरषि मातु सुष पायौ तुरत मुदित उलटाय उठायौ
उरलगाय मुखचूंबन लागी कहत आज मैं भई सभागी॥
पिटुकरि नाहीं उलटन लागे डेढ मास के भये सभागे॥
चिर जीवहु मेरे कुंवर कन्हाई आज करौं मैं अनंद वधाई॥
नंदरानी व्रजनारि बुलाई॥ यह सुनि सव आनंद करि धाई
हरि कौं निरषि परम सुख पायौ हर्षित सवहिन मंगल गायौ
वांटी घर घर पान मिठाई॥ नंदसुवन व्रजजन सुखदाई
धनि धनि व्रज की वाल सभागी हरि के वाल चरित अनुरागी

जननी अति आनंद भरि निरषत स्यामल गात
जैसें निधनी पाय धन मुदित रहत दिन राति॥
धनि धनि व्रज को वास धन्य यशोदा धन्य नंद
धनि व्रजवासी दास जिनको मन या रस मगन॥

अथ तृणावर्तवध लीला।

जसुदा भाग न जात वखानौ त्रिभुवनपति कौं सुत करि मानौं
हरि कौं गोद लिये पय प्यावै विविध भांति करि लाड लडावै
कवहूं हरि मुख सौं मुख लावै कवहूं हर्षित कंठ लगावै॥
सो निधनी को धन सुत नान्हा खेलत है सनरहौ नित कान्हा
कव धौं मधुर वचन कछु कैहैं कव जननी कहि मोहि वुलैहैं

कव नंदहि कहि बावा बोलै । खेलत फिरत उन आंगन डोलै ॥
कव धौं तनक तनक कछु खैहै । अपने कर लै मुख मे नैहै ॥
का विधि यह अभिलाष पुरावै । सनहीं मन कुलदेव मनावै ॥
जिस कृत हरि जननी की कानियं । करत चरित्र मात सुखदानियो
तृणावर्त हरि आवत जाना । पठयो कंस सहित अभिमान ।

भयो गरू जननी भर पायौ । सहन सकी नव भुव वैठायो
आप लगी गृह काज कछु परि विसरिज गोपाल
अति प्रचंड वौंड्र उठो गोकुल पर नेहि काल
घात चक्र विष आय वणा वक्त मारी असुर
हरि कौं लियो उठाय अंधधुंध गोकुल कियो
हरि को लै कै गयौ अकासा ॥ धरि धुंध गोकुल चहु पासा ॥
तहां नहीं नर नारि रुपानै ॥ प्रलय काल सम कीसब मानै

जसुमति दौरी आंगन में आई। तहां न पाये कुंवर कन्हाई॥
नंद नंद करि सोर लगायौ॥ तेरो सुत अंधवाय उडायौ।
दौरौ वेगि गुहार लगावौ॥ ब्रजवासिन कौं टेर बुलावौ॥
अति व्याकुल खोजत नंदरानी। जित तित फिरत भवन बिललानी॥
तृणावर्त्तको हरि यों कीन्हौ॥ ग्रीव लपटि तिहिनी चै लीन्हौ।
कठिन शिला पर ताहि गिरायौ। ताके ऊपर आपुन आयौ॥
चूर चूर करि ताके गाता॥ कीन्हौं मुक्त मुक्ति के दाता॥
धूरि धुंध सब तुरत विनासी॥ खोजत हरि हि विकल ब्रजवासी॥
ब्रज वनितन उपवन में पाये। लिये उठाय कंठ लपटाये॥
आनि आतुर जसुमति पै ल्याई। हई गई घर घर आनंद बधाई॥

लिये धाय कै माय ने क्षतिया रही लगाय॥
नंद निरषि सुख पाय कै मनसौं वहतक गाय
वारि वारि ब्रजनारि देहि वसन भूषण मगन
जित तित कहैं विचारि नयौ जन्म हरि कौं भयौ

उबरौ स्याम महरि बड़भागी। देखौ धौं कहुं चोट न लागी॥
रोग लेउं बलि जाउं कन्हाई। हरि हैं ब्रज के जीवन माई॥
भलो न प्रकृति जसोदा तेरी॥ इकलौ हरि कौं छांडति हेरी॥
घर कौ काज इनहुं तैं प्यारो॥ वैरी भजहुं सुरति संभारो॥
वहत बच्यौ री आज कन्हाई। भयो पूर्वलो पुण्य सहाई॥
जसुमति सबसौं कहत लजानी। अब मैं सीख तिहारी मानी॥
मोहिं कहां हो यह सुख माई। मैं तो रंक परी निधि पाई॥
अब मैं अपनो लाल न चैनै हौं। एको तृण काहू न पतिये हौं॥
ऐसें कहि सबसौं नंदरानी॥ कीन्हीं विदा सकल सनमानी।
जसुमति हरि कौं गोद षिलावै। देखि देखि मुख नैन सिरावै॥
आनन कोमल स्याम ललन देखी। वार वार पछितात विसेखी॥

फेरें वच्यौ जाउ वलिहारी। तृणावर्तको घात निवारी॥
नाजानौं कोइँ पुण्यनेको करि रीते सहाये॥
कियोकाम सब पूतनना दणा वर्तयह भाय
मानदुखित जिय जानि कृपासिंधुकरुणभगवान
वाम्हि धरिन सुखदानि करन लगे सुन्दर परम

खेलत मात उछंग कन्हाई। करत वाल लीला सुख दाई॥
जननी वेसर लटकट देखी। चितवत ताहि विसारि निमेषी॥
ताहि पदन कों पाणि चलायौ। नवजननी कछु वचन उचायौ॥
नहि पहुंचत वलनिउकनाई। सोकछ्यो निरषि मान वलिजाई॥
जननी वदन निकट करि लीनौं। नवछूरि हलसि किलक हँसि दीनौं॥
विहसनि चमकि परी दुधदंनिया। जनो विजकिजुवीजकीपतिया॥
प्रमुदित निरषि जसोदा फूली। प्रेम मगन तनको सुधि भूली॥
वाहिर तेतव नंद वुलाये॥ परमानंद सहित उठि धाये॥
हो पति सुफल करो दृग आई। देषहु सुतसुख दंतुलि सुहाई॥
हर्षित हो रहि गोद नंदलीनों। निरषि तात सुख हरि हँसि दीनौ॥
देखत वदन नैन सियराने॥ दूधदांत धौं छवि के दाने॥
अहोमहरि वड़भाग तुम्हारे। सुफल फये मनकाज हमारे॥

कछु दिन घट षट मासके भये श्याम सुखदान॥
अन्नपराशनको दिवस वूझहि विप्र विहान॥॥
सुनि पुलके नंदराय भये पराशन योग हरि॥॥
प्रेम रह्यौ उरछाय सो सुख काये जाय कहि॥

अथ अन्न पराशन लीला

मात काल उठि विप्र वुलायो॥ पोस वृद्धि सुभ दिवस धरायो॥
जसुमति सो दिन आछो पायो॥ सखिन वोलि मृदु गान करायो॥

युवतिमहरि कौं गारी गावैं । और महर को नाम सुनावैं ॥
माणि कंचन के थार मंगाये । भांति भांति के वासन आये ॥
नंद घरनि व्रज वधू वुलाई ॥ जे सव अपनी जानि सुहाई
कोउ जिवनार कोउ पकवाना ॥ खट रस के वहु करत विधाना
वहु प्रकार के विंजन आने ॥ जिन के स्वादन जाइ वखाने
अति उज्जल कोमल सुठि नीके । किये विविधि विधि मन हू अमीके
जसुमति नंदहि वालिकह्यौ तव । वोलहु महर जाति अपनी सव
आइ गये उपनंद सकल घर ॥ ल्याये वोलि सवन आदर कर
वैठारे सव आन अथाई ॥ भीतर गये आप नंदराई ॥
जसुमति हरि कौं उवटि न्हवाये । सुन्दर पट भूषण पहिराये ॥

तन झंगुली सिर चौतनी का चूरा दुहु पाय ॥
वारवार मुख निरषि के जसुमति लेत वलाय
लै वैठे नंदराय जानि सुभरी गोद हरि ॥ ॥
लीने सदन वुलाय गोप सकल आनंद भरे ॥

वैठे सकल गोप गन आई ॥ अति आनंद मगन नंदराई
कनक थार भरि खीर धराई । मिसरी घृत मधु डारि मिलाई
लगे नंद हरि मुख जुठरावन । गोप वधू लागी सव गावन ॥
आंगन वाजी विविधि वधाई ॥ शंख निशान भेर सहनाई ॥
षट रस के विंजन है जेते ॥ करि के अधर छुवाये तेते ॥
तनक अधर जल पोंछि सुहाये । हरि कौं जसुमति पै पहुंचाये
हर्षवंत युवती सचु पाये ॥ लै लै मुख चूमति उर लाये ॥
विप्रन वोलि दछिणा दीनी ॥ नाना वस्तु निछावर कीनी ॥
गोपन संग महर नंदराई ॥ वैठे पनवारे पर जाई ॥ ॥
अति रुचि सवहिन भोजन कीनौं । वीरा वहुरि सवन कौ दीनौं ॥
गोपवधू सव महर जिमाई ॥ दे कर पान सुगंध सिंचाई ॥

इहिविधिसुखविलसैव्रजवासी । निरखैं स्याम सुभग सुभरासी

सुरसिहाँहि ललचाँहि मुनि लखि व्रजजन के भाग
धन्य धन्य कहि सुमन झरि करहिं सहित अनुराग

नित नव मंगलचार नित नव लीला स्याम की
को कवि बरनै पार सेसन पावै पार जिहि ॥

नेति नेति जिनकौं स्रुति गावैं । तिनकौं व्रज जन गोद खिलावैं
जो सुख नंद भवन के माहीं ॥ तीनि लोक महँ सो कहुँ नाहीं
नित्त नयौ सुख जसुमति पावैं । नये नये नित लाड़ लडावैं ॥
नैन ओट हरि करत न कैसे ॥ जुगवत है फणि मणि कौं जैसे
छिन निमिष होत पल ओटा । निरखत ही सुख पाय निछोटा ।
तनक कपोल अधर अरुनारे । तनक तनक कच घूंघर वारे ॥
कुटिल भृकुटि की रेख सुहाई ॥ भाल बिंदु कला पर सुखदाई
नयन नासिका भाल विशाला । कल कपोल निपरम रसाला ।
अल्प दसन चिबुक रद ग्रीवा । तन घन स्याम मृदुल छबि सीव
मात निरखि नैननि सुख पावै । प्रेम विवश मति गति बिसरावै
निरखि रूप जब मनु अनुरागे । कहत कहूँ जन दीठ न लागे ॥
नख पेच राज लै न छिपाई ॥ डारति वार कौन अरुराई ॥

कबहुँ झुलावति पालनै कबहुँ खिलावति गोद
कबहुँ सुलावति पलंग पर जसुदा सहित विनोद

नित प्रति व्रज की वाम आवै जसुमति के सदन ॥
मुदित निरखि घनस्याम लै लै गोद खिलावहीं

इहि विधि बढ़त बाल कन्हाई । कछु दिन मैं सतन सुखदाई ॥
लागे चलन घुटुरुनि वन आंगन । लगि मात्र सौं माखन मांगन ॥
खेलत मणिमय आंगन माहीं । देखत हरि निज परछाहीं
कबहुँक ता कहँ पकरन धावैं । जानु पाणि विचरत छवि पावैं

कवहू किलकत मुख पेखै । कवहू हंसि जननी तन देखै
कवहू बुलाय लेत नंदराई । कवहू जननि ढिग आवत धाई
कवहू किलकत अति भाजै । गिरत परत घुटुवन छवि छाजै
कवहू कजात जह्नावल भाई । खेलत गोपवाल समुदाई॥
कवहू कहत कछु तोतल बाता । सुनत होत सुख पूरण गाता॥
कहन चहत कछु प्रगट न आवै । माखन मांगत सैन बतावै॥
मान समुरु सयनी तैं लेई॥ । कछु खवाइ कछु कर धर देई
खेलत खात कान्ह मणि अंगना । इत उत करत घुटुन्नि यन रिंगना

करचूरा पग पैंजनी तन रंजित रज पीत॥॥
उर हार नख कीटि किंकिणि सुख मंडित नवनीत
इत चकित चित चाय बजत पैंजनी शब्द सुनि
सुर मुनि रहत लुभाय बाल दृश के चरित लखि

खेलत आंगन बाल गुविंदा । तात मात उर करत अनंदा॥
चलत पाणि पद की परिछाहीं । प्रतिबिंबत मणि आंगन माहीं
मनहु सुभग छवि महित टपाई । जलज माज जन लेत भुराई॥
कि धौं जानि पद कोमल आसन । धरि धरि देत कमल के आसन
निरषि सुभग सोभा सुषदानिया । लिये हरषि सादर नंद रानियां
नील जलज तन सुन्दर स्यामा॥ । सुभग अंग सब छबि के धामा
अरुण तरन नख जोति सुहाई । कोमल कमल चरण सुखदाई
रुनि झुनि पैंजनि पायन राजैं। । मन सिज यंत्र सुनत सुर लाजैं॥
कटि किंकिणी जटित रचकारी । पीत झगुलिया सुभग संवारी
कर कमलनि चूरा छवि छाजे । रुचिर बाहु [illegible] राजे॥
कठिला कंठ हार बर सुहाये। । [illegible] पदक [illegible] सुहाये
चरु चिबुक दतिवरनि न जाई । [illegible] कपोल परम छवि छाई
अरुण अधर [illegible] दसन [illegible] हसन में होत

मानहु सुन्दरता सदन रूपरत्न की रीति ॥ ११॥

सो॰ मधुर तोतरे बैन श्रवण सुखद सुनि मन हरन
सुनत होत मन चैन समुझत कछू बनै नहीं॥

नासा सुभग कमल दल लोचन । भाल विशाल तिलक गोरोचन
भृकुटि निकट मसि विंदु किलायों । अलि सावक सो सोयन जायो
लाल चौतनी सीस सुहाई । विविधि रंग मणि गण लटकाई
बाल दसा के कच घुंघुरारे ॥ छिटकि रहे कछु घूम घुमारे
मंजुल तारन की चपलाई ॥ बाल दसा की ललित सुहाई
चंद वदन सुख सदन कन्हाई । निरखि नंद आनंद अधिकाई
बदन चूमि उर सो लपटायो । सो सुख कापै जात बटायो ॥
व्रजयुवती सब चकित वन ठाढ़ी । मनहुं चित्र पुतरी लिखकाढ़ी
प्रेम मगन नंद सुवन निहारैं । गृहकारज की सुरत बिसारै ॥
व्रजयुवती हरि सो मन लावैं । नंद सुवन सब के मन भावें॥
व्रजवासी प्रभु सब के नायक । प्रेम विवस जन के सुखदायक
बालचरित लखि सुरसुख पावें । योग दृष्यासन कादि भुलावें

कर तब बाल लीला ललित परम पुनीत उदार
सुन्दर स्याम सुजान हरि भक्तन के आधार
कापै वरन्यो जाय बाल चरित नंदलाल को
कल्पन सकहि न गाय शेष कोटि सादर सहस

अथ नाम करन लीला

इक दिन श्री वसुदेव विज्ञानी । पठये बोलि गर्ग मुनि ज्ञानी ॥
करि पूजा विधि वत बैठायो । युग पद कमल सीस तब नायो
यह हरि कह्यो सुनिये ऋषिराई । जब ते भयो कंस दुखदाई ॥
तब ते गोकुल नंद अवासा । जाय रोहिणी कियो निवासा॥

जाकेगर्भजन्म सुतलीनो ॥ कंसत्रास सौं प्रगटनकीनो ॥
नामकरण ताको अवताई ॥ भयोनाहिं तुम विनागुसाई
करिकैकृपातहां प्रभुजैयै ॥ ताकोनाम रारिव कै औयै ॥
सुनिवसुदेववचन सुखपायो हर्षसहित मुनिगोकुलआयो
नंदरायऋषि आगमजान्यो अपनो वडौभाग्यकरिमान्यो
चरणधोय चरणोदकलीनो ॥ अर्घासन अति हितकरि दीनो
वडीकृपा कीन्हीऋषिराजू ॥ मोसम धन्य आन नहीं आजू ॥
अति पुनीत भोजनवनवायो। विविधि भाँति ऋषिरायजिमायो

बहुरि महरि ऋषिराय सों कह्यौ जोरि कर दोय
केहि काज प्रभु आगमन कह्यो कृपा करि सोय
तब बोले ऋषिराज पठये हैं वसुदेव मोहिं॥
नामकरण के काज सुभग रोहिणी सुवन कों

सुनत नंद अति भये सुखारे। लै आये कनियां दोउ वारे॥
मुनि चरणन मेले दोउ भाई। दै असीस प्रमुदित ऋषिराई॥
हरि की छवि अति आनन्दकारी। देखि रहे मुनि पलक विसारी॥
प्रथम नंद बलि हाथ दिखायो। जन्म दिवस मुनि पास सुनायो॥
देखि गर्ग उठि कियो विचारा। है यह सिसु सब जगत अधारा॥
अति सुभ लक्षण बल को धामा। धरयो नाम तिन कौ बलिरामा॥
बहुरि नंद चरणनि सिर नायो। कह्यौ कि नृषि मम भाग निआयो॥
तुम सर्वज्ञ अहो मुनि नाथा। देखिये या बालक कौ हाथा॥
मुनिवर देखत चिन्ह भुलान्यौ। प्रेम मगन सब तन पुलकान्यौ॥
पुनि पुनि हरि कौ वदन निहारी। बोल्यौ मुनिवर सुत संभारी॥
धन्य नन्द धनि मात जसोदा॥ धनि धनि धन्य खिलावत गोदा॥
सुनहु नंद मैं सत्य बखानौं॥ इनको तुम सुत करि मत मानौ॥

रूप रेख जाके नहीं अगम अखंड अनादि अनूप॥
सो भक्तन हित अवतरउ निज इच्छा मनरूप॥
इनतें बड़ो न कोय ये करता सब जगत के॥
जो ये करैं सो होय तुमसों हम सांची कहैं॥

इनके नाम अमित जग माहीं॥ तदपि कहौं मैं कछु तुम पाहीं॥
इन कबहुं वसुदेव के धामा॥ लियो जन्म सुन्दर वर स्यामा॥
तातें वासुदेव इक नामा॥ सो सुमिरत अघ पावहिं कामा॥
कहिहैं कृष्ण बहुरि जग माहीं। जाके सुमिरत पाप नसाहीं॥
अरु ये जैसे कर्म निकारैं॥ तैसे नाम जगत विस्तारैं॥

दुष्ट दलन संतन सुख दाता॥ भूमि भार हरी हैं दोऊ भ्राता॥
तुम कबहूं तप कर यह मांगा। तुमहिं खिलावैं प्रीति अनुरागा।
तातें सुत करि तुम ये पाये॥ मत जानो इनकों निज जाये॥
ये अति सुख दाता ब्रज केरे। करि हैं ये आनंद घनेरे॥
मुनि ऋषि सुख हरि यश सुखरासी। आनंद सब ब्रज के वासी॥
सुनत नंद जसुमत सुख पायौ। मुनि चरणनि कौं सीस नवायौ।
बहुत भेंट लै आगे राखी॥ अस्तुति बहुत भांति सों भाखी।

विदा भये ऋषिराज तब नंद भाग्य बड़ भाखि
चले मधुपुरी कों हरषि हरी मूरति उर राखि
कह्यौ हरषि ऋषिराय सब वृतांत वसुदेव कौं
सुनत बहुत सुख पाय ऋषिहिं पूजि कीन्हें विदा

जसुमति समुझि गर्ग की बानी। आपनि अति बड़भाग निजानी
हरि कों लै उर सों लपटायौ। प्रमुदित अस्तन पान करायौ
स्याम राम मुख निरषन मोदा। मात रोहिणी और जसोदा॥
रवकि रवकि हरि बैठत गोदा। भाषत हरि के बाल विनोदा।
हरि कौं गोद लिये दुलरावें॥ पुनि पुनि तुतुरे बोल बुलावें।
कबहुंक गावत दै कर तारी। कबहुं सिखावत चलन मुरारी
तनक तनक भुज टेक उठावें॥ क्रम क्रम ठाढ़े होन सिषावैं।
पुनि गहि भुज पद द्वैक चलावैं। लरखरात लखि मन सुख पावैं
मन्हीं मन यों विधिहिं मनावैं। कब धौं अपने पायन धावैं॥
कबहुंक छोड़ देत अंगनैया। खेलत मुदित तहां दोउ भैया।
गौर स्याम बलराम कन्हैया। संगहि संग फिरत दोउ भैया।
जिमि बछरन के पाछें गैया। ब्रजवासी जन लेत बलैया॥

चौल धूरि धूसर तबन बाल विभूषण अंग॥
खंजन इंजित हग चपल निरखत लजत अनंग

विहरत आनंद कंद मोरा मैं खोगन कंद ॥ ॥
पट् कुल के रवि चंद दहन दनुजकुल बन अनल

कबहूं गाढ़ हीति गहि मैया। कबहूं हालत चलत कन्हैया
कुलही चित्र विचित्र रंगुलिया। दमकि उठत हैं लखित दँतुलिय
मुनि मन हरन मंजु मसि बिंदा। सुखद चारु लोचन शशि बिंदा
कबहूं कबन तोतरे बोलैं॥ मणि मोण खंड हगन इगहोलै
निरखन रूक रूकात प्रति बिंबै। वेतप रस सुख पितु भरू खंबै॥
मथिन जहां दधि नंद की रानी। होत खरे तहाँ टेक मयानी॥
मात तनक दधि देत खवाई॥ लेत प्रोति सों सो सुख नाई॥
क्षीरसमुद्र जासु रज धानी॥ तनक दही सो तिन हवि मानी
तनक सी वदन तनक सी दतिया। तनक से अधर तनक सी वतिय
तनक वदन दीधत तनक कपोलनि। तनक हँसन मन हरत अमोलनि
तनक तनक कर तन के माखन। तनक अंगुरिया तन के घास्त
तनक तनक भुज चरण सुहाये। तनक स्वरूप मनो जल जाये॥

तनक विलोकनि जासु की सकल भुवन विस्तार
तनक सुने यश होत है तनक सिंधु संसार ॥
तनक रहत नहिं पाप तनक नाम जाको लिये॥
मिटत सकल भव पाप तनक कृपा जाय हि करहि

अथ वरसगाँठ लीला ॥

बरस गाँठ लालन की आई॥ द्विषट माँस के भये कन्हाई
फूली फिरत जसोमति माई। घर घर से सब वधू बुलाई॥
प्रमुदित मंगल माट कराये। आनंद उमगे तूर बजाये॥
आगन सकल सुगंध लिपायो। रचि रचि मोतिन चौक पुरायौ
फूले फिरत नंद सुख भारी॥ लियो गोप गन सकल हँकारी

द्वारन वंदन वार वंधाये ॥ ध्वज पताक रचि विविधि कराये
पान फूल फल टारि रसाला ॥ हरद दूव दधि अक्षत माला
मंगल द्रव्य सकल मंगवाई ॥ वहु मेवा वहु भाँति मिठाई
जसुमति कान्ह उवटि अन्हाये अंग पोंछि भूषण पहिराये ॥
टोपी जरकसि पीत झंगुलिया दमकति द्वै द्वै चार दंतुलिया
कठुला कंठ वघन खानो कौ ॥ कियो भाल केसर कौ टीकौ ॥
लटकत ललित ललाट लटूरी वरनि न जाय वदन छवि सरी

नयन आँज भृकुटी निकट कियो मास मसि विंद
कोरि सिंगार हरि सुख निरखि चूम्यो मुख अरविंद ॥
लिये गोद सुख कंद नंद वोलि जसुमति कह्यो
वोलहु भूसुर वृंद लग्न धरी आवत चली ॥

काहे को अव गहर लगावत विप्र वेग काहे न वुलावत ॥
नंद विप्र वर विप्र वुलायो ॥ पद पखारि आसन वैठायो
लै उछंग लालन नंदराई ॥ वैठे हरषि चौक पर जाई ॥
वेद मंत्र विधि सहित पढ़ावत वरस गाँठ सुर सहित जुरावत
व्रजनारी सव वन वन आवैं ॥ मंगल तिलक स्याम कौ ल्यावैं
गावैं मंगल कोकिल वैनी ॥ हरि दरसन प्यासी मृगनैनी
तिलक सवनि मोहन कौं दीनी देखि देखि सुख अति सुख लीनै
विप्रन वहुत दक्षिणा पाई ॥ वांटी सव कौं पान मिठाई ॥
धन मणि चीर निछावर कीने वारि वारि नेगिन कौं दीने ॥
नव सारी पचरंग मगाई ॥ हरषित महरी वधुन पहिराई
देत असीस सकल अति मोदा लेत जसोमति भरि भरि गोदा
नित नव गोकुल होत वधाई सदा स्याम जन के सुखदाई

धन्य जसोमति धन्य नंद धन धन वालि विनोद
धन्य सुमन जिन जनन के रहत सदा रस मोद

धनधनबजकीबालकोहिकोहिसुखपहिसुन
धन्यधन्यनंदलाल दैत्यदलनसज्जनसुखद॥

कोन्हचलतपगद्वैद्वैधरनी । होतिमुदितलखिनंदकीघरनी
करतिहुतीअभिलाषजोई । निरखनिअपनेनेननिसोई
रुनकुनकनूपुरपगबाजै । डगमगातडोलतछविछाजै
बैठिजातिपुनिउठनुरतहीं । देहरिलोंचलिजातफुरतहीं
भाम भवधराखलभटकाई । गिरिगिरिपरतनाघनहिंजाई
कीनीतीनिपैंड जिनवसुधा । देहरितांहिनचावतिजसुधा
पकरिपारिनासकंसउनरावै । लखिसुरमुनिमनविस्मयआवै
कोटिब्रह्मांडरचैपलमाहीं । पलमेंबहुरिमिटावैताहीं
ताहिखिलावतिजसुमतिप्यारी । नानाविधिसुखकोकीभारी
कबहूंदैकारितारि नचावै॥ कबहूंमधुरमधुरसुरगावै
देखस्याम जननी के ताई॥ आपनगावत तार बजाई॥
पग नूपुरकटिकिंकिणिकूजे । लखिछविमनअभिलाषहिंपूजे

धामिलकठुपाकठकठउरहरिनखछविरास
मनहुस्यामघनमेंकियोनवशशिविमलप्रकास
जननिकहतिबलजाउँ तचहुलेहुनवनीनसद
धरत रुनकसुनपाँउ त्रिभुवनपतिनवनीतहित

बोलनिलगेस्यामकलबानी । कछुकतोतरीकछुकसयानी
नंदहितातजसोदहिमैया॥ बलिसोंदाऊकहतकन्हैया
मातहिउठिमागतदोउभैया । माखनरोटीदेयरीमैया॥
अंचरागहेनमाननबाता॥ अतिआतुरठुनठुनदोउभ्राता
सुनिसुनिमधुरवचनसुनिपावै । तातेजननी गहरु लगावै॥
जननिसुध्यसम्मुखशकपेन । पाछेठाढेसुभगस्यामतन॥
मनोसारखनीसंगयुगसुसी । राजहंसपरमोरविचखी॥

कवरी गही स्याम रिझवाई । मुक्ता भाग गहे बलि भाई ।
मानहुं दुहुंन निज निज भख लीनौ । जननी सों झगरा बहु कीनौ ।
नंद देखि हंसि हंसि गए लोटी । जसुमति मुदित कमल की सोटी ।
कतहो आरि करत गहि चोटी । यह है बात मोहन तेरी खोटी ।
जो चाहो सो लेउ दोउ भैया । कान्ह कलेऊ मैं बल भैया ॥

दियो कलेऊ मान उठि माखन रोटी हाथ ॥
खात खवावत बालकन सकल विश्व के नाथ
जेहि ध्यावै योगीश सनक सनंदन आदि मुनि
कौतुक निधि जगदीश करत चरित संतन सुखद

अथ ब्राह्मण लीला

चलत लाल पैंजनि के चायन । पुनि पुनि हर्षित लषि स्यायन ।
विविधि ग्वाल बालन संग लीने । डगमगात डोलत रंग भीने ॥
कबहूं दौरि द्वार लौं जाहीं ॥ कबहुं भाजि आवैं घर माहीं ।
ब्राह्मण एक नंद के आयौ । महा भाग्य हरि भक्त सुहायौ ।
गोपन कौं सो पूज्य कहायो ॥ पुत्र जन्म सुनि कै उठि धायो ॥
जसुमति देखि आनंद बढ़ायो । आदर कारि भीतर बैठायो ॥
पांय धोय जल सीस चढ़ायो । पाक करन कौ भवन लिपायौ ।
अहो विप्र विनती सुनि लीजे ॥ जो भावै सो भोजन कीजै ॥
धेनु दुहाय दूध लै आई ॥ पांडे रुचि करि खीर बनाई ॥
घृत मिष्ठान खीर मिश्रित कर । कंस भाग हित थार परस पर ।
वेद मंत्र पढ़ि कै हरि ध्यायो । नैन मूंदि कै ध्यान लगायो ॥
नैन उघारि विप्र जो देख्यौ ॥ स्यामहिं आगे जेवत पेख्यौ ।

अहो जसोदा आपने सुकृतन देख्यो आय ॥
सिद्ध पाक सब आय कै डास्यो कान्ह जुठाय ॥

महरिजोरि युगपानि विनैकरी द्विज राजसन
बालक अति अज्ञान बहुरि पाकविधि कीजिये

बहुरि देव मिष्ठान मँगायो ॥ ब्राम्हण जो फिरि पाक बनायो
नवहीं ध्यान धर्यो मन लाई नवहीं लाग्यो खान कन्हाई
ऐसहिं विप्रन जेंवन पावें ॥ वार वार हरि ढूँढे खावें ॥
तव हरि सों जसुमति रिसपाई फनहिं अचक री कारन अन्हाई
मैं इच्छा करि विप्र जिमाऊं ॥ वार वार भोजन धन वाऊं ॥
यह अपने ठाकुरहि जिमावै ताकों तू गोपाल खिजावै ॥
मैया मोहि जिन दोष धावै ॥ वार वार यह मोहि वुलावै ॥
नैन मूदि कर जोरि मनावै ॥ वहुत भांति करि विनै सुनावै
ले लै नाम कहत प्रभु ऐये ॥ खीर खांड यह भोग लगैये
तव मैं रहि न सकों उठि धाऊं यकौ दोनो भोजन पाऊं ॥
प्रेम सहित जब मोहि वुलावैं तव नहि रहत मोहि वनि आवें
सुनत गूढ़ मृदु हरि के वैना ॥ खुलगये विप्र हृदय के नैना ॥

धनि धनि गोकुल नंद धनि धन्य जसोदा माय
धनि व्रजवासी धन्य व्रज जहँ प्रगटे हरि आय
सुफल जन्म प्रभु आज प्रगट भयो सुव सुकृत फल
दीन वधु व्रज राज दियो दरस मोहि कृपा करि

वार वार कहि नंद के आंगन लोटत द्विज आनंद मगन मन
मैं अपराध कियो विन जाने ॥ को जाने किह भेष समाने ॥
भक्त हेत वस रहत सदाई ॥ यहै नाथ तुम्हरी वड़िआई ॥
जे जे शरण तुम्हारी आए ॥ ताते भये पुनीति सुहाए ॥
पतित उधारन यश विस्तारे अघ जारन इक नाम तुम्हारे
देह धरत गो द्विज हित लागी पायो दरस भयो वड़ भागी ॥
हित की चित की मानि निहारे सब के जिय की जानि निहारे ॥

शरणिशरणिप्रभुशरणितुम्हारी।दीनदयालकृपालमुरारी
हंसतश्यामजसुमतिढिगठाढे॥प्रेममगनमनआनंदवाढे
निजजनजानिकृपाअतिकीन्ही।प्रेमभक्तिहरिताकौदीन्ही
प्रेममगनद्विजवारहिवारा॥कहिजैजैजैनंदकुमारा॥५॥
पुनिपुनिपुलकतदेतअसीसा॥विदाभयोघरकौद्विजईसा॥

दो॰॥देषिचरित्रजसुमतिचकितपरीविप्रकेपाय॥
दयेरत्नवहुदक्षिणाचलेहर्षिद्विजराय॥ * ॥

जसुमतिलियेउछंगगोदखिलावतकान्हकौं॥
चितैवदनद्युतिअंगआनंदनिधिसुखकौसदन
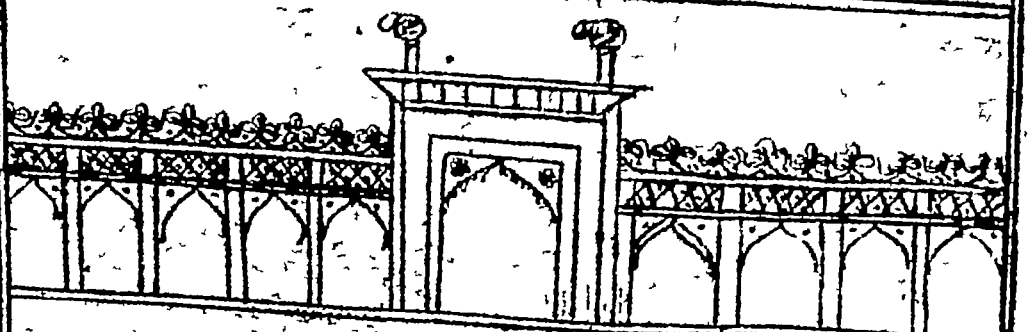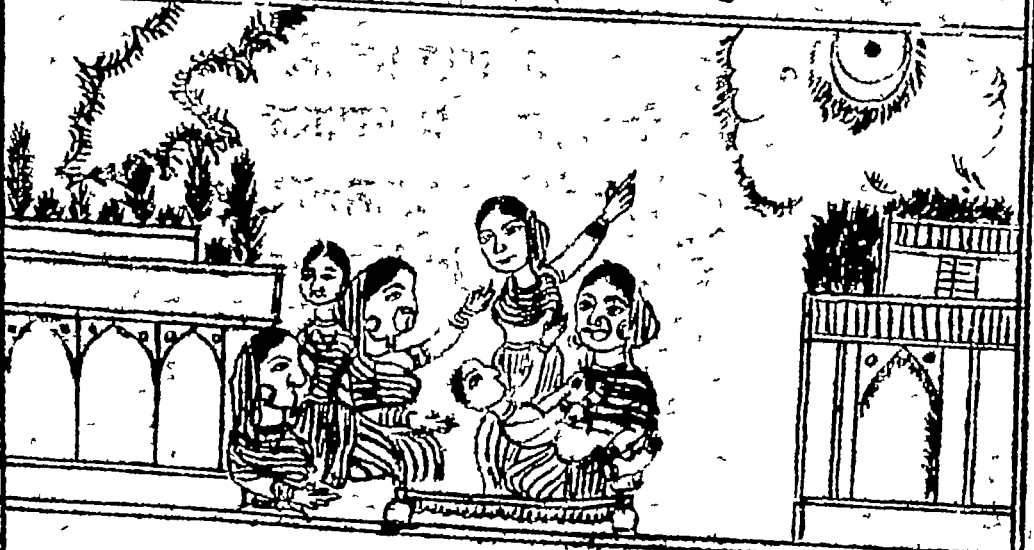
शोभामेरहरिपरसोहै॥ मैंवलिवलिपटनरकोकोहै॥

मेरे श्याम मनोहर जीवन ॥ निरखि स्याम नागे पै सीसत ।
गह्यो अनि डसोल पती । याहि लिये श्याम सुखदानी ॥
हृदय मेरो प्राण सर्द सुहावन अमा सुत को मातु दिखावत
देखहु स्याम चन्द्र यह आवत । भांति सो नन्द ग्वाल न लावत
चितै रहे हरि इक टक ताही ॥ कर तें निकट बुलावत वाही ॥
मैया बहुत सो तो मैं खायो ॥ देखत लगत मोहि यह प्यारो
देहि मांग्यो निकट मैं टेरो । लागी भूख चंद मैं खै हौं ॥ ॥
हेरि वेग सै बहुत भुखानौ ॥ मांगत हौं मांगत बिरुझानो ॥
जसुमति हेसन करत पछितायो । काहे को मैं चन्द्र दिखायो ।
रोवत है हरि बिन ही जाने ॥ अब धौं कैसे करि कै माने ॥ ॥
विविधि भांति करि हरि हि भुलावे । आन बतावै आन दिखावे ॥

दो ॥ कहति जसोदा कौन बिधि समझाऊं अब कान्ह
भूलि दिखायो चंद मैं ताहि कहत हरि खान ॥
अनहोनी कों हाम्य बात सुनी यह बात कहु ॥
याहि खात नहिं कोय चंद खिलौना जगत को ॥

यहै देत निसि माखन मोकों ॥ छण छण नगत देत सो तोकों
जो तुम स्याम चन्द्र कों खैहो ॥ बहुरौ फिर माखन कहं पैहो ॥
देखत रहौ खिलौना चन्दा ॥ आरि न कीजे बाल गुविन्दा ॥
मधु मेवा पकवान मिठाई ॥ जो भावै सो लेहु कन्हाई ॥
पा लागौ हठ अधिक न कीजे । मैं बलि रिस ही रिस तन छीजे ॥
खसि खसि परत कान्ह कनियां तें देखि सखि कहत नंद रनि पा ते ।
जसुमति कहति कहा धौं कीजे ॥ मांगत चंद कहां ते दीजे ॥
तब जसुमति इक जल पुट लीनो । कर मैं ले तेहि ऊंचो कीनो ॥
ऐसे कहि स्याम हि बहकावै ॥ आव चंद तोहि लाल बुलावे ।
याही मैं तन धरि आवे ॥ तोहि देखि लाल सुख पावे ॥

हाय लिये तोहि खेलत हरि है ॥ नेक नहीं धरनी पर धरि है ॥
जल पुट आनि धरणि पर राख्यौ । गहि आन्यौ शशि जननी भाख्यौ

सोहि लाल यह चंद मैं लीनो निकट बुलाय ॥
रोवै इतने के लिये तेरी स्याम बलाय ॥ ॥
देखहु स्याम निहारि या भाजन मैं निकट शशि
करो इती तुम आरि जाकारण सुंदर सुवन ॥ ॥

ताहि देखि मुसिक्याय मनोहर ॥ बार बार डारत दोऊ कर ॥
चंदा पकरत जल के माहीं ॥ ॥ आवत कछु हाथ मैं नाहीं ॥
तब जलपुट के नीचे देखै ॥ तहां चंद प्रति बिंबन पेखै ॥
देखत हंसी सकल ब्रजनारी ॥ मगन बाल छवि लखि महतारी
तबहिं स्याम कछु हंसि मुसिकाने । बहुरौ मातासों विरुकाने ॥
ल्यौंगो री मा चंदा ल्यौंगो ॥ बाहिर अपने हाथ गहौंगो ॥
यह तौ कलमलात जल माहीं । मेरे कर में आवत नाहीं ॥ + ॥
बाहिर निकट देखियत वाही ॥ कहै तो मैं गहि ल्याऊं ताही ॥
कहति जसोमति सुनहु कन्हाई ॥ तुम मुख लखि सकुचत उडराई
तुम तेहि पकरन चहत गुपाला ॥ ताते शशि भजि गयो पताला ॥
अब तुम तें शशि डरपति भारी ॥ कहत अहो हरि शरण तुह्मारी
विरुझाने सोये दै तारी ॥ लिये लगाय छतिया महतारी ॥ ॥

लैपौढाय सेज पर हरुये जसुमति माय ॥ ॥
अति विरुझाने आज हरि यह कहि रपोढुनाय
कर सों ठोकि सुवाय मधुरे सुर गावत कछुक ॥
उठि बैठे अतुराय चरपराय हरि चौंकि कै ॥

अथ पुरातन कथा लीला ॥

पौढे लाल कहत महतारी ॥ कहौ कथा इक अहै सुनि प्यारी ॥

हर्षैयहसुनिमनधनवारी ॥ पौढ़िगयेहसिदेतहुकारी ॥
नगरएकअरणीकसुहावन॥नामअवीधअतिसुदरपावन
वड़ेमहलतहांअगमअटारी॥सुदरविशदचारुगचटारी॥
वहुतगलीपुरचौकसुहाई ॥रहैंसदासवसुगंधसिंचाई
भांतिभांतिवहुहाटवजारू॥अतिसुंदरजनौकियसिंगारू
तहांनृपतिदशरथरजधानी॥तिनकेतीनरहीनिपटरानी॥
कौशिल्याकेकईसुमित्रा॥ ॥तिनजन्मेसुतचारिपवित्रा॥
रामभरतलक्ष्मणरिपुहंता॥चारैअतिसुन्दरगुणवंता॥
तिनमेंएकरामव्रतधारी ॥अतिसुन्दरजनकेहितकारी
विश्वामित्रएकऋषिराई ॥तिनहिसतावैंनिश्चरआई॥
तिननृपसौंद्वैसुतलियेमांगी।अपनीरक्षाकेहितलागी ॥

रामलषणऋषिलैगयेदनुजहतेतिनजाय ॥
ऋषिदीनी विद्यावहुत तिनकौ अतिसुषपाय
तहांजनक इकभूप धनुषजज्ञ तातें रच्यो ॥
कन्यातासुअनूपजुरेतहां भूपति अमित ॥
ऋषिलैगये कुंवर तहां दोऊ ॥ जनक राय मन माने सोऊ ॥
धनुष तोरिभूपन मुख मारी ॥ राम विवाहो जनक कुमारी ॥
चारहू कुंवर व्याह तहां आये ॥ भये अवधि पुर अनंद वधाये
रामहिं देन लगे नृप राजू ॥ ॥ सज्यो सकल अभिषेक समाजू
ताही समय केकई रानी ॥ चेरीकी मति सौं बौरानी ॥ + ॥
वचन मांगि राजा सों लीनो ॥ वनको वास रामको दीनो ॥
सुनि पितु वचन धर्म हित धारी। नारी सहित भये वन चारी ॥
तिन्है चलत भ्राता संग लाग्यो। उनके तात पिना तन त्याग्यो।
चित्रकूट गए भरत मिलन जब। दै पद पावरि कृपा करी तब ॥
युवती हेतु कपट मृग मारा ॥ राजिवलोचन राम उदारा ॥
रावण हरण कियो तव नारी ॥ सुनत स्याम घन नींद विसारी
चौंकि कह्यो लक्ष्मण धनु देहू ॥ देख भये जसुदहि संदेहू ॥
छं. ॥ संदेह जननी मन भयौ हरि चौंकि धौं काहे परौ
कहूं दांठ खेलनमैं लगी धौं खप्रमैं कान्हर डरौ
वहुभांति देव मनाय पढिकै मंत्र दोष निवारई
लै पियति पानी वारि पुनि पुनि राई लोन उतारई
दो. ॥ सांझ हितें विरुझाय हरि करी चंद हित आरि
रिझकर कौ धौं ताहितें रह्यो सुरत उर धारि ॥
सो. ॥ वडभागिनि नंद नारि महिमा वेद न कहि सकै।
हरिको वदन निहारि विसरावति त्रियताप दुष
अथ कर्ण छेदन लीला ॥

प्रात नंद उठि हरि पहँ आये ॥ मुख छवि देखन को अतुराये
निसि के छूट नयन अति आरत ॥ हरखे करि सुखत पट टारत ॥
स्वच्छ सेजते वदन प्रकास्यो ॥ छूट तिमिर नयननि को नास्यो
मनहु मयन पै निधि उहराई ॥ फेरि फोरि कै दई दिखाई ॥
धाये व्रजजन चतुर चकोरा ॥ इकटक रहे वदन ससि ओरा ॥
फूली कुमद निसी महि नारी ॥ कहत उठहु सुत मैं बलिहारी
माखन रोटी अरु मधु मेवा ॥ जो भावै सो करहु कलेवा ॥
सद माखन मिसिरी नव आनी ॥ कछु खवाय धोये मुख पानी
देखि वदन छवि महरि सिहानी ॥ कहति नंद सों जसुमति रानी
कनछेदन अब हरि को कीजे ॥ कुतूहल सहित देखि सुख लीजै
खोलि विप्र शुभ दिवस गनायो ॥ जाति कुटुंब सब न्योत बुलायो
कुल व्यवहार रच्यो सब साजा ॥ विविधि भाँति बहु बाजन बाजा

छं॰ बाजी बधाई बिबिधि आंगन नारि मंगल गावहीं ॥
सुर निरषि अति हरषि सुमननि बरषि गोकुल छावहीं
करि प्रथम मुंडन स्याम कौं पुनि करणबेधन बिधि लई
धरि कै सुपारी पान ऊपर बहुरि गुर भेली दई ॥ ॥
हंसत गुरगण सहित बिधि हरि मात उर अति धुकधुकी
अति हि कोमल श्रवण बेधत सकत नाहिंन सन्मुख तकी
भरि सौंक रोचन देत श्रवणनि निकट करि अति चातुरी
है दरम गाये कनक के कहकत्यौ छेदन आतुरी ॥
देखि रोवत जननि लीने बिहसि तबहीं रुकि अली
हंसत नंद सब युवति गावहिं रुमकि भीतर लै चली
कहति सुर बनिता परस्पर धन्य धनि ब्रज भामिनी
नहि नयन की किंकिरी सम हम सकल सुर की कामिनी
दो॰ ॥ करति निछावरि ब्रज बधू धन मणि भूषण चीर ॥
सकल असी सत नंदसुत जहं तहं जाचक भीर ॥
सो॰ ॥ पहिरावत नंदराय ब्रज युवती भूषन बसन ॥
आनंद उर न समाय मनहुं उमग चहुं दिस चल्यौ ॥
नितहीं नव सुद मंगल ताके ॥ मंगल मूरति हरि सुत जाके ॥
जेहि बिधि तात मात सुख पावै ॥ सुख निधान सोई चरित उपावै
जाको भेद वेद नहि पावै ॥ नंद भवन सो कान्ह खिलावै ॥
निज भक्तन हित नर तन धारी ॥ करत बाल लीला सुखकारी ॥
हरि अपने रंग निकट गावैं ॥ नंद भवन भूषण मन भावैं ॥
तनक तनक चरणनि सों नाचैं ॥ मनमन कै किविबिध बिधि राचैं
मंद मंद पग नूपुर बाजैं ॥ ॥ बाल बिभूषण अंग बिराजैं ॥
कबहुं भुजा उठाय बुलावै ॥ धौरी धूमरि गाय बुलावै
कबहूं माखन लै मुख नावै ॥ कबहूं खंभ प्रति बिंब कंपावै ॥

माखनभाग दुहूकरलेई ॥ एकभोंवप्रति विंवहि देई ॥
तासोंकहतलेवको नाही ॥ बारदेत काहेमहि माही ॥
दुरदेखतजसुमति महतारी।उरआनंद करतिअतिभारी

दो ॥हरषिजननिमुखचूमिकेलीनीगोदउठाय॥
परमानंदसुमगनमन सोसुखकिमिकहिजाय
सो॰कौतुकनिधिभगवानकरतचरितनितनितनये
सुन्दरस्यामसुजानब्रजवासिनकेप्रेमवस॥

अथ माटीखानलीला

खेलत स्याम धाम केद्वारे ॥ सोहतब्रजलरिकासंगवारे
अतिसज्ञानसदानिमतिभोरी॥सबकी प्रीति स्यामसंगजोरी

सकवैस सव परम सुहाये ॥ करतवालली लासमुपाये।
गावतहंसत देत किलकारी ॥ लखिलखिसुखपावतमहतारी
निरषि रूप सव ब्रजजन मोहैं ॥ कोटि काम नहिं पटतरसो हैं।
तनपुलकित अति गद्गद वानी। निरषि मनहिं मन महरि सिहा
तवहिं स्यामघन माटी खाई ॥ जसुमति देखि सांटी ले धाई ॥
पकरी भुजा स्याम की नाई ॥ कहतिकहा यह करतकन्हाई
उगलहु वेग वदनते माटी ॥ नाहीं तो मारति हौं सांटी ॥
सवदिन झूठवत है सवग्वालन॥ मोसों सव कहकहि हैलालन
तवही मोहन गनीलग राई ॥ कहति कि मैं माटी नहि खाई
झूठहिं मोको लोग लगावैं ॥ माटी मोको नेक न भावै ॥

दो०॥ झूठ कहत तोसों सवै माटी मोहि सुहाय ॥
नहि मानै जो मातु तू देखि राऊं मुखवाय ॥
दीनो वदन उघारि नयन मूंदि माता निकट
देखि चकित नंद नारि तन की सुरति रही नही

दिखरायो त्रिभुवन मुख माहीं ॥ नभ शशि रवि तारा इक ठाहीं
सर सागर सरिता गिरि कानन॥ सुरसुर नायक शिव चतुरानन
सकल लोक लोलप यम काला॥ महि मंडल सव अगम गजाला।
देषि चरित जसुमति अकुलानी॥ करतें सांटी गिरत न जानी ॥
वदन मूंदि तव हरि दृग खोले ॥ डरसमेत माता सों वोले ॥ +
मैया मै माटी नहि खाई ॥ जसुमति चकित रही अरगाई॥
कहति नंद सों जसुदा रानी ॥ हरिकी कथा न जाति वखानी ॥
मांटी के मिस करि मुखवायो। तीनि लोक तामाहि दिखायो।
स्वर्ग पताल धरणि वन वागा॥ सुरनर असुर विपुल खग नागा॥
अपर सृष्टि कहि जात सुनाहीं। देखी सकल वदन के माहीं॥
मोकौं परत सांच सव जानी ॥ जो कुछ कही गर्ग मुखवानी

चकित नंद सुनि अचरज वानी ॥ मनमन करत विचार विनानी ॥
नंद कहत सुनि बावरी हरि अति कोमल गात ॥
लै सोटी धावत वृथा पुनि पाछे पछितात ॥
अचरज तेरी वात को जानि देख्यो कहा ॥
कुशल रहो दोउ भ्रात राम स्याम खेलत हसत ॥
कहति स्याम सों जसुमति मैया ॥ मैं तेरी बलि हारि कन्हैया ॥
मैं अजान रिस बाचन जानी ॥ ॥ वृथा स्याम तुम को रिस ठानी ॥
जरहु हाथ जिन माटी उठाई ॥ वरहु आखि जिन दोष दिखाई ॥
मधु मेवा दधि माखन छोटी ॥ खात लाल तुम काहे माटी ॥
तू कछे दूध पियो तुम न्यारे ॥ बलकौ वाटिन देहु पियारे ॥
कहत नंद सों जसुमति मैया ॥ तुहौ लालकी दाढी गैया ॥
कमरी कौ पै पियो सुपाला ॥ तेरी चोटी बढै विशाला ॥
सब लरिकन में तो तन माहीं ॥ वेग वैश बल श्री सधि काहीं ॥
मान वचन सुनि कै अनुरागे ॥ ज्यौं त्यौं करि पय पीवन लागे ॥
खिन पीवै खिन खिन कचटोवै ॥ देखि देखि मुख हसत जसोवै ॥
मैया कव बाढै गो चोटी ॥ पहतो है अवही लों छोटी ॥
तू जो कहति है बलि लों हुइहै ॥ छोड़त गुहत गोड़लों जैहै ॥
कितीवार भई पय पियत चोटी वढी न हाई ॥
कहि कहि मूठी बात नित दूध पियावत मोहि ॥
सुनि सुनि भोरी वात सुंदर स्याम सुजान की ॥
जसुमति मन अघात हँसि लीने उर लाय कै ॥

अथ सालिग्राम लीला ॥

भोरहि महर यमुन तट धाये ॥ दरसन करि अति ही सुख पाये ॥
करि स्नान नंद घर आये ॥ पूजा हित यमुना जल लाये ॥

तुलसी दल अरु कमल पुनीता ॥ प्रभु निमित्त अति अति प्रीता
पायं धोय प्रभु मंदिर आये ॥ करी दंडवत प्रेम बढ़ाये ॥ प्र
स्थल लीप पाय सब धोये ॥ पूजा के सब साज संजोये ॥
छाप तिलक सब अंग संवारे ॥ प्रभु पूजा विधि करन संवारे ॥
कुंवर कान्ह खेलत तें आये ॥ देखत पूजा विधि चितलाये ।
विधिवत देव नंद अन्हवाये । चंदन तुलसी फूल चढ़ाये ॥
पुनि अंतर दे भोग लगायो ॥ आरति करि पुनि सीस नवायो ॥
तबही स्याम विहंसि उठि बोले । कहत तात सों वचन अमोले
बाबा तुम जो भोग लगायो ॥ सो तो देव कछू नहिं खायो ॥
सुनि हरि वचन अवण सुषदाई । चितै रहे सुख हंसि नंद राई ।

कहत नंद सुख पाय कै यों नहिं कहिये तात
देवन को कर जोरि कै कुशल रहे जिहि गात ॥
हंसत स्याम सुखदा निनंद सुरूप न जानही
रह्यो तिनहिं सुत मानि करत सु ब्रज लीला सगुन

देखति जननि तहां दुरि ठाढ़ी ॥ मगन प्रेम रस आनंद बाढ़ी
बैठे नंद समाधि लगाई ॥ तब इक लीला रची कन्हाई
सालि ग्राम मेल मुख माहीं ॥ बैठि रहे हरि बोलत नाहीं ॥
ध्यान विसर्जन करि नंद जागे ॥ सालिग्राम न देखे आगे ॥
निरखत चकित चित नंदराई ॥ इष्टदेव किन लिये चुराई ॥
इत उत खोजत पावत नाहीं ॥ भयो बड़ो अचरज मन माहीं
विहंसत हरि के मुख में जाने ॥ देखत महरि महर मुसकाने
सुनहु तात जननी बलि जाई ॥ उगिलहु सालिग्राम कन्हाई
मुख तें तबहिं काढि ब्रज नाथा ॥ दियो देवता नंद के हाथा ॥
हरि के चरित कहत नहिं आवै । बाल विनोद मोद उपजावै ॥
लखि लखि मात पिता पुलकाहीं । देखि देखि सुर सिद्ध भुलाहीं

धन्यधन्य सब ब्रज के बासी ॥ बिहरत जहां ब्रह्म अबिनासी
परते परतें ब्रह्मजो निर्गुण अलख अनूप ॥
सो ब्रज भक्तन प्रेमबस बिहरत बालक रूप ॥
प्रेम मगन पितु मातु निस दिन जात न जानहीं
कौंहू मनन अघात सुनत बचन देखत दरस ॥

अथ अन्हवावन लीला ॥

जसुमति स्याम सहि कह्यो अन्हवावन । सुनतहिं मचल परे मनभावन ।
उवटन ले पाछे गहि बाहीं । लोटि गये हरि मानत नाही ॥
तब जसुमति बहुभाँति दुलारे । मेवलि उठहु न्हाहु जिन प्यारे ।
उवटन पाछे धरे सुराई ॥ फुसलावति सुत स्याम कन्हाई
मेवलि ऐसी आरिन कीनै । जो चाहै सो मोपे लीजै ॥ + ॥
कतहिं लाल रोवै दुखपावै । ऐसो को जो तोहि खिजावै ॥

अतिरिस तें मैं वलित न कीजे ॥ सुन्दर कोमल अंग पसीजे ॥
वरजत हो वरजन विरुझाने ॥ करि करि क्रोध मनहि अकुलाने
धरत धरत धरनी पर लोटैं ॥ गहि माता के चीरन मोटैं ॥ ॥
गहि गहि अंग के भूकन तोरैं ॥ दधि माखन के भाजन फोरैं ॥
धस्यो नपन जल जननी पासै ॥ मान त नाहिं ताहि तें त्रासै ॥
महरि वांह धरि कै तव आने ॥ अवही तेल उवटने साने ॥+॥

नवदुचतो करि मात कों गिरत परत गस भाज
नेक निकट आवे नहीं मन मोहन ब्रज राज ॥
तव चुचकारे मात सो मभेद कहि कहि वचन
मैं वलि आवहु तात नहि आवहु सो जानिहो

तुम मेरी रिस को हरि जानो ॥ मो कोनी की विधि पहि चानो।
जो नहिं आवहु मदन गुपाला। आज तुम्हे मैं वांधों लाला ॥
तवहिं नंद उत तें चलि आये। कहत हरिहि कित सांझहि षिजा
लैक नियाउर सों लपिटाये ॥ वदन चूमि जसुमति पहसाये ॥
कत खिजवत मोहन नहिं अयानी। लेहि यलाय लियेन दरानी ॥
क्यौंहूं यत करी जव पाये ॥ तव उवटन हरि के अंग लाये ॥
पुनि तातो जल स्नान समोयो। दियो न्हवाय वदन शशि धोयो।
सरस वदन लैकै तन पोंछयो। वहुरें वदन सरोज अंगोछयो
अंजन दोऊ हग भरि दीनो ॥ भूपर चरु चरवोंडा कीनो ॥ + ॥
सव अंग के भूषण मंगवाये ॥ क्रम क्रम लालन कौं पहिराये।
ऐसी रिस नहि कीजे कान्हा ॥ अव कछु खाहु जाउं वलि न्हाना
तव तुतरान कह्यो का हैरी ॥ जो मो कों भावे सो देरी ॥ + ॥

कहति जननि या वचन पर मैया वलि २ जाय ॥
जोइ जोइ भावे लाल को सोइ सोइ ल्यावे माय ॥
किये अमित पकवान मैं अपने सुत के लिये ॥

सोवतकहौ बखानजो भावे सोलीजिये ॥

सद माखन सरु दही सजायो ॥ तुह्मरे हितपर सौंटिजमायो
सोवाम्रौटयौ मधुर मलाई ॥ तापर मिसरी पीस मिलाई ॥
गरू पयौ सर अति सरससवारो ॥ तामहि मोट मिरच रुच कारी
खीरवराकरिके दधि बोरे ॥ मानहु चंद अमी मधु खोरे ॥
खुरमा औरु जलेबी बोरी ॥ जेहि जेंवत रुच होतिन थोरी ॥
भरुलाडू बहु भांति सवारे ॥ जेसुख मेलत कोमल प्यारे ॥
अरु गूझा बहु पूरनि पूरे ॥ अतिसुवास उज्जल अति रूरे ॥
बावर घेवर धोत अभोरे ॥ मिसिरी पीसि तल ऊपर बोरे ॥
सुन्दर माल पुवा मधु साने ॥ तमतुरतकरि रोहिणी आने ॥
अतिहीं सुंदर सरस अदरसे ॥ घृत दधि मधु मिल स्वादनसरसे
सरस सवारो दाल मसूरी ॥ अरु कीन्ही सीरा घन पूरी ॥
पूरी सुनके हिय हरि हरषे ॥ तबजेवन पर मन करि करषे ॥

सुनतजसोदा तुरत ही लेआई हरषाय ॥
बलदाऊको टेरिकै लीनो नंद बुलाय ॥
षटरसके परकार जे षरतेजसुदा प्रथम ॥
परसि धरे सब थार जेंवतहारे बलबीर दोउ

जेंवत एक थार दोउ बीरा ॥ हरषि स्याम रुचि राख्यौ सीरा
तब सीतल जल लियो मगाई ॥ भरि झारी जसुमति लैआई ॥
जल अचवावत नयन जुडाने ॥ दोऊ हरषि हरषि मुसकाने
लखजननी हंसि बुरू भराये ॥ तनक तनक कछु मुख परषाये
रचिरचि तजरे पान खवाये ॥ भनिहो अधर अरुणाछ्वै भाये ॥
ठाढे तहाँ सकल ब्रज दासा ॥ लागि रहीं जूठन की आसा ॥
तनक तनक कछु मोहन खायो ॥ ठवसो सो ब्रजदासिन पायो ॥
सखावंद मय ह्वारि पुकारे ॥ खेलन आवहु कान्ह पियारे ॥

ता .. तदरस रस चातिक दामा। हरि अव वर्षिय घन छवि पासा
विनय वचन सुनि हर्षि गुपाला. चले मनोहर चाल रसाला।
लघु लघु ललित चरण कर लाला। कमल नैन उर बाहु विसाला॥
चंद वदन तन छवि घन स्यामा॥ अंग अंग भूषण अभिरामा॥
निरषति छवि नंदलाल को थकित सकल सुखदंद
निह चल चखन चकोर ननु तकत सरद कौ चंद
अति आनंद उमंग मिलि सवन कौं जाय हरि॥
क्रीडत कोटि अनंग क्रीडन वालक वृंद संग
खेलन दूर गये कहूं कान्हा॥ सखिन संग धावत है नान्हा॥
वहुत अवेर भई घन स्यामहिं। खेलत तें आये नहिं धामहिं॥
नंदहिं तात मात मोहि कानन। योहीं सुनत सुहात जु आनन॥
मन अव सेर करत महतारी॥ पलक ओट रहि सकत न न्यारी
देखत द्वार गली मैं ठाढ़ी॥ सुत सुख दरस लालसा बाढ़ी॥
तन छण हरि खेलत तें आये। दौरि मात लै कंठ लगाये॥
खेलन दूर जात कत कान्हा।, मैं वलि तुम्ह अवहीं अति नान्हा
आज एक वन हाऊ आयो॥ तुम नहिं जानत मैं सुनि पायो॥
इक लरिका भजि आयो तवहीं। सो मोसौं वुह कहि गयो अवहीं
वहुतो पकरि लेत है तिनकौ॥ लरिका करि जानत है जिनकौ।
चलहु भाजि चलिये निज धामहिं। यह सुनि टेरि लिये वलरामहिं
कनियां करि लै आई धामहिं॥ वड़ भागिनि जसुमति सुत स्याम
रूप रेख जाके नहीं विधिहूं अंत न पाय॥ ॥
हाऊ सौं डरपाय तिहिं जसुमति राखति लाय
अवस्य भगवानि भावहिं करिकै पाइहै॥
भक्तन के सुखदानि तेहि तैसे जैसे भजहिं॥
ब्रजवीथिन खेलत मन मोहन। हलधर सुवल सुदामा गोहन

और गोप बालक बहु वारे ॥ एक वैस सब हरि के प्यारे ॥ ॥
बालविनोद मोद मन दीन्हे । नाना रंग करत रस भीने ॥ ॥
तारी हाथ मारि सब भाजे ॥ धावत धरत होइ करि बाजे
बरजत बलि हरि तू मत दौरे ॥ लागेहै चोट गोड़ कहु तोरे
तब हरि कह्यौ दौरि मै जानौ ॥ मेरौ गात बहुत बल बानौ
है श्रीदामा जोड़ हमारी ॥ तासौं मारि भजौ मै तारी ॥
बोल उठ्यौ तबही श्रीदामा ॥ तारि मारि भाजहु तुम स्यामा
तबहीं स्याम भजे दै तारी ॥ धस्यौ धाय श्रीदाम हकारी ॥
तब हरि कह्यौ खेलौ नाहि तोही ॥ ठाढ़ो भयो छुऔ तब मोहो ॥
ऐसे कहि हरि ताहि रिसाने ॥ कहत सखा सब स्याम खिजाने
तबतौ कह्यौ दौरि मै जानौ ॥ हारे स्याम बुरो अब मानौ

खेलि चढे बलराम तब इनके माय न बाप ॥
हारजीत जाने नही लरिकन लावत पाप ॥
ऐहे तन कै स्याम रूठहि रुगरत सखन संग
रूठ चले हरि धाम लखि उदास पूछति जननि

मै बलि कौं उदास घर आयौ ॥ कौने मेरो लाला खिजायौ ॥
मैया मोहि दाऊ दुख दीनौ ॥ मोसौ कहत मोल कौ लीनौ ॥
कहा करौ या रिस के मारे ॥ मै नहिं खेलन जात दुआरे ॥
पुनि कहत कौन तेरी माता । को तेरो तात कौन तेरो भ्राता ॥
गोरे नंद जसोदा गोरी ॥ तुम तौ कारे आये चोरी
मोसो कहत देवकी जाये । लै बसुदेव इहा निशि आये
मोल कछू बसुदेवहि दीनो । ताके पलटे तुमको लीनो ॥
ऐसे वाहि कहि मोहि खिजावै । औ सब लरिकन यहै सिखावै
मोही कौ तू मारत धावै ॥ दाउहिं कबहुन खीजइ रावै ॥
रोस सहित सुनु बतिया भोरी । बढत मात उर प्रीति न थोरी

मधुरग्रास लै तात निहोरै ॥ लै बैठे कुसला सु अकोरै ॥
जेवत कान्ह नंद की कनियां ॥ छबि निरखत वदीन सौं नम
बेसन के ब्यंजन विधि नाना ॥ बराबरी बहु शाक बिधाना ॥
मूंग ढरहरी हींग लगाई ॥ दार चना की पीत सुहाई ॥ + ॥
राजभोग को भात पसायो ॥ उज्जल कौल सुगंध सुहायो ॥
बेसन मिले कनक की रोटी ॥ सद घृत बोरी पतरी छोटी ॥
खाव खादि बहु भाति सधाने। दोउ भैया जेवत रुचि माने ॥
मिश्री दधि ओदन मिश्रित कर ॥ लेत स्याम सुंदर अपने कर ॥
खापुनि खात नंद सुख पावै ॥ सो छवि कहत कौन पै आवै ॥

भोजन कै अचमन कियो लै सुरी नंदराय ॥
अपने कर सौं स्याम कौ दीनो वदन धुवाय।
को करि सकै बखान भाग्य जसो मति नंद के
मग्न रह्यौ रुचि मान बाल रूप जिन के सदन

बैठे स्याम नंद की कनियां ॥ पीवत दूध सुन्दर सुख दनियां
बार बार जसुमति समुझावै ॥ हरि सौं अस्तन पान छुड़ावै
कहति स्यों तूं भयो सयानो ॥ मेरी कह्यौ लाल अब मानो ॥
दूध पियत देखत लरिका सब ॥ हसत तोहि नहि लाजन गत अब
जैहैं दांत बिगरि सब तेरे ॥ अजहूं छांड़ि कह्यौ करि मेरे ॥
सुनत बचन मुसकाय कन्हाई ॥ स्तन पान तर सुख लियो छिपाई
आये तबही सखा बुलावन ॥ मीत कह्यो खेलहु मन भावन।
यह सुनि हर्षि उठे वनवारी ॥ मागत दे चौगान कहारी ॥
मथनी के पाछे कहि दीनो ॥ हर्षित स्याम नहाते लीनो ॥ ॥
लै चौगान बटा करि आगे ॥ चले सखन देखत अनुरागे ॥
कहत निस खानि सौं हरि कर पाई। खेलहु गे कहि ठौहर भाई।
खेलन बनि है घोष निकासू ॥ हरषि चले सब सखैं बहु आसू ॥

॥ कान्ह रु हलधर बीर दोउ भये भुजा बरजोर ॥
श्रीदामा अरु सुबलि मिलि जुरे सखा इक ओर
और सखन के वृंद बांटि लिये जुरि जोर जुर ॥
अति आनंद नंद दियो बटा उरकाय महि

अय अपनी घात निलै जाही ॥ एक एक सन पावत नाहीं ॥
इततें उत उततें इत घेरे ॥ बटा मारि चौगानानि फेरे ॥
दौरत हसत खसत उठि मारें ॥ आप आपनी जीत विचारें ॥
जम्यौ खेल अति मगन कन्हाई । देखत सुरगन रहे लुभाई ॥
जीतत सखा स्याम जब जाने ॥ करी खेलतद कछु मचलाने ॥
कहत सखा सब सुनहु गुपाला ॥ रूठत या कौ कौन खियाला
श्रीदामा सौं है तुम हारे ॥ रूठी सौं है खान न्यारे ॥ + ॥
खेलत में को काको सैंया ॥ कहा भयौ जो नंद गुसैंया ॥
तातें तुम गर्वित मन माहिंया ॥ ननक वसत हम तुम्हारी छैंया ॥
अति अधिकार जनावत ताते ॥ तुम्हरे अधिक गाय कछु जातें
अब नहिं खेलहिं संग तुम्हारे ॥ भये सखा सब रिस करि न्यारे ।
खेल्यौ चाहत त्रिभुवन राई ॥ दियो दांव तब पीठि चढ़ाई ॥
जाके गुण गण अगम अति निगम न पावत ओर
सो प्रभु खेलत ग्वाल संग बंधे प्रेम की डोर ॥ + ॥
खेलत भई अबेर जननी टेरत स्याम कौं ॥ + ॥
आवहु धाम सबेर सांझ समय नहि खेलिये
सांझ भई घर आवहु प्यारे ॥ बहुरि खेलियो होत सवारे ॥
आपहि जाय बांह गहि आने । सुभग स्याम तन रज लपटाने ।
बोलि लिये जसुमति बलरामहि । लै आई दोऊ सुत धामहि ।
धूरि झारि लातो जल ल्याई ॥ तेल परसि दीन्हे अन्हवाई ॥
सरस वसन तन पोंछि संवारे । लै गोदी भीतर पग धारे ॥ + ॥

करहु वियारू रुक्कु दोउ भाई ॥ पुनि तुमको रखौ सौढाई ॥
सीरपूरी सरस सवारी ॥ षीर षरी मेवा बहु न्यारी ॥ + ॥
दीन्ही परसि कनक की थारी ॥ बल मोहन दोउ करत वियारी
मिसरी मिले दूध औटाई ॥ से आई तवरो हिरानी माई ॥
प्रेमसहित दोउ जननि जिमावन देषि देषि छवि नैन जुडावत
खान खात मोहन बल खाने ॥ वारहिं वार स्याम जमुहाने ॥
आरस सो कर कौर उठावत ॥ नैनन नींद रूमक रुक आवत
उठहु लाल तब मात कहि धोये मुख अरविंद ।
सौढाये ले सेज पर बलि अरु बाल गुविंद ॥
सोये वाल मुकुंद दोउ भैया सुख सेज पर ॥
जननी अति आनंद सोवत निरखत गोपाल के ।
माखन मोहन को प्रियलागै ॥ भूखो क्षुधा नरहत जब जागै ॥
तेहि बंदीजो गहरु लगावे ॥ नहि माने जो बहु मनावे ॥ + ॥
मैं तुहि जानति बालस्याम की ॥ द्रुग मीचै नवनीत खान की
ले मथनी दधि मथ्यो बिलोई ॥ जव लगि बाल निंद वहि न सोई
भोर भयो जागहु नंद नंदन ॥ संग सखा ठाढे जग बंदन ॥
सुरभी पे हित वच्छ पियाये ॥ पक्षी तरु तज चहु दिस धाये ॥
चंद मलिन उडुगन दुति नासी ॥ निसि निघटी रवि किरण प्रकासी
कुमुदिन सकुची वारिज फूले ॥ गुंजत मधुप लता लगि झूले
दरसन देहु मुदित नरनारी ॥ ब्रजवासी पुरजन सुखकारी ॥
सुनि जननी के वचन रसाला ॥ खोले द्रुग राजीव विशाला ॥
हंसत उठे सतन सुखदाई ॥ मुख छवि देषि मात बलि जाई
तुरि कछु करहु कलेऊ प्यारे ॥ मै माखन मथ धर्यो सवारे ॥
रोटी अरु माखन तनक देरी मा मो हाथ ॥
लै आई जननी तुरत कछु मेवा धरि साथ ॥

करत कलेऊ स्याम माखन रोटी मान आदि ॥
त्रिभुवन पति सुख धाम चार पदारथ हाथ जेहि

अथ माखन चोरी लीला ॥

मैया री मोहिं माखन भावै ॥ और कछू अति रुचि नहिं आवै
मधु मेवा पकवान मिठाई ॥ सो मोकौ नेकउ न सुहाई ॥
ब्रजयुवती इक पाछे ठाढ़ी ॥ हरि के वचन सुन रुचि बाढ़ी ॥
मन मन कहत कबहुं अपने घर । माखन खात लखौं सुन्दर वर
बैठे जाय मथनियां माहीं ॥ अपने करनि काढ़ि कै खाहीं ॥
मैं वर देखहु कहूं छुपाई ॥ कैसे मो घर जाहिं कन्हाई ॥ + ॥
हरि अंतरजामी सब जाने ॥ ग्वालिन मन की प्रीति छिपाने ॥
गये स्याम ता ग्वालिन के घर ॥ ठाढ़े भये जाय द्वारे पर ॥ + ॥
हूलसन देखत कोऊ नाहीं ॥ सब बैठे ताके घर माहीं ॥ + ॥
हरि कौ आवत ग्वालि जानो ॥ परम मुदित अतहीं सुख मानो
रही छलाकि हरि दीठ लगाई ॥ हरि बैठे मथनी ढिग जाई ॥
देखी माखन भरी कमोरी ॥ खान लगे करि अति मति भोरी ॥

निरखि रहे मणि खंभ में हरि अपनी प्रतिछांह ॥
जानि दूसरो ग्वाल तिहिं प्रभु सकुचे मन माहिं ॥
तासों करत सयान कहत लेहु आधो तुमहु ॥
हम तुम एक सयान भलो बनो है संग अब ॥

प्रथम आज मैं चोरी आयो ॥ तुम को देखि बहुत सुख पायो
अब तुम मेरे संग नित आवो ॥ यह काहू सों मति हि जनावो ॥
सुनि सुनि हरि के मुख की बानी ॥ उमगि हंसी ब्रजयुवति सयानी
स्याम चौंकि मुख तासु निहारी ॥ भाजि चले ब्रज खोर मुरारी
अति आनंद ग्वाल मन माहीं ॥ पूछन सखी परस्पर नाहीं ॥

पायौ आज परसौं कछु नैरी ॥ कहा तोहि अति आनंद हैरी
गदगद कंठ पुलक तन नैरी ॥ सो किन कहै कहा सुख केरी
तन न्यारो जिय एक हमारो ॥ हमैं तुम्है कछु भेद न न्यारो
सुन हुं सखी मैं तोहि बनाऊं ॥ जो सुख भयो सो तोहि सुनाऊं
जसुमति सुत सुन्दर सुनु गोरी ॥ आयौ आज हमारे चोरी
खंभ निकट मथनी ही माखन ॥ लियौ निकास लग्यो तेहि चाखन
मैं भीतर दुर देखन लागी ॥ वा मोहन छबि पर अनुरागी ॥
देखि खंभ प्रतिबिंब को मन कछु मकु चे स्याम
अर्धभाग तेहि देत कहि प्रगट करी निज नाम
तबन रह्यो मोहिं धीर हंसी मनोहर बचन सुनि
कह्य कहौं तोहि बीर मन हरि लीनो सांवरे ॥
मोहिं देखि तब गयौ पराई ॥ सखि सो छबि कछु बरनि न जाई
सुनि हरि चरित सखी अनुरागी ॥ अति सुख पाय प्रेम रस पागी ॥
कहति कि मैं देखन नहिं पायौ ॥ सोइ अभिलाष मासु उर छायौ
हरि अंतरजामी सब जाने ॥ सबके मन की रुचि पहिचाने ॥
इहि विधि माखन प्रथम चुरायौ ॥ कीनौ ग्वालिनि को मन भायौ
भक्तवत्सल भक्तन सुखकारी ॥ पुनि मन माहिं यह बात विचारी
अब सब ब्रज घर माखन खाऊं ॥ माखन चोर नाम कहवाऊं ॥
बालरूप मोहि जसुमति जानै ॥ ग्वालिनि प्रेम भक्ति करि मानै
निज भाव करि ग्वाल बखानै ॥ प्रीतिरीति सब मोसो मानै ॥
इनही के हित गोकुल आयौ ॥ करौं सबन के मन को भायौ ॥
यह विचारि हरि निज उर ठाना ॥ भक्त कृपा अंबुज भगवाना ॥
बाल सखा सब निकट बुलाई ॥ तिनसों कह्यो हंसि कहत कन्हाई
माखन लैये चोरि कै सब ब्रज घर घर जाय ॥
कीजे बाल बिहार यौं मेरे मन यह भाय ॥

सुनि हरखे सव ग्वाल देत परस्पर गारि सव ॥
भली कही नंदलाल तुम विन यह वुधि को करै।
चले सखन लै माखन चोरी ॥ एक वैस सव हिन मति भोरी ॥
देख्यौ झांकि झरोखा ओरी ॥ मथति एक ग्वालिनि दधि गोरी ॥
धर्यौ मठा मथनी में जानो ॥ ऊपर माखन है लपटानो ॥
ग्वालनि गई कमोरी मांगन ॥ पाई घात तवहि सुन्दर घन
सखनि समेत ताहि घर आये ॥ दधि माखन सव हिन मिलखाये
छूछी मटुकी डारि सिधाये ॥ हंसत हंसत सव वाहर आये ॥
आइ गई द्वारे सोई वाला ॥ घर सों निकसत देखे ग्वाला ॥
माखन कर मुख दधि लपटान्यो ॥ ग्वालनि यह कछु भेद न जान्यौ
देखि रही हंसि मुख की शोभा ॥ निरखि रूप लाग्यो मन लोभा ॥
चमकि गये हरि सखन समेता ॥ तवहीं ग्वालनि गई निकेता ॥
देखी जाय मथनियां खाली ॥ चकित विलोकत इत उत ग्वाली
घर घर प्रगटी वात यह सखा वृंद लै साथ ॥
चोरी माखन खात हैं नंद सुवन व्रजनाथ ॥
सवके मन अभिलाष चोरी पकरत पाइये ॥
धरियो माखन राख यहै ध्यान सवके हिये ॥
कहति परस्पर ग्वालि सयानी ॥ सव मोहन के रूप भुलानी ॥
माखन खानि देहु गोपालहि ॥ मत वरजौ कोउ स्याम रसालहि
तुम जानति हरि कछु न जाने ॥ वे मोहन है परम सयाने ॥ ४ ॥
कोउ कहति पकरि जो पाऊं ॥ तौ अपने गहि कंठ लगाऊं ॥
एक कहति जो मेरे आवे ॥ तो माखन हम हरि हि खवावे ॥
कहति एक जो मैं गहि पाऊं ॥ तौ हरि को वह नाच नचाऊं
कोउ कहति जो हरि को पैये ॥ तो गहि जसुमति पै लै जैये ॥
इक कहत आज हमारे आये ॥ द्वारहिं ते मोहि देखि पराये ॥

पायौ आज परसों कछु तेरौ ॥ कहा तोहि अति आनंद हेरौ ॥
गदगद कंठ पुलक तन तेरौ ॥ सो किन कहै कहा सुख केरौ ॥
तन न्यारौ जिय एक हमारौ ॥ हमै तुम्है कछु भेद न न्यारौ ॥
सुन हुं सखी मैं नोहि कनाऊं ॥ जो सुख भयौ सो तोहि सुनाऊं ॥
जसुमति सुत सुन्दर सुनु गोरी ॥ आयौ आज हमारे चोरी ॥
खंभ निकट मथनी ही मारवन ॥ लियौ निकासि लग्यौ तेहि चाखन ॥
मैं भीतर दुरि देखन लागी ॥ वा मोहन छवि पर अनुरागी ॥

देखि खंभ प्रतिबिंब को मन कछु सकुचे स्याम
अर्ध भाग तेहि देतकहि प्रगट करौ निज नाम
तब न रह्यौ मोहिं धीर हंसी मनोहर वचन सुनि
कह्यो कहो तोहि चोर मन हरि लीनो सावरे ॥

मोहिं देषि लवगयौ पराई ॥ सरिस सो छवि कछु वरनि न जाई ॥
सुनि हरि चरित सखी अनुरागी ॥ अति सुख पाय प्रेमरस पागी ॥
कहति कि मैं देखन नहिं पायौ ॥ सोइ अभिलाष मासु रह्यौ ॥
हरि अंतरजामी सब जाने ॥ सब के मन की रुचि पहिचाने ॥
इहि विधि मारवन प्रथम चुरायो ॥ कीनो ग्वालिनि को मन भायौ ॥
भक्तवत्सल संतन सुखकारी ॥ पुनि मन माहिं यह बात विचारी ॥
अब सब व्रज घर मारवन खाऊं ॥ मारवन चोर नाम कहवाऊं ॥
बालरूप मोहिं जसुमति जाने ॥ ग्वालिनि प्रेम भक्ति करि माने ॥
मित्रभाव करि ग्वाल बखाने ॥ प्रीति रीति सब मोसो माने ॥
इनहीं के हित गोकुल आयौ ॥ करौं सबन के मन को भायौ ॥
यह विचारि हरि निज उर ठाना ॥ भक्ति कृपा अंबुज भगवाना ॥
बाल सखा सब निकट बुलाई ॥ तिन सों हंसि कहत कन्हाई ॥

मारवन लैये चोरि कै सब व्रज घर घर जाय ॥
कीजे बाल विहार यौं मेरे मन यह भाय ॥

सुनि हरखे सब ग्वाल देत परस्पर गारि सब ॥
भली कही नंदलाल तुम विनय यह बुधि को करै।
चले सखन लै माखन चोरी ॥ एक बैस सब हिन मति भोरी ॥
देख्यौ झांकि झरोखा ओरी ॥ मथति एक ग्वालिनि दधि गोरी॥
धस्यौ मठा मथनी मैं जानी ॥ ऊपर माखन है लपटानी ॥
ग्वालनि गई कमोरी मांगन ॥ पाई घात तबहि सुन्दर घन
सखनि समेत तिनाह्हि घर आये ॥ दधि माखन सब हिन मिलखाये
ढूंढ़ी मटुकी डारि सिधाये ॥ हंसत हंसत सब बाहर आये ॥
आइ गई द्वारे सोई बाला ॥ घर सों निकसत देखे ग्वाला ॥
माखन कर मुख दधि लपटान्यो ॥ ग्वालनि यह कछु भेद न जान्यो
देखि रही हंसि मुख की शोभा ॥ निरखि रूप लाग्यो मन लोभा ॥
चमकि गये हरि सखन समेता ॥ तबहीं ग्वालनि गई निकेता ॥
देखी जाय मथनियां खाली ॥ चकित विलोकत इत उत ग्वाली
घर घर प्रगटी बात यह सखा वृंद लै साथ ॥
चोरी माखन खात हैं नंद सुवन ब्रज नाथ ॥
सबके मन अभिलाष चोरी पकरत पाइये ॥
धरियो माखन राखयहै ध्यान सबके हिये ॥
कहति परस्पर ग्वालि सयानी ॥ सब मोहन के रूप भुलानी ॥
माखन खानि देहु गोपालहि ॥ मत वरजो कोउ स्याम रसालहि
तुम जानति हरि कछु न जाने ॥ वे मोहन हैं परम सयाने ॥
कोउ कहति पकरि जो पाऊं ॥ तौ अपने गहि केठ लगाऊं ॥
एक कहति जो मेरे आवे ॥ तौ माखन हम महरि हि खवावे ॥
कहति एक जो मैं गहि पाऊं ॥ तौ हरि को वहु नाच नचाऊं
कोउ कहति जो हरि को पैये ॥ तौ गहि जसुमति पै लै जैये ॥
इक कहु आज हमारे आये ॥ द्वार रहे तें मोहि देखि पराये ॥

इहि विधि प्रेम मगन सब वाला। सबके हृदय ध्यान नंदलाला
निशिवासर नहि नैक विसारै। मिलिवे कारणबुद्धि विचारै
गये श्याम सूने ग्वालनि घर। सखा सबै ठाढ़े द्वारे पर ॥
देख्यौ भीतर जाय कन्हाई। दधि अरु माखन धस्यो बनाई
सदमाखन देख्यौ धर्यो हरषे श्याम सुजान॥
सखा बुलाये सैन दै लै लै लागे खान॥
इत उन चितवत जात कछु सो मोमन मे कियो
बांटत दधि अरु खात उठि उठि राकत द्वारतन
देखत सो ग्वालनि अनरकरि। सगन भई अनि उर आनन्द भरि
लीन्ही बोलि सखी ढिगवासी। तिन्हे दिखावति हरि सुखरासी
देखि सखी सोभा अति वाढ़ी। इटि सब लोकि सोट है ठाढ़ी
किहि विधि है दधि लेत कन्हाई। सखन देत अरु आपुन खाई
वदन समीप पाणि अति राजे। माखन सहित महाछवि छाजे
लै उपहार जलज मनो नाई। मिलत चंद सो वैर विहाई॥
गिर गिरपरत वदन ते ऊपर। द्रवदधि सुत के बुंद सुभगतर।
मनो प्रलय जल सागम हर्षत। इंदु सुधा के कनका वरषत॥
सुख छवि देखि थकित व्रजनारी। कहत न बने रही उरधारी
वाल विनोद मोद मन फूली। भई सिथल सब तन सुधि भूली
वस्जन कौ अस्फुरत नवानो। रही विचारि विचारि सयानो
गये ठगौरी लाय कन्हाई॥ रही ठगी सी सब सुख पाई॥
विश्व भरन पोषण करन कल्पतरो वरमान
सो प्रभु दधि चोरी करत प्रेम विवस भगवान
नित उठि करत विहार व्रज मे घर घर सांवरो
व्रजजन प्राण अधार माखन चोरी व्याज करि
श्याम एक ग्वालनि घर आये। चोरी करत पकरि तिन पाये

कहत बहुत तुम करी ढिठाई ॥ अब तो घात परे हो माई ॥
निसि वासर मोहि बहुत षिजायो दधि माखन सब मेरो खायो
दोउ भुज पकरि कह्यो कित जैहो ॥ दधि माखन दै छूटन पैहो ॥
ताके सुखतन चितै कन्हाई ॥ बोले वचन मधुर मुसकाई ॥
तेरी सौ मैं छुयो न राई ॥ सखा खाइ सब गये पराई ॥ + ॥
चार चितै न चित उर आन्यो ॥ उरते रोस जात नहिं जान्यो ॥
सुनत मनोहर हरि की बतियां । लिये लगाय ग्वालनी छतियां
बैठो स्याम जाउं वलिहारी ॥ मेल्या कु दधि खाहु विहारी
हरि कौ लेन चली दधि गोरी ॥ हरि हंसि निकसि गये ब्रज खोरी
रही ठगी सी ग्वालनि भोरी ॥ मन लै गये सांवरे चोरी ॥ - ॥
हरि गये और ग्वालनी के घर ॥ देख्यौ नायन कोऊ भीतर ॥
मारवन काढि निसंक ह्वै लागे खान कन्हाइ
ग्वालनि आवति जानि हरि तव उठि रहे छपाई
ग्वालनि घर से आइ मथना ढिग ठाढी भई
भाजन रीतो पाय चकित विलोकत चहूं दिस
अवही गइ आइ इन पावत ॥ आयो माखन कौन चुरावत
भीतर गई तहां हरि पाये ॥ पकरी भुजा भये मन भाये ॥ +
तब हरि कही निजलाम लजाये । नैन सरोज कछुक भरि आये
देखि वदन छवि आनंद हीके ॥ दीन्ह जानि भावते जीके ॥
भयो ग्वालनी मन परहुलासा ॥ कहति चली जसुमति के पासा
जो तुम सुनहु जसो सति माई ॥ हंसि है सुनि हरि को लरिकाई
आज गये हरि मो घर चोरी ॥ देखो माखन भरी कमोरी ॥
मैं गई आइ अचानक जवही ॥ रहे छिपाय सकुच के तवही ॥
जव मैं कह्यो भवन मैं कारो ॥ तव मोहि कहि निज नाम निहारो
लये नन लोचन भरि आंसू ॥ तव मैं कानन नेरो सासू ॥

सुनतस्यामसवरोहिणीकानियां। सकुचतहसतमदमुसकनिय
ग्वालिविहसिहरितनडरवायो॥ मास्वनचोरपकरि मैपायो
करोंनोयकीदावरीबांधौअपनेधाम॥
लायलियेउररोहिणीबाधसकेकोस्याम॥
जसुमतिउरआनंदबालचरितसुनुस्यामके
कहतिसुनोनंदनदऐसोकामनकरहसुत।
सुनिइकसहगयनंददुलारे॥ देखिफिरेतहांग्वालदुवारे॥
तवहरिरसीबुद्धिउपाई॥ फांदिपरे पिछवारेजाई॥+॥
सूनीभवनकहूकोउनाही॥ मानहुंइनकीरजसदाही॥
भाडेमूंदतधरतउतारत॥ दधिअरुमास्वनदूधनिहारत।
रेनजमायौगोरसपायौ॥ लगेखानमनुआपुजमायौ॥
आहटसुनियुवतीघरआई॥ रुलकतदेखेकुंवरकन्हाई॥
अधियारेघरस्यामगयेदुरि। दधिमटुकीढिगबैठिरहेमुरि।
सकलजीवदरसतरवासी॥ तहांकछुचोटीपरकासी॥+॥
ग्वालनिहरिकोढूंढनहेरै॥ पावतनाहीधामअंधेरे॥+॥
कहतिअवहिंदेख्योनंदनंदन। कितहिंगयोपछतानमनहिमन
परिगयेदीठओटमथनीके। सुंदरस्यामभारागथनीके॥
तवहींग्वालनिभुजगहिलीन्हो। कहतबहुतिसवतोमैचीन्हीं
कहोकहांचाहतफिरतधामअधेरेमाहि॥
बूझतवदनदुरावते सूधेचितवतनाहिं॥॥
दधिमथनीमेहाथअवकहाउतरवनाइही
सखानहीकोउसाथकहियेअवकैसीवने॥
मैजान्यौयहघरहेमेरो॥ ताधोकेढूतक्हेगयौफेरो॥+॥
दृष्टिपरीचेंटीदधिमाही॥ कढनिलगयोतिन्हैसुहिठाही
सुनिमृदुवचनग्वालिमुसकानी। तुमहौरतिनागरहरिजानी

उरलगाय सुखचुंवन कीनो॥ विधिहिमनायविदाकरिदीनो
हरिदरसन विनक्षरा न सुहाई।उरहनमिसजसुमतिपहंआई।
सुनहुमहरिनिजसुतकी करनी॥करतअचकरीजातनवरनी।
नितप्रतिकरतदूधदधिहानी॥कहंलगकरैकान नंदरानी॥
मैंअपने मंदिरअंधियारे॥ माखनधरयौदुराय संवारे॥+॥
सोईढूंढिलियौहरिजाई॥अतिनिशंकनहिनेकडराई॥
वूंऊनरतुरतवनायौ॥ ॥चेंटीकाढनिकौकरनायौ॥+॥
सुनिग्वालनिकेवचनमयानी॥ हंसिकेवोलिलियौनंदरानी
जसुमतिकहनिस्यामसौंप्यारे।परघरकाहे जातलला रे
ममलोचनआगे सदा खेलहु सखनवुलाय
तुम्हरेवालविनोदलषि मेरो हियो सिराय॥
मोपैलीजे स्याम दधि माखन मेवा मधुर॥
सवककु मेरे धाम परघर जाय वलायनुव
माखन माग्यौ कुंवर कन्हाई।मुदित मात तुरतहि ले आई
लगीखवावन हिय हरषानी।स्याम कह्यौ खैहौं निज पानी
दियौहाथधरिभरिके दौना।चले खान खलत हरि लौना।
सखन संग खेलनवन माली॥ यमुना जाति सखी इक ग्वाली
आय चलीता केघर माहीं॥ पूछतवाल कौन है काही॥+॥
लखेनहाशिशुदोयश्रयाने।भीनरद्वारेखनेरोयडराने॥
इतउत देख्यो गोरस नाहीं॥ऊंचे धरयो सिकहरन माहीं
तवमनमोहन रच्यो उपाई॥आनितहांइक खल सौं धाई।
तापरएक सखावैठारी॥ ताकेकंधचढे वजवारी॥ ॥
ऐसी विधिकरि गोरस पायौ।दधि माखन सवही मिलिषायौ
हंडारिवछरु सवछोरे॥ दियेनिकासवनही की ओरे॥
महीकिरकिलरिकनडरपाई।चलेअगनकरिसवहीकन्हाई

सुनतस्यामसघरोहिरणीकानिया।सकुचतहसतमदमुसकनिय
ग्वालिविहसिहरितनडरवायौ॥माखनचोरपकरिमैं पायौ

करौंनोयकीदावरीबांधौ अपनेधाम ॥
लायलियेउररोहिरणीबाधसकैकोस्याम ॥
जसुमतिउरआनदवालचरितसुनुस्यामके
कहतिसुनोनदनदऐसोकामनकरहुसुत।

सुनेइकएहगयनंदद्दुलारे॥देखिफिरेतहाग्वालदुवारे॥
तवहरिऐसीबुद्धिउपाई॥फादिपरेपिछुवारेजाई॥+॥
सूनौभवनकहूकोऊनाही॥मानहुइनकौराजसदाही॥
भांडेमूंदतधरतउतारत॥दधिअरुमाखनदूधनिहारत।
रैनजमायौगोरसपायौ॥लगेखानमनुआपुजमायौ॥
साहटसुनियुवतीघरआई।रलकतदेखेकुंवरकन्हाई॥
अंधियारेघरस्यामगयेदुरि।दधिमदुकीढिगवैठिरहेसुरि
सकलजीवउरअंतरवासी॥तहांकछुचोटीपरकासी॥+॥
ग्वालनिहरिकौडूतउनहेरे॥पावतनाहीधामअंधेरे॥+॥
कहतिसवहिदेख्यौनदनदन।कितहिगयौपछुतातमनहिमन
परिगयेदीठओटमथनीके।सुंदरस्यामप्राणगथनीके॥
तवहींग्वालनिभुजगहिलीन्हो।कहततुहींअवतौमैचीन्हीं

कहौकहाचाहतफिरतधामअंधेरेमाहि॥
वूझेवदनदुरावते सूधेचितवतनाहिं॥॥
दधिमथनीमैहाथअवकहाउतरवनाइहौ
सखानहीकोउसाथकहियेअवकैसीवनै॥

मैजान्यौयहघरहैमेरौ॥ताधोकेइतकैगयौफेरौ॥+॥
दृष्टिपरीचैंटीदधिमाही॥काढनिलग्यौतिन्हैइहिठाही
सुनिमृदुवचनग्वालिमुसकानी।तुमहौरतिनागरहरिवानी

उरलगाय मुखचुंबन कीनौ॥ विधिहि मनाय विदा करिदीनै
हरि दरसन बिन कछु न सुहाई। उरहन मिस जसुमति पहं आई।
सुनहु महरि निज सुतकी करनी॥ करत अचकरी जात न बरनी।
नित अति करत दूध दधि हानी॥ कहंलग कहै कान नंदरानी॥
मैं अपने मंदिर अंधियारे॥ माखन धरयौ दुराय संवारे॥+॥
सोई ढूंढि लियो हरि जाई॥ अति निशंक नहि नेक डराई॥
बृंद ऊनर तुरत बनायौ॥ ॥चैंटी काढनि कौ कर नायौ॥+॥
सुनि ग्वालनिके बचन सयानी। हंसिकै बोलि लियो नंदरानी
जसुमति कहति स्याम सों प्यारे। परघर काहे जात लला रे

ममलोचन आगे सदा खेलहु सखन बुलाय
तुम्हरे बाल बिनोद लखि मेरो हियो सिराय॥
मोपै लीजे स्याम दधि माखन मेवा मधुर॥
सेवक कु मेरे धाम परघर जाय बलाय तुव

माखन माग्यौ कुंवर कन्हाई। मुदित मात तुरतहि लै आई
नवनीत लावन हिय हरषानी। स्याम कह्यौ खैहौं निज पानी
लियौ हाथ धरि भरिके दोना। चले ग्वाल खेलन हरि लौना।
सखन संग खेलन बन माली॥ यमुना जाति सखी इक ग्वाली
आप चले ताके घर माहीं॥ पूछत बाल कौन है काही॥+॥
लखे नहा शिशु दोय अयाने। भीन रहा खेने रोय डराने॥
इत उत देख्यो गोरस नाहीं॥ ऊंचे धरयौ सिकहरन माहीं
तब मनमोहन रच्यौ उपाई॥ आनि तहां ऊखल सों धाई।
तापर एक सखा बैठारी॥ ताके कंध चढे बनवारी॥ ॥
ऐसी विधि करि गोरस पायौ। दधि माखन सबही मिलि षायो
दूध डारि बछरु सब छोरे॥ दिये निकास बनहीं की ओरे॥
मही छिरकि लरिकन डरपाई। चले आगन करि सब कन्हाई

घरघरकरतविलासनानभेपदिखायहरि
ब्रजजनपरमहुलासदेखिचरितगोपालके

देषीस्यामग्वालिइकठाढी ॥ गोरसमथतिमातछविवाढी
डोलततननदंघरचौसिरअंचल ॥ वेनीचलतपीठपरचचल
जोवनमदमातीइकदानी ॥ करपकरतदुहुंकरनमथानी
कृतरतभगमोरतिरूकमोरी ॥ गोरेअंगदिननकीथोरी ॥
मढीउरोजनिअंगियागाढी ॥ मनहुकामसांचेभरिकाढी ॥
रीरुरहेलाषिनंददुलारे ॥ लागेखेलननासुदुआरे ॥ + ॥
फिरषितइग्वालनिहुरेतन ॥ परिगयेइसनस्यामसुन्दरघन
वोलिलियेहरुवेसूनेघर ॥ लियेलगायउरसोसुन्दरवर ॥
उमगअंगअंगियारदरकी ॥ निहिअवसरसुधिरहीनघरकी
नवहीसुन्दरस्यामसुजाना ॥ भयेवरषद्वादशअनुमाना ॥
सोछविदेषिइकीव्रजनारी ॥ बहुरिभयेशिशुरूपमुरारी ॥
हरिकेकौतुकअतिसुखदाई ॥ देषिरहीमतिगतिविसराई ॥

माखनलेतवस्यामसुखधरनिआपनेपान
अतिआनदउमगउरविसरीग्वालिसुजान
रसिकसिरोमणिस्यामभाखनखायरिझायतिय
आयेअपनेधामछविसागरनागरनवल ॥

मनहरलीनोकुवरकन्हाई ॥ विनदेखेरहोनजाई ॥
उरइनकेमिसग्वालिसयानी ॥ आईदेखनहरिसुखदानी ॥
सुनहुमहरिसुतकेगुणजैसे ॥ कहाकहौंकहेजाननतैसे ॥
माखनखायमहीढरिकायौ ॥ थोलीफारिअवहीभजिआयौ
गोरसहानिसहीनहिंजाई ॥ अवकैसेसहिजातखुटाई ॥
बीचहिवोलिउठेवनमाली ॥ झूठहिमोहिलगावतिग्वाली
खेलततैमोहिलियेबुलाई ॥ दोउभुजभरिलीनोउरलाई

मेरे कर अपने उर धारी ॥ आपुन हीं चोली पुनि फारी ॥
माखन आपहिं मोहिं खवायौ। मैं कब दही मह्यौ हरि कायौ
अति भोरो सुनि हरि की बानी॥ जसुमति ग्वालनि सौं रिस ठानी
जानति ह्वौं जु कटाछ तिहारो ॥ अति भोरो सुत मेरो वारो ॥+ ॥
दै दै दगा बुलावति ताही॥ सोई सोइ करति जो भावत जाही

बोलि बोलि निज निज भवन भेंटति भरि भरि अंग
मेरे भोरे बालकौं ग्वालनि निलज निशंक ॥
तापर उर नख लाय फिरति दिखावति लाज तजि
कान्है दोष लगाय आपुन अति भोरो भई ॥

नित उठि उरहन लै उठि धावै॥ विना भीत ही चित्र बनावै ॥
नित करि करि मेरे ग्रह आई॥ रहत स्याम तन दीठ लगाई
मेरो पांच वरष को कान्हा ॥ अजहुं रोय पय मागत नान्हा
कहा तू जोवन के मद माती॥ हरि के संग फिरति इठलाती।
ग्वालनि सुनत जसोमति वैना। मन हरि लीन्हो राजिव नैना
आनन गोस प्रीति मन माहीं। ऊतर देत वनत कछु नाहीं ॥
कछु मन ऊतर कहि रिस पाई। चली भवन उर राखि कन्हाई
जसुमति यहै सिखावति स्यामहिं कत ही जात पराये धामहिं
ये सब गोरस की मद माती॥ फिरति ढीठ ग्वालनि इतराती॥
नित उठि उरहन देति विहाने। सुख संभारि नहि बात बखाने
कवि उपजे तुह्मरे मन जोई ॥ मोपै मागि लेहु किन सोई ॥
कहि कहि मधुर वचन निज नाता। सुख उपजावहु मेरे गाता

अपने हि आंगन खेलिये सखन सहित दोउ भाइ
मुहि सुख दीजे आपने बाल विनोद दिखाइ ॥ ॥
सुन्दर घन ब्रजनाथ कोटि काम शोभा हरण ॥
गोप बाल लै साथ करत बाल लीला ललित ॥

महरि कहति चली जाहि इहांते ॥ मै जनति सब तुम्हरी बातै ॥
हरिके चरितकहा कोउ जानै ॥ ग्वालिनि तनहु रिसु मुसकानै
हरितें हारि चली गृह ग्वाली ॥ वुधि कर जीते श्यामत माली ॥

वहुरि गये इक ग्वालि घर मनमोहन घनश्याम
सखन सहित हरिषत भये मनौ पायो धाम ॥ ॥
सब घर लियो ढ ढोरि माखन खायो चोरि हरि
भाजन डारे फोरि गोरस दियो लुटाय महि ॥

सो वतिलरिकानि चुटकि जगाये। महो छिरकि इरपाय रखाये
वडौ माट इक घीकौ पोरवौ ॥ वहुत दिननिकौ चिकनौ चोखौ
सोऊ फोरि कियो वहु टूका ॥ चले हंसत सब मिलि दै कूका ॥
आइ गई ग्वालनि तेहि काला। निकसत धरि पाये नंदलाला।
देख्यो घर वासन सब फोरे ॥ रोवत वाल मही सों वोरे ॥ + ॥
दोउ भुज गाढे गहि लीन्हे ॥ जाय महरि ढिग ठाढे कीन्हे ॥
कहति सरोस जसो मति आगे। अब पत रहि है या व्रज त्यागे।
ऐसे हाल किये गृह मेरे ॥ सुनहु महरि लक्षण सुत केरे ॥
माखन खाय दही ढरिकायो। मही छिरक वालकन रुवाये।
वासन फोरि धरे सब घर के ॥ उपज्यौ पूत सपूत महर के ॥
घीकौ माट जुगनि कौ राख्यौ ॥ सोऊ फोरि टूक करि नाख्यो।
चलहु दिखाऊं घर कौ हाला ॥ राखहु वांधि आपनो लाला।

जननी खीजति कान्हकों करत फिरत उतपात ॥
नित उठ उरहन सहत हौं तू नहिं मानत वात ॥
वडे वापके पूत चोर नाम प्रगट्यो जगत ॥ ॥
उपजे पूत सपूत नाम धरावत तातकौ ॥ ॥

जननी के खीजत हरि रोये ॥ भरि आये नैनन के कोये ॥
रुठहि मोहिं लगावति झगरी। मैंने ख्याल घरी है सगरी ॥

जसुमतिग्रापुनिदेखिकन्हाई ॥ वदनपोंछिलीनोंउरलाई ॥
कहतिसवैयुवतिनयहभावै ॥ तिनहीं नितउठिमोरहींआवै ॥
मेरेवारेहिदोषलगावै ॥ झूठहिउरहनमोहिसुनावै ॥
कबहिंगयोतेरेदधिकाजे ॥ भूषदही माखन के काजे ॥
धन मानीसुत रानी डोलैं ॥ सकुचाते नाहिं सवारिन बोलैं ॥
ऐसोकान्हनन्दकसौ माई ॥ ताहि रवा पति रूठ लगाई ॥
कबहरितेरीमाखनलीन्हों ॥ मेरे बहुतदई को दीन्हों ॥
कहाभयोघरगयौतिहारे ॥ छियौतनकदधि बालक बारे ॥
ग्वालनि सुनिजसुमतिकीवानी ॥ कहति महरि तुमउलटिरिसा
नितउठि होयजासुकीहानी ॥ सोकोंध्यानकहै नंदरानी ॥

तुमकछुलावत खोरकीलेहु आपनेगाउ ॥
जह्मोबसे नहिपति रहे तजनकह्यौसोगाउ
पूतहिदेतिपठायभहिहाईघरघरकरत ॥
खरहनदैन रिसाय कोवसिहै ऐसे नगर ॥

सखाभीरलैपैठनधाई ॥ आपखाइतौ सहिये माई ॥
जोकछु गोरस घरमैं पावै ॥ कछु डारै कछु सखनलुटावै ॥
ऐहम्सौं सहै नित्यकीहानी ॥ कबलो करै नंदकी कानी ॥
एकदिन मेरे मंदिर आयौ ॥ मोकौदेखत वदन दिरायो ॥
जवमै सकुचल पकरनधाई ॥ नवकेगुण कहा कहौं सुनाई
भाजिरह्यौदुरिदेखनजाई ॥ मैंपौढीअपनेगृह आई ॥
हरेहरेआये फिरिहाने ॥ चोटापाटी बांधि पराने ॥
सुनमैया याकेगुण मोसे ॥ यह सब झूठ कहति हौ तोसे ॥
खेलत ते मैं ह्यि लियोबुलाई ॥ मोपै दधिकी चोटि लगाई
टहलकरै गै याकेघरकी ॥ यहसोवै पति संग निधरकी ॥
सुनतवचनजसुमतिमुसकानी ग्वालनि [illegible] मोसिजान

सुनहुं महरि सुतके गुण काने। समु रहु हैं भोरे के स्याने ॥
करत फिरत उतपात अति सब ब्रज घर घर जाय
नित उठि खेलत फाग सी गरिया वन चल जाय
बाहुर तरुण किशोर बोलत वचन विचित्रवर
इहां होत शिशु भोर तुम सच कत मानत नहीं ॥
यौ कहि चली ग्वालनी धामहिं। जसुमति वरजनि पुनि २ स्यामहि
घर गोरस जिनि जाहु पराये ॥ नानरि सन उर हूं नौं लाये ॥
लघु दीरघता कछु नहिं जाने ॥ रूगरो आय रूठ सब ठाने ॥
नौलख धेनि दूधके तेरे ॥ औरु बहुवन चरे अनेरे ॥ + ॥
तू कत माखन खात चुराई ॥ छांडि देहु अब यह लरिकाई
यौं कहि जननी कंठ लगायौ ॥ सुन्दर स्याम हरख तब पायौ
खेलन गये बहुरि नंदलाला ॥ किये जाय पुनि सोई ख्याला
अपर ग्वालि उरहन ले धाई ॥ आई जसुमति पहं रिसपाई
तेरे कान्ह मेरो माखन खायौ ॥ सखन सहित अबही भजि आयौ
मैं गई जमुन भरन को पानी । दुपहर चोर सत्व घर जानी ॥
गयो भवन मैं खोलि किवारी ॥ छीकन तें दधि लियो उतारी ॥
खायो सुराय बहायो पराने ॥ बारक द्वै बरजौ नहिं माने ॥
कीन्हो अति ही लाडलो लाड लडाय बहूत ॥
अबही ते रद गकरत जायो अनोखो पूत ॥
सुनि ग्वालिनि के बैन कहति जसोमति कान्ह सौं
सिखयौ मानत नैं नलै सटिया छादति भई ॥
माखन खात पराये घर को ॥ मेरे रहत जहां लहं ढ र को ॥
नित प्रति मथियत सहस मथानी। तेरे कौन वस्तु की हानी
कितने आहिर जियत घर मेरे ॥ बेचन खात मही बहुतेरे ॥
पूत कहावत नंद महर को ॥ चोरी करत उधारन घर को

मैया मैं नहिं माखन खायो ॥ मेरे वदन सखन लपटायो
भाजन उंचे छींकन पहायो ॥ समुझि देषि मैं कैसे पायो ॥
मैं येनान्हे हाथ पसारी ॥ किहि बिधि माखन लियो उतारी
मुख दधि पोंछ तकहत कन्हाई दोना पाछे पीठि दुराई ॥
धरि सांटी जसुमति मुसकानी ॥ गहि उरलाय लियेसुषदानी
बालविनोद मोद मन मोह्यो ॥ निरखत वदनजासु तन सोह्यौ
भक्ताधीन वेद यश गावे ॥ सोहरि भक्त मताप दिखावे
जसुमति को मुख निरषिय गाथा विसरी शिव मुनि ब्रह्म समाथ॥
धन ब्रजवासी धन्य ब्रज धन धन ब्रज की गाय ॥
जिनको माखन चोरि हरि नित उठ घर २ खाय
रहे सफल सुर भूल ब्रज विलास हरि को निरषि
हर्षहि वर्षहिं फूल धन्य धन्य ब्रज धन्य कहि
खाई कहति सोर इक ग्वाली ॥ सुनहु जसो मति सुत की चालो
भाजगये मेरे भाजन फोरी॥ माखन खाइ मही महिं ढोरी ॥
हाक देत पैठत घर माही ॥ काहूं विधि कोरे मानत नाही ॥
सखा सग लीन्हे इक ठोरी ॥ नाचत फिरत सांकरी खोरी
बाट घाट को उ चलन पावे ॥ गारी दें दे सवन वुलावे ॥
गोरस हानि करत है सिगरो ॥ कहं लग कीजे तिन उठ झगरो
घर घर फिरत फिरत सुत चोरी॥ ऐसी विधि वसि है ब्रज कोरी
सुनन गोपिका की रिसवानी ॥ कहति स्याम सों नंद की रानी
तू नहिं मोहि डरात मुरारी ॥ वकत वकन तोसों पचिहारी ॥
खटरस धरे भरे घर माही ॥ ताते तू ले खात क्यो नाहीं ॥
घर घर चोरी को नित जाई ॥ देत उरहनो ग्वालि सवाई ॥
मोको कृपण कहत सव भाई ॥ निरे घर ढीट हुन पघाई
सुनि सुनि लज्जा नि मरति मैं तू नहि मानति बात

अब तौहि रारवौं वांधिकै जानी तेरी घात
सुनुरी ग्वालिन वात कहे देत अब तोहि मै
जवहीं पावहु घात मेरी सौं यह मारियो

अबते मोकहं वहुत खिजाई॥ सांटिनि मारि करौ पहुनाई
अजहं मानकह्यो करि मेरो॥ तू घर घर मति फिरो अनेरो
जननी रिसलाख श्यामडराने। अव नहिं जैहौं धाम विराने
यौं कहि निकरि गये हरि द्वारे। खेलत सखन संग गलियारे
तबहीं ग्वालि और इक आई। सो जसुमतिसौं कहति सुनाई
नंद महरि सुत भलो पढायो॥ ब्रज घर वीथिनि सोर मचायो
मारि भजत काहू के लरिका॥ खोलत है काहू को फरिका।
काहू को दधि माखन खाई॥ काहू के घर करत भढाई॥
गारी देत सकुच नहि मानै॥ गैल चलत हरि रगरो ठानै
कहं कहं हरि के गुण न वतैये। तोसौं उरहन देत लजैये॥
कछु टोना सो पढि करि आई॥ जो दुभावत सो दुकहत कन्हाई
पीताम्बर ओढत सिरनाई॥ अचल देहै सुरि मुसकाई॥

तेरी सौं तोसौं कहति भै सकुचति यह वात॥
तेरो मुख हरि लखत हीं सकुचित नक ह्वैजात
नेकु दिखावहु आंखि नहिं अवतें एहुंग भले
कवलगि कहिये राखि करत अचकरी श्यम अति

॥ अथ दावरीवंधनलीला

जसुमति सुनि हरि के गुणगाथा॥ रिसकरि उठि सांटी लै हाथा।
कहति जो ऐसी रिसमै पारूं॥ तो हरि की गति तुमहिं दिखारूं
कैसे हाल करौं हरि केरे॥ लागे तात आज कछु मेरे॥ +॥
कांढो नहीं आज विन मारे॥ भये श्याम अव वहुत दुलारे

रहि घत रषाइ इक गोपी ॥ ताहू गहे हरिकी सुख कोपी ॥
भत्यौ मतहरि सूधौ सुत जायो । ब्रोलैहार खोलि दिखरायौ ॥
किन नहि सुतकौ लाड़ लड़ायौ ॥ कौने नही कविजकरि आयौ ॥
तेरी कछू भधिकरी माई ॥ ब्रजतिनाहिन नेक कन्हाई ॥
जसुमति हरिकौ भुजगहिलीनौ । कहति प्रकृति सपनौ तमकीनौ ॥
हरुवै सटिया ढैकलगाई ॥ साजमांधि मेटैलगाई ॥ ७ ॥
गहे भुजा सुवकी वितनानी ॥ रुतड़त जुसो जाने नंदरानी ॥
हरिजननी डरकोंपनिहारी ॥ मन मन विहसति कौतुकगारी ॥

अगिन प्रेरि त्रिभुवन धनी दियौ सीरवफलाय ॥
जसुमति लखित जिहरि भुजा लगी संभारन जाय ॥
इहि विधि भुजा छुड़ाय दधि भाजन फोरनि लगे ॥
माखन मही ढरकाय गोरसदियौ लुटायसब ॥

रिसपरिस धौरे उपजाई ॥ जानि जननि अभिलाष कन्हाई ॥
देखि जसोमति अति रिस पागी । पकरि स्याम कौ बांधन लागी ॥
गर्भ जानि नहि दाम समाई ॥ सब रजु है अंगुरी घटि जाई ॥
पुनि पुनि जसुमति और मगावे । हरि केतन सब ओछे आवै ॥
देखि जसोमति अति रिस वाढी । मनपछितात ग्वालनी ठाढी ।
देपि सखी जसुमति बोरानी ॥ हरिकौ वाधन चहत भयानी ।
हरिकौ त्रिभुवन पति नहि जाने । जिनतैं सकल कलेश नसाने ॥
अखिल ब्रह्मांड उदरगे जाके ॥ वाधति मतहरि उदर सुताके
ब्रह्मा शिव सनकादिक ज्ञानी । इनहूं जिनकी गति नहि जानी
जलथल जिनकी योति समानी । कहीगर्ग सब प्रगट बपानी ॥
सुखमें त्रिभुवन दियो दिखाई ॥ तहि परपर नीतन आई ॥
तिनो हिं देप वाधत नदरानी ॥ अपरज अथान जाति बषानी
आप बंधावत प्रेम वस भक्तन छोरति फंद ॥

प्राण दीजिये वारि मोहन मदन गुपाल पर ॥

तेरो कठिन हियो है माई ॥ कहति एक ग्वालिनि मुसुकाई ॥
ऐसो माखन दधि वहि जाई ॥ बांधे कमलनैन जिहि लाई ॥
जो मूरति शिव ध्यान लगावैं ॥ सपनेहु सुर नहिं देखन पावैं ॥
निगमन हूं खोजत नहिं पाई ॥ सो तैं दे कर तार नचाई ॥
याही तैं तू गर्भ भुलाई ॥ घर बैठे तेरे निधि आई ॥
काहू को सुत रोवत देखी ॥ लेत धाय उर लाइ विशेषी ॥
अब यह कत सीखी चतुराई ॥ निज सुत सों इतनी कठिनाई ॥
कहत एक देखहु नंदनारी ॥ कच के ऊखल बंधे मुरारी ॥
गयो कुम्हलात मुख कुम्हलाई ॥ अति कोमल तन स्याम कन्हाई ॥
भई बेर बीति जुग यामा ॥ हरि के निकट आय गयो घामा ॥
तू लागी यह कहा रज माहीं ॥ है निरदई दया कछु नाहीं ॥
घर को काज कहूं लै प्यारो ॥ जसुमति नेक न हृदै बिचारो ॥

अलक लोल लोचन सजल भये त्रास तें दीन
चितवत लै वदन तन मन मोहन आधीन
कैतिक गोरस हानि जाको तोरत कान तू ॥
वारि दीजिये प्रान रोम रोम पर स्याम के

हरि को देखि सखा इक धायो ॥ तिन हलधर सों जाय सुनायो ॥
अहो राम तुम्हरो लघु भैया ॥ बांध्यो आज जसोधा मैया ॥
काहू के लरिकहिं हरि मारो ॥ जसुमति पै तिन जाय पुकारो ॥
तब तें हरिहि बांधि बैठायो ॥ छोडत नाहिन सबनि छुडायो ॥
सो हम तुमहि जनावन आये ॥ हलधर सुनत तुरत उठि धाये ॥
माता डरत न भीतहि आये ॥ हरिहि देखि लोचन भरि आये ॥
कहत भले दोउ भुजा बंधाये ॥ ऊखल सों बांधे अरु पाये ॥
मैं बरजे कै बार कन्हाई ॥ आजहुं छोड देहु लंगराई ॥

दोउ कर जोरि कहत री मैया ॥ कान्हे कौं बाधो मेरो भैया ॥
स्यामहि छोड़ि पाध घर मोही ॥ और कहा कहिये अब तोहीं
मेरौ प्राण अधार कन्हाई ॥ ताकी भुज मोहिं बांधि दिखाई
कौन कोज गोरस धन भाना ॥ जिहि कारण बांध्यौ घनस्याम
कुपतौ औरओ जनको और देसतो सोय ॥
मृजननी कछु बसन हीं ओ कछु करै सो होय ॥
नेरे यसहरि आहिं को जाने को हि पुन्यते ॥+॥
तू पहि चानत नाहि गोरस हित बांधत हरिहिं
सुनहु बात हलधर तू मेरी ॥ करन देहु सेवा इन केरी ॥+॥
माखन खात परायौ जाई ॥ प्रगटत चोरी नाम कन्हाई ॥
तुम हो कहो कमी कि हि केरी ॥ नौ निधि कौ मेरे घर ढेरी ॥+॥
हौ हारी पच अत दिन राता ॥ मानत नाहिन मेरी बाता ॥+॥
कहा करो हरि सनि छिसि आई ॥ भयौ बहुत ढीठ कन्हाई
मेरो कह्यो नेक नहीं माने ॥ नित उठि देक आपनी ठाने ॥
भोर होत उरहन ले आवे ॥ ब्रज युवतिन ते मोहिं लजावे
जहँ तहँ धूम मचावत जाई ॥ घर महिं रहत सरौ क कन्हाई
तुम हू दोष देत हौ मोहीं ॥ कान्ह रते प्यारो दधि नोही ॥
तोहि तजि और कहौ केहि मैया ॥ और कौन मेरो मान रखैया ॥
तेरी सी जननी सुन मोहीं ॥ उरहन देत रूठ सब तोहीं ॥+॥
हैं सब ब्रज को स्याम पियारो ॥ स्याम सकल ब्रज को रखवारो
दधि माखन पय कान्ह कौ कान्हे की सब गाय
मोह कौ बल कान्ह कौ मृ नहि जानति माय ॥
बलि दाऊ की बात सुनि जसुमति हसि कह्यौ
नमहक भांति देव मात जानत मैं तुमरे परत
दगि हदे रिस हलधर मुसकाने ॥ यह तुम गाते तुम आविन को जाने

कोतुम कोरमबांधनहारा ॥ तुम कैसेतवांधत संसारा ॥+॥
कारन कवनकरत मन माने ॥ सतिरहतजसुमतिहाथविकाने
असुरसंघारनजनदुषमोचन ॥ कमलापतिराजीवविमोचन
भक्तनपेवसरहतसदाई ॥ ताहीतें कछु मौन विसाई ॥+
हरियमलाअर्जुनतनहेरे ॥ मनमनकहतसदायेमेरे ॥+॥
अवहीं आजु इन्हें उद्धारों ॥ दुसहस्रापमुनिवरकोटारों ॥
इनहीके हितभुजावंधाई ॥ परसिविटपअवदेहु गिराई
दारुणदुखइनकौसवटारौं ॥ इहिमिसकरिबंधननिरवारौं
भक्तवत्सलहरिदीनदयाला ॥ करुणासिंधुअगाधकृपाला
भक्ताधीनवेदयशगावे ॥ पावनपतितकहावें वाने ॥ +॥
भक्त हेतु नाना तन धारी ॥ करतचरितभक्तनसुखकारी ॥

ब्रजवासीप्रभुभक्तहितआपवंधायोदाम
ताहींदिनतें प्रगटहैदामोदरसोनाम ॥
नंदनंदनघनश्यामजनरंजनभंजनविपति
मेटतजिनकोनामपापश्रापत्रयतापदुष

जसुदावाहिरछांडिकन्हाई ॥ लागीमथनिदधिभीतरजाई
कहनवचनरसरसिकलपटाने ॥ खातफिरतदधिधायविराने
खटरसछांड़िआपनेधामा ॥ चोरीप्रगटकरतहेनामा ॥
मांटेभजतब्रजलरिकनजाई ॥ जहांतहांब्रजधूममचाई ॥
रहतुमहूहलधरचुपसाधी ॥ इनकी मेटनदेहुउपाधी ॥
ऊखलसों वांधेवनवारी ॥ कहतिजसोमतिसोंब्रजनारी
कान्हहुतें तोहिमाखनप्यारौ ॥ खरीटेषितरसतहरिवारौ
डारिदेहिमथनीमंदरानी ॥ हैहै हारिकी भुजापिरानी ॥
दूधदहीहरि पैसववारौ ॥ मोहनजीवनप्राणहमारौ ॥
हरुयेवोलिकहीनंदरानी ॥ जाहुसवैतुमयुवतिसयानी ॥

दोउकरजोरिकहतरीमैया॥कान्हेकौंवाधोमेरोभैया॥
स्यामहिंछोडिमोंघरमोही॥सौरकहाकहियेअवतोही
मेरोप्राणअधारकन्हाई।ताकीभुजमोहिंवाधिदिखाई
कौनकोजगोरसधनधाना।जिहिंकारणवांध्योघनस्याम
कुयतौथोरजोवजकोउसौरदेसगोसोय॥
भुजननीकछुवसनहींजोककुकरैसोहोय॥
तेरेवसहरिआहिंकोजानेकोहिपुन्यनि ॥+॥
तूपहिंजानतनाहिगोरसहितवांधतहरिहिं
सुनहुवातहलधरनूमेरी॥करनदेहुसेवाहनकेरी॥+॥
मारवनखातपरायोजाई॥प्रगटनचोरीनामकन्हाई॥
तुमकहोकहोकमीकिहिकेरी।नौनिधिकौमेरेघरठेरी॥+॥
होंहारीघरजतदिनराता॥मानननाहिनमेरीयाता॥+॥
कहाकरौहरिसनिहिंरिसिआई॥भयोवहुतहीढीठकन्हाई
मेरोकह्योननकनुहिंमाने॥नितउठिटेकआपनीठाने॥
भोरहोतउरहनलेआवे॥व्रजयुवतिननेमोहिंलजावे
जहँतहँधूममचावतजाई॥घरमहिंरहतकरौककन्हाई
तुमहुदोषदेतहौमोहीं॥कान्हरतेंप्यारोदधिनोही॥
तोहितजिऔरकहौकेहिमैया।सौरकौनमेरोमानरखैया॥
तेरीसौजननीसुनमोहीं॥उरहनदेतझूठसबतोही॥+॥
हैसवव्रजकोश्यामपियारो॥श्यामसकलव्रजकोरखवारो
दधिमाखनपयकान्हकोकान्हेकीसबगाय
मोहकौवलकान्हकौतूनहिंजानतिमाय॥
वसिदाउकीवातसुनिजसुमतिहसिकह्यो
नमहकश्रतिदेखगातजानतमेंतुमरेघरत
हरिहिंहारिहलधरमुसकाने।यहतुमगातेतुमविनकोजाने

जाते सो जननी बाँधि राखत जाहि बेद न पावहीं
धन्य सो तरु असु ऊखल धन्य सुजन गोहि ल्याइयो॥
धन्य सो मृदु जासु की रजु श्याम भुजनि बंधाइयो
धन्य ऋषि धन आप दीनो शाप अनुग्रह सो कियो
जासु शिव ब्रह्मादि दुर्लभ नाथ तुम दर्शन दियो
अब कृपा करिके देहु वर प्रभु चरण पंकज मति रहे
जहँ जन्म कर्महिं बस तहाँ नह एक तुम्हरी रति रहै
दीनबंधु कृपाल सुंदर श्याम श्री ब्रज नाथ जू॥
राखिये निज शरण प्रभु अब करिये हमहिं सनाथ जू

दो०॥ बार बार पद नाय सिर बिनती प्रभुहिं सुनाय॥
प्रेम मगन निरखत चदन हर्ष सहित दोउ भाय

सो०॥ साधु साधु कहि नाम भक्ति दान तिन को दियो
बिदा किये घनश्याम हर्षि गये निज पुर युगुल

शब्द सुनि जसुमति धाई॥ देखे आजिर न कुंवर कन्हाई॥
देखे बिटप महि लोचन अकुलानी॥ श्याम चपे तरु नर यह जानी॥
आतुर महरि पुकारन लागी॥ बांधे हरि मैं परम अभागी॥
सुनत लोग ब्रज जन सब धाये॥ नंद द्वार सब आतुर आये॥
देखि गिरे तरु मनहि डराने॥ ढूँढत श्यामहिं अतिहि सकाने॥
बार बार सब करहिं बिचारा॥ गिरे कवन बिधि बिटप अपारा॥
देखेनु दुहुं तरु बीच कन्हाई॥ रहे ग्रसित ऊखल लपटाई॥
धाय लिये भुज कोड़ उठाई॥ ब्रज युवतिन उर लीने लाई॥
कहत सबै तुम हौ बड़ भागी॥ बचे श्याम कहुं चोट न लागी॥
कबहुं बांधति मारति कबहूं॥ देति दोष जसुमति को सबहूं॥
नैन नीर भरि दौरि जसोदा॥ लियो लगाय कंठ सुत गोदा॥
जरहु सो रिस जिन तुमको बांध्यो॥ जरहु हाथ जिन जेवरि सांध्यो॥

मैं खीजति लरिकहि गुण काजै ॥ तुम कत सुत दई बिन काजै
नीकी हि यासहि सां मति गहिये ॥ अब ही ते सब गुण नहिं चहिये
युवति चलीं विरुझय सब कहि जसोदा पास ॥
सूरख सों कोइये कहा करत प्रेम बस कोप ॥
कह हम रे बलि जाउँ कहति चलीं सब स्याम सों
धरत जसोदा हि नाउँ अति कठोर मन नहीं ॥
भवहिं स्याम सुंदर यह ठानी ॥ युवती घर न गईं सब जानी
यह कहि जननी भटकायो ॥ शापज मल अर्जुन पहँ आयो
परसत पात उखेरत दई ॥ परे शब्द आघात सुनाई ॥
दिये धरनि दोउ तरु निरगई ॥ उखरे मूल सहित भरराई ॥
भये चकित सब ब्रज के बासी ॥ रहे सकुचित नसुधि बुधि नासी
कोउ भूमि कोउ तनक तन काशा ॥ रहे भरक लौ जाके मन त्रासा
ताही छिन तरयुगुल कुमारा ॥ प्रगटे धनद तनय सुकुमारा ॥
नारद शाप पाप दोउ भाई ॥ भये हुते ब्रज में तरु आई ॥
हरि के परसत निज गति पाई ॥ भये पुनीत मिटी जड़ताई ॥
तिन्हे कृपाल अनुग्रह कीना ॥ चारि भुजा धरि दरसन दीना ॥
देखि दरस अति पुलक शरीरा ॥ परे चरण दोउ बंधु अधीरा ॥
बारबार पदरज सिर धारी ॥ जोरि पाणि अस्तुति अनुसारी
छं० अनुसारि अस्तुति युगुल प्रेमानंद नंद सुअन खरे
जै जै भगत हित सगुण सुंदर देह धरि धावत हरे ॥
जो रूप निगम न नेति गायो बुद्धि मन बाणी परे ॥
सो धन्य गोकुल आय प्रगटे धन्य असुमति उर धरे ॥
धन्य ब्रज धनि गोप गोपी गाय दधि माखन मही
धन्य गोविंद बाललीला करत माखन चोर ही ॥
धनि उरहनौ देत नित उठि धन्य अति खबदावही ॥

दो०॥ नंदमोहि कहिहै कहा देखित सवनि आय
कुशल रह्यो मम भ्रात दोउ मैले मरहु वलाय ॥
श्यामरहैलपटाय श्रति अभीतउर मातु के ॥
सारवार वलिजाय जसुमति मनपछितात अति
ब्रजयुवती लै लै उरलावै ॥ निरखि वदन तनमन सुखपावै
मुख चूमनयह कहि पछिताहीं केसे वचे भगमतरुमाहीं ॥
वडी सायु हरिकी है माई । जहंतहं विधिहोत सहाई ।
प्रथम पूतनामारन आई । पयपीवत जहंतहां नसाई ॥
तरणा वर्त लैगयो उड़ाई ॥ आपहि गिरो सिला पर आई
कागासुर आवत नहिं जानो । सुनी कहत जियसंतपरानी ।
सकटासुर पलना हिग आयो । कोजानेतेहि काहि गिरायो
कोन कौन करवर विधि टारी । उरवलसों वांधे महतारी ।
वहुते उवरयो आज कन्हाई । रूपर रुखपरे वहराई ॥ ॥
सवहिनपेलि करत मनमाई । पुराय नंद के बच्यो कन्हाई
भुव परषे धनासिन्ह निहारी । कहति जसोमति सों ब्रजनारि
मैसुरी जसुमति आहि तिहारी । सकुचीमहरि निरखि हरि प्यारी
तवहिं नंद आये घरहि तेउत रुगिरेनिहारि ॥
श्यामसुन्दर बांधे सुने देत महरि कौं गारि ॥
वांधतिहि विनकाज मेरे हरि वारे सुतहि ॥ ॥
कुशलकरी विधि आज सोचति नंद लषितसवनि
तवहि तातकहि धवकन्हाई । लियेनंदकनियां सुखपाई
चूमिवदनउरसों लपटाये । प्रेमपुलकिलोचन भरिआये
मेरेलालमैं तुमपरवारी ॥ काहेकोवांधे महतारी ॥ ॥
कैसे गिरे रुख अतिभारी ॥ चलीनाहिकछुननकव्यारी
वारवार सोचत नंदराई ॥ पूछतते कछुलरयो कन्हाई

कहत नंदकी सौंह जचाय ॥ जननी ढिग भुज गहिलै आये
हंसि हंसि कहलि सखा बलिरामा अबतौ चोर भयौ श्रीदामा
हर्षित कहति जसोदा मैया ॥ जीत्यौ मेरौ पूत कन्हैया ॥
जाकी माया जगत सिखावै। ब्रह्मा जाकौ अंत न पावै ॥
ताहि जसोदा खेल खिलावै। बालक जिमि वचननि फुसलावै
जाके उरत्रिय लोक थल पंचतत्व चौखान ॥
सो बालक है खेल में जसुमति के इह आन ॥
दुर्लभ जप तप योग योगिरू वृज गोपाल हरि
धन्य सो व्रज के लोग बालक करि मानत तिन्है
कहत भई जसुमति महतारी ॥ भई रात अब सुनहु मुरारी ॥
करहु बियारू सबक छु प्यारे ॥ बहु खेलि यह होत सवारे ॥
मोकों तो कछु रुचि नहि आवै। तू कहि भोजन कहा बनावै
बेसन मिलै कनक की पूरी ॥ कोमल उज्जल है अति रूरी ॥
अबही ताको तुरत बनाई ॥ रोहिणि तुम्हरे हेतु कन्हाई ॥ + ॥
निंबू आम करील संधानो ॥ जालो तुम अतहो रुचि मानो ॥
बलिके संग बियारू कीजे ॥ मेरे नयननि कौ सुख दीजे ॥
तनक तनक धरि कंचन थारी ॥ लै आई रोहिणि महतारी ॥ + ॥
श्याम राम मिलि करत वियारी। अति आनंद दोउ जननि निहारी
खान खात दोउ अलसाने ॥ सुख जम्भात जननी पहिचाने ॥
जल अचवाय कमल मुख धोये। बांह पकरि पलका पौढाये।
सोवत स्याम राम दोउ भैया ॥ हरुवे पाय पलोटत मैया ॥ + ॥
सोये श्याम सुजान हरि सुख सों बीती राति ॥
बहुरि कलेऊ के समय जननि जगाये प्रात ॥
दियो कलेऊ मात माखन प्यारे स्याम को ॥
मुदित निरषि दिन रात जसुमति मन हरि के चरित

कहत नंदकी सौंह जनाय ॥ जननी हिगभुजगहिलै आये
हंसि हंसि कहलि सखा बलिरामा अवतो चोर भयो औ दामा
हर्षित कहति जसोदा मैया ॥ जीत्यो मेरो पूत कन्हैया ॥
जाकी माया जगत सिखावै। ब्रह्मा जाको अंत न पावै ॥
ताहि जसोदा खेल खिलावै। बालक तिमि वचननि फुसलावै
जाके रवि शशि लोक गत पंच सच्चे चोखान ॥
सो बालक है खेल्हु नंद सुत के अंह आन ॥
दुर्लभ जप तप योग योगिन कहं जगधाम हरि
धन्य सो ब्रज के लोग बालक करि मानत तिन्हें
कहत महरि सुनि अति महतारी ॥ महरि लाल अब सुनहु मुरारी ॥
करहु बियारु सबक कुप्यारे ॥ वहु सखोलि यह हात सवारे ॥
सो को सो कछु रुचि नाहि खावै। तुम ही भोजन कहा बतावै
वेसन मिले कनक की पूरी ॥ कोमल उज्जल है अति रूरी ॥
अबही ताजो तुरत बनाई ॥ रोहिणि तुम्हरे हेतु कन्हाई ॥ + ॥
निबू आम करील संधानो ॥ जा लो तुम अनहीं रुचि मानो ॥
बलिके संग बियारु कीजे ॥ मेरे नयननि को सुख दीजे ॥
तनक तनक धरि कंचन थारी ॥ लै आई रोहिणि महतारी ॥ + ॥
स्याम राम मिलि करत बियारी। अति आनंद दोउ जननि निहारी
खात खात दोउ अलसाने ॥ सुख जंभात जननी पहिचाने ॥
जल अचवाय कमल मुख धोये। बांह पकरि पलका पोढाये।
सोवत स्याम राम दोउ भैया ॥ हरुवे पाय पलोटत मैया ॥ + ॥
सोये स्याम सुजान हरि सुख सो बीती राति ॥
बहुरि कलेऊ के समय जननि जगाये प्रात ॥
दियो कलेऊ आनि माखन प्यारे स्याम को ॥
मुदित निरखि दिन रात जसुमति मन हरि के चरित ॥

अथवृंदावनगमनलीला ॥

महरिमहरयहमनाहिविचारी।गोकुलहोतउपद्रवभारी॥
जबतेंजन्मभयोहरिकेरो ॥ नितहीहोतउतपातघनेरो॥
अाकस्मातगिरेतरुभारी॥बच्यौबहनकेपुण्यमुरारी॥
तातेंअबतजियेयहगाऊ।चालियेचलिकहुंउत्तमठाऊ।
नंदरायसबगोपबुलाये समाचारये सबनिसुनाये ॥+॥
सबहीकेमनमेंयहभाई।वसियेचलकहूंसबजाई॥ ॥
नितहिंउपाधिनईजिहिमाही।वसिवोभलोतहांकोनाहीं
नंदकहीमैंमनहिंविचारी॥हैइकठाउवहुतसुखकारी॥
वृंदावनगोवर्द्धनपासा॥ वहंसबकोसबभांतिसुपासा॥
तहांगोपगणसबसुखपैहैं।वनमेंगोधनवृंदचरैहैं ॥+॥
यहविचारसबकेमनभायो॥चलिवेकौंशुभदिवसधरायो॥
वृंदावनसबचलेगुवाला॥पांचबरसकेमदनगुपाला॥

सकटसौंजसबसाजकेगोधनदियेहंकाय॥
चलेगोपगोपीहरषवृंदावनसमुदाय ॥+॥
निरषिअनूपमधामसकटदियेसबछोरिकै
सबकेमनवसस्यामवसेसकलवृंदाविपन

वसेसकलवृंदावनमाहीं।अतिअानंदगोपमनमाहीं।
गायवच्छसबहीसुषपायो।चरतनिकटतृणहरितसुहायो
हलधरधेनुचरावनजाहीं।मनमोहनलषिमनहिंसिहाहीं
मातचलेसबगायचरावन।जननीसोंवोलेमनभावन॥
मैंहुंगायचरावनजैहों ॥ वडोभयोअबनाहिडरैहों
मयामनसुखाहलधरभैया।इनकेसंगचरैहौंगैया ॥+॥
ग्वालनसंगयमुनातटमाहीं।खेलहिंगेसबवटकीछाहीं
अपनीरुचवनकेफलखैहैं।तेरीसौंजसुनानहिन्हैहों

ऐसी अबहिं कहौ जिन बारे ॥ देखहु अपनी भांति ललारे ॥
तनक पायं चलि हौ केहि भांती ॥ गैयन आवत ह्वै है राती ॥
प्रात जात गैयन ले चारन ॥ आवत सांझ लखौ सब ग्वारन
तुह्म रो कमल वदन सुरझै है ॥ रंगत घाम मांझ दुख पै है ॥
तेरी सौं मुहिं घाम नहिं लागत भूषन नेक ॥
कह्यौ कान्ह मानत नहीं परे आपनी टेक ॥
चले चरावन गाय ग्वाल बाल बलि देव सन ॥
हेरी टेर सुनाय गोधन करि आगे लियो ॥
हेरी टेर सुनत लरिकन की ॥ गए दौरि हरि अति रुचि मन की
इतउत जसुमति जबहिं निहारी ॥ दरसन परे स्याम वनवारी ।
वन तन जाने जात कन्हाई ॥ टेरत जसुमति पाछे धाई ॥
जात चले गैयन संग धावत । बलिदाऊ कौ टेर बुलावत ॥
पाछैं जननी आवत जानी ॥ फेरि फेरि चितवत भय मानी
हलधर आवत देषि कन्हाई । ठाढे किये सखा समुदाई ॥
पहुंची जननि भये जब ठाढे । रिस करि दोउ भुज पकरे गाढे
वलि कहै जान देह संग मेरे ॥ वन तें ऐहैं आज सबेरे ॥+॥
कह्यौ जसोमति बलिहि निहारी ॥ देखत रहिहौ मैं बलिहारी ॥
भ्रात संग गये वनहिं कन्हाई ॥ जसुमति यह कहि निघर आई
देखहु हरि के सो ढंग लीनो ॥ अपनी टेक पस्यो सो कीनो
आज जाय देखहु वन माहीं ॥ कहा परो सिधस्यो तिहि ठाहीं
माखन रोटी औ जल सीतल छाक बनाय ॥
दई वेग ही ग्वाल संग जसुमति वनहिं पठाय ॥
चिंतामणि सुरधेनु पंच सुधा रस कल्पतरु ॥
अनुदिन जाके ऐन खात छाक सो ग्वाल संग ॥
वृंदावन खेलत नंदलाला ॥ भयौ हिये आनंद विसाला ॥

आजनसोवौं नंददुहाई ॥ रहिहौंजागतकहतकन्हाई
सबमिलगायचरावनजाहीं ॥ मैंक्योंरहौंबैठिघरमाहीं ॥
सोयरहौअबश्यामतुमजननिकहेचुमकारि ॥
प्रातजानकहिहौंतुह्मैधनकौमैबलिहारि ॥
ज्यौंत्यौंराखेसायप्रातदेनबनजानकहि ॥
जननीदावतपायश्रमितजानिबनगवनके
बहुतैदुखहरिसोयगयौहै ॥ज्यौंत्यौंकरिमनबोधलयौहै
सांझहितेलाग्योइहिबातैं ॥जानकहतबनउठिपुनिप्रातैं
यहतौसंगलागहिबलिरामहिगयेलिवायआजबनश्यामहि
अबलौंसोयरह्योकहिसैसे ॥प्रातविचारकरैंधौंकेसे ॥
कहतनंदबलिकेसंगजाई ॥इतउतआवनदैफिरआई ॥
भोरभयौजसुमतिकह्यौरे ॥जागहुमोहननंददुलारे ॥
बीतीनिसिरविकिरणप्रकासी ॥ जागिमहरिजदुकुलदुतिनासी
सुनहुशब्दबोलतिखगमाला ॥ खोलहुपंकजनैनविशाला
सुनतश्यामजननीकीबानी ॥ जागिउठेसतनसुखदानी ॥
स्थाईतुरतकलेऊमैया ॥ मातनपैठीखाहुकन्हैया ॥
ठाढेग्वालसखासबद्वारे ॥ आयेतबकेहोतसबारे ॥ + ॥
खेलहुब्रजभीतरहौप्यारे ॥ दूरकहूमतजाहुललारे ॥
हरिउठेबलिरामतबआवहुआयकन्हाय ॥
आजग्वालबनकौसबैचलहुचरावनगाय ॥
श्यामकह्योरिदोउहाथजननीसौंहाहाकरत ॥
जैहौंग्वालनसाथगोचारनबृंदाविपन ॥ + ॥
देतमोहिदाऊरीमैया ॥ जैहौंबनहिंचरावनगैया ॥ + ॥
बनफलतोरदेतमोहिजाई ॥ आपुनचेरतगैयनधाई ॥
जैहौंमैंग्वालनसंगमाहीं ॥ मोहिलजावततबबनमाहीं

मैंसुपनेदाऊसंगरैहौं ॥देखबवृंदावनसुखपैहौं॥
आगेदैल्यावतमगमाहीं।सुनहुलालहरिकेगुणगाई
कहतिजसोमतिसौंबलिमैया।जानदेहुमोसंगकन्हैया।
अपनैढिगतेनेकुनटारौ ॥ जियपरतीततनकनहिंधारौ
तूंकहिडरपतिमनमाहीं।जानदेतिहरिकौंक्यौंनाहीं।
हंसीमहरिसुनिबलिकीबानी।जाहुखिलायकहतनंदसनै
मैंबलिहारीतुम्हरेमुखकी ।तुमहूंकहतचारकेरुखकी॥
अतिआनंदमयोहरिधाये।दाऊसंगसखनमैंआये॥

धायधायभेंटतसखनउरअतिहर्षबढाय ॥
पठयौमैयामोंहिवनचलहिंचरावनगाय ॥
कहतसखासुखपायचलहुश्यामदेखहुवनहि
वनमालाअपहिरायकरतचित्रवनधातुतन ॥

चलेवनहिंसबगायचरावन ।सखनसंगसोहतमनभावन
ग्वालबालसबकछुकसयाने।नंदसुवननिनमेंकछुनाहैं
गायगोपगोसुतबलिजाई ॥ तिनकेमध्यश्यामसुखदाई
हरिसौंसखाकहतसमुझाई।छांडिकहूंजिनजाहुकन्हाई
वृंदावनअतिसघनविशाला।जैहौंभूलिकहूंनंदलाला॥
सुनतश्यामघनतिनकीबाता।मनमनहंसतकहतजगत्राता
तुम्हरैसंगनछांडूंकराई ।वनहिंडरातबहुतमैंभाई ॥
जातचलेसबहर्षबढाये।खेलतश्यामसंगसुखपाये॥
कोंगावतकोउवेणुबजावै।कोउनाचतकोउडफदनआनै
देखिदेखिहरिअतिहर्षाहीं।कहतसखनसोंदेगलबांही।
भलीकरीतुममोकौंल्याये।आजजसोमतहर्षपठाये॥
इहिविधिगोधनलैसबआला।जमुनातटपहुंचेनंदलाला।
दईधेनुबगरायसबचरनआपनेरंग ॥

गायचरावतनंदसुतमिलिग्वालनिकेसंग
उरमुक्तनकी मालसीसमुकटकटिपीतपट
हाथलकुटियालालडोलतग्वालनसंगप्रभु

अथ वत्सासुरवधलीला

खेलतस्यामसखनके माहीं॥ यमुनाकेतटतरुकी छाहीं॥
वत्सासुरतेहिंअवसरआयो॥पठयोकंसकालनियरायो॥
वत्सरूपधरिआयसमान्यो॥कृस्नताहिआवतहीजान्यो॥
बलितनचितैकह्योमुसकाई॥तुमयाकोजानतहोभाई॥
वुहतोअसुरवत्सह्वैआयो॥हमकोमारनकंसपठायो॥
हलधरहूदेख्योधरिध्यान॥कहतसांचतुमस्यामसुजान॥
ग्वालनहंसिहंसिकहतकन्हाई॥वछराघेरिकरोइकठाई॥
ल्यायेघेरिवत्ससबग्वाला॥वुहनहिंघिरतअतिचपलविकराल॥
वारवारहरिओरनिहारै॥दावघातमनमाहिंविचारै॥
तवहरिकह्योयाहिमैंल्यावत॥तुमतोयाकोछुवननपावत॥
हाथलकुटियालेहरिधाये॥वत्सासुरकेसन्मुखआये॥
हरिकोजवहिंजुदोकरिपायो॥असुरकोपकरमारनआयो॥

छं॰ धायोअसुरकरिक्रोधमारनस्यामकेसन्मुखगयो
विकलह्वैगयोविपायतवहीयोग्यसुरपुरकेभयो॥
धायकेहरिचपरिताकोपकरिपायपिराययो
पटक्योधरणितनअसुरप्रगट्योफेरिसांसवआइयो॥

दो॰॥वत्सासुरसुरपुरगयोतुरतअसुरतनत्याग
सुरहर्षतवर्षतसुमनगगनसहितअनुराग
धायपरेसवग्वालचकितकृसवलदेखिके॥
धन्यधन्यनंदलालकहतपरसआनंदभरे॥

असुरदेषिसवसंसचिरजपायौ ।कहतहमैहरिवाजवचायौ
वकराकरिहमजान्यौयाही ।यहतौअसुरभयानकआही
हरषिहरषिहरिकोउरलायो ।असुरनिकदननामसुनायो
आजुसवनिधरिकैयहमानौ ।धौंरकौनपैजातनिपातौ ॥
कहतग्वालधनिधन्यकन्हाई ।धन्यधन्यव्रजप्रगटेआई
यहऐसौतुमअतिसुकुमारा ।किहिविधिभुजनफिरायपछारा
सवहीकेदेखतपलमाहीं ।मारयौअसुरडरयौतुमनाहीं ॥
अवलौहमनतुमहिंपहिचानौ ।हौतुमवडेसवनितेजानौ ॥
कोउवनमालआनपहिरावे ।कोउवनधातुरगरिननलावे
कोरकुंडलसिरमुकटसंवारे ।अलकावलिकोतिलकसुधारे
जातसुजनपरकोउवलिहारे ।तनदेखतकोउवदननिहारे
वनफलतोरिधरतकोउआगे ।कहतस्वादमीठेअतिलागे
इहिविधिहरिकोपूजिकेग्वालवालहरषाय
सोरुनिकटआवतचलेअरकौंधेनुचराय ॥+॥
परममुदितसवग्वालअसुरमारिआवतघरहिं
गावेआव्हरजालव्रजवासीप्रभुकेगुगान ॥+॥
सखनमध्यसोहतमंदनंदन ॥जलदस्यामतनचित्रितिचंदन
मोरमुकटपटपीतसुहावन ।चंद्रधनुषदामिनिलजावन
सुभ्रमालवनमालविराजे ।चकसुकअवलिमनहुंछविछाजे
झायलकुटकलकुंडलकानन ।कोटिकामछविसोभितआनन
कुटिलअलकभुवनैनविसाला ।गोपदरजकनदुतिछविजाला
वलिसोहनघनतेवनिआवैं ।निरखिनिरखिव्रजजनसुखपावैं
सखनसहितहरिधामहिंआये ।हरषिजसोमतिकंठलगाये
कहतग्वालसुनजसुमतिमैया ।हैतेरौरावीरकन्हैया ॥
वत्सरूपइकदानवपनमें ।आयसमान्यौवछरागनमें

मैं दुहिहौं मोहिंदेहु सिखाई ॥ बैठि गये तिन संग कन्हाई
कै ये गैया थनहिं लपावत ॥ ॥ कैसे नोय यगनस्थव कायत
पुलुरून गहत दोहनी कैसें ॥ मोहिंबताइ देउ तुम जैसें ॥
कैसे धार दूध की होई ॥ २ ॥ देहु दिखाइ मोहिं सब सोई ॥
कहत ग्वाल तुम कहत कन्हैया ॥ भइ घवार आज अति भैया
तुमको सिखवत काल सवारे ॥ स्वयकहु लगिहै घोट तुम्हारे
स्याम कहें सब ही समुझाई ॥ भोर दुहौं जिन नंद दुहाई ॥
मेरी सौं मोहिं लीजो टेरी ॥ ३ ॥ मैं दुहिहौं निज गाय सबेरे
दुष्ट दलन संतन सुखदाई ॥ राहे गैयन मांझ कन्हाई ॥
आवहु कान्ह सोरु की बिरियां ॥ कहत जननि यह बड़ी कु बिरिया
लरिकाई कछु छोड़त नाहीं ॥ सोवहु लाल आइ घर माहीं

आये हरि यह सुनत हीं जननी लिये कुमार ॥
लै पौढ़ाये सेज पर अजिर च्वाद नीचार ॥
कहत कहत कछु बात होय गये बस नींद के
कहत जु सोमति सात सोय गयो हरि अजिर दी

दौ जननी हरखे के हरि कों ॥ सेज सहित लीने भीतर कों
कहत आज हरि सोइ गयो है ॥ अतिहि नींद के बस हि भयो है
नेकन बैठत थिर घर माहीं ॥ खेलहि मैं मन रहत सदा ही ॥
रोहिणि कहत देहु किन सोवन ॥ खेलत हार गयो मन मोहन ॥
माता हरखे पवन डुलावत ॥ निरखि बदन सुन्दर सुख पावत
प्रात जगावत नंद की रानी ॥ उठहु स्याम सुन्दर सुखदानी
नाहिन दूतो सोइयत लाला ॥ सुन सुत प्रात समय शुभ काला
उग्यो तरणि कुम्मिदिन सकुचानी ॥ घर घर ग्वालिन मथत मथानी
बारबार टेरत सब ग्वाला ॥ साक कहौ तुम दुहन गुपाला ॥
होत सवार गाय सब ठाढ़ी ॥ भरि भरि सोर भारयन बाढ़ी

रही थकित लखि छवि ब्रजनारी गये बनहिं विहरन बनवारी।
बन बन फिरत चरावत गैया॥ हलधर श्याम सखा इक ठैया॥
करत विहार विविधि बन माहीं बालकेलि रस वरनि न जाहीं॥
कबहूं गावत सखन संग कबहूं बजावत बेनु
धौरी धूमरि नाम ले कबहूं बुलावत धेनु॥
कबहूं नचावत मोर सुंदर स्याम जलद तन
गरजि मुरलि धुनि घोर बरषत परमानंद जल
खेलत विविधि खेल मन भावन। श्रीवृंदावन परम सुहावन॥
तृषित जानि गैयन नंद लाला। कह्यो चलहु जल देन गुपाला॥
लेहु बुलाय सुरभिगन टेरी। सुनत ग्वाल सब लाये घेरी॥ ॥
गोधन वृंद हांकि सब लीनो ग्वालन गमन यमुन तट कीनो॥
तहां बकासुर छल करि आयो मायारचित स्वरूप बनायो॥
एक चोंच भूतल जह लाई॥ एक रही आकाश समाई॥ ॥
मग महं बैठो बदन पसारी॥ ग्वालन देख भयो भय भारी॥
बालक जात हते जे आगे॥ ताहि देखि सो ताके भागे॥ ॥
कहत भये सब हरि सों आई आगे एक बलाय कन्हाई॥ ॥
आवत नित्त हि ग्वाल जहं ठाहीं ऐसो कबहुं लख्यो हम नाहीं॥
तबहिं कृस्न ताकौं पहिचान्यो आयो बकासुर भै यह जान्यो॥
पल भें आज याहि मैं मारों॥ असुर चोंच धरि बदन बिदारौं॥
निडर श्याम आगे भये चले बकासुर पास॥
कहत सखा सब श्याम सों नीकी जीवन की आस
आज हु नाहि डरात बचे किते उत पात तें॥
चले कहां हरि जात हम बरजत मानत नहीं
तब हरि कह्यो चलहु तेहि पासा। सखा मिलि करहिं जनि दहि नासा
जब हरि संग चले सब ग्वाला। देख्यो जाय बकहिं विकराला॥

ताकेनिकटगयेसवजवही ॥ लियोलीलहरीकोंकतवही ॥
जान्योअसुरकाजमैंकीनो ॥ तवहींवदनमूंदकैलीनो ॥
वालपुकारतआरतभागे ॥ वलिसोंआयकहनसवलागे
हमवरजतहरिगयेकन्हाई ॥ लीनेलीलअसुरवकधाई ॥
हरिचरित्रकछुजानिनजाहीं ॥ उपजीआगअसुरतनमाहीं ॥
लाग्योजरनभयोअतिव्याकुल ॥ हरिकौंउगलदियोअतिआतुर
वहुरिपकरनिकौंमुखवायो ॥ चोंचपकरिहरिचीरवहायो
मरतचिकारअसुरअतिभारी ॥ व्याकुलभयेग्वालअतिभारी
ग्वालनिविकलदेखिवलरामा ॥ कहतअसुरमार्‍योघनस्याम
टेरिउठेउनकुंवरकन्हाई ॥ आवहुसखावृंदसवधाई ॥

वकविदारिहरिसखनकोंटेरतआवहुधाय ॥
चोंचफारिमार्‍योअसुरतुमहूकरीसहाय ॥
गयेसखासवधायसुनतस्यामकेवचनवर
निरषिनयनसुखपाइपुनि२भेंटतपुलकितन

कहतपरस्परसखासयाने ॥ येकोउअजअगटेहमजाने ॥
इनहिंनाहिंकोउघातकरैया ॥ येहैंअसुरनकेदलवैया ॥
जवतेंइनहिंजसोमतिजाये ॥ तवतेंअसुरकितेकउआये ॥
तृणापूतनासकटामारे ॥ तवयेरहेवहुतहीवारे ॥८॥
हमदेखतवत्सासुरमार्‍यो ॥ कितिकवातयहवकविदार्‍यो
इनकेगुणकछुजाननजाहीं ॥ हमअपनेजियडरेवृथाहीं
धनिजसुमतिजिनइनकोंजाये ॥ धनिहमइनकेसखाकहाये
वकहिंमारिसुन्दरघनस्यामा ॥ यमुनातटआयेसुखधामा
सुरभीगनसवनीरपियाये ॥ सखनसमेतआपअन्हाये
धोसिखनधातचित्रतनकीनो ॥ मोरमुकटमाथेधरलीनो ॥
वनमालारचिसखनवनाये ॥ प्रेमसहितहरिकोंपहिराये

वनफलमधुरगोपलैआये ॥ सखन सहितहरिभोगलगाये

वलमोहनघरकोंचलेजानिसांझकीवेर ॥
लीनीगैयाघेरसब मुरलीकीधुनि टेर ॥
चलेबजावतवेन ग्वालवृंदकेमध्यहरी
अंगअंग छविकोऐनब्रजजनमोहनसांवरे

सुनिमुरलीकी टेररसाला ॥ देखन कौं धाईं ब्रज बाला ॥
कहतपरस्परअतिसुखपावत॥देखसखी वनतें हरिआवत
नानारंगसुमनकीमाला ॥ स्यामहियेछविदेत विशाला॥
मोरपक्षसिरमुकुटविराजे ॥मधुरमधुरसुर मुरली बाजे
भृकुटीविकटनिकटसुखदाई॥तिलक रेख छविवरनिनजाई
कुंडललोलअलकघुंघरारी ॥निरखसखीलालनअतिप्यारी
नासानिकटअधरअरुणाई॥जनुसुकविंवहितचोंचचलाई
मंद हंसनिघन दामिनिजैसे ॥दारदुरिप्रगटहोतहैंजैसे
तनघनस्यामकमल दल नैना॥बोलतमधुरमनोहरबैना
मुखअरविंदमंदसुरगावत ॥ नटवररूपसखनमनभावत
सबअंगसंदनखोरबनाये ॥गुंजमालमनलेतचुराये ॥
यामोहनछविपरवलिजैये॥ नंद नंदनदेखतसुखपैये

ग्वालवालगोधनलियेहरि हलधरदोउभाइ
सांझसमै वनतेंचले आयेधेनुचराइ ॥ ५ ॥
रांभति धाईं गाय वत्ससुरकारि पयस्रवत
हरषिजसोदामाय कहतिस्यामआवतिघरहिं

इतनी कहतस्याम घरआये॥जननी दौरिहरषिउरलाये
ब्रजलरिकासबसुरतहिधाये॥महरिमहरपदसीसनवाये
ऐसोपूतधन्यतुमजायो ॥ इनकोगुण कछुजातनगायो
तहांअसुरइकखग तनुधारी॥रह्योयमुनतटचंचुपसारी

काहूसोखेरिबयोभटकावे
युवतिनकेमनवसेंकन्हाई
हरिकोखेलतमोरूखिजावें
गेंदउरोजनमाहिंदुरावें॥
कंचुकिफारिआपहीलैहो
अंतरभुजमहिहरिहिहुराँ
जसुमतिपैंखुमकोलैजैहे॥

आपहसैऔरतिन्हैहँसा
देखेचिन इकफलमसुह
करकोरीदैगारीगावे
इहिविधिहरिसौसंगसु
जसुदहिजाइउरहनोंदई
कहोचलोनंदरानिसुता
कुटिलभोंहकियेहमनडरै

योंब्रजबनतननेहबसआनंदछबिघनरास
रसिकपुरंदरसांवरोब्रजमैंकरतविलास
अववरनौंसुखखानिहरिवृषभानकुमारिको
प्राणएकहीजानप्रथममिलनदोउदेहको

अथराधाजूकीप्रथममिलनकीलीला

खेलनहरिनिकसेब्रजखोरी
श्रवणनिकुंडलकीछबिछाजे
दसनदमकदामिनिदुतिथोरी
गयेयमुनकेतटमनमोहन
औचकदृष्टिपरीतहँराधा॥
नयनविशालभालदियेरोरी
वेनीपीठलरतरूकझोरी॥
संगलरिकिनीआवतिदेखी
रीझरहेघनश्यामकन्हाई॥
नैननैनमिलिपरीठगोरी॥
कहतकहोकाकीहैबेटी॥

मेघस्यामतनपीतपिछोरी
मोरपंखनकोमुकटविराजे
हाथलियेफेरतचकडोरी॥
नाहींतहांसखाकोउगोहन
प्रेमरासिगुणरूपअगाध॥
नीलवसनतनकीछबिगोरी
अतिछविपुंजदिननकीथोरी
चितेरहेसुरतरोकनिमेखी
अनुपमकविलासिरहेसुभा
सूरतस्यामकोमनतैगोरी॥
अवलौंनहींकहींब्रजभेंटी॥

काहेकौहमब्रजतनआवैं । खेलतरहतआपनेगावैं ॥

सुनतरहतश्रवणनसदानंदढोटब्रजमाहिं
घरघरतेंनितचोरिकैमाखनदधिलेखाहिं
बिहसिकह्योघनस्यामतुमरोकहाचुरायहै
आवहुकिनब्रजधामनितहिखेलियेसंगमिलि

रसिकसिरोमणिनागरिदोऊ । प्रीतिपुरातनजाननकोऊ ॥
ब्रजबासीप्रभुकुंजबिहारी ॥ बातनभुरैलईहरिप्यारी ॥
प्रथमसनेहदुहनमनमान्यो । गुप्तप्रेमप्रभुनाप्रगटान्यो ॥
कहतस्यामकतमनसकुचावहु । खेलनकबहुहमारेआवहु ॥
दूरनहींकछुसदन हमारो ॥ श्रवणनसुनियतबोलपुकारो ॥
लीजोमोहिटेर नंद पोरी ॥ कान्हनाम मेरोसुन गोरी ॥
सुधीबदनदेषियततुमहूं ॥ नातेंसाथकीजियतहमहूं ॥
तुम्हैंखवावृषभानदुहाई ॥ घरीपहरखेलोइतआई ॥
गैयागिननिनंदजबजैहैं । तिनकेसंगहमहूंउतऐहैं ॥
जोतुमगायदुहावनऐहौ । खरकमांनीमांकोपैहौ ॥
रसिकसिरोमणिजाननिराई । इमप्यारीसंकेतबुलाई ॥
सुनतगूढहरिकीमृदुबानी । मनहीमनप्यारीमुसकानी ॥

गुप्तप्रीतप्रगटीनहीदोउमनहृदयछपाय
मनमोहनप्यारीचलीघरकोनैनचलाइ ॥
चलीसदनसुकुमारमनमेंउरमोसांवरो ॥
जानीबडीअबारमातत्रासउरआनिकै ॥

कहतिसखिनसोंचलीकुंअरि । कोजैहेखेलनइनकेघर
चलीबेगइनकेघरजाहीं । भईअबारसुनतटमाहीं ॥
बचनकहतरूपसुखमाहीं । हृदैप्रेमदुरवमनहरिपाहीं ॥
गईभवनवृषभानकुमारी ॥ जननीकहतिकसेर[illegible]

अवलीक हौं अबार लगाई। गैया खरक दोरि मैं आई॥
ऐसे कहि मातहि बहराई॥ अंतरगति वसरहे कन्हाई॥
विरहविकल तन गरहन सुहाई सुंदरस्याम मोहनी लाई॥
खान पान कछु नेकन भावे॥ चंचलचित्त पलकितन पावे
मात पिता को मानति त्रासा नेननि हरिदरसनिकी प्यास
कहति दोहनी दे मोहि मैया जैहों खरक दुहावनि गैया॥
अहिर दुहत नव गाय हमारी जब अपनी दुहि लेन सबारी
खरिक मांहि लगि हैं तहं जाई॥ तू मति आउ खरिक अनुराई
लई मात सों दोहनी चली दुहावन गाइ॥
मन अटक्यो नंदलाल सों गई खरक सुसुहाइ
मग मग सोचति जाति कब देखौं वह सांवरो
जिन मन लियो चुराइ खरक मिलन मो सों कह्यो
देखे जाइ तहां हरि नाहीं॥ भई चकित प्यारी मन माहीं॥
कबहूं इत कबहूं उत डोलै प्रेमविवस कछु मुखन हि बोलै
देखे नंद संग हरि आवत॥ लुलकि लगे लोचन सुख पावत
देखो स्याम राधिका ठाढी लई बुलाइ प्रीति अति बाढी
कह्यो महरि लरिक खेलहु दोऊ [illegible] रति जे यौ कोऊ॥
सुनि वृषभान सुता इत आई अपने [illegible] कन्हाई
हरि तन रहि औनेक निहारे कोई कहू गा[illegible] पारे॥
नंदबबा की बात सुनो हरि॥ जाइ न मो हि[illegible]
महरि सौंपि हम को तुम दीने॥ राधे हारे हि बांह गा[illegible]
तुम कों कहू जान नहिं देहों॥ जो जैहो तो पकरि लेहों
मेरी बांह छोडि दे राधा॥ कहत स्याम ऊपर मन साधा
तुम्हरी बांह न तजों कन्हाई मेरे हाथ जिहें हम कों आई
परम नागरी राधिका अति नागर ब्रजचंद

प्यारीकौ सारी हरिलीन्ही ॥ पीतपिछौरीप्यारिहिंदीन्ही
बादरजहँनहिंदियेउड़ाई॥ आयेसदनस्यामसुखदाई॥
रहीजसोमति हेरिहिनिहारी ओढ़ेदेखिसीसपरसारी॥
मनधौंकहतकहाँयहपाई पीतपिछौरीकहाँगँवाई॥
जसुमतिडरतिघोषपहिचानी ब्रजयुवतिनभुरयेयहजानी
पूछतहरिहिविहसिनंदरानी तरुणिनिकोसिषईसुधिगनी
पीतपिछौरीकितहिविसारी यहतौलालतियनकीसारी
जानलईजननीहरिजानी॥ तबइकबुद्धिसुरतउरआनी
मैलैगायगयोयमुनारी॥ तहँबहुभरतिहुतीपनिहारी
विड़रीगायभजीसवनारी॥ कछौबसुरिया वहुतसँवारी
हौंलैभजोऔरकी सारी॥ सोलैबादरगईहमारी॥

पीतपिछौरीलैभजी मैपहिचानतिवाहि
मैयारीमैंजाइकै धरिलैआवततहि॥
हरिमायाकौंजानिपीनावरताकौंकियौ॥
जननिदिखायौआनिकहनिलैआयौतासे

राधागईसदनसमुहाई॥ हाँथदोहनीदूधभराई॥ ॥
परमप्रीतिहरिवसनदुरायो जननीक्षुरहिंतैंयुहरयो॥
औरकिसोरकहतसुखवानी जननीदौरिदेषिभयमानी
कहतदीठलागी कछुवारी उरलगाइपछिनातनिहारी
मूरतिनेहविकलमहतारी कहाभयोराधातोहिप्यारी
अवहीं खरकगईतूनीके॥ आवतकोनवियाभईजीके
इकलरिकिनीसंगहीमेरे॥ कारेडसीआइतिहिंनेरे॥
मूर्छितपरीवहधरनिमझारी मैडरपीअपनेजियभारी॥
स्यामवरनइकढोटाआयो कहतसुन्योवहनंदकोजायो
कछुपढिकैवहतुरतहिमारी जाननिकौं कौन की दारी॥

मेरे मन भरी त्रास गयोरी ॥ अब कछु नीको नेकु भयोरी ॥
अति प्रवीन वृषभान दुलारी यह कहि लखु लाइ महतारी ॥

सुन जननी राधा वचन उरसौं लीनी लाय ॥
कहत टरी करवरवडी वारवार पछिताइ
एक सुता दुइ नात पाये वदन न्वार परि ॥
भई आज कुशलात वचौ सर्प तें लाडिली

खीजी कछु कुंवरि पै जननी घर नहिं रहति फिरति भयरहरें
कितनो कहति तोहि मैं हारी दूर कहू वाहर जिन जारी ॥
हैं लरिकिनी सवनि घर माहीं तो सी निडर कहूं कोउ नाहीं ॥
कवहूं खर कवहूं वनजाई कवहूं फिरति यमुन तट धाई
चितै अकाश धरति पग धरनी वात कहति लागत तोहि जरनी
सात वरष की भई कुमारी ॥ वहुत मह र वृषभान दुलारी
आज कुशल कुल देवन कीनी विधि वृचाइ विषधर तें लीनी
सीतल जल तें तुरत न्हवाई अंग अंगोछ वसन पहिराई
वारहि वार कहति कछु प्यारी अव कहुं खेलन दूर न जारी ॥
यह सुनि हंसै मनहि मन प्यारी ॥ हृदे ध्यान हरि कुंज विहारी
कहत दूर अवक तहूं न जैहौं गोंव घरहि खेलत नित रैहौं
जिनके गुणनि विरंच भुलाने तिनके चरित कहा कोउ जाने

जन रंजन भंजन कलुष राधा नंद कुमार ॥
गुप्त प्रगट लीला करत ब्रज मैं युगुल विहार
देषि अनूपम वाल मात पिता गुरुजन हरिहि
असुरन स्वृत विकराल नवकिशोर नित चोरलिय

सर्व रूप सव घट के वासी ॥ सर्व विधि करन सकल सुख रासी
सर्व भाव सव फल के दायक सर्वोपरि सव गुण के लायक
सर्व आदि सव अंतरजामी सवतें परे सकल के स्वामी

मया ब्रम्ह कृष्ण गुरु राधा॥ प्रेमप्रीति दोउ अगम अगाधा॥
छवि शृंगार मनहु सुभ जोरी करत विहार स्याम अरु गोरी
घसे स्याम स्यामा उर माहीं॥ देखे चितभावत कछु नाहीं॥
खेलन मिस वृषभान किशोरी आई नंद महरि की ओरी॥
टेरत मधु स्ववचन सकुचाई॥ घर भीतर है कुंवर कन्हाई॥
सुनत स्यामको किल सव वाती सुनि आतुर राधा पहिचानी
माता सों कछु कलह करत धरि तुरतहि सों विसराय दियो हरि
तूं पहिचानति इनकौ मैया॥ कहत वार है वार कन्हैया
मैं यमुना तट काल्हि भुलान्यो वांह पकरि मोकों इन आन्यो

तुहि सकुचाति आवति इहां मैं दै सोंह बुलाइ
सुनि नागरि जननी हृदय दियो प्रेम उपजाइ
भीतर लेइ बुलाइ कहति मात हरि सों हरषि
चले स्याम सुख दाइ लषि प्यारी आनंद मयो

नैन सैन मिलि दोउ सुख पायो विरह हि जाइ दुख द्वंदन साये॥
मनही मन आनंद अति भारी भये मगन दोउ रूप निहारी
कहत स्याम राधा किन आवे तुमको जसुमति माय बुलावे
बांह पकरि ल्याये बनवारी॥ जसुमति बोली निकट बैठारी
देषि रूप मन मांझ सिहानी॥ बूझति नंद महरि की रानी
ब्रज में तो हम कबहु निहारी कौन गाव है तेरो प्यारी॥
कोन तेरो तात कौन महतारी कहा नाम तेरो है प्यारी॥
भूलि गयो हो काल्ह कन्हाई॥ भली करी तू कर गहि ल्याई
धन्य कोष जिन तो कहुं धारी धन्य घरी तु जिहि अवतारी
देखि रूप जसुधा अभिलाषी सखिता सों विनती कछु भाषी
नैन विशाल वदन सुभ छोटी भली वनी है सुंदर जोटी
वारवार बूझति हरषाई॥ है तू कौन महरि की जाई

मैं बेटी वृषभानकी तुमकों जानति माय॥
बहुत बार मिलनों भयो यमुना के तट आय
अब मैं लीन्हो जान बेटी कुलटा है बड़ी
है लंगर वृषभान गारी दे हँसि नंद घरनि

राधा बोलि उठी इत आई॥ कुरी कछू बाबा लंगराई॥
ऐसी समरथ कब उन पाई॥ हँसि जसुमति राधा उरलाई
कहति महरि की रति मृदु जोटी अब कीजत है तेरी चोटी॥
जसुमति राधा कुंवरि संवारे प्रेम सहित बारनि निरवारैं॥
बड़े बार कोमल अति कारे॥ लै सुमना सुत घैंछु संवारे
मांग पारि बैनी रचि गूंथी मानहु सुंदर छवि की यूथी
गोरे वदन बिंदु करि वंदन मानौं इंदु मध्य भू वंदन॥
सारी नई सुरंग निकारी॥ जसुमति अपने हाथ संवारी
बदन पौंछि अंबर सों दीनो उर आनंद निरषि छवि कीनो
तिल चांवरी बतासे मेवा॥ कुंवरि गोद भरि विनवति देवा
कहेउ कान्ह संग खेलो जाई यह सुनि कुंवरि मनहिं हर्षाई
सुन्दर स्याम सुन्दरी राधा॥ खेलत दोउ छवि सिंधु अगाधा

छं० छवि सिंधु परम अगाध दोऊ नंद सदन विराजहीं
लषि रूप कोटिक काम रति घन दामिनी दुति लाजहीं
जसुमति विलोकति चकित दंपति रूप मन आनंद भरी
सोइ भाव देख्यो दुहन के उरजो इअभिलाषा करी

दो० खेलन दोउ आंगन लगे भरे प्रेम अहलाद॥
मानो घन अरु दामिनी करत परस्पर वाद
अमिय वचन रसमूल अकथनीय छवि सोभित सुगा
रही जसोमति भूलि युगुल किशोर विहार लखि

चली महरि सों कहि सुकुमारी। सदन आपने अति अनुरागी

जसुमति निरषि कह्यौ हर्षाई । खेलो करु हरि सुगनि गुसाई
षेलू उठे मोहन संग राधा ॥ तू कत सकुच करै जिय बाधा
मो षेलत तू आवत नाहीं ॥ जननी सौं डर पति मन माहीं
तोको लषि मैया सुख पावै । देखि कितो करि छोह बुलावै
सुनि मोहन के वचन सियानी । चितै रही सुख मन मुसिकानी
विहसि चली वृषभानदुलारी । हरि मूरति उर टरत न टारी ॥
गई सदन वूझति महतारी । कहौ कती अब लौं री प्यारी
वैनी गूथ मांग किन कीनी ॥ वेंदी भाल लाल किन दीनी
खेलत रही नंद के द्वारे ॥ जसुमति वोल निकट वैठारे
वूझन लगी नाम लै मेरी ॥ बाबा की पूछ यो अरु तेरी
मो तन चितै पुनि सुतै निहारी । कछु सविवासौ गोद पसारी

मेरी षिर वैनी गुही वेंदी लाल बनाइ ॥ + ॥
पहिराई निज हाथसौं सारी नई मंगाइ ॥
तिल चांवरि दै गोद विधुना सो विनती करी
उर करि कै अति मोद ताहि विहसि गारी दई

विहसि कह्यौ तोकौं नंदरानी । बुह जैसी तैसी मैं जानी ॥
तोहि नाव धारि धर्यौ वबा कौ । कह्यौ धृत वृषभान सदा कौ
नव मैं कह्यौ ठग्यौ कब तुम्हीं । हेसिल पराम लगी नव हमहीं
सुनि कीरति राधा को बातैं ॥ सरल सुभाव भरी सिसु तातै
केहन आवत नीको दीनो । पेटी दम्ब जननौ लीनो ॥
जो कछु मोदिक ह्यौ नंद घरनी । सास बहू है उनहीं की करनी
हँसि हँसि कीरति कहत सुभाए ॥ मन मैं अति आनंद बढ़ाये
फेरि फेरि जसुदा की बातैं ॥ वूझति है जननी राधा तें ॥
सुनि सुनि वरसाने की नारी । गावत निज मनि कौ फिगारी
सुनि बातैं कीरति सुसक्यानी । नैंदरानी के जिय की जानी

ब्रज मे करत विलास ब्रजवासी जन जागहिं चलि ॥

कहति स्याम सौं जसुमति मैया। पियहु दूध कछु लेहु कलैया
आज सवार दुहौं मै गैया ॥ सोई दूध पियो वसु हि मैया ॥
धौरे दूध रुचि मोहि न आवे। जो तू कोटि यत्न करि प्यावे
जननी तवहि सौंह करि स्याई। यह धौरी कौ दूध कन्हाई ॥
तुम तैं और कौन सु हिं प्यारौ। जौ टिध सो तुम मेरे हित न्यारो॥
ताते जानि वदन नहिं लावै॥ फूंकि फूंकि पै जननि पियावै
पय पीवत मोहन भलसमै। सुन्दर सेज जननि पौढाये॥
प्रात जगावति नंद की रानी। उठहु लाडिले सारंग पानी
भोर भयो जागहु मेरे प्यारे॥ ठाढे ग्वालवाल सब द्वारे॥
ह्रर्‍ड ताप सुख कमल दिखाई॥ करहु कलेऊ मिलि वलि भाई
सद माखन दधि रैन जमायौ॥ मांगलेहु अब रूजो मन भायौ
सखा वृंद सब लेहु बुलाई॥ उठहु लाल जननी वलि जाई

नवहोसि चिंतये सेजतें उठे स्याम सुखदानि
जसुमति जल झारी लिये मुख धोयो निज पानि
बोल उठे बलराम उठे सांवरे भ्रात हरि॥
हरषि मिले घनस्याम दाऊ जू कहि भ्रात सौं

द्वारे से सब सखन बुलायौ॥ देखि वदन सब हि न सुख पायौ॥
सखन सहित सुन्दर सुखदाई। कियो कलेऊ कछु दोउ भाई
गैयन लै वन चले गुवाला ॥ संग चले मोहन नंदलाला
टेर सुनत बालक सब धाये। घर घर के बछरन ले आये
सखा कहत सब सुनो कन्हैया। चलहु आज वृंदावन भैया
यमुना तट सब बछरु चरैहैं। वंसीवट खेलत सुख पैहैं॥
भलो कही हँसि कह्यो गुपाला। चले सकल वृंदावन ग्वाला
कोउ टेरत कोउ घेरि ले आवे। कोउ सुरभी गण जोरि चलावै

कोउ शृंगी कोउ वेणु बजावै। कोउ परस्पर हेरी गावै॥
हेरी टेर सुनत मनमोहन॥ कहत मोहिं सिष वडू कि गोहन
हरि ग्वालन संग टेर उठाई। हँसे सकल पूरी नहिं आई
कहत स्याम अवकै फिर लीजै। अवकै जाइ तवै हँसि दीजै

गावत खेलत हँसत सव सखा वृन्द गो साथ
पहुँचे वृंदावन सघन वृंदावन के नाथ॥
फिरत चरावत धेनु दीनू वंदु दुष्ट न दलन
कृष्ण कमल दल नैन सव अंग सुन्दर सुखद

अथ अघासुर वधलीला

तहाँ अघासुर वन मैं आयौ। कंसराज करि कोप पठायौ
ताके एक वाहन द्वै भैया॥ मारे प्रथमहिं कुंवर कन्हैया
एक पूतना जो ब्रज आई॥ वत्सासुर अरु वक दोउ भाई
तिनकौं वैर असुर उर धारी॥ कियो गर्व मन मैं अति भारी
आज राज कौ कारज कीजै॥ औरु वैर भाइन कौ लीजै॥
गिरि समान अजगर तन धारी। भस्यौ असुर मुख वदन पसारी
वन घन नदी रची मुख माहीं। माया कृत पहिचाने जाहीं
वाही मग निकसे नंदलाला। गाय वच्छ लीने सव ग्वाला
हरि अंतरजामी सव जानी। कपटरूप यह खल अभिमानी
याकौं आज तुरत संघारौं॥ असुर मारि भू भार उतारौं
ग्वालन आदि व पैत कौ जानौ॥ तासु वदन गिरि कंदर मानौ
देखि सुहावन तृण हरि आई॥ गाय वच्छ वे वे सव धाई

गाय वच्छ ग्वालन सहित सव मुख गये समाइ
कहत परस्पर आज वन सुरभी चरै अघाइ॥
सव मुख गये समाइ असुर मकोरी दंत तव

अंधकारगयो भय मानौ घनषेरयो निजा॥

अतिअकुलाइ उठेतहंग्वाल। गायवच्छ सवविकलविहाल
कहतपरैषोहमकतआई॥ त्राहित्राहिघनस्यामकन्हाई
सवकेप्राणगये इहि षारा॥ तुम्हविनकौनउबारनहारा
श्रवणसुनतप्रभुआरतवानी भयेदुषितचिंतामनिआनी
दीनवंधुभक्तनसुखदाई॥ पैठेआइअघामुखजाई॥
अघाअसुरउरअतिहरखाई लियौओठसोंओठलगाई
विद्याधरमुनिवरगंधर्वा॥ अतिभयविकलगगनसुरसर्वा
तवहिकुसमनवृद्धिउपाई आविगातिगतिभक्तनसुखदाई
मुखतेंदेहदुगुणविस्तारी॥ सधीसासभइत्रासाभारी
सक्यौनहींतवअसुरसभारी कियौशब्दअघातपुकारी
फूटगयौसिरदसमदुवारी निकसौप्राणयोतउजियारी
सोवहयोतस्वर्गकौंधाई॥ वहुरिआयहरिमाहसमाई

वाहीमेगअभगवदनतेंनिकसेगोकुलराइ॥
कहतसखनआवहुनिकसमैकरिलईसहाय
अतिहिसकानेग्वालगायवच्छव्याकुलभये
मिट्यौतिमिरीतिहिकालकहतकृहर्षवचनसुनि

हर्षसहितवाहरसवआये॥ हरिकौंदेषिपरमसुषपाये
हमअज्ञानवृथाभयपाई॥ स्यामहमारेसाथसहाई
धन्यकान्हधनिधनिपितुमाता जिनजायौतुमकौंव्रजत्राता
गिरिसमअसुरसर्पतनुधारी ताहिहत्यौतुमहौअसुरारी
कहतकान्हतुमकरीसहाई॥ तवमारयौमेंअसुरअन्याई
जोतुममेरेसंगनहोते॥ ॥ तौयहमारौजातनमोते
दीर्घअघासुरवधसवजानी यपिसुरनकोहजेवानी
विद्याधरकिन्नरगंधर्वा॥ अतिआनंदसुरसम्पकनसर्वा

अलतें पुरइन पात मंगाये ॥ दोनावड्ड परास केलाये
कछु फलवृंदावन केनीके॥ लिये मंगाय भाव ते जीके
बैठे मंडल जोर गुवाला ॥ मध्य स्याम सुंदर नंदलाला
भांति भांति विंजन सब पाये परासि धरे सबही के आगे
कछुक हाथे रिन पर धरलीन्हे शाक खोलि सिंगुरिन बिच कीन्हे
मुरली सुक उकाख तर लीने भोजन करन लगे रस भीने॥
मधु मंगल परसैन सुदामा सुबल सुखमना श्रीदामा
अपर अनेक गोप सुत लीने जैंवत मिलि संग स्याम सतीने
लेत परस्पर कौ रछुडाई॥ कवहुक तिनकौ देत कन्हाई
कवहू कान्ह देत बुलावैं॥ उन्हा कितहि अपने सुख नावै
मीठे खाटे स्वाद बखाने॥ हास विलास करत सुख साने

देखत सुरगण सिद्ध मुनि चढे विमान अकास
लखि कौतुक थकित सबै गये कमल भव पास
कह्यो ब्रम्ह सौ जाइ कहत जाहि परब्रम्ह तुम
सो ग्वालन संग खाय छोरि छोरि कर ते कवर॥

अथ ब्रम्हा के मोह की लीला

हरि माया मोहे सब प्रानी॥ कहि ब्रम्हा कहु सुनि जानी
सुर विरंचि सुर मुनि की बानी भयो मोह उर मैं यह आनी
गोकुल जन्म कौन यह आयौ मैं कछु याको भेव न पायो॥
परख्योले देखौ प्रभुताई ॥ बालक बच्छ हरि ल्याओं जाई
जो सरवग्य ईस भगवाना॥ लैहैं तुरत मंगाइ सुजाना
यह विचार विधि मन ठहरायो चल्यो तुरत वृंदावन आयो
देखे सोरेन वन मैं अति पावन द्रुह पल्लना द्रुम परम सुहावन
जनि रमणीक कदन चहुं पास बंसीवट मधि सुखदीन वास

गोप मंडली मंडल मोहन॥ भोजन करत सखन संग गोहन
देषि विरंचि चकित चित भारी बछरा हरि लीने बन मारी॥
हरि अंतरजामी सब जानी। विधि के मन की हरि पहिचानी।
तव पठये हैं ग्वाल कन्हाई ल्यावहु वत्स घेर सब जाई॥

ग्वाल सकल वन ढूंढि कै फिर आये हरि पाहिं
कहत वच्छ गये दूर कहुं खोज पाइयत नाहिं
तव हंसि कह्यो कन्हाइ तुम सब यहां बैठे रहौ
मैं धौं देखहुं जाइ चले आप वह गइ तव॥

जव गये दूर वनहिं जनत्राता। तवहीं वालक हरे विधाता।
प्रभु लीला को गम कछु नाहीं गर्वित गयो लोक निज माहीं
निज माया सों करि भ्रांति भारी राखे वाल वच्छ इक ठौरी॥
गुणसागर नागर नंदनंदन वंसीवट आये जग वंदन॥
दीनवंधु भक्तन हितकारी॥ यह अपने उर मांझ विचारी
वाल वच्छ जो व्रज नाहिं जैहैं मात पिता इनके दुख पैहैं
तातैं रूप सवन को धारौं॥ या विधि तिन कौ दुःष निवारौं
वाल वच्छ विधि लै गयो जेते भये स्याम तव आपुन तेते॥
वैसोइ रूप वेश गुण शीला। वैसिय वुद्धि पराक्रम लीला।
रंग रेख जैसो जिहि माहीं॥ अंग चिन्ह अंतर कछु नाहीं
वोलन हंसन चलन चतुराई हेरन टेरन फेरन गाई॥
भूषण वसन लकुट कर जैसे भये स्याम सव आवन तैसे

मारन उद्धारन यदपि है समरथ भगवान
तदपि जान निज दास विधि करी तासु की कान
अपनो करि विधि जान अन अनत दोष कौ करै
तातैं कीनो आन मन भायो विधि को कियो

कह्यो स्याम सव सषन वुलाई ल्यावहु घेरि वत्स सव जाई

अध मरह्यो विधि गर्व न वायो ॥ ब्रजवासिन कछु भेद न पायो
वालवत्स हरि नये उपाये ॥ सब जानत वेई है आये ॥

वालक वत्स जो कृष्ण के ब्रजवनितन के ऐन
पूरब प्रीति हुते अधिक करत रहत उर चैन
ब्रज मंगल भगवान ब्रम्ह सच्चिदानंद प्रभु
भक्तन के सुख दान लगे देन सुख सबरे घर

तब विरंच के मन यह आई ॥ ब्रज के लोगन देखहु जाई
है है करत विलाप कलापू विन बच्छन गोयन संतापू ॥
आय विरंच तुरत तहां देख्यो ॥ घरही घर सब कौतुक पेख्यो
जहं तहं गाय दुहन पशुपालक ॥ खेलन निज २ घर सब बालक
देखि विरंच चकित मन माहीं ॥ है यह ब्रज के धौं वह नाहीं
मैं विधना सब सृष्टि उपाई ॥ यह रचना धौं किन हि बनाई
कैधौं हौं इह भ्रम महि भुलानौ ॥ कै हरि अविनाशी नहि जानौ
अंतरजामी जानत सबही ॥ वालवच्छ धौं ल्याये तबही
आन से भ्रम विधि ज्ञान भुलायो ॥ गयौ फेरि निज लोक हि धायो
देखे वत्सवाल जहं राखे ॥ चकित वहुरि ब्रज कौं अभिलाखे
आय भूतल ब्रजलोक सिधारे वालवत्स हू नगर निहारे ॥
बरष दिवस इहि भांति बितायो ॥ चकित भयो अति उर भ्रम छायो

मोहि विकल अति देषि के सुन्दर स्याम सुजान
प्रगट कियो जन जान निज विधि के उर मैं ज्ञान
हृदय भई तब बुद्धि ए पूरण अवतार प्रभु
धक धक मेरी बुद्धि वैर बढायो कृष्ण सौं

मैं मतिहीन वैर नहि जान्यौ मोह विवस प्रभु सौं छल ठान्यौ
यह अपराध बहुत मैं कीन्हौं निज भक्तन न प्रभु को चीन्हौं
भई गलानि बहुत मन माहीं सनमुख होत सकत विधि नाहीं

भयोसोचउरमांमविशेषा॥ प्रभुप्रभावतत्परगरदेखा
बालकवत्ससहितसबसाय, कृष्णरूपसबनरयोसमाय
शिवब्रह्मादिकहुँसमनेका॥ देखेअधिकएकतेएका॥
चरणकमलवंदनप्रभुकेरे॥ गावतगुणगंधर्वघनेरे॥
देखिचकितचितभ्रमतसान्यो। पुन्याब्रह्मकृष्णपहिचान्यो।
शरणापाहिकाहिकातिअतुराई। पयोचरणकमलनपरआई॥
अनजानतमेंकरीढिठाई॥ क्षमाकरहुत्रिभुवनकेराई॥
मेंप्रभुतुवप्रतापनहिंजान्यो तुम्हरीमायामांमभुलान्यो
चूकपरीमोतेंनिजभोरे॥ नाथनवनेतुम्हेसुखमोरे॥

मेंअपराधीहीनमतिपरयोमोहकेजाल
ममकृतदोषनमानियेतुमप्रभुदीनदयाल
कहजानोतुमभेवमेंब्रह्मातुमरोकियो
तुमदेवनकेदेवआदिसनातनअजितअज

जोमनतेंबिगरेबिनजाने॥ सोअपराधनप्रभुकछुमाने
ज्योंशिशुयज्ञदोषउरमाहीं मातातिहिंमानतनाहीं॥
तोषतोषताकोबहुकरई विकसितचितअंकलेभरई
रदरसनादलिजोरिसहोई कहोकोनपरकीजेसोई
निजतनव्याधिप्रीज्ञानुपावे यद्यपियत्नकारनिहिंबचावे
तैसेहीप्रभुमोकोकीजे॥ क्षमिममदोषशरणमहिलीजे
तुमजानेबिनजीवसदाहीं॥ उतपतिपरलैमाझसमाहीं॥
तुमकरिरूपाजनावहुजाको सोजानेतुम्हरीप्रभुताको॥
मेंविधिएकलोककोसाई॥ जिमकृमिगूलरमांमगुसाई
तुम्हरेरोमरोमप्रतिगाते॥ कोटिकोटिब्रह्मांडविधाते॥
कोटिखद्योतप्रकाशकराहीं रविसमक्योंहेहोंहिंसुनाहीं
अबप्रभुवनेसवारेमोहीं॥ राखियचरणसरननिजमोहीं

भीतहोअगमअगाधतुवअविगतिमतिकोजान
तासुपारचाहौलह्योंमैं विधि अतिअज्ञान॥
करियेबिरदकीलाजममकृतदोषनमानिये॥
दीनबंधुब्रजराजशरणागतिपालनहरे॥

चौ० जबविधिकहीदीनकृत्वानी॥शरणरक्षाहिश्रुतिभैमानी॥
तबहीबालबच्छकछुदेखे एकेरूपकछविधिपेखे॥
कृपाकरीतबश्रीब्रजनाथा हस्तकमलपरस्योविधिमाथा॥
अभयकियोविधिसोचमिटायो॥ चरणकमलतेंसीसउठायो॥
बारबारपदकमलनिहोरी अस्तुतिकरतदुहूकरजोरी॥
जोजगधामस्यामसुखरासी ज्योतिरूपसबउरकेबासी॥
गुणगणअगमनिगमनहिपावे॥ताहिजसोदागोदखिलावे॥
धरजलअनलअनिलनभछाया॥पांचतत्वमिलजगतउपाया॥
कालडरेंताकेभयभारी॥ सोऊखलबांधेमहनारी॥
जगकरतापालनसंहरता॥ विश्वंभरसबजगकेभरता॥
तेगेयनसंगग्वालनमांही ब्रजमेंहांसरमठनखांही॥
बड़भाग्यब्रजबासिनकेरे॥ तिनकेप्रेमरहततुमघेरे॥

छं० रहतजिनकेप्रेमघेरेधन्यब्रजबासीसबै॥
ब्रम्हएकअनीहअविगतघरनिघरजिकेफबै॥
धन्यश्रीबसुदेवदेवकिपुत्रकरिजिनपाइयो॥
धन्यजसुमतिनंदजिनपयप्यायगोदखिलाइयो॥
धन्यब्रजकेगोपजिनसंगधन्यगायचरावही॥
चारमुखमेंकहाबरनोंसहसमुखनितगावही॥
जन्मबालकबच्छजिनतेंनाथयहदरशनलयो॥
परसिचरणसरोजमस्तकयायतनजिपावनभयो॥
अबदेउब्रजकोबासमुक्तिप्रभुआसयहमेरेहिये

रेणु करण द्रुम लता सघन मम होइ जो तुम्हर किये ॥
यह नित्य ब्रज लीला तुम्हारी लखि असु यह नलहीं
महत श्री वृन्दा विपिन को अमित मिन कह को कहीं
लखि नाहिं सुहात अब प्रभु आन विधि कौतुक जिये
मोहि ग्वालन को करौ भरन खाइ जूठन जो जिये
वारवार मनाय युग पद नाय यह वर मागहू
मैं रहौं वृन्दा विपिन कौ रज चरण पंकज लागहू

दो॰ करि अस्तुति गद्गद वचन दृगजल पुलकि शरीर
परे उ चरण पंकज वहुरि विधि अति प्रेम अधीर
तव हँसि बोले स्याम गव प्रहरी भक्त हित ॥
जाइ आपने धाम वचन हमारे मानि अब ॥

और का हि अब करौ विधाता । तुम हो कर्म धर्म के दाता
तुम तें है यह सब संसारा ॥ मम माया कौं नाहिन पार
ताते अब मम आयसु कीजे ॥ ब्रज कौ जाइ प्रदक्षिण कीजे
जाते तन के पाप नसौंहीं ॥ वहुरि जाउ लोक निज सुखमाह
हरि उर हरग विधि हि पहिरायौ ॥ विदा कियौ सब सोचनसा
प्रभु आयसु माथे पर धारी ॥ पाप प्रसाद हरष सुख चारे
ब्रज दाहिन फिर पापन साये । वालवत्स प्रभु पहि पहुचाये
वारवार चरणन सिर नाई ॥ निज स्लोक गयौ सुख पाई
ग्वालन यह कछु मरम न जान्यौ ॥ वाही समै सवा हिन मन मान्यौ
हरि सों कहत विलव कत लाई । हम तुम विना छाक नहि पाई
तुम सब भोजन मांझ भुलाने । वच्छ जाइ वन दूर हिराने
खोजत खोजत कहौं न पाये ॥ सो मैं लै तुम पहि पहुचाये

अब परखौ सव घेरि कै दूरि निकसि नहि जाहि
तव सुचित्त ह्वै कै सबै रुचि सौं भोजन खाहि

ऐसें कहि ब्रजराय सबन सहित भोजन कियो
कह्यो रियसुन तर जाइ जल अचयो धोये वदन

संध्या समै धेनु घर ग्वाला ॥ मध्य स्याम सुन्दर नंदलाला ॥
वच्छ घेरि आगे करि नीके ॥ कांधेन पर धरि नीके छीके ॥
जन जन भृंग बजावत गावत ॥ वनतें वनें ब्रजहिं हरि आवत ॥
घर आये ब्रज मोहनलाला ॥ कहति जसोमति सें सब ग्वाला ॥
अहो महरि वन आज कन्हाई ॥ महादुष्ट इक मारयो जाई ॥
पन्नग रूप निगिल सिसु वच्छा ॥ करी आज सबकी हरि रच्छा ॥
गिरिकंदर सम तिन्ह मुख बायो ॥ पैठि स्याम तिहिं तुरत नसायो ॥
याके बल हम वदत न काहू ॥ फिरत सकल बल सहित उछाहू ॥
जीते सबहिं असुर वन माहीं ॥ यह काहू तें हारयो नाहीं ॥
बीते बरष कहत सब ग्वाला ॥ आज अघा मारयो नंदलाला ॥
यह प्रभु लीला अपरंपारा ॥ कौन कौन कौं भुरै न पारा ॥
जसुमति सुनि चकित पछिताई ॥ मैं बरजत वन जात कन्हाई ॥

केतीक रवर तें कह्यो तऊ न नेक डरात ॥
अति विचित्र गति ईस की जानी जात न वात ॥
खीजति जसुमति मात मानति नहिं मेरो कह्यो ॥
स्याम मनहिं मुसकात अब नाहीं वन जाउँगौ ॥

हरि की लीला कहत न आवै ॥ सुर नर असुर सबहिं भरमावै ॥
पय पीवत पूतना नसाई ॥ पटक्यो तृणा शिला पर आई ॥
तीनि लोक मुख में दिखराये ॥ यमलार्जुन वृक्ष ढहाये ॥
वत्सासुर बक वहुरि नसायो ॥ अघा मारि विधि गर्व नसायो ॥
जसुमति यह पुरुषारथ देखी ॥ ना परखि जपछितात विशेषी ॥
अघा मारये नंद के लाला ॥ घर घर कहत फिरत सब ग्वाला ॥
सुनि सुनि ब्रज युवती उठि धाई ॥ चकित विलोकति हरि सुखदाई ॥

मनमन करति यहै अनुमाना।	इनके सखपरिकउनहि...
येई है ब्रजके रखवारे॥ ॥	येई है पति प्राण हमा...
कहतपरस्पर सुनडु सयानी	हैयहजगतिपतीयहु...
प्रेममगनब्रजके नरनारी॥	रहैयसमसुख हरिहिनि...
ब्रजमोहनसुन्दरसुखएसा॥	भोजनमांगतजसुमतिपा...

खाइलेभलेजोभावईस्वपिसीसखनसमेत
सरसमाखनव्यंजनसरस करिएखेतुमहेत
दोरोटीनवनीत औरमोहिभावेनहीं॥
दियोमातअतिप्रीतिखातहंसतमिलितषनसग

अथगोदोहनलीला

हँसिजननी सोंकहतिकन्हैया । दुहनीदैदुहिहौं मैं गैया ॥
नंदववा मोहिंदुहनसिखायौ । ग्वालनकोंसर दुहनचुकायौ ॥
धौरी धूमरिकाजरि गैया ॥ तुरताहिंदुहिल्याऊंमै मैया ॥
भयोमोहिंवलमाखनखाई । अवनडरात वृंभवलभाई ॥
तोहिं नहींपतियारो आवै ॥ वैठिरउकरै भाव वतावै ॥
अंगुरी भाव देखिहँसिमाता । उरलगाय लिये सावलगाता ॥
कृहतकहा दुहनीदुधिपाई । हरषिनिरषिमुखवलि रजाई ॥
लै दोहनी दई कर माता ॥ हर्षित चले दुहन सुखदाता ॥
वछरा छोरितुरतयनलायो । मातदुहतलखिहर्ष वढायो ॥
सखा परस्पर कहतकन्हाई । हमहूंतै तुम करतवडाई ॥
दुहनदेऊकछुदिन सुहिगैया । तवकरियो मेरी सर भैया ॥
जवलौं एक दुहौ तव ताई । दसन दुहौं तौ नंददुहाई ॥

सखा कहत सव तूवही नंददुहाई खात ॥
मातु साथ हम दुहहिंगे देखाहं को अधिकात ॥
कहउ कान्ह हरषाइ भलीकही यह वात तुम ॥
प्रात दुहहिंगे गाय हम तुम होड़ लगाय कै ॥

श्रीवृषभानकुंवरि मन माहीं ॥ स्याम सुरतक्षणविसरतनाहीं ॥
दरसलालसा दृगननथोरी । देखेऊचहतवहोरिवहोरी ॥
उठिपरवात दोहनीलीनी । सुरनस्याम दरसनकीकीनी ॥
जननीदेखिकहेउ दुलराई ॥ जातिकितै राधा अतुराई ॥
खरकहिंजात दुहावनगैया । दुहत सवेरे ग्वाल सव मैया ॥
काल्हि तनकमै विलमलगाई । उठि अहीर सव मोहिंरिसाई ॥
गाय गईसव वछ्छपियाई । रीती दुहनी फिरि लै आई ॥
तुमहू खीजनलगि तव मोही ॥ जात सवार आज कहतोही ॥
ऐसे कहि जननी समुझाई ॥ घरतें चली व्रजहि समुहाई ॥

तेरे मुखसम शशि नहिं भाजै । नैनन लखि खंजन गति लाजै
चपलाहू ते चमकति हेरी ॥ करिहै कहा स्याम को तेरी ॥
मेरयो कह्यो सुनत कछु नाहीं । है धौं कहा गुनत मन माहीं ॥
इक टक दीठ कबहुं तें ल्याई । तनकी सुरति सबै बिसराई ॥
अबहीं तें ऐसे ढंग योंही ॥ अबहीं बड़त होन है तोही ॥
ऐसे ढंग लगायो स्यामहि ॥ काज नहीं कछु तेरे धामहिं ॥
चितयो मनहि करै टकलाई । हिलिमिलि खेलि स्याम संग आई
कै रहो बैठि आपने धामहिं । धैन दुहन दै मेरे स्यामहिं ॥
देखत तोहि स्याम सुधि जाई । तू चितवति तन सुधि बिसराई
सूधे रहि जो इहां तु आवै ॥ ऐसो ढंग मोकों नहिं भावै ॥

करत अचकरी आइ तू यह नाहिं मोहि सुहाइ
सूधे खेलहि स्याम संग कै तू इत मन आइ ॥
ऐसे महरि रिसाइ सीख दई हरि भावतेहि ॥
तब कछु तनि सुधि पाइ बोली अति भोरे बचन

मुहि खीजति ब्रजपति सुत नाहीं । नित उठि मोहि बुलावन जाहीं
मोहि कहत बिन तोहि निहारे । रहत न मेरे प्राण सुखारे
छोह लगत मोको सुनि बानी ॥ तब आवत मैं ह्यां घर जानी
सुख पावति आवति मैं तातें । तुम कहुं लावति औरहि घातें
जसुमति सुनि प्यारी की बानी । भोरे भाइ समुझि सकुचानी
बांह पकरि उरसों लै लावति । प्यारी मन मैं रोस मिटावति
हसत कहत मैं तोसों प्यारी । मन मैं कछू बिलग जिन लारी
सिखवति मोहि सोबगुण कारी । मैं तेरी जैसी महतारी ॥
सुनि यति महरि सुधर अधिकाई ॥ टहल काज कछु तोहि सपाई
सुनि जसुमति वचनस प्रीती ॥ बोली अति नागरि सुरीती
मैया मोसों टहल करावै ॥ खीजत जात दौरि जो पावै

पुनि जसुमति राधाकी बानी। श्रीवृषभानलाडिली आनी॥
अतिसप्रेम दुलराइकै लइ खुश्री उरलाइ।
श्री राधाके चित्त ते दीनी शरम मिटाइ॥
कापै वरनी जाइ हरि प्यारी की चतुरता।
लीनी सहज सुभाय बात नही जसुमति सुरै॥

कहेन सखा हरि सो मुसकाई। दुहन कहा तुम आज कन्हाई॥
कालि दुहन है होड़ लगाई॥ विसर गये सब आज चढ़ाई॥
गिरत दोहनी कंपित हाथा। नोवत वृषभ वत्स ले साथा॥
सुनि ग्वालन के वचन गुपाला। कछुक सकुच विहसे नंदलाला॥
वच्छ छोरि दियो खरक चलाई। आपजननि सो कहत कन्हाई॥
मुरली मुकुट देहि पट मेरो॥ सुनि आऊं दुहि मोहि टेरो॥
जननी हरषि तुरत सब दीनो। लै हरि मुकुट सीस धरि लीनो॥
चारु पीतपट कटि लपटाई। कर मुरली ले मधुर बजाई॥
मुरली में कहे प्यारी प्यारी॥ गये बुलाइ खरक सुषकारी॥
लखि प्यारी हरि की चतुराई। कहति जसोमति सो पतुराई॥
जाति धरहि मात हि मैं धाई। खरक दुहावन कौं निज गाई॥
पायो ग्वाल खरक कोउ नाहीं। सो जानि मैं आइ इत माहीं॥

धेनु दुहावत लाडिली दुहन नंद को लाल।
सो सुख कापै जाइ कहि देखत निरझ की बाल॥
वच्छ पद अटकाइ गौ थन लीनो हाथ हरि।
पिया वदन दृग लाय दुध धार छाड़त छलन॥

दुहत धेनु धनि ही छवि वाढ़ी॥ प्यारी पास दुहावन गाढ़ी॥
एक धार दुहनी मे डारै॥ प्यारी नइक धार पखारै॥
हरि कगन पै धार छुटाहीं। लसत छीट प्यारी मुख माहीं॥
मनहु मयंक कलंक पखारी। सोभित जहन तहं चंद्र सुधारी॥

कौधे पैनिधिखोरि मयंका॥ लसत सुधासह खोयकलंका
लसत नीलपट कनककिनारी॥ मोरत सुखहि मुदितमनप्यारी
मनहु सरदशशिसुधारदारा॥ घन दामिनि घेरयोइकबारा
इहिविधि रहसत बिलसत दोऊ॥ हेतहिये थोरे नाहिं कोऊ
मनहु उभय आनंदसरसा री॥ मिलनचहतमर्यादीविसारी
हावभाव रसदंपति पूरे॥ ॥ निरखतिललितादिक दूरदूरे
इहिविधि श्रीवृषभानदुलारी॥ हरिपै धेनुदुहावतप्यारी
विलसत ब्रजविलासब्रजप्यारा॥ वेदुखतीनभुवनतेन्यारी

दुहीकुवरनंदलाडले श्रीराधाकी गाय॥
दुहनी देतन हंसप्रय मांगलही हर्षाय॥
त्यौंत्यौं सहतकन्हाइज्यौंज्यौंप्रियहाहाकरत
सोसुखवरनि नजाइ भरूके दोऊ प्रेमरस॥

फिरहाहाकरकहतकन्हाई अबकै देहौ नंद दुहाई॥
फेरिकरी हाहा हंसि प्यारी दई दोहनीविहंसिविहारी
हावभावकरि मन हरिलीन्हौ॥ कुंवरिरहिकीन्ह विदातवकीन्हौ
यहछविनिरषिहरषिहरस्यानी॥ चलीअग्रह्वै कछुकसयानी
प्यारीनिरषिस्यामसुन्दरकौं॥ चलनचहतपगचलतनघरकौं
अंतरनेकनहारेसौ भावे॥ पुरजनसकुचबहुरिसकुचावे
धिकयहलाजकहतमनमाहीं निरषदेतस्यामजीमाहीं
कछुदिनज्यौंत्यौंऔरबिताई दैहकरौंयुनि इहिद्वविदाई
यहविचार मनमैं ठहराई॥ चलीसदनउरराषिकन्हाई
मुरिमुरिनंदनंदन तन हेरै॥ आवतिविरहवियासनघेरै
आगे धरत परत पगनाहीं॥ मनफेरतमनमोहनपाहीं
चितवतस्यामखरिकमहवादै प्यारीतनमनआनंदबाढै
भयेदृगनतेंओटदोउगयेसदनसुखरास

फिरि वृझति सखिन वुलाई॥ कह प्यारी कहि तुमहिं सुनाई
कहत सखी सब परम स्यानी॥ सुनहु महरि इतनी हम जानी
हम आगै यह पाछे आई॥ गिरी धरणि दुहनी ढरकाई
यही कहेउ कारै मुहि खाई॥ तव हम आतुर लई उठाई॥
सो कारो हम हू पुनि देख्यौ। लग्यो सवनि विषयाहि विशेष्यौ
सो अव हम तुम सौं कहैं मान लेहु यह वात॥
वडौ गारडू राय है नंद महर कौ तात॥ ॥
स्यावहु ताहि वुलाइ देखत ही विष जाइगो
तुरतहि लेहि जियाय हम नीको यह जानहीं
देखहु धौं यह वात हमारी॥ एकहि मंत्र जिवायहि मारी
त्रिभुवन धनी और नहि ऐसो है वह नंद महरि को जैसो
कीरति महरि सुनी यह वानी अपने मनहि सांच कर मानी
इक दिन राधा हू यह वानी॥ भोसो कही हुती यह जानी
दौरति चली नंद के धामहि मोलन आतुर गारडू स्यामहि
महरि जसोदहि जाय पुकारौ॥ अहो गारडू सुवन तुम्हारौ
मेरी सुता लाडिली गोरी॥ विह्वल विकल परी मति भोरी
प्रातहि खरक दुहन वन आई तहां कहूं कारे डसि खाई॥
नेकु पठै सुत काज विचारौ यह यश वडे है वडो तुम्हारौ
सुनि जसुमति कीरति की वानी॥ कहति महरि तुम भई अयानी
मन्त्र यंत्र कहु जानै मेरो ॥ अति ही वालु घर घर खटकेरौ
किन तुम को दीनो वह काई यह तुम वूझी गारि न वुलाई
मै चकृत तुम वचन सुनि यह अचरज की वात
स्याम भयो कव गारडू तुम आई अतुरात॥
अवलौ सुनी न कान भयो कान कव गारडू
वालक अति अज्ञान यन्त्र मन्त्र जानै कहा

महरि गारइ कुवर कन्हाई इक दिन राधा मोहि सुनाई
एक लरिकिनी कारे खाई नाको तुरत स्याम जिवाई
नाते मैं आई अतुरानी ॥ पठवहु सुत हि नेक नंदरानी
है मम कुंवरि विकल अधिकाई॥ आसबर कका रे क... साई
वड़ो धर्म जसुमति यह लीजे॥ वेग वुलाइ कान्ह को दीजे
तुव यह सुनि जसुमति मुस्काई अवहि हतो मेरे घर आई॥
हे राधा मोहन कछु कारन॥ चुप कइ मन मे लगी विचारन
जहां सखी ललिता दस यानी प्यारी दीषि हृदय अनुमानी
याहि डसी वंसी घर कारे ॥ चितवन फरा मुसकन विषधारे
प्रेम प्रीति हैं डारत जारे ॥ लगे न मन्त्र गुणी सब हारे
यके मकल हरि विविधि उपाई यह विष मोहन विन नहि जाई
सखी एक हरि पास पठाई॥ तिन मोहन सों जाइ सुनाई

अहो महरि के लाडिले मोहन स्याम सुजान
कितसी खेय ह गोदुहन हमसो कहो वषान
दुहि दीनो जिहि गाय आज भोर ही षरक मे
वेग विलोके जाइ निजनैनन ताकी दशा॥

जवते दुहि दीनी तुम गैया अहो अनोषे गाय दुहैया
घर लौ कुंवर जान नहि पाई वीच हि धरणि गिरी मुरझाई
देखत संग सखी सव धाई॥ जैसे तैसे गृह पहुचाई ॥
सो अवनन को सुधि न संभारे परी विकल नहि क्रुगन उघारे
मक सकान तन खेद वहाई॥ उलटि पलटि भर लेत जंभाई
कहति मोहि कारे अहि खाई कियो यतन वहु गारडू आई
ताहि कछु उपचारन लागे तुम्हरो नाम लेत कछु जागे
होप रई इक सखी सयानी॥ यह विष तुम्हरो निहचे जानी
यह कारो अहि रूप तुम्हारो मुसकनि विषता ऊपर डारो

अबजो चाहौ ताहि जिवावौ। बेग चलौ जिन गहर लगावौ॥
अतिहि विकल वृह विरह अधीरा॥ दरस दिखाय हरौ सब पीरा॥
सुन अस्त्रवनी कुमार कन्हाई॥ बेग चलौ हरि लेहु जिवाई॥
नजर देव यह बावरी टेर कहत हम कान
नहि जागति तो देउंगी नंद द्वार सब प्रान
व्याकुल जननी तास घरनि महर व्रषभान की
गई जसोमति पास वेग जाइ सुधि लीजिये
कीरति आगम सुनत कन्हाई। कीन्ही विदा सखी मुसकाई॥
जो कहुं डसी भुजंगम प्यारी। तौ हम आइ देहि गोकारी॥
ऐसे कहि हरि सदन हि आये। देखि जसोमति निकट बुलाये
तू कछु जानति मंत्र कन्हैया। बूझति विहसि जसोमति मैया
कीरति महरि बुलावन आई। कुंवरि राधिका कारे खाई॥
आवहु मोरि वेग संग आई॥ कुंवरि जिवाये अतिहि भलाई
गारडु भयो भले सुत जानी। आज सुनी अव रागन यह वानी
मैया एक मंत्र मैं जानौं ॥ तेरी सौं कहि सत्य वखानौं
अहि काव्यौ मो ढिंग जो आवै। मोपै क्यौं हूं मरन न पावै॥
जननि कहत उठ सुत जाहु कन्हाई। देहु राधिकहि जाय जिवाई॥
जननी वचन सुनत व्रजनाथा। चले हरषि कीरति के साथा॥
चली महरि हरि संग लिवाई। गई व्रषभानपुरा समुहाई॥
रुदित महरि लषि कुंवरि कौं अतिहि गई कुम्हिलाइ
सिथल अंग बानी निरषि लीनी कंठ लगाइ
तवहि स्याम के पाय परी कुंवरि लैके महरि॥
मोहन देहु जिवाय अति व्याकुल मेरी सुता
आये गरुड़ कुंवर कन्हाई। कुंवरि कान्ह मैं यह सुनि पाई
धन्य धन्य आपुन कौ जानी। हृदय हरषि हग आनंद पानी॥

प्रगट रोमतन स्वेद वहाई॥ वेहूवल देषि जन कछु पकुलाई
अंतरभाव भेव हरि जानौ। रासक सिरोमनि मन मुसकानौ
तव कछु षुदि कै कुंवर कन्हाई॥ मुरली अंग सो दई छुवाई॥
तत्क्षण लोचन कुवरि उघारे। सन्मुख सुन्दर स्याम निहारे॥
देखत द्रगन परम सुख कीनौ। सकुचि सभारि वसन सम कीनौ
वूझत वात जननी सो प्यारी। आज कहा यह है महतारी
जननी कहति निहरा षिउर लाई। मोहिमरत ते कान्ह जिवाई
कपति लखन कारी प्यारी। करवर वड़ी आज विधि टारी
यौं कहि महरि हृदय अनुरागी॥ नंदसुवन के पायन लागी
कह्यो मंत्र तुम कियो कन्हाई। सुनो हमारी मरत जिवाई॥

उर लगाय सुख पाय कै पुनि पुनि लेत वलाइ
धन्य कोषि जसुमति महरि जहां अवतरे आइ
कछु मेवा पकवान कह्यो खान भगवान सों॥
विदा किये दै पान कीरति स्याम सुजान कौं

महरि मनै मन मैं अनुमानी। जोरी भली विधाता वानी
व्रज घर घर यह घेर चलाई। वड़ी गारुड़ु कुवर कन्हाई
सखी कहति हरि सौं मुसकाई। भले भले है गारुड़ राई॥॥
प्रगट्यौ गारुडु नाम तुम्हारौ। भले भाग तुम विषहि उतारौ
जननी कहति मेरी अति वारौ। ऐव धौ कौन करै निरवारौ॥
जा मौ कठिन प्रसन व्रज कारौ। अव यह मरहि मतिहि विसारौ
फिर आरौ कछू काहि पसारौ। हननत ले है नाम तुम्हारौ
यह गारुडू कहा तुम पाई॥ प्यारी एकही टेर जिवाई
अव हम जानी वात तुम्हारी। जाहु आपने सदन विहारी
रसिक मुकुट मणि कुंज विहारी। हंसि वसकी नी घोस कुमारी
विवस भई अव व्रज की वाला॥ गये तदन मोहन नंदलाला

ब्रजविलासविलासतब्रजप्यारे ब्रजवासीजिनकौं रखवारे
कारौसुतनंदरायकौजाकीलीला नित्त ॥ ॥
तिनहीकौंहरिइसतिहैजिनकौउज्वलचित
धन्य धन्य ब्रजवाल धनिधनिब्रजकेवालसव
जिनकेसंग नंदलाल दुहतचरावतगायसव

प्रातहोतवलमोहन लाला॥ गायवच्छसव संग लैग्वाला
चले चरावनवन घनमाहीं॥ क्रीडाकरत सकलजगमाहीं
देखिमुदितसवब्रजकीवाला॥ वृंदावनगये मदनगुपाला
गैयाचारि गई वनमाहीं॥ वैठेकान्हकदमकीछाहीं॥
सखालियेसंगसुवलसुदाम॥ क्रीडाकरतसहितवलराम॥
ग्वालजहांतहं गायचरावैं आनंदभरेकछूसुखमाहीं
करतविहारविविधिसवग्वाला॥गयेदूरवनसघनविशाला
कोउगैयनकोघेरन धायौ कोऊवछरनलैविलमायौ
हलधररहेकहूंवनजाई॥ आपअकेलेरहे कन्हाई॥
मनमनकहतस्यामसुखदाई सखारहेकतवनविरमाई॥
गोरामनकछुसुनियतनाहीं गयेनितधौंकितवनमाहीं
आलसगातजानमनमाहीं वैठेवंसीवटकीछांहीं ॥

सखावृंद हलधर सहित लियेवच्छअरुगाय
वृंदावन घन छोड़िकै रहेलाल वनजाइ॥
मनहरखे सव ग्वाल देखिभूमिसुन्दरपरम
फिरैविपुलतरुताल आतिरसमयमीठेमधुर

अथ धेनुकवधलीला॥

गोधनवृंदलियेवगराई | लगेस्वानफलमनहरषाई
मचयोवलरसतालरसालो॥ वाढ्यौउरआनंदविशाल

तुरत नंदनंदन की आई ॥ कहो सखन सों कहो कन्हाई
ल्यावहु घेर जाइ सब गैया। बलहि संग जहीं कुंवर कन्हैया
सुनत सखा हलधर की बानी बन में स्याम अकेले जानी॥
आतुर गैयन घेरन धाये॥ टेर दई सब ग्वाल बुलाये॥
तहां असुर इक धेनुक नामा खर के रूप रहै यन धामा॥
छायौ इतौ विटप की छाया सुनत शोर करता मस भाया
अति बलवान विशाल कराला परम भयंकर मानहु काला
दाऊ कहि सब ग्वाल पुकारे भागे जित तित भय के मारे
असुर महाबल गर्व बढाई बल के सन्मुख गरजौ आई
मत्त ताल के रस बल राई॥ देषि असुर मन रिस उपजाई

बल संभारि उठि कोप करि असुर प्रचारो आइ
अग्रज भ्राता स्याम कौ तिहुं पुर जासु बड़ाइ
बल कौं आवत जानि असुर जोरि दोऊ चरण
घपरि चलाई आनि बहुरी हठ गहौ भयो

बहुरौ फिर मारन कौं धायो ॥ बलजू कौ तामस अति आयो
जबहि असुर फिर चरण चलायो॥ गहि लीनो करि कोप फिरायो
पटक्यो लैत रु ताल हि जाई भयो प्रान विनत सहि गिराई
तरु सों तरु टूटे भहराई ॥ ग्वाल बाल सब करत बड़ाई
और बहुत धेनुक परवारा कीनो बल सब को संघारा॥
मार्यो असुर महा दुषदाई॥ ग्वाल बाल सब करत बड़ाई
आये सब वृंदा वन माही॥ जहं तहं स्याम हि टेरत जाहीं
चढि चढि द्रुमन पुकारत ग्वाला॥ आवहु हो मोहन नंदलाला
ल्याये घेर मिली सब धेनू॥ अब हम घुर वजावहु वेनू॥
कोमल चरण कहूं मत धावहु॥ कंटक कोठन मही इन आवहु
ऐसे हरी कौ टेरत जाहीं॥ तृषित भये सब वन के माहीं

ग्वाल बाल सब यमुनहि आयो । बलरसमत्तनु पड़तन पाये ॥

गोप गाय अचवत भये काली दह को नीर
निकसत सब अकुलाय कै बैठ गये जल तीर
परे सकल मुरझाइ तहाँ तहाँ विष झार तें ॥
ग्वाल बच्छ अरु गाय भये मौन सब प्राण सब

हरि ठाढ़े बंसीबट छाहीं ॥ बारहिं बार कहत मन माहीं
अबहिं रहे सब संग चरावत । निकस गये धौं कित बन धावत
गोरांभन ग्वालन के बैना ॥ अनुकत कछु न सुनत कहुं सैना
तरु चढ़ि इत उत गैयन हेरत । लै लै नाम सखन कौं टेरत ॥
काली दह तन आहट पाई । सो धलन्त उत चले कन्हाई ॥
बन घन ढूंढत हरि तहँ आये । ग्वाल गाय सब मूर्छित पाये
मन में ध्यान करत ही जान्यौ ॥ काली अहि ह्यां आय समान्यौ
रहत इहाँ खगपति भय मानो । अंचयौ इन ताकौ विष मानो
अमी दृष्टि प्रभु सकल निहारे । तुरत उठे सब भये सुखारे ॥
देखि कृष्ण कौं अति सुख भाई । मिले सकल प्रेमातुर धाई ॥
बोले हरि मृदु वचन सुहाये । तुम सब मोहि छोड़ि के आये
कितनै कित इत निकसि आई । मैं बन ढूंढि रह्यौ पछताई ॥

खोजलेत आयौ इहाँ देखे सब वे हाल ॥
मुरछि परे काहे धरणि भयो कहा जंजाल
गाय बच्छ अरु ग्वाल उठे एकहीं बार पुनि
कहा कियो यह ख्याल देखि मोहि अचरज भयौ

सुनि हरि वचन परम सुखदाई । कहन सखा सब सुनौ कन्हाई
अंचयौ तृषित यमुन जल आई । तबहिं गिरे सब तट अकुलाई
कारण कछु हम जान्यौ नाहीं । भये प्राण बिन सब क्षण माहीं
यह हम जानी कुंवर कन्हाई । तुमहीं हमहिं जिवायो आई

होतुम व्रजजन के रखवारे ॥ जहाँ तहाँ तुम हमहि उबारे ॥
तब हरि बल दाऊ को हेरो ॥ कहुँ चलो बन होत अँधेरो ॥
सखा बोल ल्याये बलरामहि । हँसे देखि सुन्दर घन स्यामहि ॥
बड़ी बेर भई तुम्हें कन्हैया । रहे अकेले बन में भैया ॥
चलहु बेगि अब घर को आही । सेइ निबाहि गाय बन माहीं ।
हेरी देत चले सब ग्वाला ॥ गावत गुण सुन्दर गोपाला ।
गोधन आगे दये चलाई ॥ सखन मध्य मोहन बलभाई ।
चले व्रजहि व्रजजन सुखदाई । निरखि वदन छबि मदन लजाई ।

सुनि व्रज सुंदर परस्पर कहति सुरनि सुरघोर
आवत बन ते बासि महरनि सि आगमनंदकिशोर ॥
भाई तज गृह काज निरखन कों मन भावती ॥
सुन्दर सुत व्रजराज लाज धाज सब साज की ॥

बे देखे आवत बलमोहन ॥ सुबल सुदामा सुन्दर गोहन ॥
मेघस्याम तन गैयन पाछे । सीस मुकट कटि काछनी काछे ।
कमल वदन कर बेणु बजावैं । गौरी राग मिले सुर गावैं ॥
नैन विशाल कमल ते आछे । कोटि मदन की छबि को वांछे ।
कुंडल श्रवण वदन छबि पाई । गोरज छबि कछु चंद छपाई ।
निरखि मुदित सब सखिन की बाला ॥ पहुँचे आइ सदन नंदलाला ।
व्रजजीवन बलमोहन भैया ॥ निरखि जननि दोउ लेति बलैया ।
ग्वाल कहत धनि जसुधा माता ॥ धनि २ बलमोहन दोउ भ्राता ।
नरतनु धरे देव ए कोऊ ॥ व्रज अवतार लियो इन दोऊ ॥
एही सब व्रज के रखवारे ॥ गाय गोप के राखन हारे ॥
गर्दभरूप असुर इक मारे ॥ ताहि आज हलधर बन मारे ।
हम सब यमुना तट सुरझाये । तहाँ कान्ह सब मरत जिआये ।
अब हम काहू डरत नहिं ये है हमैं सहाय ॥

वलमोहनके वलफिरतवनवनचारतगाइ
चरतगाइ जवआयतवतवहोनसहायहरि
चिरजीवहुजवआयजसुमतियेतेरेकुंवर

जसुमतिसुनिग्वालनकीवानी । कहेउगर्गसवसत्यवखानी
निजनवचरितसुनतइनकेरे । हैकोऊयेवडनवडेरे ॥ ॥
धन्यधन्यये व्रज मैं आये ॥ धन्यधन्यहमसुतकरिपाये
अतुलितकर्मदुहन कोजानी । दोउजननी मन मांझसिहानी
स्यामराम दोऊ नंद रानी ॥ लियेलाय छाती हरखानी
भूखेजान तुरत अन्हवाये । खटरसव्यंजन सरस जिवाये
भोजनकरि अचये दोउभाई । लीनेपान संत सुख दाई ॥
पौढे सेज दासहित कारी ॥ व्रजजन वासी हैं हितकारी
चिंतामणि हरिजनसुखदानी । कालीकीचिंता उर आनी ॥
ग्वालगाय नित वन कोंजाहीं ॥ सुखपावतकालीदहमाहीं
विषधरको रहनोजलमाहीं । वृंदावनढिगनीकोनाहीं ॥
कालहिकाढि दूरहतेंदीजे । जमुनाकोजलनिर्मल कीजे ॥

यह विचार मनमें करतभयेनींदवसस्याम
जसुमति हरि पौढाइके आपलगी ग्रहकाम
खरैनवोलनदेत घर मैं काहू कों महरि ॥
वलमोहन के हेत जागिपरैं मतनींद तैं

शिवसनकादिकविधनितिध्यावैं ॥ कवहूंजाको अंतनपावैं ॥
व्रम्हसनातन आनंद खानी ॥ सोनंदसदन सोवतसुखमानी
देखोनंदकान्ह अलि सोवत ॥ अमितजानवनकेमुखजोवत
मानतनाहिंक होकिनकोउ । आपहठीलेभैया दोउ ॥
करसौं पोंछतसुभगसरीरा ॥ कहियन यहै प्रेमकी पीरा
निजअंचलकालनहिलियेमगाई । सोयेहरि केढिग नंदराइ

जसुमतिहू पोढी नहाें आई । निशिबीते अधिके अधिकाई
जागउठे नवकुंवर कन्हैया । कहोंगई मोढिग ते मैया ॥
संगसोवत जान्यों घल भाई । अतिहीं स्याम उठे अकुलाई
जागे नंद अरु महरिजसोदा । हरिको ऐंच लियो नंद गोदा
काहेनिमिकिउठमोअनियासा । तुरतहि दीपक कियोप्रकाशा
सपनेउ गिस्यौयमुनजलजाई । काहू मोकों दियो गिराई ॥

नितप्रति मैबरजतरहीतूहदियमुनाजाइ
सुधिरहगईअन्हमकीजिनहोलालडराइ
कोरेलेनंदराय पोढाये निजसंगतव ॥
वृंदावनमूजाइकेहिकारणजितनितफिरत

अवतूवृंदावन जिनजाई । नहोकौन धीरहतबलाई
सोईसंपति बीचु कन्हाई । तुरतहि गईनींदफिरआई
सपनोसुनिजननीअकुलानी । कहतनंदसोंजसुधारानी ॥
देख्यौधींकहसुपनकन्हाई । यात्रजके जीवन दोउभाई
यहेयवडूनको अव कीजे । गायघरावनजननी दीजे
गरहसंपतिद्वै ननकढुटोना । डूनहीलोयलभोगढटोना
येथनजातवरावन गैया । हसीकरत व्रज लोगलुगैया
दंपतिआपस मैयहभांनी । करतविचारवीतिगईराती
तारागन सवगगनछिपाने । गयोतिमिरिअंसुअधिकसाने
रविअसुमतितलागीरहकाना । भूलिगयोनिसिसोचसमाना
प्रातस्नानयमुननित जाई ॥ नंदहितुरतहि दियोउठाई
मथनहारग्वारीनि सवजागी । जितनितदहींकिनोवकतमे

हरिप्यारीसुरभीनकौजन्योजोदधिकिलगाइ
सोहरिहितमाखनलियेमथतिजसोदामाइ
सदमारपनिनिजपानिमथततुरतमपनीधरी

वड़भागिनि नंदरानि माखन प्यारे लाल हित

लगी जगावनि हरि कौं जाई । उठहु तात माता बलि जाई
प्रगट्यो तरणि किरण महि छाई ॥ खोल देहु मुख कमल कन्हाई
सखा द्वार सब तुमहिं बुलावैं । तुम कारण सब धाये आवैं
उनि तिन कौं मिल कै सुख दीजै ॥ होन अवार कलेउ कीजै ॥
तब हरि उठि कै दरसन दीनो । माता निरषि मुदित मन कीनो
[illegible] हि स्याम पुकार्यो । नीलांबर गहि मुख तें टार्यो
[illegible] शशि भयो नियारो ॥ प्रगट्यो सुन्दर मुख उजियारो
[illegible] सत उठे सुन्दर दोउ वीरा ॥ गोर स्याम अति सुभग शरीरा
[illegible] न भवन तें बाहिर आये । लखि दोउ जननि परम सुख पाये
[illegible] लै दोउ वन कर दीनो । चौकी बैठि मुखारी कीनी ॥
[illegible] जल निज कर मुख धोयो । नैनन को आरस सब खोयो
[illegible] सो मुख कमल अंगोछो । उर लगाय सब अंगन पोंछो

कहु [illegible] लेउ लाल दोउ तब कहुं बाहिर जाउ
मथ्यो तुरत मीठो मधुर माखन रोटी खाउ
दई [illegible] हन कौं मात रोटी अरु माखन मधुर
हरषि परस्पर खात माता अंतर हेत लखि

अथ धेनुक वध लीला ॥

जदपि नारद हरि भक्त सयाने । प्रभु के मन की सांच पहिचाने
[illegible] तगण हरि पर मुक्लाने ॥ गये तुरत मथुरा नृप थाने
[illegible] आदर अति कीनो । करि दंडवत वरासन दीनो
[illegible] दफर कुसल नृप राई । कछु सांच वश परत लखाई
तुम मन आप सु निकुशल सदाई ॥ एक शोच मोहि बड़ो गुसाई
ये दोउ ब्रज में नंद कुमारा ॥ जानपरत मोहि कोउ अवतारा

कहत जिन्है यल राम कन्हाई। तिनकी मति गति जान न पाई।
तरणा वर्न से दैत्य पठाये॥ सो उन पल इक माहिं नसाये।
धर्म्मी पवाद् दई पहिलेहीं॥ सेसिन को वल सव ले लेहीं।
उनते भयो नहीं कछु कामा। यह सुन संसु रहन सुहि नाजा।
अव तुम मुनि कछु कहहु विचार॥ जोहि विधि मारौं नंदकुमार।
सुनि हरि के गुणनी के जान। सुनि नृप वचन मनहिं मुसकान।

तव वोले सुनि नृपति सों सत्य कही तुम वात
वे दोऊ औतार हैं इन गति जानि न जात
है यह तुम्हरे काल मगट भये व्रज आइकै
नंद गोप के धाल तुम इनकी रखहु मनहि

एक वात मेरे मन आवै॥ करहु कंस तुम जो भावै।
कालीदह हि ल्यो यमुना भाई। तहां कमल फूले विथुलाई॥
फूल तहां ते माग पठावहु। दूत पठहि नंदहि डर पावहु।
यह सुनि व्रज के लोग डरैहें। ये है घात येऊ सुनि पैहैं॥
जो है गुप्त फूल के काजा। नहा घात करि है भोहि राजा।
यह सुनि के सबहू न सुख पायो। भलो मंत्र सुनि मोहि पठायो।
धनि रूकहि सुनि न सिर नावन। हरषि चले सुनि हरि गुण गावन।
तबहि कंस इक दूत बुलायो। व्रजहि नंद के पास पठायो।
दीनी ताको पत्र लिखाई॥ कहियो यहै नंद को जाई।
कोटि कमल काली दह केरे। पहुंचावहु ले काल सवेरे।
कंसराज अति काज मगाये। वनि है तुम को तुरत पठाये।
चलेउ दूत चातुर व्रज धाई। जानि लई सव कुंवर कन्हाई।

आप रहे ता दिन घरहि वनहि पठाये ग्वाल
व्रजवासी जन के सुखद व्रजजीवन नंदलाल
दूतहि आवत जान आय गये वहि ठाय हरि

सुन्दर स्याम सुजान खेलत ग्वालन संग मिल ।
आये नंद जमुन जल न्हाये ॥ पैठत सदन छींक भई बांये ॥
महर मलिन मन असगुन जान्यो ॥ आज कहा उर सोच समान्यो ॥
तबही चल्यो दूत ब्रज आयो ॥ नंद महर घर ही मैं पायो ॥
बोल लिये पाती कर राखी ॥ नृप की कही मुख आगर राखी ॥
काली दह के फूल मंगाये ॥ ताकारण अति डाट पठाये ॥
जो नहिं मोको फूल पठावहु ॥ तो कोउ ब्रज रहन न पावहु ॥
गोप नंद उपनंद जिन्हका ॥ डारो मारन राखो एका ॥
जो नहिं काल कमल मैं पाऊं ॥ दोउ सुत तेरे बांध मंगाऊं ॥
यह सुनि नंद गये मुरझाई ॥ और गोप सब लिये बुलाई ॥
तिन सब को सब बात सुनाई ॥ परी आइ अति यह कठिनाई ॥
काढ़ि कमल काली दह माहीं ॥ कहो कौन धों काढ़न जाहीं ॥
कहे फूल जो काल्ह न पाऊं ॥ तो सुत तेरे बांधि मंगाऊं ॥

मेरे सुत दोउ नृपति उर खटकत है दिन रात ।
आज कही यह बात मो बल मोहन पर घात ॥
चढ़ि है ब्रज पर धाय काल्ह कंस अति कोप कर ।
बन्यो मरन अब आय को राखै किन जाइये ॥

सुनि अपने जिय कोउ रनाहीं ॥ सोच स्याम बल को उरमाहीं ॥
अब उबार दीखियत नहिं कोई ॥ बल मोहन नहि राखिय गोई ॥
बरु मोहिं राखहि बांधि नृपाला ॥ रहैं सदन बल मोहन लाला ॥
नंद बचन सुनि सब ब्रजवासी ॥ भये दुखित मन परम उदासी ॥
काहू पै कछु बात न आई ॥ अति भये त्रिसित गये मुरझाई ॥
चकित महा ब्रजवासी ठाढ़े ॥ मानहु चित्र चित्र लिख काढ़े ॥
नंद घरन ब्रज नारि बिचारैं ॥ अति व्याकुल नैनन जल ढारैं ॥
ब्रज हि बसत सब जन्म सिरानो ॥ इहि बिधि कंस न कबहुं रिसानो ॥

कहत जिन्हें बलराम कन्हाई। तिनकी मर्म गति जान न पाई॥
तृणावर्त से दैत्य पठाये॥ सो उन पलक माहिं नसाये॥
बकी पठाइ दई पहिलेहीं॥ तिन को पल सब ले नेहीं॥
उनते भयो नहीं कछु कामा। यह सुन ससुर हँस सुहिलाजा॥
अब तुम मुनि कछु कहहु विचारा॥ जो हि विधि मारों नंदकुमारा॥
सुनि हरि के गुण नीके मानें। सुनि नृप के वचन मनहिं मुसकाने॥

तब बोले मुनि नृपति सों सत्य कही तुम बात।
वे दोऊ औतार हैं इन गति जानि न जात॥
हैं यह तुम्हरे काल प्रगट भये व्रज आइकै।
नंद गोप के बाल तुम इनको राखहु मत हि॥

एक बात मेरे मन भावै॥ करहु कंस तुम जो जो भावै॥
कालीदह हरि यमुना आई। तहाँ कमल फूले बिछुलाई॥
फूल नहीं ते मांग पठावहु। दूत पठ हि नंदहि डर पावहु॥
यह सुनि व्रज के लोग डरैहैं। ये द्वै बालक सुनि पैहैं॥
जै हैं अवसि फूल के काजा। तहाँ घात करिहै अहि राजा॥
यह सुनि के सब जन सुख पायो। भलो मंत्र मुनि मोहि पठायो॥
धनि रिषि पुनि असिर नावन। हरषि चले मुनि हरि गुण गावन॥
तब हि कंस इक दूत बुलायो। व्रजहि नंद के पास पठायो॥
दीनी ताको पत्र लिखाई॥ कहियो यह नंद को जाई॥
कोटि कमल कालीदह केरे। पठवहु ले काल सवेरे॥
केस पज अति काज मंगाये। बनि है तुम को तुरत पठाये॥
चलेउ दूत चातुर व्रज धाई। जानि लई सब कुंवर कन्हाई॥

आप रहे ता दिन घर रहि बनहिं पठाये ग्वाल।
व्रजवासी जन के सुखद व्रज जीवन नंदलाल॥
दूत हि आवत जान आप गये वा हि राय हरि

कालीदह के फूल मंगाये॥ कहौ कौन विधि जात सुपाये
अतिहि सोच वस सब नर नारी। भये कंस ते व्याकुल दुखारी॥
कोउ कह चलो शरण सब जाहीं॥ शरण गये का हि है कछु नाहीं॥
कोउ कहै देहि जितौ धन चाहैं ऐसें सब मिलि बुद्धि उपाहैं
यहै सोच सब मिलि परे नहीं कछू निरवार
ब्रज भीतर नंद भवन में घर घर यही विचार
अंतरजामी जान खेलत तें आये घरहि॥
देखत ही नंदरानि दृग भरि लिये लगाय उर
चितवत माता कुंवर कन्हाई॥ बूझति किनु ऐवति दुख पाई
बूझ जाय तात सो बाता॥ मैय लिजाउ वदन कुम्हिलाता
तुमहीं काज कंस अकुलाई वारह मत यहु पाइ कन्हाई
जाय तात को सोच मिटावौ॥ अपने मधुरे वचन सुनावौ॥
आयौ स्याम नंद पै धायौ॥ जान्यौ मात पिता दुख पायौ
बूझत नंदहि कुंवर कन्हैया तात दुखित कत तुम अरु मैया
मोसौं बात कहौ सब सोई॥ कहा सोच वस हौ सब कोई॥
नंदलाल कनिया बैठारे॥ कहा कहौ तुम सौं मे प्यारे॥
जब ते जन्म भयो सुत तेरो॥ करत कंस तुम सौं अरु मेरो॥
केती कर घर टरी तुम्हारी॥ कुलदेवन कीनी रखवारी॥
प्रथम हि अधम पूतना आई॥ सकट तृणा पुनि आयौ धाई
यत्समका पुनि अघ दुख दीनौ सब तें तोहि रखि विधि लीनौ
कालीदह के फूल अब पठये भूप मंगाइ॥
सब ते यह गाढ़ी परी को करि लेइ सहाइ॥
जो नहि आवै फूल लियौ कंस मोहि डारिहै
करो ब्रज तें निरमूल बांध मंगाऊं तुम सुतन
यातें तुम आतें दाव माई॥ कहत कौन धां करे सहाई

सो देवता ब्रजहि के माही॥ रहत हमारे संग सदाही॥
लीनो जिन सब ठौर बचाई॥ कीले है सोइ देव सहाई॥
सोइ कंसहि फूल पठै है॥ ब्रजवासिन को सोच मिटै है॥
कंस केस गहि सोइ मारै॥ असुर मार भूभार उतारै॥
सब मिलि सोई देव मनावै॥ अपने मन तें सोच मिटावै॥
सुनत महर हरिमुखकी बानी॥ भये सुखी धीरज उर आनी॥
इष्ट देव को सीस नवायो॥ जहां तहां तुम स्याम बचायो॥
शरण प्रभु शरण तुम्हारी॥ अबहू करो सहाइ हमारी॥
जातें कंस त्रास मिटिजाई॥ रहैं सुखी बस राम कन्हाई॥
मात पिताहि हरि इहि ढंग लाई॥ आप चले खेलन हरखाई॥
सखन मध्य गये कुंवर कन्हाई॥ कहेउ खेलिये गेंद मंगाई॥

श्री दामा यह सुनत ही गयो धाम निज धाय॥
अपनी गेंद लै आयके दीनी हरि को आइ॥
चलो खेलिये धाय बाहर ब्रज निकास कै॥
जहं कोउ आय न जाइ गेंद खेल बनि है तहां॥

ग्वाल संग लै बाहर आई॥ रच्यो गेंद को खेल कन्हाई॥
इक मारत इक भाजत जाही॥ रोक लेत इक बीचहि माही॥
आपस मांरु परस्पर मारैं॥ नाना रंग करि के किलकारैं॥
भाजत मारग दूजो जाही॥ मारत धाय वहुरि सो ताही॥
स्याम सखन को खेलत माही॥ यमुना तट तन लीने जाही॥
आपन जात कमल को लालन॥ सखा संग लीने सब ग्वालन॥
कोजाने ये हरि के ख्याल॥ यमुना निकट गये सब ग्वाल॥
स्याम सखा को गेंद चलाई॥ अंग मोरि सो गयो बचाई॥
परो गेंद यमुना जल माही॥ कै गयो खेल भंग ने कियाही॥
पकरी धाय फेंट श्री दामो॥ मेरो गेंद देउ तुम स्यामो॥

जान वूझ तुम गेंद गिराई ॥ अति है दीने गेंद मंगाई ॥
और सखा मोकों मति जानौ । मोसों अतिहि ढिठाई ठानौ ॥

सखा सहित सब नारि दे भली करी तुम कान्ह ।
दीनो गेंद बहाय जल देहु श्रीदामहि आन ॥
सकल लोक सिरताज पारन पावै ब्रह्म शिव ।
ताहि गेंद के काज फेंट पकरि सिगरत सखा ॥

छांड़ि देहु मेरी फेंट सुदामा । रार बढ़ावत थोरहि कामा ॥
बदले गेंद लेहु तुम मोसों । फेंट न गहौ कहौं मैं तोसों ॥
छोटो बड़ो न जानत काहू । करत बराबर एक उत्साहू ॥
हम काहे के तुमहि बराबर । तुम उपजे अब बड़े नंद घर ॥
ऐसे अब हम गये बिलाई ॥ तुमहिं बराबरि नाहिं कन्हाई ॥
सुनहु स्याम तुम हम इक जोरा ॥ कहा भयो तुम नंद के ढोटा ॥
गेंद दियेही बने मंगाई ॥ मोसों चलि है नाहि धुताई ॥
मुह संभारि बोलत नहिं मोसों ॥ करि हौ कहा धुताई तोसों ॥
पुनि पुनि करत बराबर आई ॥ ते नहि जानत मेरि धुताई ॥
प्रथम पूतना सकटा मार्यो ॥ कागासुर अरु तृणा पछार्यो ॥
वत्सवकासुर बन के माहीं ॥ मार्यो सो कहा जानत नाहीं ॥
अघ मार्यो पुनि देखत तोहीं । ऐसो धूत न जानत मोहीं ॥

तुम मारे सो सांचु सब कत नहीं लाल डराहु ॥
कंस कमल अब देहु तब हम जिह मारियो जाहु ॥
कालहि परि है जान पकरि मंगै है कंस जब ।
देत फूल किन आनि बहुत अचक रैकी रहे ॥

सांच कहौ मैं सुनौ श्रीदामा ॥ आयो यह गफूल के कामा ॥
कितिक वापुरो कंस बतायो ॥ जाके भय तुम मोहि डरायो ॥
कंस पकरि महि ताहि पछारौं । देखहुगे तुम देखत मारौं ॥

कोटि कमल तिहिं आज पठाऊं॥ ब्रज तें ताकौ त्रास नसाऊं
कालो दह जल पियत मरे सब । गहि लाऊं सोई काली अब
लीनो रिस करि फेंट छुडाई॥ चढ़े कदम पर धाय कन्हाई
नीचे सखा कहत सब लोगे । श्री दामा के डर हरि भागे॥
रोवत चले श्री दामा घर कौं । जाय कहत मैं महरि महर कौं
टेरत कहि २ सखा कन्हाई । लेहु गेंद मैं ल्यावत जाई॥
यह कह नटवर मदन गुपाला॥ कूद परे जल में नंदलाला
हाय हाय कहि सखा पुकारे । भये स्याम बिन ब्रज तें दुखारे
रोवत चले ब्रजहि सब धाई । श्री दामा को दोष लगाई॥

कोमल तन अति सांवरो जासे नटवर साज
जल में पैठ गये तहां जहं सोवत अहिराज
इहि अंतर हरि माय भूखे ह्वै हैं जान हरि
खेलन तें अब आय मोसो भोजन मांगि हैं

जसुमति चली रसोई कारन । तबहीं छींक उठी इक ग्वालिन
ठठक रही उर सोचन गाढ़ी॥ भली नहीं कछु चिंता बाढ़ी
आई अजर निकासि पकवाई । चली बहुरि सो दोष मिटाई
मंजारी तब पंथ कटाई॥ बहुरि जसोमति बाहर आई
व्याकुल भई निकरि गई द्वारे । कह धौं खेलत मेरे बारे ॥
बाये काग दाहिने सुर खर॥ सुनि आई अति व्याकुल फिर घर
बिन बाहर खेलन आंगन माहीं॥ टेरत हरि हिं सात मन माहीं
तबहीं नंद चले घर आवत॥ देख्यो स्वान श्रवण पटकावत
दाहिने काह रोइ सुनायौ । माथे पर ह्वइ काग उड़ायौ
सन्मुख गररी करतल राई॥ डरे नंद असगुन बहु पाई
आये घर मन मलिन विशेषी । व्याकुल मलिन वदन तिय देखी
बूझी निज सुद हि नंद डराई। काहे तुव मुख गयो मुरझाई

अतिकोमल तुमरे मुखजोगू ॥ जेंवह्र लाल लेह्र मैं रोगू ॥
धूरी दूध घरको औटाई ॥ तुम निजकर दुहगये कन्हाई ॥
सद माखन अनिहित मैं राख्यो ॥ आज नहीं तुमने कछु चाख्यो ॥
प्रातहि ते मैं दिये जगाई ॥ दतवन कारिजु गये दोउ भाई ॥
मैं चितवति तुम पंथ कन्हाई ॥ खेलत आज अवार लगाई ॥
शोक सिंधु बूडी नंदरानी ॥ तन की सुधि बुधि सबै भुलानी ॥
बैठह्र आय संग दोउ भैया ॥ तुम जेंवह्र मैं लेहं बलैया ॥

व्रजयुवती सुनि महरि के वचन प्रेम आधीर
अकुलानी रोवत सबै बढी कठिन उर पीर
बरनति जसुदा हि ग्वाल यह कहि रहारहे भले
सुत वियोग विकराल जात नहीं कहि मात को

चौंकि परी तन की सुधि आई ॥ रोवत देखे लोग लुगाई ॥
तब जानी हरि गिरे कन्हाई ॥ पुत्र पुत्र कहि कहि उठि धाई ॥
व्रजवनिता सब संग हि लागी ॥ स्याम वियोग विथा तन पागी ॥
कान्ह कान्ह कहि सकल पुकारे ॥ नीर तलट उर सो कर मारे ॥
अति व्याकुल यमुना तट जाई ॥ गिरी धरणि जसुमति अकुलाई ॥
सुरझि परी तन दसा भुलाई ॥ प्राण रहेउ हरि सुरति समाई ॥
व्रजवासी सब उठे पुकारी ॥ जल भीतर कह करत मुरारी ॥
संकर में तुम करत सहाई ॥ अब क्यों नाहिं बचावत आई ॥
माता पिता अति ही दुख पावें ॥ रोइ रोइ सब कृष्ण बुलावें ॥
आइ गये हलधर ता हि काल ॥ देखी जननी विकल बिहाल ॥
नाक मूंद जल सींच जगाई ॥ जननी कहि टेर लगाई ॥
बारबार जब हलधर टेरो ॥ भयो चेत कछु बल तन हेरो ॥

कहत उठी बलराम सो वन हि तजे हलधु भ्रात
कान्ह तुम हि बिन रहत नहिं तुम सो कियो रह जात

चली रसोई करन ही छींक भई मोहि आज
आगे ह्वै मंजारि पुनि गई दूसरे भाज ॥
जब ते मो जिय सोच हरी धौं खेलत हैं कहां
समुझ कुसकुन पोच मेरे मन में त्रास अति

नंद कहत मैं चलत घर माहीं ॥ मोहि सकुन भये शुभ नाहीं ॥
आज कहा यह समुझि न आई । हैं धौं कित बल राम कन्हाई ॥
महर महरि मन त्रास भुलाई । खोजत हरि हि चले अकुलाई ॥
सखा सकल हरि हि अंतर धाये । रोवत ब्रज हि पुकारत आये ॥
महर महरि सौं आय जनाई । यमुना बूडे कुंवर कन्हाई ॥
सुन ए पतिघ्रत अकुलाई । कासौं कहा कहौं समुझाई ॥
खेलत कदम चढे हरि धाई । कूद परे काली दह जाई ॥
सुनत हि परी धरणि मुरझैया ॥ कन्हौ सपनो सत्य कन्हैया
रोवत नंद यमुन तट आये ॥ बालक सब नंद हि संग धाये
ब्रज घर जहाँ तहाँ इह बाता । ब्रजबासी धाये बिलखाता ॥
कहाँ परे गिर कुंवर कन्हाई । दई बालकन ठौर बताई ॥
ताहि बारहि कहि नंद पुकारे । गिरे धरणि नंद अग दुखारे

सोरटत अति व्याकुल धरणि परन चलत जल भाव
कहत स्याम तुम दियो दुख मोकौ बिच बुढाइ
लोग उठे सब रोय दीन बचन सुनि नंद के ॥
कहत बिकल सब कोइ हरि तुम ब्रज सूनो कियो

नंद हि गिरत सब हि गहि रख्यो । पति सरण को दुख जात न भाख्यो
कहत गोप नंद हि समुझाई । धन्यो मरण सब ही कौ आई ॥
हरि बिन को जीवे ब्रज माहीं । कहौ कान्ह को हि जीवन माहीं
मोह मगन अति निज सुधि मैया । रटत मेरे लाल कन्हैया ॥
आज कहाँ तुम बेर लगाई । माखन धरयौ खाउ किन आई

पठयो मोहि कंस नृपराई ॥ तू वाकी अव देह जराई
कंस कहा तू इनहिं वते है ॥ एक फूंक में तू जरि जैहै ॥
अजहू भाजि कह्यो कर मेरो लगत छोह देखत मुख तेरो
मरऊ कंस जिन तोहि पठायो तू कत इहां मरन कौं आयो
वालक जानि दया अति मेरे दुख पैहै पितु माता तेरे ॥

अरी वावरी सर्प तो कहा डरवति मोहि
जैसो मे वालक प्रगट अवहिं दिखाऊं तोहि
तू किन देत लगाय देखौं मैं याके वलहि
या पर कमल लदाय लै जैहौं इहि नाथ कज

सुनत वचन अहिनारि रिसानी छोटे वदन कहत वड़ वानी
खगपति सौं सरवरि जिन ठानी ताहि कहत नाथन अग्यानी
देखत ही ह्वै है जर छारा ॥ केतक तू वपुरो सुकुमारा ॥
वपुरो मोहि कहति अहि नारी ॥ वोलत नाहिं न वात संभारी
अव हो तोहि वपुरी करि डारौ एकहि लात खसम तुम मारौ
सोवत कहूं मारिये नाहीं ॥ चलि आई यह वात सदाई
ताते तू पति दाहि जगाई ॥ देखौं मैं याकी मनुसाई ॥
जो पै तोहि मरन वुधि आई तो तू ही किन लेत जगाई ॥
तव हरि रूर कितोहि है गारी दावी चरण पूछ अहि कारी
मसकी नेक धरणि सोलाई काली उरग उठ्यो अकुलाई
आयो जानि गरुड भय वाढो देख्यो वालक आगे ठाढो
तवहि क्रोध करि गर्व वढायो ॥ फटकि पूंछ अति रिस करि धायो

दाव घात नाग्यो करन सहसो फन फटकार
वारवार फुंकार कै डारत विष की धार ॥
जरत यमुन को नीर जात फन उतरात विष
परत न नाहि शरीर अहि मद मोचन स्याम के

मगनसोच सरमांझ कहत लै आवौ कान्ह कौं
भये इक इक गई साम आज कछु खायो नहीं ॥

कबहुं कहत बन गये कन्हाई । कबहुं बतावत घर समुहाई
कान्ह २ कहि टेर लगावै ॥ कित खेलत कहि लाल बुलावै
अतिही मोह विकल नंदरानी । करत बोध हलधर मृदु बानी
कत रोवत तू जसुदा मैया ॥ नीके हैं धर धीर कन्हैया ॥
स्यामहिं नेक कहू डर नाहीं । तू कत डरपत है मन माहीं
तेरी सों मैं कहत पुकारे ॥ घट काहू के मरत न मारे ॥
जिन काली मैं होइ दुखारी । तू अपने मन देख विचारी ॥
पहिले बकी कपट करि आई । तब दिन दस के हते कन्हाई
सकटा तृणावर्त पुनि आयौ । तो देखत हरि तिन्हैं मसायौ
वत्सासुर बक अघ बन मैं मारे ॥ विषजल तें सब सखा उबारे
अब वे काली नाथ लै ऐहैं ॥ कमल पठाइ कंस को दैहैं
मोहि भरोसो कान्हर केरो ॥ मान्यौ सत्य कह्यो सुनि मेरो

मोहि दुहाई नंद की अबही आवत स्याम
नाग नाथि लै आवहीं तौ कहियो बलराम
सुनि हलधर के बैन अति उदार हरि के चरित
भयो कछुक उर चैन जो कछु करें सो सोहत सब

यह प्रकार थल कौं वै गई ॥ लै बुलाइ उर रही लगाई
अति कोमल तन धरे कन्हाई । पहुंचे काली के ढिग जाई
हरि कों देखि उरग की नारी । रही चंद मुख चंद निहारी
कहत कौन तू इहां लखि आयो । अति कोमल तन कासों जायो
भागु हि बार कहत अकुलाई । वेगि भाज इत ते किन जाई
दुख मारग जाग के जथ हीं ॥ ह्वै है भस्म छिनक मैं तब ही
सुनत नाग नारी की बानी । बोले हँसि हरि सारंगपानी

पगसौं चांपि नाक धरि फारी लीनौ नाथ हाथ गहि डारी
कूदि चढि हरि ताके सीसा॥ मन मन करत विचार अहीसा॥
मैं यह सुन्यौ हुतौ विधि पाही कृष्ण अवतार होहि ब्रज माही
ते गोकुल मैं अवतरे मैं जान्यौ निरधार॥
ऐ अविनासी ब्रह्म हैं व्रजकौ अवतार
किये बहुत फन घात बार बार पछितात मन
अस्तुति करन लजात हेतु दीन ह्वै कहि पति॥
देख्यौ व्याल विहाल कृपाला। दियौ दरस निज दीन दयाला
देखि सरद मन हरष बढाई। बोल्यौ दीन बचन अहिराई॥
मैं अपराध कियौ विन जाना। छमा नाथ तुम छमा निधाना।
तामस योनि कीट विष जान्यौ कौन भांति तुमकौ पहचान्यौं
अब कीनौ प्रभु मोहि सनाथा। दीनौ दरस जगत के नाथा।
असरण शरण नाथ तुम बाना। कहत संत तुम वेद पुराना।
ते अपराध छमा सब कीजे॥ अब प्रभु शरण राखि मुहि लीजे
आज धन्य यह मेरो माथा॥ जापर चरण दिये तुम नाथा।
अर्पे चरण परम प्रभु तेरे॥ मिटे दोष दुष अघ सब मेरे
जे पद कमल पुनीत तुम्हारे निस दिन रहत रमा उर धारे
शिव विरंचि सनकादिक ध्यावैं जे पद योगी ध्यान लगावैं॥
जे पद पद्म सलिल सुरसरिता तीन लोक के पावन करता॥
जिन पद पंकज परस तें गति पाई ऋषि नारि
सुर नर मुनि वंदित तिन्हैं संतन प्रान अधारि
फिरत चरावत गाय श्रीवृंदावन ये चरण॥
भक्तन के सुख दाइ व्रजवासी जन दुष हरण॥
जे पद पंकज परम सुहाये॥ प्रभु मैं आज सुलभ करि पाये
गरुड त्रास तें इतिभजि आयो भलो कियो सुहि गरुड नवायो

कियौयुद्धवकउरगअघाई॥ मुरेनहींनकजमदुराई॥
कहतपरस्परआहिकीनारी। देखहुअहिवालकअतिभारी॥
विषज्वालाजलजरतयमुनकौ। याकेतनपरसतनाहिनेको॥
यहकछुमंत्रयंत्रधौजानै॥ अतिकोमलविषनकृतमानै॥
सहसौफनतकरतअहिघाता। अवलगवच्योपुन्यपितमाता॥
तवअहिराजस्यामतनहेरी। कहतपूछदावीइनमेरी॥
अतिहिक्रोधकरिआतुरधाइ। हरिकेपगलग्योलपटाई॥
नखतेंसिखलौअहिलपटाई। कहतकरीइनवडीढिठाई॥
कौतुकनिधिहरिसवगुणखानी। हियादावदीहैअहिकोजानी॥
तिहिअवसरसुरसुनिगंधर्वो। अतिव्याकुलभायव्रजसवो॥
उरगनारिमनमनपछताही। हरिकोरूपसमुरुमनमाही॥
कहैगर्वकरिअतियहआयौ॥ कालविवसभगइतमिहिलायौ॥
कालीहरिसौलिपटकेकर्मकियोमनमाहि॥
कहतमोहिजोनेतनाहिमसपनकोनाह॥
गजिनगर्वगोपालगर्वभरसुनिअहिवचन
कीनोवपुषविशालविकलभयोअहिराजतव
जवहिस्यामतनअतिविस्तारो॥ टूटनलगोअंगसवसारो॥
शरणेरनववरणपुकारो॥ मैनोहिजान्योरूपनिहारो॥
जीवदानप्रभुमोकोदीजे॥ अवमेंशरणीपापसुहिलीजे॥
यहवाणीसुनवहिभगवान॥ आकुचिगयहरिकृपानिधान॥
यहैवचनगजराजसुनायौ। गरुडछाडवाकेहितआयौ॥
यहैवचनसुनिद्रुपदसुताको। वसनवढायदियौपुनिताको॥
यहैवचनसुनिलंक्याप्रहते। लीनेराखिपांडवनिजरते॥
यहवानीसाहिजाननस्यामहिं। दीनबंधुकरुणाकेधामहि॥
लीनोअंगसंकोचकृपाला। देख्यौविकलसिथलजवव्याला॥

हलधर सवद्धन कौं समझावैं॥ विना स्याम कोउ धीर न पावैं

कहति जसोदा नंद सौं धक धक वारहिं वार
और कितिक दिन जियहुगे मरत नहीं मोहिं मार
कर देखहु मन ज्ञान ऐसे दुष में मरन सुख॥
नंद भये विन प्रान मुरछि परे सुनि तिय वचन

तवहिं धाय वल पिता जगायो॥ वारवार काहि कहि समुझायो
वृथा मरत काहे सव कोई॥ कान्ह मारन हारन कोई
हलधर कहत सवै व्रजवासी वै अन्तरजामी अविनासी
सव गुण सागर आनंद रासी रमा सहित जल ही के वासी
मेरो कह्यो सत्य करि मानौ॥ आवत स्याम धीर उर आनौ
यमुना के भीतर तेहि काला॥ उठ्यौ सलिल झकोरि विशाला
वोल उठे आतुर वलरामा॥ वै देखहु आवत घनस्यामा
सुनत वचन लषि जव उठि धाये॥ यमुना नीर तीर तव आये
कउ जल मैं कोउ वाहर ठाढ़े॥ दरसातुर विरहानल वाढ़े
अगर भये जल ते तेहि काला व्रजजन जीवन नंद के लाला
कमल भार काली पर लीने॥ नटवर वेष मनोहर कीने॥
भये सुखी सव व्रज के वासी॥ लषि हरि वदन परम सुखरासी

छं॰ हरिवदन लषि रासि सुख की मुदित व्रज वासी भये॥
मनहु वूड़त नाव पाई परम उर आनंद छये॥
मातु पितु लषि जो भयो सुख जात सो का पै कह्यो
पुलकित तन मन हरषि गदगद प्रेम जल लोचन वह्यो
चकित हरि तन लषत इक टक मिलत कौं आतुर हिये
स्याम निर्तत अहि फनन प्रति खोर चंदन तन किये
स्रवन कुंडल लोल लोचन चारु मुकट विराजही
मनहु मरकत गिरि सिखर मणि भार ता पर राजही

जातै दरस भयो प्रभु तेरो ॥ अब भय भाप मिट्यो सब मेरो
आज भयो मै नाथ सनाथा गहो नाथ मम प्रभु निज हाथा
सुनत दीन काली की बानी दीनबंधु अतिशय सुष मानी
फन प्रति चरण सरोज छुवाये ताके सब संताप नसाये ॥
तब प्रभ नाथ भक्त हितकारी यह अपने मन माहिं विचारी
काली को ब्रजलोक दिखैये कमल भार याप लै जैये ॥
हे हैं ब्रज के लोग दुखारी ॥ करौं जाय अब तिनहिं सुखारी
कमल कंस को देहु पठाई ॥ काल्ह चहैं गो ब्रजपर आई ॥
लीने अहिपर कमल लदाई खेले ब्रजहि ब्रजजन सुखदाई
लियो नाथ गहि अहि उचकाई ॥ फन पर ठाढ़े कुवर कन्हाई

उरग नारि सब जोरि कर प्रभु के सन्मुख आय ॥
करति विनय अति दीन ह्वै पति हित हरिहि सुनाय
इत जसुमति उर माहिं उठी लहरि अति प्रेम की
कान्हर आयो नाहिं कहति रोय युग लराम सो

कहत राम सुनु जसुमति मैया अबहीं आवत कुंवर कन्हैया
नेकु धीर धर मति अकुलाई यह सुन कै बालकि बलभाई
पुनि यह कहत कान्ह नाहिं नर मूढ़ाहि मोहिं प्रबोध करत सब
भई बिन सुत व्याकुल मैया ॥ कहति कहां मेरो बाल कन्हैया
गिरी धरणि व्याकुल मुरझाई रोये उठे सब लोग लुगाई ॥
ब्रजवासी सब भये बिहाला कहत कहां मोहन नंदलाला
तुम बिन यह गति भई हमारी आवत नहीं धाय बनवारी ॥
प्रात हि तें जल मांझ समाने तुमहिं बिना युग जाम बिहाने
अब को वसे जाय ब्रजमाहीं । धृक रे जीवन तुम हैं पिना हीं
अति व्याकुल रोवति नंदरानी विकल मनहु फणि मणि बिगारई
जसुमति धाय चली तें जल माहीं ॥ परखति ब्रज युवती गहि बाहीं

लधर सबहुन कौं समभावै॥ बिना स्याम कोउ धीर न पावै
कहति जसोदा नंद सों धृक धृक बारहिं बार
और कितिक दिन जियहुगे मरत नहीं मोहिं मार
कर देखहु मन ज्ञान ऐसे दुष मैं मरन सुख॥
नंद भये बिन प्रान सु रहि पर सुनि तिय बचन
नवहि धाय बल पिता जगायो॥ बार बार कहि कहि समुझायो
श्याम रत काहे सब कोई॥ कान्हर मारन हारन कोई
हलधर कहत सबै ब्रजवासी वै अन्तरजामी अबिनासी
सब गुण सागर आनंद रासी रमा सहित जल ही के बासी
मेरो कह्यो सत्य करि मानो॥ आवत स्याम धीर उर आनो॥
यमुना के भीतर तेहि काला॥ उठौ सलिल इक कोरि बिशाल
बोल उठे आतुर बल रामा॥ वै देखहु आवत घन स्यामा
सुनत बचन लषि जब उठि धाये॥ यमुना नीर तीर तब आये
कोउ जल मैं कोउ बाहर ठाढ़ो॥ दरसातुर बिरहानल बाढ़ो
प्रगट भये जल तें तेहि काला ब्रज जन जीवन नंद के लाला
कमल भार काली पर लीने॥ नटवर वेष मनोहर कीने॥
भये सुखी सब ब्रज के बासी॥ लषि हरि बदन परम सुखरासी
छं० हरि बदन लषि रासि सुख की मुदित ब्रज बासी भये॥
मनहु बूड़ित नाव पाई परम उर आनंद छये॥
मातु पितु लषि जो भयो सुख जात सो कापै कह्यो
पुलकित तन मन हरषि गदर प्रेम जल लोचन बह्यो
चकित हरि तन लषत इक टक मिलत कौं आतुर हिये
स्याम निर्तत अहि फनन भत्ति खौर चंदन तन किये
श्रवण कुंडल लोल लोचन चारु मुकुट बिराजहीं
मनहु मरकत गिरि सिखर मणि भार ता पर राजहीं

पीतपटकटिकाछनीउरमालमणिभूषणसजे
नित्यतांडवकरतफणप्रतिव्योमदुंदुभिवजे
भईजयध्वनिगगनपर्वहिसुमनसुरआनंदभरे
गगनगंधर्वगुणनिगावततानतालनअनुसरे
उरगनारीस्यामसन्मुखकरतअस्तुतिआयहीं
नाथअवअपराधछमिकरिकृपाममपतिपावहीं
गरवेपरणनिजसीसयाकेभूतिवडाईइननई
ऐसीवडाईऔरकौंप्रभुताहितुमसागरदई॥
शेषइकब्रम्हांडभरिसिरराखिमनगर्वितकियो
कोटिरब्रम्हांडतुमतनअधिकइनपहभरलियो
सुरअसुरनरनागखगमृगकीटजनसवरावरे
छमियअवअपराधआहिकेसुभगसुन्दरसांवरे
दोहा सुनिअहिनारिनकेवचनकरुणामयेदराय
उतरिपरेअहिसीसतेंयमुनाजलनटआय
सो॰ तटपरकमलधरायकालीकोंआसुदियो
उरगदीपअवजायकरहुवासनिर्भयसदा

तवकालीकहसुनोकृपाला॥ तुववाहनडरडरतविशाला
धनऋषिशापदियोहैनाही तातेआयसकतयहांनाहीं
तवमैभाजिवच्योइतआई नातरलेतमोहिसोखाई॥
चरणचिन्हलपितुवफणमेरे परहैगरुडपायअवतेरे
वृश्चमतखगपतीडरदई अपनेदोपकरहुकुगई
यातेवडोकोनसुखनाथा॥ अभयदानपदपरसोमाथ
जपदकमलभजनपरतापी जनप्रहलादमिटेसतापी॥
देपदचिन्हसीसपरधारी जन्मजन्मकोभयोसुखारी
लगिनआहिननायपदमाथ गयोउरगदीपहिअहिनाथ

जै जै धुनि नभ सुरन बखानी । धन्य धन्य नभ के सुख दानी
शरण राखि काली अहि लीनो । जलतें काढि कृपा करि दीनो
फन पर चरण चिन्ह प्रगटाई । कठिन गरुड़ की त्रास मिटाई

धन्य धन्य प्रभु धन्य कहि मुदित सुमन बरखाइ
गये देव निज निज सदन हृदय परम सुख पाइ
दीप पठायो व्याल सुरगण सुरलोगन पठै ॥
आये निकसि गुपाल ब्रजवासी जन सुखकरन

धाय मिले सिगरे ब्रजवासी । विरह ताप तन की सुधि नासी
माता दौरि कंठ लपटानी ॥ पुलकि रोम तन गद्गद बानी
नैन नीर अति प्रेम अधीरा ॥ उर लगाय मेटत उर पीरा
कहि कहि मेरो बाल कन्हैया ॥ दुहु करन सों लेत बलैया ॥
धाय नंद उर सों लै लायो ॥ गये प्राण मानहु फिर आये
गद्गद बैन नैन जल ढारी ॥ कहत जन्म फिर भयो तुम्हारो
बार बार उर सों लपटावत । दारुण उर की ताप नसावत
प्रेमातुर देखी बल माता ॥ मिले रोहिणी सों सुखदाता
निरखि वदन कहत जसुमति मैया ॥ मैं बरजो नित तुम्हें कन्हैया
यमुना तीर लाल मत जाहु । तुम बरजो मानत नहिं काहु
मैं निसि सपने मांझ डरान्यो । सोई कछु आज प्रगटान्यो
कंस कमल के फूल मंगाये । ब्रजवासी सब अतिहि डराये

मैं गेंद हि खेलत यहां आयो यमुना तीर
मोहि डार काहू दियो काली दह के नीर ॥
देख्यो उरग विशाल जाय तहां मैं डस्यो अति
तब पूछी मोहि व्याल किन पठयो तोको इतै

तब ऐसो मैं नाहि बतायो ॥ कमल काज मोहि कंस पठायो
यह सुनत हि अहि उठ्यो डराई । मोको फण पर लियो चढ़ाई

लैले हरि कौं उर सौं लावे ॥ कै बिन बिरह की मूल मिटावै
स्याम बिना बहुरी दुख पायो सो हरि तिन कौ ताप नसायो
लखे सखा सब आरत वादे प्रेमातुर मिलवे को डाढे ॥
गये दौर तिन पास कन्हाई मिले धाय सब कंठ लगाई ॥
कहत सखा धनि धन्य कन्हैया जा तुम कह्यो कियो सो भैया
तुम हो सब ब्रज के सुखदानी कंस मारि है तुम हम जानी
कहा भयो जो तुम हो बारे ॥ है तुमरे गुण सब तै न्यारे ॥
भलो यदपि सिहहि को छोटो ॥ केन काज गज लावे मोटे

तुम हम पर रिसकरि गये सो अब देहु भुलाइ
यह सुनतहि हसि उठे नव मिले बहुरि हरषाइ
नव हलधर अरु स्याम मिले बिहसि दोउ मन हि
मग निरषत नर वाम भेद न काउ जानही ॥

सब कोउ कहहि धन्य बलरामा तुम जो कही करी सोइ स्यामा
तय हरि कहेउ नंद सो जाई मेरे मन हिं बात यह आई ॥
आज बसे सब यमुना तीरा अति रमणीक सुगंध समीरा
इहां कीजिये भोग विलासा होत प्रात सब चलहि निवासा
कमल पठाइ कंस कौं दीजे सुनहु तात अब विलम न कीजे
गोप जाय आवे पहुंचाई ॥ काल चढे नतौ ब्रज पर धाई
यह सुनि नंद बहुत सुख पायो सब ब्रजवासिन के मन भायो
तुरत ग्वाल बहु घरनि पठाये खटरस भोजन बहुत मंगाये
यमुना तीर गोप समुदाई ॥ भोजन कियो बहुत सुख पाई
नंदराय सब सकट मंगाये ॥ कोटिक कमल तिन पर लदवाये
बहुते भार दधि घृत के कीन्हे ते अहिरन कांधे पर लीन्हे
अपना सर जे गोप सुहाये ॥ तिन हिं संग कछु पाहि पठाये
बहु बिनय करि कंस को दीनो पत्र लिखाइ

कहियो मेरी ओरतें नृप सों ऐसी जाइ ॥
गयो कमल के काज काली दह मेरो सुवन ॥
तुव प्रताप तें राज आय गयो पहुंचाय जहि ॥

कोटि कमल नृप मांगि पठाये ॥ तीन कोटि तहं तें लै आये
सो राखे जल मांझ समाई ॥ आयसु होइ तो देउं पठाई
तब गोपन सों कुंवर कन्हाई ॥ ऐसे बोल उठे मुसकाई ॥
नृप सों लीजो नाम हमारो ॥ यह कारज हम कियो तुम्हारो
कमल सकट दधि घृत के भारा ॥ चले गोप लै नृप के द्वारा ॥
राजद्वार सकटन पहुंचाई ॥ जाइ पोरियन खबर जनाई
तुरत पोरिया भीतर धाये ॥ समाचार सब नृपहि सुनाये
सुनत बात यह मनहि डरानो ॥ आय निकसि आयो अतुरानो
देखी सकट भीर अति भारी ॥ भयो चकित सुधि बुद्धि बिसारी
कमल देखि भय भयो बिसाला ॥ लगे ताहि मन ब्याल कराला
नंद बिनय तब गोपन भाषी ॥ दीनो पत्र भेट सब राखी ॥
गोपन बहुरि कही उन नृप राई ॥ नंद सुवन यह कह्यो कन्हाई

हम काली दह पाइ यह कियो राज को काम
नृप हमको जानत नहीं कहियो मेरो नाम ॥
सुनत स्याम संदेस देखि कमल भे अति बिकल
भीतर गयो नरेस मन बाढी चिंता बिपुल ॥

मनही मन यह करत बिचारा ॥ यासों मेरो नाही उबारा ॥
दैत्य गये ते सबहि नसाये ॥ काली तें ऐसे बचि आये
ताहीपर कमलन लै आये ॥ सहस सकट भरि माहि पठाये
कबहूं कह गोपन को मारौं ॥ इनको ब्रज तें तुरत निकारौं
फेर कछु मन मैं भय पावै ॥ करत बिचार न कछु बनि आवै
पुनि संभार धीरज उर कीनो ॥ गोपन को लै भीतर हि आन्यो

हृदय दुखित ऊपर सुख मानो। पहिराचे कोलि मन मानो।
सरो पाव नंद हू कौ दीनो॥ करियो काज कोउ तुम कीनो।
तेरे सुत वल राम कन्हाई। एक दिवस देखि हौं बुलाई।
यह सुनि ऋति पुरुषारथ कीनो। कालीदह के फूलन लीनो।
यह कहि विदा किये सव ग्वाला। भयो कंस उर सोच विशाला।
मनही मन सोचत हरि गुन। रह्यो काठ ज्यौ भीतर ही घुन॥

तव दावानल वोलिकै कहेउ मरम सव ताहि
देखहु मैं तेरे वलहि तू अव व्रज को जाहि
जारि कोयला छार व्रज सव व्रजवासिन सहित
वचहि न नंद कुमार ऐसो यत्न विचार उर

अथ दावानल लीला॥

दावानल सुनि नृप की वानी। चल्ले उस्सिाय गर्व उर आनी।
करौ भस्म इक पल मे जाई। सहित गोप नंद सुवन कन्हाई।
नृप को काज आज करि आऊ। जो कछु एक ठौर सव पाऊ।
यहां गोप कमल न पहुंचाई। आये यमुन तीर हरषाई।
नंद तुरत सव निकट वुलाये। सुनत सकल व्रजजन जुरि आये।
गोपन कही नंद सो आई। लिये कमल नृप अति सुष पाई।
दियो हर्ष तुमको पहिरायो। मुदित नंद ले सीस नवायो।
अपने सव पहिराव दिखाये। लषि सव व्रजवासिन सुष पाये।
हरि को नाम सुन्यो जव राजा। हरषि कहेउ कीनो उन काजा।
इक दिन वल मोहन दोउ भाई। देखहुंगो मै यहां वुलाई।
यह सुनि मद वढ़न सुष पायो। हरषि भूप मो सुनन वुलायो।
करो कृपा अति नृप हरि पाही। सव नर नारि हरष मन माही।

कहत स्याम वलराम सों हसि हसि के यवात

नृप हम तुम देखन लिये कह्यौ बुलाय नृत तातें
ब्रजजन परम हुलास इक सुष हरि गोहन तें वच
मिल्यौ कंस को त्रास दुतिये कमल यह येन्नृपगे

अथ दावानलवर्णन लीला॥

इहि विधि ब्रजजन अति सुष पायौ॥ खान पान करि दिवस बितायो
सोए सब निस यमुना तीरा॥ राखि हृदय सुंदर बलवीरा
तहां असुर दावानल आयौ॥ चाहत है सब ब्रज दहि जरायौ
देखे सब ब्रजजन इक ठांहीं॥ कियो हर्ष अपने मन मांहीं
प्रगट्यो दावानल चहुं ओरा॥ अतिहि प्रचंड पवन झकझोरा
दसहू दिसतें घेरत आवे॥ तृण तरु खग मृग जीव जरावे
जाग परे सब ब्रज नर नारी॥ कहैं चहूं दिस लागी दवारी
भये चकित सब अति मन माहीं॥ काहू दिसे मग दीसत नाहीं
चहुत चलन भजि नहीं निकासू॥ लेत सबै भरि सोच उसासू
आइ गई दौं अनि हि निकटहीं॥ चले कहत सब यमुना तटहीं
अहन देखियत कहूं उबारा॥ बढ्यो अनल पहुंची नभ मारा
ब्रज के लोग अति हि अकुलाने॥ जरैं सकल मन मांझ डराने

छं॰ अति विकल सब डरे ब्रजजन देखि अनल भयावनो
भई घरनभ ज्वाल पूरण धुंधधूम डरावनो
१ लपट झपटत जरत तरुपरु गिरत महि भहरायकै
फटत फूल फूलत फटक दल जरत वरत लतावनो
कास बरट कब बांस पटक अंगार उबटन नभवनो
२ उठत शब्द अघात चहुं दिसि वढ़त तरु हहरायकै
हरिय मोर वराह वन पसु विकल पंथ न पावहीं
डरत जहां तहं जीव खगमृग विपुल नित रधावहीं

दो॰ दावानल अति क्रोध करि लियो दसहूं दिस घेर
उठी अतुल ज्वाला प्रबल मानहु अचल सुमेर
धूम धुंध विकराल भयो अंधेरो गगन सब
विच रव मकन ज्वाल तड़ित माल जलो सघन घन

भये दुखित ब्रज लोग दुखारे॥ तब सब हरि को शरण पुकारे॥
कहत स्याम तुम करहु सहाई॥ जरत सकल ब्रज लेहु बचाई॥
तृणा सकट बक अघ तुम मारे॥ कंस त्रास तें तुमहिं उबारे॥
जहं तहं परी गाढ़ हम लाई॥ तहां तहां तुम करी सहाई॥
अब हरि यतन कछू सो कीजे॥ हमहिं बचाइ अग्नि तें लीजे॥
व्याकुल गोप नंद मग मांही॥ करत विचार बनत कछु नाहीं॥
जसुमति सबहिन कहति पुकारे॥ दई परो है ख्याल हमारे॥
नाना रूप असुर बहु आये॥ कोउ खग कोउ पसु रूप बनाये॥
कोउ अपने रूप ह्वै आयो॥ भयो न हां कोउ पुन्य सहायो॥
आज उरग सों बच्यो कन्हाई॥ मरु कर मन नृप त्रासन साई॥
अब यह बाढी अग्नि अपारा॥ होन सकल ब्रज को संहारा॥
किमि बांचि यह बालक दोऊ॥ मोहिं न दिखि परत उपाय न कोऊ॥

सुनि जननी के बचन प्रभु लगे सब ब्रज के साल
कहेउ सबन धीरज धरो मन निडर पौलाप ज्वाल
कौतुक निधि गोपाल को जाने तिन के गुणन
दुख सुख जिन को ख्याल जन के हित कारक सद

तब हरि कह्यो डरो मति कोई॥ विन वरुदेव बडर सब सोई॥
जिन सहाय कीनी अब ताई॥ सोई करे सहाय सदाई॥
हरि हेरि सब सो भाव सुदाई॥ करिगे अग्नि पान सुखदाई॥
इइ गई बड़ दिस शीतल ताई॥ रहेउ न अग्नि लेश कहु पाई॥
खोलि देहु द्रग सब हरि बोले॥ सुनत हि तुरत सबन द्रग खोले

देखि चकित सव व्रजनर नारी कहति धन्य धनु तुम वनवारी
धरणि अकाश रावरा व ज्वाला ॥ लपट झपट अति ही विकराला
नहिं वरस्यौ नहिं सौंच्यौ काहू ॥ गयो विलाय कहां धौं दाहू ॥
कैसे यह सव आगि वुझानी ॥ हम यह कछू न काहू जानी
तव हंसि वोले कुंवर कन्हाई ॥ वुह करनी यह करत सुहाई
तृण की आग प्रथम चढ़ जागे ॥ फिरते हि वुझत विलंब न लागे
सुनत स्याम की कोमल वानी ॥ भये सुखी सव ग्वालन मानी

जीव जंतु खग मृग जिते भये सुखी तत्काल
द्रुम वेली तृण हरित सव प्रफुल्लित वन सुखमाल
स्याम सहाय जाहि ताहि कहो डर कौन को
यह न वडाई याहि पांच तत्व उन के किये ॥

कहति परस्पर व्रज की नारी ॥ हैं सखि वडो वीर वनवारी
देखत कोमल स्याम सलोना ॥ यह सखि जानत हू कछु टोना
नाथ्यौ नाग पताल हि जाई ॥ लायो ता पर कमल धराई ॥
मांगे कमल कंस नृप राई ॥ कोटि कमल तेहि दिये पठाई
दावानल नभ धरणि वरावर ॥ घेर लिये व्रज के नारी नर ॥
नैन मुदाय कहा धौं कीन्हौ ॥ रह्यो नहीं कछु ताको चीन्हौ
ये उतपात मिटे उन ही पै ॥ और न होय सकै किन ही पै
यह कोउ सव वडो अवतारा ॥ है यह ई करता संसारा ॥
लखि हरी तुरित जसोमति मैया ॥ चकित निरखि मुख लेत वलैया
लखि सुत चरित मुदित नंदराई ॥ करत गोपगन सकल वडाई
कहत देव मुनि अति अनुरागी ॥ हैं व्रजवासिन के वड़भागी
जिनके स्याम संग सुख शीला ॥ करत रहत नित नित रसलीला

एक दिवस निस निसय सुनत ग्वालि सवु गोपिका ला
होत प्रात निज निज सदन आये सहित गुपाल

हरिजन के सुखकारि विलसत विविधि विलासमन
मतन प्राण अधार ब्रजवासी जन जाहि कन ॥
हरि ब्रज जन के सुख विसतरन ॥ कहत चरित सुख मुनि मन भावन
तुरत सकल ब्रज लोग बुलाये । कौन कंस कब कमल मंगाये ॥
कब हरि यमुना जलहि समाये । काली नाग नाथि कब ल्याये ॥
कब दावानल जारन आयो । एक दिवस निस कह्ह बितायो ॥
नहि जानत कछु नंदन सोई ॥ करत स्याम सो ग्वाल विनोई ॥
माखन मांगत कुंवर कन्हाई । बारबार जननी सों जाई ॥
आतुर दधिहि मथत नंदरानी । सद माखन हरि की रुचि जानी ॥
कहत ठनक तुम रहत लला रे । तुमहि देत नवनीत पियारे ॥
मैं बलि भूख लगी तुम भारी । बातन नावत सुतहि दुलारी ॥
बूझत बात काहू की कान्हहि ॥ कहत स्याम सो सुतन कानहि ॥
झूठे हि देतु डकारी जननी । भूल गई सब हरि की करनी ॥
तब लौ मथि दधि माखन कीनी । तुरतहि लै सुत के कर दीनी ॥
लै लै अधरन परस करि माखन रोटी खात ।
कहत प्रसस मधुर कहि सुनत प्रफुल्लित मात ॥
जो प्रभु पल रूप पारि दुर्लभ सिव सनकादिहु ।
धन्य नंद की नारि ताको सुत करि मानई ॥

अथ प्रलंबासुरवध लीला ।

नित नव लीला करत कन्हाई । तात मात ब्रजजन सुखदाई ॥
मुदित सकल ब्रज के नर नारी । निसदिन मुख हरि छंद निहारी ॥
इक दिन स्याम राम दोउ भाई । खेलत सखन संग बन जाई ॥
नाना विधि सब करत किलोलै । भांति भांति की बानी बोलै ॥
कबहू मोर हंसा की नाई ॥ बोलत हेसत स्याम सुखदाई ॥

कवहूं मधुरे सुर सव गावैं मध्य स्याम घन वेणु वजावैं
कवहूं चढ़त तरुण पर धाई कूदि परत गहि डार नवाई
नाना विधिके खेलन खेलैं वाल विनोद मोद रस केलैं॥
तहां प्रलंव असुर इक आयो कंस ताहि दै पान पठायो॥
सो छल रूप गोप वपु धारी मिल्यो आय हंस सखन मझारी
ताको ग्वालन काहु न जान्यो॥ यह तौ असुर स्याम पहिचान्यो
वल दाऊ कौं दियो जनाई॥ नाहि हृ तन कौं र्ध्यो उपाई

सखा वुलाई निकट सव तिन्हें कहेउ नंदलाल
फल वुझाइ अव खेलिये भये मुदित सव ग्वाल
द्वै वालक की राय सखा लिये नववांट सव
आधे इक दिश आय आधे एक दिसा भये॥

निज निज जोट सखन जुरि लीनो हल धर जोट दनुज संग कीनो
आपस मैं यह होड़ लगाई॥ जो हारे सो पीठ चढ़ाई॥
भंडिर वन लौं लै जाही॥ फेरि इहां पहुंचावै ताही
फल कौं नाम वुझावन लागे वूझि दियो वल सव तें आगे
चले सखा चढ़ि २ निज जोरी चढ़े दनुज वल पीठ वहोरी
भांडिर वन जव पहुंचे जाई॥ फिरे सखा सव ठांव छुवाई
असुर चल्यो लै वल कौं आगे प्रगटेउ दनुज सरीर अभागे
तव नल देव कोप करि भारी॥ मुष्टि एक ताके सिर मारी॥
विकस गयो सिर गिरा अधीरा उतर परे तव श्री वल वीरा
भयो पलक मैं सो विन प्राना॥ देखन सुर मुनि चढ़े विमाना॥
भई गजव ते जय जय वानी फूलन की वरखा द रखानी
वहु विधि अस्तुति वलै सुनाई मुदित सकल सुर सुमन वरषाई

ग्वाल वाल चातुर सवै दौरि गये वल पास
मतक असुर तन देखिकै तव मन कियो हुलास

धन्य धन्य बलराम धन्य तुम्हारे मात पितु॥
बड़ो कियौ यह काम कपट रूप मारो असुर

यह सठ गोप भेषि ह्वै आयो	हम काहू इहि जानन पायो
जो यह सठ नहिं जात निपातो	तौ काहू सारि कहि लै जातो
हो तुम बड़े वीर दोउ भाई	जहँ तहँ हम कौं होत सहाई
बन के दुष्ट सकल तुम मारे॥	तो तुम हम सब के रखवारे
नाहिं कही काको डर भैया	जासु मीत बलराम कन्हैया
देत ग्वाल सब बल हि बड़ाई	आय मिले तब हँसे कन्हाई
दुष्ट मारि बल मोहन लाला	आये सदन सहित सब ग्वाल
ग्वालन कही आय सब बातें	सुनत घोष के ब्रजजन मुद माते
कहत सकल बलराम कन्हाई	जननी मुदित लिये उर लाई
बल मोहन दोउ वीर निहारी	दोउ जननि जाय करत है गारी
भूख जानि बनहिं ते आये॥	दोउ भैयन भोजन कर वाये
जो सुख लहत नंद की नारी॥	सो सारद नहिं सकहि बखानी

सुत सनेह जसुमति मगन निसदिन जात न जान
करत चरित संतन सुखद भक्त वस्य भगवान
नित नव परम हुलास ब्रजवासी हरि संग लहत
विलसत विविधि विलास वार घाट गृह बन सघन

अथ पनघट लीला

पनघट यमुना के तट माहीं	ठाढ़े स्याम कदम की छाहीं
सखा वृंद चहु ओर बिराजे	कोटि काम छबि निरखत लाजे
सीस मुकुट की लटक सुहाई	सुरंग खोर केसर छबि छाई
कुंडल झलक अलक घुँघरारी	कंठ कनक कठी दुति कारी
पट कोली लटकी बनमाली	परसत चरण सरोज बिराजी

गुंजमाल मणिमाल सुहाई उर बिसाल पै अति छबि छाई
अरुण अधर दसनन दुति नीकी मृदु मुसकान मोहनी जाकी
चर कीलौ पर पीत बिराजै कटि तट छुद्र घंटिका राजै ॥
भुज बिसाल भूषण युत सोहै कर मुद्रिका जटित मन मोहै
तन घन स्याम रसीले नैना ॥ हँसि हँसि कहत सखन सों बैना ॥
कनक लकुट सों पग लपटान्यौ भूषण सहित न जात बखान्यौ
गहि द्रुम डारि त्रिभंगी ठाढे अंग अंग अनुपम छबि बाढे ॥

कबहुं बजावत अधर धरि करि मुरली धुनि घोर
निकट बुलावत बन मृगन कबहुं नचावत मोर
रहे गगन घन छाय सुखद छांह सीतल किये
बरषा ऋतु कौ पाइ निरखत सुत नंदराय के

हरित भूमि चहुं ओर सुहाई ॥ मनहु काम मसनंद बिछाई
बहत समीर धीर सुखदाई सीतल अधिक सुगंध सुहाई
बहत यमुन बहु जल तें पूरी परत भँवर जहँ तहँ छबि रूरी
उठत स्याम जल सुभग तरंगा ॥ छबि तरंग जिमि हरि के अंगा ॥
या छबि सों पनघट हरि ठाढे संग गोप बालक हित बाढे
यमुना जल तिय भरन न जाहीं ग्वाल भीर देखत सकुचाहीं
हरि के गुण मन में सब जानें रोकत टोकत कंस न मानें ॥
ताते पाइ सकत कोउ नाहीं ॥ दरस लालसा अति मन माहीं
सब के अन्तरजामि कन्हाई युवतिन के मन की गति पाई
तब इक युक्ति रची नंदलाला रसिक सिरोमणि मदनगुपाला
सखनै एक तरु तर बैठाई ॥ पनघट तें सब भीर मिटाई
आप रहत रहि ओट छिपाई ॥ हेरति युवतिन मग चित लाई

इहि अंतर आवत लखी युवती इक घनस्याम
आप रहे द्रुम ओट दुर यमुना तट कौ बाम

नागरि जलहि हिसोर औरगागरि सिर धरि चली
पाछेते चितचोर घटले दियो लुटाय महि॥

गही चतुर ग्वालनि भुज हरिकी॥ पाइ कनक लकुटिया कर की
सब सों तुम करी रहे ढिठाई॥ तैसेहि मोसों लगत कन्हाई
देन लगे तब हरि हँसि गागरि लेन नहीं ग्वालनि पति नागरि
कहति कि रीतौ घट ना है लैहौं जल भरि देहु लकुट तब देहौं
कह्यो जो तुम नंद सुवन कन्हाई हम हू वडे महर की जाई॥
एक गाव सहना सह मारी मैं नाहि सोहै हौं कसो तुम्हारी
एक कहौ तौ दस मैं कहिहौं॥ मैं कछु तुम सों डरपि न जैहौं
यह सुनि हँसि दीनो नंदलाला॥ लियो चोरि चित मदन गुपाला
कहत लकुटिया देरी मेरी॥ मैं भरि देहौं गागरि तेरी॥
देखत रूप सुनत मृदु वानी ग्वालनि तन की दशा भुलानी
लागी हृदय मदन की साटी मन परि गयो प्रेम की घाटी॥
कर तें लकुट गिरत नाहि जान्यो॥ विवस भई चित चेतो हरन्यो

तब घट भरि हरि भावते दीनो सीस उटाइ॥
नेकहु सुधि तातन नहीं चली व्रजहि समुहाइ
कियो दृगन में धाम सुन्दर नट नागर सुघर
जित देखै तित स्याम पंथ ताहि दीसै नहीं

उततें अपर ग्वालि इक आई कहति कहाँ तू रही भुलाई
सूधे पंथ चलति है नाहीं॥ कहा सोच तेरे मन माहीं
पकरी हँसति भरन जल आई कहा चली इत आइ गँवाई
ताको देखि कहति सुनु आली सो पर स्याम मोहनी घाली
मैं जल भरन अकेली आई मेरी गागरि कृस्न लुटाई॥
तासों मैं कनक लकुट गहि लीनो॥ उन मो तन लखि के हँसि दीनो
वे हैं हँसनि माहि परी ठगोरी तब ही ते मैं ह्वै गइ बौरी

कहा कहौं तोसों अब आली॥ मेरे चित वह चितवन साली॥
बस्यो कान्ह मेरे दृग माहीं॥ और कछू मोहि दीसत नाहीं॥
सुनत बात वह ग्वाल सयानी॥ आप बिलोकन कौं अतुरानी॥
ताहि बांहि गहि घर पहुंचाई॥ आप गई जल कौं अतुराई॥
देख्यौ जाइ स्याम तहं नाहीं॥ इत उत लखि सोचत मन माहीं॥

हरि देखत तरु ओट ह्वै ग्वालन मन दुख पाइ
चली नीर भरि गागरी बार बार पछिताइ
मन के जानन हार दे थी ग्वालिनि विकल अति
प्रगटे नंद कुमार गाय अचानक निकट ही

गहि लीनी अंग मैं भरि ग्वारी॥ ता के तन की तपति निवारी॥
ता तन चितै कह्यौ तू कोरी॥ तोहि कबहूं देख्यौ नहिं गोरी॥
मन हरि लीनौ रूप दिखाई॥ बहुरि भये तरु ओट कन्हाई॥
मिलि हरि सौं सुख पायो ग्वारी॥ छक्यो प्रेम रस लखि वनमारी॥
नहिं जानत को मैं कित आई॥ भई मगन मन तन बिसराई॥
घर कौ पंथ भूलि गई नागरि॥ इत उत फिरत सीस लिये गागरि॥
और सखी इक उत तें आई॥ देखि दसा तिन निकट बुलाई॥
कहा फिरति भूली मग माहीं॥ बूझति सखी सुनति कछु नाहीं॥
चौंकि परी सपने ज्यौं जागी॥ तासौं वचन कहन तब लागी॥
स्याम वदन इक मिल्यो ढुटौना॥ तिन मोकौं कछु कीनौ टौना॥
मैं भरि गागरि सीस उठाई॥ उन मो पकरि मोहि अंक लगाई॥
मो सन कह्यौ कौन तू गोरी॥ देखी नाहिं कबहुं ब्रज खोरी॥

ऐसें कहि चितयौ बिहंसि मैं लखि रही भुलाइ
तबहिं भयो अंतर कहूं मेरो चित्त चुराइ॥ ॥
कही सखी सौं बात ग्वालिनि लाज बिसारि कै
निरखि नंद कौ तात भई जलद की बूंद जिमि

सोसरिविसावधानकरिताकौं चलीआपेआतुरयमुनाकौं
देखीस्यामसुन्नतिढिगआई सहेतनकीओरकन्हाई
तासुअंगछविरहेनिहारी गोरेवदनचूनरीसारी ॥
करीअलकवदनछविछाई ॥ मनहुजलजअलिअवलिसुहाई
हाथचूनरीचारुविराजे ॥ कंकनमूंदिरनसखिछविछाजे
सहजसिंगारउरोजउतंगहै ॥ अगअंगसुठिसुन्दरसोहै ॥
ग्वालनिहरिकौदेख्यौनाहीं जानेकहूंगयेवनमाहीं ॥
जलभरिचलीमनहिंपछिताहीं ॥ गागरिनागरिसीसउठाई
औचकस्यामगहीलटआई ॥ यहकहिकहाँचलीअतुराई
चिबुकपरसउरसोलपटायौ ग्वालनिमनहिहर्षअतिपायौ
ऊपरकहतिवेगकरिमोहन छाडिदेहुमेरीलटसोहन ॥
उरपरसतकछुसकुचनमानत औरग्वालसीमोकौंजानत

छाडिदइलटदेखिकैब्रजयुवतीकोआइ
हाहामैंपायनपरतितुमकोनंदुहाय ॥
इतनेहीकौंमोहिसौंहदिवावतबावरी ॥
पहिचान्योनाहिंतोहितातैंमुखदेखततनक ॥

यौंकहिस्यामछाडिलटदीनी ॥ मुसुक्कानिनागरिवसकीनी
चलीभवनतनमनहरिलीनो ॥ जियअहकहतिकहाहौंकीनै
पगदुइचलतिठठकिरहिजाई ॥ भूलिगईमारगजिहिआई
प्रेममगनतनसुधिबिसराई ॥ रहेदृगनमेंस्यामसुहाई
घरहुसुरजनकीसुधिजबआई नवकछुजियमैगईलजाई
ज्यौंत्यौंकरिपहुंचीग्रहमाहीं उरतेस्यामटरतछिननाहीं
सखीसगकौबूझनिआई ॥ कहायमुनातटरहीलगाई
सौरेभटाभईकछुतेरी ॥ कहतिनहींहमसौंसमिरें
कहाकहौंतुमसौंरीआली ॥ मोहिडसोह्योस्यामचनमाली

सुनहु सखी त्री यमुना के तट । मैं जल भस्यो अकेली पनघट
ले गगरी सिर मारग डगरी ॥ कितहू ते आयो मो ढिग री ॥
औचक आनि गह्यो लर मेरी । कह्यो नेक मुख देखन दे री
मैं मृदु वचन सुनो नसुने देखि वदन जलजात
जकी चकी सी ह्वै रही उन पर रयो मो गात ॥
प्रफुलित हिये गुवारि मन मोहन के रस विवस ॥
कुल की लाज विसारि कही सखिन सों वात सव
सुनत वात सव सखी सयानी । स्याम विलोकन कौं ललचानी
इक छिन कान्ह न विसरत काहू । सुनत भयो यह अधिक उछाहू
घर घर ते धाई सव नागरि । ले ले आई जल की गागरि
चली यमुन तट अति अतुराई । देख्यो कुंवर नंद को जाई ॥
मोर मुकट कटि कछनी सोहै । कुंडल चटक लटक मन मोहै
पीत वसन लखि तड़ित लजाई । नैन विशाल अधर अरुणाई
देखत कह्यो सखिन ढिग जाई ॥ ठगत फिरत हो नारि पराई ॥
काहि ठग्यो कैसे ठग चीन्हो ॥ तुम्हरो कहो कहा ठग लीन्हो
कौन ठग्यो काहि कहा वषानै । औरहि के ठग तुम कौं जानै
कहा ठग्यो सो हम नहिं मानै । कहो नाम धरि तव हम जानै
सवै ठगत पलक के माहीं । कहा ठग्यो सो जानत नाहीं
ठग के लक्षण मोहि वतावहु ॥ कैसे हम कों ठग ठहरावौ
ठग लक्षण हम पै सुनहु फांसी मृदु मुसकान
रूप ठगोरी तें ठगत व्रज तिय मन धन प्रान
फिरत विकल वेहाल लोक लाज कुल कान तज
ठगी नंद के लाल भई वावरी तिहूं लोक तिय ॥
अपने लक्षण मोहि लगावहु । जैसे तुम सव चित्त हिरावहु
कहां ते के प्रगटी तिहुं पुर वाला । व्रज तिय ठगत नंद को लाल

ह्यांई रह्यौ तौ वदहि कन्हाई ॥ जाइ कहूं तौ नंद दुहाई ॥
कान्हैं सोंह दिवाइ कै उरहन लै सव वाम
ऊपर रीस अंतर सुखी चली नंद के धाम ॥
मथति महरि निज धाम दधि हरि के माखन लिये
तिहि अंतर व्रज वाम आवत देखी भीर अति
मैं जानति हरि इनहिं खिजाई ॥ तातें सव उरहन लै आई ॥
कहति युवति सव रिस भरि आई ॥ ऐसो ढीठ कियो सुत माई ॥
भरन देत नहिं यमुना पानी ॥ रोकत घाट करत कल कानी ॥
काहू को गागरि ढारि नावै ॥ इंडुरी लै जल माहं वहावै ॥
काहू को घट डारत फोरी ॥ गारी देत सहैं नित कोरी ॥
महरि कहत तुम सों सकुचाहीं ॥ हरि के गुन तुम जानत नाहीं ॥
अव नाहीं व्रज वास हमारो ॥ करत अचगरी सुवन तुम्हारो ॥
नेक नहीं सकुचत मन माहीं ॥ महरि सुनहि तुम वरजति नाहीं ॥
जसुमति सवहिन कहत न हारी ॥ कहा करीं सो तुमहिं कहौं री ॥
जो हरि कों मैं यहां गहि पाऊं ॥ तौ तुम सव कों अवहि दिखाऊं ॥
तुमहूं जानिनि हौ गुण हरि के ॥ ऊखल सों वांधे मैं धरि के ॥
मारन लगी साटि लै जवहीं ॥ वरजो मोहि तुमहिं सव तवहीं ॥
अव घर आवहि जवहिं परत वूहि करों सो हाल
लरिकाई ते अचगरी मैं जानति गोपाल ॥
अव जा पकरन पाउं ताहि गहन पाऊं कहां ॥
सुनतहि मेरो नाउं कोजानै भजि जाय किन
यह अपराध छमो सव हमको ॥ यह कहति हौं मैं अव तुमको ॥
इहि विधि युवतिन वोध कराई ॥ महरि सवन कों घरन पठाई ॥
इतने घरन चली सव वारी ॥ उतते घर आवत वनवारी ॥
ह्वै गई भेट वीच मग आई ॥ तरत नयन हरि गये लजाई ॥

मोहिकुल्यावति जाउ कन्हाई। वढ़त वड़ाई कारि हम भाई
निरोष वदन हसि कहेउ कन्हैया। मै समुझाय लेउ गोमैया
सकुचत ही आये घर मोहन। द्वारहि तलागे हरि गोहन
देखि जननि यह को रजलाम्भी। गोपिन के उर हन रिस पाम्भी
भीतर थी हरिणी पाक वनावे। कहि कहि तिनन सो वात सुनावे
हरष हरष तव हरि जाई। सुनन आइ पाछे चित लाई
येही कहति जसुमति मैसजाई। गयो कहा धौं भाजि कन्हाई
घर घर रोकत धूम मचावत। यमुना जलको उभरन न पावत
छंद। गारि देत वेटी वहुन वे आवत यों धाय॥
॥ हा हा मैं सवका करति कोउ हूं खूंट छुटाय
ईडुरी देत वहाय सवकी गागरे फोरि कै
किते धौ गयो पराय यो कोहि धिस्वत है सुतहि
औति पाति सो कहन लगाई॥ मारेहु मानत नाहि कन्हाई
तव पाछे ते हरि उठि वोले॥ मधुर वचन कोमल अति भोले
तू मोही को मारन जाने॥ उनके गुण नाहिन पहिचाने
कहति जुवे भानन तू सोई। तिनके चरित न जानत कोई
कदव तीर ते मोहि बुलावे॥ वात गढ़ि गढ़ि माहि वनावे
भटकत गिरे सीस ते गगरी॥ नाम लगावति मेरो सिगरी
फिरि चितई देखे हरि पाछे॥ सुन्दर स्याम पीत पट काछे
कहत तू कहा रहौ मो पाही॥ मै कहै तौ को जानत नाही
हरि मुख देखत ही नंदनारी॥ तुरत हि भूलि गई रिस भारी
कहति कि उर हन लौ सव भावै॥ झूठहि खोर कान्ह को लावै
मै जानति गुण उन सवही के॥ वातन जोरि घनावत मीके
वै सव यौवन के मद माती॥ फिरत सदा हरि सों इतराती
कहा स्याम मेरो तनक ये सव योवन जोर २१

रहेरीझहरिदाउ लगाई ॥ भसौनीरप्यारी मुसकाई
चलीघरहियमुनाजलभरिकै ॥ सखिनमध्यगागरिसिरधरिकै
मंदमंदगति चली सुहाई ॥ मोहनमनहिंमोहनीलाई ॥
चलेस्यामसंगहिउठलागे विवसभयेप्यारीरस पागे ॥
सखियन बीच नागरी सोहै गागरीसिरपरहरिमनमोहै
डुलतपीवलटकनिनकवेसरि वंदनविंदुभाल दिये केसरि

लोचनलोलविशालअतिसुरिसुरिचितवतजाय
भृकुटीधनुषकटाक्षसरहरिदृगमृगनलगाय
संगसंगछविसमुदाय मानहुँ सेना काम की
चंचलध्वजफहरात ठठकचलतहरिमनहरत

रीझेस्याम निरखिछविप्यारी संगहिचलेलागि वनवारी
कवहुँक आगेजातकन्हाई । कवहुँरहतपाछेचितलाई ॥
नानाभांतिन भाववतावैं ॥ प्यारीहिंनिजअभिलाषजनावैं
कनककलकुटलेकरकेमाही ॥ आगेपथसवारतजाहीं ॥
देखतजहाभयापरछाही ॥ तहांमिलावतनिजतनछांईं
छविनिरखतनवारिजनावैं पीतांवरलैसीसफिरावैं ॥
कवहुंस्यामपाछेरहिजाहीं निरखतकचरीकथिलत्याहीं
गागरिताकिकांकरी मारैं ॥ उचटिउचटितियपगनपारैं
ओटपीतपटसीस नवाई ॥ इहिमिसनिकसतदृगन्हैआई
प्यारीअपनेचितअनुमाने ॥ मेरेहित हरि भाव न ठाने ॥
सखियन मध्य नागरीजाई ॥ नहिंपावनलगलगत कन्हाई
कियोचरितनव रसिकविहारी ॥ सखिनसहितमोहीसुकुमारी

मिसकरिनिकसेनिकटह्वैनिरखवदनमुसकाइ
मनहरिलीनोसखनकौदियोकामउपजाइ
भई विवससुकुमार पगउमगआंगोदरक

मो ह्वीनंदकुमार सुधिबुधिबिसरी देहकी

सखिन संग पहूंची घर आई। आय कि रहे उमनहारे संगजाई
पुनि २ उर यह करत बिचारी। कैसे मिले स्यामसुकुमारी॥
गागरि निज २ गृह पहूंचाई। बहुरि सखी प्यारी ढिंग आई
बारबार सब कहति निहारी। चलिये यमुना जलहि बहोरी
तिन कौं उत्तर देत न प्यारी॥ चितउर मैं चितवन बनवारी
ठगिसी रही मनहि मन सोचै। प्रेम बिवस दृगबारि बिमोचै
देखि सदा कूलत सब ग्वारी। कहा भयो तोकौं री प्यारी॥
सोचति कहा कहे किन कोरी। काहू लियो चोर कछु चोरी॥
उतर हमैं देति क्यों नाहीं॥ कहा ठगीसी है मन माहीं॥
गहि गहि भुजा कहति सब गोरी॥ चलहि न यमुना अब हैं रगोरी॥
तब सखियनु वृषभानु दुलारी॥ लीनी सबन निकट बैठारी
जलज नयन जल भरि अनुरागी॥ हरि के चरित कहन सब लागी

कह्यो सखी केसे चली बा यमुना की ओर
गैलन छांडति सांवरो रसिया नंदकिशोर
धरैन कोउ नाव इह संकोनिडर पति ह्वियो
एक भांति कौ गांव वह चंचल मानै नहीं॥

मोकौं देखत जहां कन्हाई॥ मेरे संग लगत उठ धाई॥
इत उत नैन चुराय निहारैं॥ मोकौं मग मैं आय जुहारै॥
आगे चलत लकुट कर लाई। मेरी कंथ संवारत जाई॥
सो वह मोहि बिहारी लाई॥ फिरि चितवै मो तन मुसकाई
जब मैं यमुना कौ जल भरिकै। चलति गागरी सिर पै धरि कै
तब घर मैं बहु कांकर मारैं॥ रूचटि लगैत तक अंग निहारैं
मेरे उर अंचर फहराई॥ सो वह देषि देषि ललचाई॥
कबहू पीतांबर सिर फारैं॥ बारबार कीरै मो तन हेरै॥

गद्गद कंठ पुलक तन आये। लोचन जलज प्रेम तन छाये॥
भई प्रेम बस बस गोपकुमारी। लोक सकुच कालकान बिसारी॥
बारहिं बार कहत ब्रजनारी। धन्य धन्य ब्रषभान दुलारी॥
हम सब तो सों सत्य बषानें। तें हरि भली भांति पहिचाने॥
यह मोहन सब को मन मोहै। तिय लषि बिबस न होइ सु को है॥
अंग अंग प्रति अति छबि छाजै। समता कोटि काम दुति लाजै॥
सुभग स्याम दोउ पाणि पकरिकैं। करत बेणु धुनि अधरन धरिकैं॥
तब यह दसा सबन की होई। जड़ चेतन मोहत सब कोई॥
बन मृग निकट धाय सब आवैं। मग ह्वै मौन न अंग डुलावैं॥
तृण गहि दंत धेनु रहि जाहीं। थन तें छीर पियत बछ नाहीं॥
यमुना बहिबे तें रहि जाई। जलचर भ्रगट तथा ह्वर आई॥

जड़ चेतन चेतन जड़ हि सुनत होत कल बैन।
कै बिष कै मद कै अमी किधों भरयो रस मैन॥

रह्ह बन कछु न सुहाय सुनत श्रवण वह मधुर धुनि।
गृहकारज बिसराय चकित थकित रहियत सबै॥

बाट घाट जहं मिलत कन्हाई। मोहत सुन्दर रूप दिखाई॥
नई नई छबि छिन छिन माहीं। झलकावत सब अंगन माहीं॥
ऐसो को जो देखि मन मोहै। नंद सुवन सम सुन्दर को है॥
वह सखि सबही के मन भावै। सब कोउ बाहि देखि सुष पावै॥
लोक लाज कुल कानें का मोहि। जो पावै सुन्दर वर स्यामहि॥
पय यह मोहि अगम अति लागै। यह सुख मिलै नहीं बिन भागै॥
इनको गर्ग कह्यो नंद पाहीं। बिना सुकृत ये प्रापत नाहीं॥
तुमहूं इनको तप करि पायो। ऐसे नंदहि गर्ग सुनायो॥
कहु सखि इतनो भाग हमारो। जो बस माह है नंद दुलारो॥
ताते मो मन में यह आवै॥ कीजै जो सब के मन भावै॥

तप कीजे हरि के हित लागी पूजि गौरि पति सौख्य मांगी
नंदसुवन सुन्दर वर पावै और सकल कामना नसावै

जप तप संयम नेम ते प्रभु प्रगट तपखान
ताते सव तप कीजिये और उपाव न आनि
कीजे यह हठ नेम प्रात जाय यमुना नदी
पूजहिं शिव करि प्रेम तो पावै पति करि हरिहिं

तप करि योगीजन हरि ध्यावै॥ मनवांछित फल तप करि पावै
सकल कामना को शिव दाता॥ कहत वेद विधि पंडित ज्ञाता
हमको मन वांछित सखि एहा॥ नंदसुवन पद कमल सनेहा
सुनत सप्रेम सखी की वानी॥ श्री वृषभानु सुता हरषानी
यह मंत्र सब के मन मान्यो॥ धन्य २ कहि ताहि वषान्यो
कह्त सबै कीजे सखि सोई॥ जा विधि नंदनंदन हित होई
कृपा जन्म जा जानन दीजे॥ जसुमति सुत सों हित करि लीजे
यह मंत्र सब ए दृढ़ कीनो॥ नंदनंदन सो पति व्रत लीनो
धन्य धन्य व्रज गोप कुमारी॥ जिनके हित पातक सब जारी
मन क्रम वचन हरि सों मति मानी॥ लोक लाज तिन के सब भानी
इक सरण स्याम न उरतें टरई॥ नेम धर्म व्रत हरि हित करई
जिनकी यश शारद श्रुति गावैं॥ व्रजवासी जन कहा बतावैं

जाग्रत स्वप्न सुषुप्त इक व्रज युवतिन मन माहिं
सदा एक तुरिया रहति और अवस्था नाहिं
ऐसो कौन प्रवीन चहै प्रेम व्रज तियन को॥
हरि छवि जल मन मीन विछुर सकत नहिं एक पल

अथ चीर हरण लीला

भवन रवन सव हित विसरायो॥ व्रज युवतिन हरि सों मन लायो

यहे वासना सब उर जामी ॥ होइ गुपाल हमारो स्वामी ॥
कामवासना करि उर ध्यायो । हरि के हेत तपहि मन लायो
खटदस सहस गोप की कन्या । करन लगी तप हरि हित धन्या ।
रहति कृपायुत तप को साधे ॥ छांड दई सब भोग उपाधे ॥
प्रातकाल यमुना जल न्हाई । प्रहर प्रयंत रहे जल माहीं
जपहि उमापति हर वृषकेतू । सुन्दर स्याम कृष्ण पति हेतू
शीत भीत मन में नहिं ल्यावे । नैन मूंदि के ध्यान लगावे ॥
वारवार यह कहे मनाई ॥ हम वर पावें कुंवर कन्हाई
जल तें निकसि बहुरि सब आई । पूजे गोपेश्वर शिव जाई ॥
चंदन बिल्व पत्र जलधारा ॥ अक्षत सुमन सुगंध अपारा ।
प्रीति सहित सब शिवहि चढावें । धूप दीप करि अस्तुति गावें
छं० करहिं अस्तुति गान बहुविधि पानि पंकज जोर ही

वारवार नवाय मस्तक प्रेमसहित निहोरही॥
जयमहेशकृपालशिवआनंदनिधिगिरिजापते
कैलासपतिकल्यानअगजगन्नाथसर्वनसामिते
जटाजूटत्रिपुंडसासिकलिगंगजुतसोभित सिरे
कमल नेत्र विशालसुन्दरचारुकुंडलस्रुति धरे॥
नीलकंठभुजगभूषणभस्मअंग दिवंवरं॥
अरधंगगौरिविशालउरसिरमालधरकरुनाकरं
करपूरगौरमनंतआननपंचवक्त्रत्रिलोचन॥
कामप्रदसुखधामपूरनकामसोचविमोचनं॥
भगवानभवभोभयहरनभूतादिपतिशम्भूहरे
प्रणतजनपूरणमनोरथजगतपतिमनमथअरे
व्रषभवाहनत्रिपुरअरिस्मृगराजवरछालावरे
सूलपानित्रिशूलमूल न्मूल के शिव संकरे॥
सुर असुर नरनागतुवपदवंदिमनवांछितलहै
पूजितपदकमलप्रभुहमकृस्नपतिचाहतअहै

दो॰ तुमसर्वज्ञसुजानशिवजानतजनन नपीर
परमदानदीजेहमें सुन्दर वर वल वीर॥
यहवरदाननआनशिवतुमसोजांचतअहै
कृस्नकमलपदध्यान रहेहमारे उर सदा॥

यहिविधिव्रजतियनेमनिबाहे॥ शिवकीपूजिकृस्न पतिचाहे
नितप्रतिप्रातजमुनजलखोरे॥ प्रीतिरीतिसोमन नहिंमोरें
शिवतोसौं बहुभांतिनिहोरै गोदपसारियुगुलकरजोरैं
तेजरासिदिनमनिजगस्वामी जगतचक्षुसबघटअंतरजामी
प्रणतमनोरथपूरनकारी॥ हमपरहोहुदयालुतुमारी
कामहमारेतनहिंजरावै॥ नंदसुवनवरहम कोभावै

लोगन कहति सुनाय कान्ह करत लंगरय अति
जसुमति के ढिग जाय कहति चलौ को हियेसवै
चली जसोमति पै सब ग्वारी॥ प्रेम विवस तन दसा विसारी
पुलकि अंग अंगिया दरकानी॥ टूटे हार लिये निज पानी
चोर चीर नख घात बनाई॥ यहै मिस करि उरहन लै आई
देखहु महरि स्याम के ये गुन ऐसे ढंग किये सब के उन॥
चोली चीर हार दिखराये॥ घेर करत द्रुत को भजि आये॥
और बात इक सुनहु न माई ढीठ भयो अति कुंवर कन्हाई
बिना वसन हम न्हाति जहां सव॥ भीजत पीठि जाय पाछे तव
और कहति तुमसों सकुचावें॥ उर उघारि कहा तुमहि दिखावें
महरि विचारति कहति कहा सब॥ भयो स्याम इहि नायक थौं कव
सुनि युवतिन के सुख यह वानी॥ बोली विहंसि नंद की रानी॥
बात कहौ सो जो निबहै री॥ बिना मीत नहिं चित्त लहै री
तुम को कहति लाज नहिं आवति॥ चोरी रही छिनारो लावति
तुम चाहति हौ गगन तें गहन तरैया वाम॥
सो कैसे करि पाइहौं तुम लायक नहिं स्याम
मैं बूझी सब बात तुमसो हौं कहिहौं कहा
वृथा फिरति इठलात मष्ट करौ सुनि है जगत
इहि अंतर हरि आय गये घरि॥ सीस मुकट लीने मुरली कर
अति कोमल तन भूषण सोहै॥ बाल भेद देखत मन मोहै॥
जननी बोलि वांह गहि लीनो कहति सवन सों रस रिस भीनी
देखहु री तुम सब इत आवो इनहीं को अपराध लगावौ
देखहु सखी लाज नहिं आवत॥ इनहीं के नख उर न दिखावत
मेरो कान्ह अबहिं सुत बारो॥ तुम कोउ और रहि जाय निहारो॥
देखत हारि है युवति भई भोरी॥ कहति महरि कछु तुमहिं न खोरी॥

देनउरहनौं तुमकौं आई ॥ नीको पहरावन तुम पाई ॥
आपस में सबकहति सुनाई देखहुरी यह भाव कन्हाई
यमुना तीर मिलेजब आई॥ कहागई तब कौतरुणाई
इनकेगुण ऐसे को जानै ॥ औरै करत औरही गानै ॥
घर आवतही भरो नन्हाई॥ ऐसे तन के चोर कन्हाई ॥

देखि चरित नंदलाल के भई बाल मति भोर
सुधि बुधि मन कछु थिर नहीं कहति और को और
सकुची बहुरि संभारि विवस देखि अपनी दशा
चली घरनि ब्रजनारि हरि सुखवाम निहारि के

गई घरनि ब्रजगोपकुमारी॥ चित हरि लीनो मदनमुरारी
नेकन मन लागति घर माहीं ॥ धामकाम की कछु सुधि नाहीं
मात पिता कौ डर नहिं मानैं॥ गारि देत कोउ सुनै न कानैं
प्रात होतही गोपकुमारी॥ गई यमुनतट सब सुकुमारी
देखे तहां जाय नंद नंदन ॥ मोरमुकट शोभित तनचंदन
मकराकृत कुंडल उरमाला॥ पीतवसन दृग कमल विशाला
दरस देखि अंखियां तृपतानी भई सुखी उरतपत बुझानी॥
कहति परस्पर मिलि सब वाली॥ यमुनाकूलतट गये वनमाली
कौनभांति करि आज अन्हैवो॥ बनत नाहिं अब यमुना ऐवो
कैसे करि हम वसन उतारैं कान्ह हमारी ओर निहारैं ॥
भीजत पीठ औचकहि आई वसन अभूषण लै भजि जाई
कहो फेरि कैसे तब पावैं॥ अब नहिं कान्ह घाट पै आवैं

कहत सकुच की बात सब ऊपर मन आनंद
अंतरगति की बस्त कौं जानत सब नंद नंद॥
जानी जानन राय लाज ओतर युवती करत
सो अब देउं मिटाय अंतर भलो न प्रेम मैं॥

औरवातएकस्यामविचारी॥ येजलभीतरन्हातउघारी॥
ओत्रियजलमेनगिनन्हाई॥ ताकोहोतदोषअधिकाई॥
ताकोदोसनासनतबपावै॥ नागीपरपतिसनमुखआवै॥
सोइनकोयहदूषनुन्हारो॥ औरलाजअंतरनिरवारो॥
करौंआजुइनसोंविधिसोई॥ इनकोंहितममकौतुकहोई॥
जोकछुचूकदासतेहोई॥ आयसुधायलेतहरिसोई॥
अंतरप्रभुकोनेकुनभावै॥ भजैनिरंतरतवहरिपावै॥
अंतररहितभक्तिहरिप्यारी॥ कहतवेदसवसंतपुकारी॥
तवहरियहमनकियोविचार॥ इनकेवसनहरेइकवार॥
प्रभुसवकीतवदृष्टिवचाई॥ कदमवृक्षतवरहेलुकाई॥
जवगोपिनहरिदेखेनाहीं॥ चकृतविलोकिइतउतमाहीं॥
जानीसदनगयेनंदलाल॥ न्हानचलींतवसवव्रजवाल॥

धरेउतारिउतारिसवतटपरभूषणचीर॥
नगिनहोइअस्नानहितपैठीयमुनानीर॥
पीवालोजलमाहिंपैठिकरतअस्नानसव
सुखछविकहियनआयकनककंजफूलेमनहु

वारवारवूडतजलमाहीं॥ प्रेमसहितमनमुदितनहाहीं॥
शिवसोंविनतीकरतिनिहोरी॥ कवहूँरविवंदेकरजोरी॥
यहैकामनाकरिसवध्यावैं॥ नंदनंदनकोपतिकरिपावैं॥
कामातुरसवगोपकुमारी॥ धरैध्यानउरकुंजविहारी॥
दसहिंनैनदरसनचितलावैं॥ शब्दविचारिश्रवणसुखपावैं॥
भुजजोरतअंकमहितलागी॥ मगनप्रेमरसतियवडभागी॥
प्रभुअंतरजामीसवजाने॥ देखतकदमचढेसुखमाने॥
कहतधन्यधनिव्रजवाला॥ मेरेहिततपकरतविशाला॥
प्रीतिरीतिसवकीपहिचानी॥ छिनछिनकीसेवाहरिमानी॥

काहू भावमोहि कोउ ध्यावै। मोहिविरद राखे बनिआवै
कियो बहुतश्रममम हितकारन॥ अव इनकोदुखकरो निवारन
उपजी कृपासमुझिजनपीरा॥ उतरेतरुतेंमोवलवीरा॥
प्रेममगन युवती सब रही ध्यानमनलाय
हरि सब भूषनवसनलै चढे कदम पर जाय
भूषनवसनअपारसो रहे सहसवधूनके
हरि सकहो वार लै राखे तरु नीय पर॥ ॥
कहो नीयतरुडारि विस्तारा॥ फूले सुमन सुगंधअपारा॥
लैलैवसन डार अटकाये॥ जहांतहां भूषण लटकाये॥
नीलांवरपाटंवर सारी॥ सेत पीत चुनरी अरुनारी॥
जहांतहां साखनप्रतिसोहै देखत छविवसंतु मनमोहै
तातरुसाखापरसुखदाई वैठे छविकी रासि कन्हाई
युवतिसुकृततरुधनुधसिआनो॥ फल्योसुव्रत पूरनफलजानो
देखत कदम चढे नंदलाला॥ वसनविना जल में सब वाला
ध्यानकरत तें जव सवजागी॥ जवजलवाहरनिकसनलागी
जल से निकसिआइतटदेखा॥ भूषन वसनतहोनहिं पेखा
इतउत चितैचकृतभई भारी सकुचि गई फिरिजलसुकुमारी
नाभिप्रजंतनीर में ठाढी॥ भुजलगाय उरचिंतावाढी
कंपतसीततें तन अकुलाहीं वारवार कहिं कहि पछिताहीं
ऐसोको भूषनवसनसबके एकहि वार॥
तटतेंलयेचुराइकेलगीननेकहु वार॥
हम जानत यहवात अव हरि हरिलै गये
औरकौनकी गात जो ब्रज में ठौली करै॥
दीन होइ तवयुवतिपुकारी हे कहुस्याम जायवलिहारी
दरस दिखाय विनैसुनिलीजै अवर दहुकृपा अव कीजै॥

थरथरअंगकंपतसुकुमारी देखिपांवनहिं सकेसंभारी
वोलिउठे तवमदनगुपाला कहाकहतमोसेंब्रजवाला
अवहौंजलमेंमरतजडाई लेऊवसनभूषनइतआई॥
तुमपटभूषणसुरतविसारी तवमैंलेकीनीरखवारी॥
अवअपनेपटभूषणलीजे रखवारीकछुहमकोदीजे
जवऐसेहरिवोलसुनायौ तवसवकेमनधीरजआयौ
सुनिहरिवचनसकलहरषानी लखेकदमऊपरसुखदानी
कहतिसुनौसखिहरिकीवातें वसनचुरायकरेयेघातें॥
हमसवजलकेवीचउघारी मांगतहैंहमसोंरखवारी
तवहँसिवोलीब्रजकीवाला सुनहुस्यामसुंदरनंदलाला

तनमनधनअर्प्योंतुम्हें हैंसुतुम्हारेपास
अवअंवरदीजेहमें जानिआपनीदास
तवहँसिकहेउकन्हाय जातनमनमोकौंदियो
लेहुवसनयहआय तोमानौमेरोकह्यौ

सुनहुस्यामघनवातहमारी नयकौनविधिआवैनारी
हमहैंतरुणीतरुणकन्हाई विनावसनक्यौंदेहिंदिखाई
यहमतिआपकहांधौंपाई॥ आजसुनीयहवातनवाई
पुरुषजातियहकहतनआनहु हाहाऐसीमनजिनआनहु
कहतस्यामजोनयनऐहौ॥ तौतुमपटभूषणनहिंपैहौ
जोतनमनदीनोतुममोही॥ तौएतनकतलज्याद्रोही॥
यहअतरमोसोजिनराखौ माननेहुतुममेरीभाखौ॥
सीतसहतकतनवलकिशोरी लाजदेहुजलहीमेंवोरी॥
जलसेनिकसवेगइतआवौ हाथजोरिमोहिविनैसुनावौ
ज्योंजलमेंरवितेंकरजोरी त्यौंह्वाइसन्मुखमोहिनिहोरी
यहसुनिहँसीसकलब्रजनारी ऐसीवातनकहौमुरारी

हाहा लागहिं पाय तिहारे॥ पाप होत है जाड़न मारे

छांड़ देउ यह टेक हरि वर भूषण तुम लेउ॥
शीत मरत हम नीर मैं वसन हमारे देउ॥
दूषण होत अपार जो तिय अंग देषहि पुरुष
तातें नंद कुमार नागी नारि न देखिये॥

तुम कौं छोह होत नहिं राई॥ बड़े निठुर हो कुंमर कन्हाई
सोई करौ जो तुम कौं सोहै॥ आज तिहारी पटतर को है
आजहि तें हम दासि तिहारी कैसे अंग दिखावहिं नारी॥
अंग दिखाय भूषण पैहौ॥ नातर जल में बैठी रहिहौ
मेरे कहे निकसि सब आवौ॥ प्यारे में मो भलो मनावौ॥
कत अंतर राखति हौ हमसों वार वार मैं भाखति तुम सौं
लेउ आय अपने पट भूषण यह लागै हमकौं सब दूषण
मोहित तुमकी नेतप भारी॥ आवति कलजा फिरत हमारी
मैं अंतरजामी सब जानी॥ करि हौं तुमरे मनकी मानी
अब पूरण तप भयो तुम्हारो॥ अंतर इतो दूरि करि डारो
सुनि यह मोहनके सुख बानी॥ सब युवती मन में हरषानी
सब सखिहिन यह बात विचारी॥ अब तो टेक परे बनवारी
कहत परस्पर मिलि सबै हरि हठ छांड़त नाहिं॥
वसन बिना कैसे बनै कौन भांति घर जाहिं॥
चलौ लीजिये चीर इनहीं कीं हठ राषि के
मन मोहन बलवीर जो कछु कहै सो कीजिये

यह विचार जल बाहर आई॥ बैठि गई तट अतिहिं लजाई
बार बार हरि निकट बुलावै॥ त्यौं त्यौं अधिक लाज कों पावै
कहति स्याम सब अंबर दीजे हाहा करनी हठ नहिं कीजे॥
कहत समीर शीत अति भारी आनै कौ उपकार तुम्हारी

हम दासी तुम नाथ हमारे॥ हम सब की पत हाथ तुम्हारे
कहत स्याम यह तजौ रयानी छोड़हु लाज कहहु मम बानी
अपने वसन लेहु यह आई॥ देहौं तुमको नंद दुहाई॥
आवहु सकल लाज कौ त्यागे॥ करहु सिंगार आय मो आगे
नब सब हिन यह मन में जानी करिहैं स्याम आपनो बानी
कर कुच अग दौ कि भई ठाढ़ी वदन नवाइ लाज अति बाढ़ी
गई कदम तर हरि के पासा कहत देहु अब हम कौ वासा
हरि बोले यो वसन न पावो हाथ जोरि मोहि विनै सुनावो
जो कहिहौ करिहैं सबै हँसि बोली ब्रजबाम
लेहैं दाव हम हू कबहु सुनो स्याम अभिराम
उभै कमल कर जोरि सजल सहास निहारि हरि
मांगत सकल निहोरि कहत देहु अब वसन प्रभु
लखि युवतिन की प्रीति कन्हाई रीझे भक्तन के सुख दाई॥
धन्य धन्य बोले गोपाला॥ निश्छल प्रीति करी तुम बाला
देखि निरंतर गोपकुमारी॥ दीने वसन अभूषण भारी
अति आतुर सब पहिरन लागीं॥ प्रेम प्रीति के रस मति पागीं
तब हँसि बोले कुंजविहारी॥ मैं पति तुम मेरी सब प्यारी
अंतर सोच दूर कर डारो॥ मेरो कह्यो सत्य उर धारो॥
सरद रात तुव आस पुरैहौ॥ अंकम भरि सब कौ उर लैहौं
जब तप करि तुम मत न गारो॥ मैं तुम ते क्षण होत न न्यारो
करसो परस सबन सुख दीनो विरह ताप तन कौ हरि लीनो
द्वा करी हँसि नंद के लाला निज निज सदन गई ब्रजबाला
गोपिन उर अति हर्ष बढ़ायो॥ मन मन कहति कृष्ण वर पायो
ब्रजवासीजन के सुखदाई॥ आये अपने सदन कन्हाई
इहि विधि ब्रज सुंदरिन कौ हित करि सुन्दर स्याम

व्रजविलास विलसत विविधि सकल लोक अभिराम
सुन्दर घन सुखरासि सब विधि कारे सबके सुखद
नित नव करत विलास मुदित सकल व्रज लोग सुख

अथ वृंदावन वर्णन लीला ॥

हरि लखि मात पिता सुख पावे॥ बालभाव बहु लाड़ लड़ावे
नवल किशोर सुभग तन स्यामा॥ निरखत मुदित सकल व्रजवामा
ग्वाल बाल सब सम करि जाने॥ सखा प्राण प्रीतम करि माने॥
नित उठि गाय चरावन जाही॥ क्रीडा करे विविधि व्रजमाही
इक दिन सोवत सदन कृपाला॥ आये द्वार बुलावन ग्वाला
चलहु स्याम वन धेनु चरावन॥ यह सुनि जननी लगी जगावन
उठहु तात मैया बलि जाई॥ टेरत ग्वाल बात बल भाई॥
वदन दिखाइ सवन सुख देऊ॥ दलवन करि कछु कर हु कलेऊ

भई बेर व्रतकी नंदलाला॥ अवमतिसोवहुमदनगुपाला
सोवत में हरि जागत जाही॥ सुनतबातमातसमनमाही
कबहू वसन ढापिमुखसोवें॥ कबहुं उघारजननी तनजोवें
खोलतनैनपलकझुकिआवे॥ सोछबि निरखिमातसुखपावे

उठहुलालजननीकहेउ नवचितयेहसिनंद
पलगाहिपुनिपुनिफेरिसुखतवहिउठेब्रजचंद
कबके टेरतग्वारबलदाऊयहकहिउठे॥
वनकोभई अवारगई गायआगेनिकसि

यहसुनिचतुरहिरउटेकन्हाई॥ जसुमतिजलझारीभरिलाई
दुहुभैयनकरिवारिसुखारी॥ पोछेवदनजननिनिजसारी
करहुकलेऊअवकछुप्यारे॥ एकथारदोउसुतवैठारे॥
दधिमाखनरोटीअरुमेवा॥ करतभातदोउभातकलेवा
परसतनिकटवैठिमनमोदा॥ रूपसुखलखतमहरिजसोदा
मातप्रेमतेंअतितृपताई॥ अचवनकरतउठे दोउभाई
द्वारे टेरउठो इक ग्वालू॥ वनकोंचलहुवेगनंदलालू
बलमोहनआवहु दोउभैया॥ आगेनिकसिगईसवगैया
ग्वालवचनसुनिअतिअतुराई॥ कछुअचयोकछुनहिंदोउभाई
मुरलीमुकटलकटपटलीनो॥ निकसे दोखिनाहिंममदीनो
केतिक दूरिगई चलि गैया॥ ग्वालहिंवृझतजातकन्हैया
कछुवनपहुंची ह्वैहैजाई॥ कछु मगमिलिहैंतवसन्नाई

वनपहुंचतसुरभीलई कहेंमोहनदोउधाय
कहतएवनसोंजातकोंहहमहूं पहुंचेआइ
तुमआयेअतुरायजेंवतपायेसवनहम॥
तुमसंगरहतमलामहूं अवहूमतरुचरायहै

यहसुनिसखाधायसवआये॥ हरिकोअंकमभरिउरलाये

तुम हौ सबहिन के सुखदाई॥ हमकौं नजि मति जाऊ कन्हाई
आज कुमुदवन चलऊ चरावत॥ शीतल सुखद सघन अति पावन
सुनत कहेउ अति हर्षे कन्हाई॥ नीकी कही बात यह भाई॥
अपनी २ गाय बुलावे॥ एक ठौर करि सबन चलावे
यह सुनि ग्वाल सुरभिगण घेरत॥ लै लै नाम गाय सब टेरत
धूरी धूमरि राती कवरी॥ ॥ पियरी गोरी गैनी कवरी॥
खैरी फूलही रोंची चोरी॥ धूरी हसरी मुंडी भोरी॥
लीली कपिली सुवरन जेती॥ खाली निकही रतनी जेती
ऐसें सुरभी टेर बुलाई॥ सब मिलि चलै कुमुदवन धाई
तब बल कह्यो दूर अति जाहू॥ नंद रिसै है अरु जसुदाहू॥
बल कौ कह्यो मान सुखदाई॥ बोलि लिये सब सखा कन्हाई

कहत सबन समुझाय हरि कौन कुमुदवन जाइ
बुरौ मानि हैं नंद सुनि और जसोदा माय॥
ल्याव हू गाय फिराय चलिये वृंदावन सुखद
सुरभी चरत अघाय वंसीवट यमुना निकट

यह कहि स्याम चले अगुवाई॥ योरी गाय ग्वाल सब धाई
वृंदावन नहिं चले मनमोहन॥ हर्षित सखा वृंद तब गोहन
करत कुलाहल आनंद भारी॥ पहुंचे वृंदावन वनवारी॥
सुरभीगण चहुं दिसि विगराई॥ कहत सखा सब हर्ष बढाई
जा दिन अब वह स्याम सिधाये॥ ता दिन ते आवत अब आये
देखत वन सब भये सुखारी॥ कहति मनोहर विविध बयारी
विटपन की शोभा चित दीन्हे देखत स्याम सखन संग लीन्हे
नव किशलय दल सुमन सुहाये॥ मनहु वसंत मृगारक छाये
मधुर मिष्ठ सुन्दर सुखकारी॥ फल के भार रही नैइ डारी
इन ने दारव स्यामहि सुषपाई॥ देत भेंट नसीस नवाई

गुंजत भंवर पुंज छवि पावें। अस्तुति मनहं मधुरसुर
सक पावत गातं सवकोगं ॥ जहं तहं थकित मनहुं अनुराग
वेलि विविधि लपटीं ललित फूल रहे वहु रंग
शोभित सहत सिंगार जिम नारि पतिन के संग
हुलसत सव पात मंद पवन लागत कवहुं
आनंद उर न समात वारंवार पुलकित मनहुं
कुंज पुंज मंजुल सुखदाई। शीतल सुमन सुगंध सुहाई
हरि विश्राम हेत वन जानी रचे विचित्र सदन वहु मानी
वोलत हैं कलखग वहु रंगा कीर कपोत कोकिला संगा
मनहु भरे आनंद सव गावें। जहं तहं वरही नृत्य दिखावें
तरुदल खरक पवन गति साजे। मधुर सुरन वाजन ज्यों वाजें
क्रीडत मरकट सुभग विलीने करत कला ज्यों नट परवीने
मृगगन चितवत आनंद वाढे। मनहुं तमासगीर सव ठाढे
पाय स्याम वन हित वनराई करी मनहुं आनंद वधाई
वन शोभा कछु वरनि न जाई ऋतु वसंत जहं रहत सदाई
जहां सुभाव काल गुण नाहीं वैर भाव नहिं खग मृग माहीं
सदा एक रस परम प्रकाशी। परम सुख द आनंद की राशी
चिंतामणि सव भूमि सुहावन। कोमल विमल सुभग अतिपावन
शोभा वृंदा विपन की वरणि सके अस कौन
शेष महेश गणेश विधि पार न पावत तौन
महिमा अमित अपार श्री वृंदावन धाम की
जहां नितर हत विहार परम ब्रम्ह भगवान हरि
देषि स्याम वन भये सुखारी। वैठे तरु तर विपन विहारी
वृंदावन की करत वडाई। वलदाऊ सों कहत कन्हाई
मैं यह वन देखत सुख पावत वृंदावन मो को अति भावत

कामधेनु सुरतरु बिसरावत रमासहित वैकुंठ भुलावत
यह यमुनातट वेनु बजावत येसु रमी अति सुख दरसावत
यह सुख त्रिभुवन कितहु न पावत॥ तातें मैं तन धर इत आवत
दाऊजू तुम सत्य करि मानौ॥ यह वृंदावन जड़ मत जानौ
चित घन मैं आनंद कौ रासा॥ प्रेम भक्ति कौ इहां निवासा
परम धाम मम परम सुहावन॥ पावन हूं तें पावन पावन
जेतरु वृंदावन के माहीं॥ कल्पवृक्ष तिन्ह की सरनाहीं
कल्पवृक्ष के तर जब जोई॥ तब मांगे वांछित फल पाई॥
वृंदावन तरु चिंतत जोई॥ प्रेम भक्ति मम पावत जोई॥
जाके बस मैं रहत हौं अपनी प्रभुता त्याग
प्रेम भक्ति सो लहत नर वृंदावन अनुराग॥
श्री सुख वरन्यो स्याम श्री वृंदावन कौ महत
सुख पायो बलराम सुनत कान्ह के बचन वर
सखा वृंद सुन श्री सुख वानी॥ प्रेम मगन तन दसा भुलानी
चितवत हरि मुख पलक विसारी॥ जिमि चकोर गन शशिहि निहारी
कहत चकित सब अति सुख पावत॥ निज लीला हरि प्रगट जनावत
पुनि रपुलक कहत सिर नाई॥ सुनहु स्याम घन कुवर कन्हाई
बारबार तुम कौं कर जोरैं॥ हमहू कान्ह तुम जानहु भोरैं॥
तहां तहां तुम धन धरि आवौ॥ तहां तहां जिन चरण छुड़ावौ
तव हसि बोले कुवर कन्हैया॥ ब्रज तें तुम हिन टारे मैया॥
तुम मेरे मन कौं अति भावत॥ तुम तें मैं बहुतै सुख पावत॥
यह ब्रज सम त्रिभुवन कहुं नाहीं॥ तुम्हरे दिग मैं रहत सदाहीं
मैं तुम हेत देह यह धारी॥ तुम तें ब्रज लीला विस्तारी
है यह ब्रज मो कौं अति प्यारो॥ या तें कबहु होत न न्यारो
ऐसे हरि ग्वालन के माहीं॥ गुप्त बात कहि रस सरसाहीं

दो॰ मधुरवचनसुनिस्यामकेसखाग्वदसुखपाइ
प्रेमपुलकितनमुदितमन रहेसवेगहिपाइ
धनधनधनतुमस्यामधनव्रजधनवृन्दाविपिन
तुमरेगुणअभिराम हमसवअज्ञनजानहीं
सुनहुस्याम श्रवनंददुलारे। तुमप्रभुहमसवदासतुम्हारे
दुर्लभयहहरिसंगनिहारे॥ कवधौंफेरिगोपतनधारे
नाजानियेव्रजरिव्रजनाथा॥ कवतुमफिरिहौसुरभीसाथ
कवतुम छाक छीनि के खैहो कवधौंफिरिऐसे सुख देहो॥
वलिवलिजैयेस्यामतुम्हारी॥ अब इक विनतीसुनहु हमारी
सुन्दर मुरली नेक वजावो॥ अधरसुधारस श्रवणन प्यावो॥
तुमहिं नंदकीसौंह दिवावै॥ मुरली धुनिसुनिहमसुखपावै
तुम्हरेमुखयहवाजतनीकी॥ हमसवकीजीवन हैजीकी
सुनत सखनकीकोमलवानी॥ प्रेमसुधारस सौ लपटानी
गुणगंभीरगुपालकृपाला॥ भक्तवश्यप्रभुदीनदयाला
भयेप्रसन्नभक्त सुखदाई॥ चितये कमल नैन ससुहाई
करतेलकुटनिकटधरदीनों पाछेमुरलीकौगहिलीनौ
पकरिदुहूनकरअधरधरिमधुरमुरलिधुनिमान
मोहिलियोचरअचरनअमलपलस्यामसुजान
भई थकितगतिपौन यमुनाजलकीनौ सयन॥
ह्वैगयेखगमृगमौनरहेजहांतहंचित्र सय॥
उपजावत गावत गतिसुन्दर॥ रागरागिनीतालविविधवर
सखा वृंदसुनितनमन वारैंधनिररवतमुखछविपलकविसरै
चलतनयनभृकुटीपुटनासा॥ करपल्लवमुरलीस्वरस्वासु
मानहुंनिरतकभावधरावे॥ सुभगतिनायकमैनसिखावै
कुंचितअलकवदनछविदेहीं॥ मनहुकमलरसअलिपनलेहीं

कुंडल झलक कपोलन माहीं॥ मनहुं सुधा सर मकर अमाहीं
दसन दमक मोतिन लर ग्रीवा॥ मनहुं सकल सोभा की सींवा
तिलक विचित्र भाल छवि छाजे॥ मनहुं मदन छवि सदन विराजे
छमनकाति सो रच्यौ कांचा रु॥ मनहुं सकल सिंगार सिंगारु
स्याम गात उर गज मणि माला॥ संग शोभित वन माल विशाला
मरकति गिरि मनो सुरसरि धारा॥ बैठी पंगति कोर किनारा
कटि पट पीत तड़ित दुति हारी॥ पद पंकज नूपुर रुचिकारी
ग्रीवा लटकन मुरलि पर शोभत छवि समुदाय
प्रेम मगन निरखत मुदित गोप बाल सुख पाइ
सुन्दर स्याम सुजान देत परम सुख सखन कौं
बारत तन मन प्रान धन्य धन्य कहि ग्वाल सब
रीझत ग्वाल रिझावत स्यामा॥ लेन सु रलि में सब कौ नामा
हंसत ग्वाल सब दै कर ताला॥ लेत हमारो नाम गुपाला
कहत स्याम सब तुम हूं बजावौ॥ ऐसे हम कौं गाय सुनावौ
हंसि मुरली तिन के हर दीनी॥ अधर सधर अमृत रस लीनी
लैलै निज कर सकल बजावत॥ हरि के सर कौ रूप न पावत
आस पास सोहत सब बालक॥ अधि प्रभु प्रीति रीति के पालक
हंसि हंसि सब के चित्त चुरावै॥ सब मिलि प्रेमानंद बढावै
जैसे श्री मुरलीधर गायौ॥ काहू पै सो रूप न आयौ॥
हंसि हंसि कहत परस्पर भाई॥ हरि के सम को सकै बजाई
चतुरानन पंचानन ध्यावै॥ सहसानन नित गुण गावै
सुर नर मुनि कोउ पार न पावै॥ सो ग्वालन संग बेणु बजावै
ब्रजवासी जन के प्रतिपाला॥ मनहु ब्रज प्रभु सुदीन दयाला
कारण करण अनंत गुण निगम नेति जिहि गाव
सो ग्वालन संग विहरि हैं लखि भक्ति मन भाव॥

वृंदावनकी रेण ब्रम्हादिक वांछित सदा ॥
जहांस्याम सुखदेनग्वालन संगचारत सुरभि

अथ द्विजपत्नीजाचनलीला ॥

विहरत वृंदावन वनवारी॥ विविधि भांति लीला विस्तारी
कवहूं सखन संगमिल गावें॥ कवहू मुरली मधुर वजावें॥
कवहूं गैयन घेरन धाई॥॥ कवहूं यमुना के तट जाई
करत कुलाहल आनंद भारी॥ देत दिवावत रसकी गारी॥
ऐसे लीला करत अपारा॥ भये सुधारत गोपकुमारा
कहत भये तव हरिसों जाई॥ हम कौं क्षुधा लागि अधिकाई
यह सुनि प्रभु भक्तन हितकारी॥ अपने मन यह वात विचारी
सुनि सुनि मेरे गुण गण गाना॥ करत रहत द्विज तियमन ध्याना
तिनकों दरसन आज दिखाऊं॥ तिनके मनको ताप नसाऊं॥
तव हरि ग्वालन कह्यौ वुझाई॥ यज्ञ करत ह्यां द्विज समुदाई
तिनके निकट जाउ तुम धाई॥ प्रथम प्रणाम कीजियो जाई
कहियो हमको कृष्ण पठाये॥ तुम पै भोजन मांगन आये

यह सुनि ग्वाल गये तहां जहां विप्र समुदाइ
यज्ञ करत अह्मित लिये विद्या कौं वल पाइ
ग्वालन करी प्रणाम कहे उ तिन्हें कर जोरिकें
हमें पठाये स्याम मांग्यो है भोजन कछू॥

वन में राम कृष्ण दोउ भैया॥ आये इत हि चरावन गैया
वे कछु आज भये हैं भूषे॥ यह सुनि विप्र होगये रूखे
कह्यौ यज्ञ हित करी रसोई॥ आहुति पहिले देय न कोई
यह सुनि ग्वाल सकल फिरि आये॥ हरि सों तिनके वचन सुनाये
सुनि हलधर तन चितै कन्हाई॥ वोले वचन मंद मुसकाई

ये द्विजकर्म धर्म लपटाने ॥ बिना भक्ति मोकों नहिं जाने ॥
तब ग्वालन सों कहेउ मुरारी ॥ जाउ जहाँ इनकी सब नारी ॥
उनकों है दृढ भक्ति हमारी ॥ वे मानेंगी बात तुम्हारी ॥
उन सों भोजन मांगहु जाई ॥ कहियो भूखे भये कन्हाई ॥
तब द्विजनारिन ढिग ते आये ॥ हाथ जोरि तिनकों सिर नाये ॥
कहे राम अरु कृष्ण कन्हैया ॥ वन में भूखे हैं दोउ भैया ॥
मांग्यो है कछु भोजन तुम सों ॥ आज्ञा होइ सो कहिये उन सों ॥

ग्वालन के सुन वचन सब हरषि उठी द्विजवाम ॥
कहति हमारो भाग्य धनि भोजन मांग्यो स्याम ॥
करति रहीं नित ध्यान सुनि जिनके गुण गान ॥
सुफल जन्म निज जान तिनकों भोजन लै चलीं ॥

खटरस के व्यंजन विधि नाना ॥ कोमल भांति अमित पकवाना ॥
खीर खांड सिखरन दधि न्यारो ॥ माखन लियो स्याम कौं प्यारो ॥
कहलगि वरन कहौं परकारा ॥ प्रेम सों हित लीने भरि थारा ॥
यह ते ग्वालन के कर दीने ॥ बहुतन आपने सिर धरि लीने ॥
नैनन दरस लालसा बाढी ॥ रूप जी चाह हृदय में गाढी ॥
चलीं पतिन की कान निवारी ॥ देखन कों प्रभु गोपकुमारी ॥
ग्वालन सों पूछत यह वाता ॥ कित हैं हरि जन के सुखदाता ॥
जिनके पुरुष हते घर माहीं ॥ तिनकों जान देत सो नाहीं ॥
कहत जात तुम कित अतुराई ॥ लोक लाज तन दसा भुलाई ॥
तिन सों कहति भई ते नारी ॥ हमकों श्री गोपाल हकारी ॥
भोजन मांग्यो है हम पाहीं ॥ तिनहिं देन ग्वालन संग जाहीं ॥
तिनकों दरस देखि सुख पैहैं ॥ बहुरि तिहारे घर रहसै हैं ॥

यह सुनि पति अति क्रोध करि तिनहिं दिखायो त्रास ॥
कहत भई तुम बावरी वै वन तिनहिं अवास ॥

जिनकेउरनंदलालवसेलकुटमुरलीलिये॥
तिनहिंनभययमकालकौनभांतिरोकेरुकहि

हरिपै हमहिंजानिपियदेहू॥कहारोकिअपयशसिरलेहू
देखनदेहुनंदकेलालहिं॥त्रिभुवनपतिप्रभुमदनगोपालहि
इतनीबातमानपियलीजे॥हाहाहमैंदानयहदीजे॥
वेहैंयज्ञपुरुषभगवाना॥अंतरजामीकृपानिधाना॥
करतयज्ञविधितिन्हैंविसारी॥कहासरैगीबाततिहारी॥
कहंलगिकहौंबातसमुझाई॥जातहरसकीअवधिविहाई॥
जोतुमस्वामीमानतनाही॥तौहमसत्यकहैंतुमपाहीं॥
मनतौमिल्योजायनंदलालहि॥करिहौकहारोकिकेखालहि॥
लेहुसंभारिदेहयहसारी॥जासोंपियतुमकहतहमारी॥
कोराखैइतनेजंजालहि॥मिलिहैंप्राणजसोदालालहि॥
जोनिहचैनहिंस्यामसनेहा॥तौयहकौनकाजकीदेहा॥
सबसखियनतेंआगेजाई॥देखहुगीतवकुंवरकन्हाई॥

ऐसेदेहअरुगेहतजेपतिकीकानिनिवारि
पहुंचीसबतेंप्रथमजोतेरोकाद्विजनारि॥
कठिनप्रेमकोपंथनहांनेमकीगमनहीं॥
कहतसकलसदग्रंथजहांनमनहंप्रेमनेहि

ऐसेभोभोजनलैद्विजवाला॥पहुंचीवनजहंमोहनलाला
नटवरवेषचित्रतनकीने॥॥ठाढेसखासंगभुजदीने॥
मोरमुकटवैजंतीमाला॥करमुरलीद्रगनैनविशाला॥
कुंडलझलकतिलककपोलकाहीं॥कोटिकामछविपटतरनाहीं
सुखमंदहसनिलसनपटपीरी॥निरखतनैननतापभयोसीरी
भोजनलैहरिआगेराखे॥अपनेभाग्यधन्यकरिएखे॥
तिन्हैंदेखिहरिमनसुखमान्यो॥वचननिकारितिनकौसनमान्यो॥

तिन सौं वहु रौं कहेउ कन्हाई ॥ गृहपति ताजि तुम्हें तइ तआई
कहियति विप्र वेद अधिकारी ॥ हौं तिनकी तुम पतिव्रत नारी
वे सब यज्ञ करत वन माहीं ॥ तुम विन यज्ञ होइ है नाहीं
कहि तुम कछु भलो नहिं कीनो ॥ पतिको कहेउ मानि नहिं लीनो
अति आयसु तिय पाले माई ॥ चारपदारथ पावै सोई ॥

पति देवता सो तियकहैं वेद वचन परमान ॥
जाइ वेगि तुम पतिन पहँ तातें यह जियजान
सुनि हरि वचन प्रमान कर्म धर्म सो नो सुखद
द्विजतिय परम सुजान वोली सव कर जोरिकै

सुनहु स्याम घन अंतरजामी ॥ तुम हो सकल जगत के स्वामी
यज्ञ पुरुष तुम हो सुख धामा ॥ तुम ही सव के पूरण कामा
विविधि यज्ञ करि तुमको ध्यावैं ॥ तुमतें चारपदारथ पावैं
सकल धर्म तें शरण तुम्हारी ॥ है सव जीवन को सुखकारी
यह हम सुनी पतिन मुख बानी ॥ कहत वेद इतिहास बखानी
तातें शरण तुम्हारी आई ॥ यह दूषण नाहीं हमें गुसाईं
तुम माया वस सकल भुलाने ॥ तातें पतिन न तुम पहिचाने
तिनको दोष क्षमा प्रभु कीजे ॥ हमको शरण आपनी दीजे
चारपदारथ हू तें भारे ॥ ॥ है प्रभु दरसन शरण तुम्हारे
तातें नहीं निरादर कीजे ॥ अपने चरण शरण रखि लीजे
सुनि प्रभु द्विजपत्नी की वानी ॥ भये प्रसन्न भक्त सुखदानी
धन्य धन्य प्रभु तिनको भाख्यो ॥ हितकरि तिनको भोजन चाख्यो

दै अपनी दृढ भक्ति हरि तिन्हें कहेउ घर जाउ
कैहैं तुम्हरे दरसनैं सुद्ध तुम्हारे नाउ ॥
हरि आयसु धरि माथ पाय भक्ति वरदान वर
राखि हृदय ब्रजनाथ चलीं हर्षि द्विजतिय सदन

जिनके उर नंदलाल वसे लकुट मुरली लिये॥
तिनहिं न भय यमकाल कौन भांति रोके रुकहि॥
हरि पै हम हिं जान प्रिय देह॥ कहा रोकि अपयश सिर लेह॥
देखन देहु नंद के लालहि॥ त्रिभुवनपति प्रभु मदनगोपालहि॥
इतनी वात मान पिय लीजे॥ लाहु हमै दान यह दीजे॥
वे है यज्ञपुरुष भगवाना॥ अंतरजामी कृपा निधाना॥
करत यज्ञ विधि तिन्हें विसारी॥ कहा सरैगी वात तिहारी॥
कहं लगि कहों वात समुझाई॥ जातें दरस की अवधि विहाई॥
जो तुम स्वामी मानत नाहीं॥ तौ हम सत्य कहें तुम पाहीं॥
मन तो मिल्यौ जाय नंदलालहि॥ करि हौ कहा रोकि के खालहि॥
लेहु संभारि देह यह सारी॥ जासों पिय तुम कहत हमारी॥
को राखे इतने जंजालहि॥ मिलि हैं प्राण जसोदा लालहि॥
जो निहचै नहिं स्याम सनेह॥ तो यह कौन काज की देह॥
सब सखियन तें आगे जाई॥ देखहुगी नवकुंवर कन्हाई॥
ऐसे देह अरु गेह तज पति को कानि निवारि॥
पहुंची सव तें अथम जे तेरो का द्विज नारि॥
कठिन प्रेम की पंथ तहां नेम की गम नहीं॥
कहत सकल सद्ग्रंथ जहां नेम तहं प्रेम नहिं॥
ऐसे भो भोजन लै द्विज वाला॥ पहुंची वन जहं मोहनलाला॥
नटवर वेष विचित्र तन कीने॥ ठाढे सखा संग भुज दीने॥
मोरमुकट वैजंती माला॥ कर मुरली द्दग नैन विशाला॥
कुंडल अलक तिलक मलकाहीं॥ कोटिकाम छवि पटतर नाहीं॥
सुखमद हंसनि लसन पट पीरी॥ निरखत नैन ताप भयो सीरो॥
भोजन लै हरि आगे राखे॥ अपने भाग्य धन्य करि राखे॥
तिन्हें देखि हरि मन सुख मान्यो॥ कृतनिका रीति तिन की सनमान्यो॥

तिन सौं वक्र रौं कहेउ कन्हाई॥ गृह पति तजि तुम्हैं तहं आई
कहियति विप्र वेद अधिकारी॥ हौ तिनकी तुम पतिव्रत नारी
वे सब यज्ञ करत बन माहीं॥ तुम बिन यज्ञ होइ है नाहीं
कह तुम कछु भलौ नहिं कीनौ॥ पति कौ कहेउ मानि नहिं लीनौ
अति आयसु तिय पालै आई॥ चार पदारथ पावै सोई॥
पति देवता सो तिय कहै वेद वचन परमान॥
जाहु वेगि तुम पतिन पहं तातें यह जिय जान
सुनि हरि वचन प्रमान कर्म धर्म सानौ सुखद
द्विज तिय परम सुजान बोली सब कर जोरि कै
सुनहु स्याम घन अंतरजामी॥ तुम हो सकल जगत के स्वामी
यज्ञ पुरुष तुम हौ सुख धामा॥ तुम ही सब के पूरण कामा
विविध यज्ञ करि तुम कौं ध्यावैं॥ तुम तें चार पदारथ पावैं
सकल धर्म तें शरण तुम्हारी॥ है सब जीवन कौ सुख कारी
यह हम सुनी पतिन मुख बानी॥ कहत वेद इतिहास बखानी
तातें शरण तुम्हारी आई॥ यह दूषण नाहिं हम में गुसाई
तुम माया बस सकल भुलाने॥ तातें पतिन न तुम पहिचाने
तिनको दोष क्षमा प्रभु कीजै॥ हमकौं शरण आपनी दीजै
चार पदारथ हू तें भारी॥ ॥ है प्रभु दरसन शरण तुम्हारी
तातें नहीं निरादर कीजै॥ अपने चरण शरण रखि लीजै
सुनि प्रभु द्विज पत्नी की बानी॥ भये प्रसन्न भक्त सुखदानी
धन्य धन्य प्रभु तिनको भाख्यो॥ हित करि तिनकौं भोजन राख्यो
देखि अपनी दृढ भक्ति हरि तिन्है कह्यो घर जाउ
कै हैं तुम्हरे दरसनैं सुद्ध तुम्हारे नाउ॥
हरि आयसु धरि माथ पाय भक्ति वरदान वर
राखि हृदय ब्रजनाथ चलीं हर्षि द्विज तिय सदन

नंदनंदन की करति वड़ाई॥ द्विजपत्नी सब घर कों आई
देखत तिन्हें विप्र समुदाई भये पुनीत विमल मति पाई
धन्य २ कहि तियन बखानी आप कहत हम अति अज्ञानी
जिनके हेतु यज्ञ हम कीनो॥ तिन मांग्यो भोजन नहिं दीनो
हम विद्या अभिमान भुलाने॥ ऋषि गनि की गति कैसे जाने
पारब्रह्म प्रभु जन सुखदाई॥ भक्तन हित प्रगटे प्रभु आई
तिनको हम पहिचान्यौ नाहीं॥ वारवार पछि कहि पछिताही
है यह तिय अतिशय बड़भागी॥ कृष्णचरण पंकज अनुरागी
ब्रह्मादिक खोजत हैं जिनको॥ देख्यो जाय प्रगट इन तिनको
ऐसे बहु बिधि तियन सराही॥ आदर कर लीनी घर माही
प्रेम प्रीति करि जो हरि ध्यावे॥ सो नरनारि अभै पद पावै
नरनारी कछु नाहिं विचारा॥ प्रभु को केवल प्रेम पियारा

भाव तियन को धारि उर तहां हरि कृपानिकेत
सखन सहित भोजन करत रुचि सों प्रीति समेत
ब्रह्मलोक लों सोरभ्यालन के संग खात हरि
छीन छीनके कौर करत परस्पर हास रस

अति हित भोजन तहं हरि कीनो॥ सखावृंद को अति सुख दीनो
वन में फिरत चरावत गैया॥ बैठे आय कदम की छैया
भये सखा सिगरे इक ठाहीं॥ गैयां बगर रहीं वन माहीं
दुपहर घाम जान मन माहीं॥ लागे कुञ्ज सघन वन छाहीं
बैठे ग्वाल बाल चहुं ओरियां॥ आगे धरी दूध की करियां
मध्य स्याम सुन्दर नंदनन्द॥ उरगण मे जिमि पूरण चंद
मोरमुकुट कटि कछनी काछे॥ कोटि काम की छवि को वांछे
कबहूं मुरली मधुर बजावे॥ कबहुं सखन मिलि रागन गावे
कोउ खेलत नृत्य को करहीं॥ कोऊ ननकारी उच्चरहीं

कोऊ ताल बजावत नीके॥ उपजावत कोउ आनंद जीके॥
करत केल ऐसे वन माहीं॥ देखिदेखि सुरवृंद सिहाहीं॥
कहत धन्य ये ब्रज के वाला॥ विहरत जिन संग कृष्ण कृपाला॥

धन्य विरप धनि भूमि यह धनि वृंदावन चंद॥
धनि ब्रज कांहि वरषहिं सुमन रीझ रीझ सुरवृंद॥
मन मन देव सिहाहिं वन विहार हरि को निरषि॥
श्रीवृंदावन माहिं हम न भये द्रुम लता तृण॥

॥ श्रीदामा तव कहेउ बुझाई॥ खेलहिं मैं सब रहे भुलाई॥
॥ गैया कित हू चरति को जाने॥ यह सुनि के सब खेल भुलाने॥
जित तित हेरन कौं उठि धाये॥ गैया जाय हेर लै आये॥
जे सुरभी आई नहिं जानी॥ चरत सघन वन मांझ भुलानी॥
तिन कौं तरु चढ़ि कान्ह बुलाई॥ मुरली टेर सुनत उठि धाई॥
ऐसी गैया स्याम सधाई॥ मुरली सुनि सब हरि पै आई॥
जब जब गैयन स्याम बुलावैं॥ हूं हूं कारि सब हरि पै आवैं॥
तिन पर कर फेरत मनमोहन॥ पीतांबर सों झारत को हन॥
करत प्यार तिन पर वनमाली॥ हस्त कमल को सब भांति पाली॥
हरि कौं निरषि गाय सुष पावैं॥ तिन के भाग्य कहत नहिं आवैं॥
जब हरि गैयन कर सों परसैं॥ लाखि लखि कामधेनु मन तरसैं॥
कहत कहा जो कामद कीनो॥ हम कौं विधि ब्रज जन्म न दीनो॥

धनि धनि ब्रज की धेनु ये चारत त्रिभुवन नाथ॥
झारत पोंछत दुहत निज हित करि अपने हाथ॥
मनहीं मन पछितात हैं कामधेनु ब्रज देखि॥
हम न भई ब्रज मांहि हरि कर पंकज परसही॥

ऐसी लीला करत अनेका॥ वन में ललित एक ते एका॥
वृंदावन सब दिवस बितायौ॥ संध्या समै निकट ब्रज आयौ॥

तबहरिकहेउ चलोअव गेहू॥ गैयांसवआगेकरी लेहू॥
पर्कंची सांमआइनियराई॥ वनमैकरहुअवेरनभाई॥
यहसुनिगाइसकलअगुवाई॥ भलीवातयह कहीकन्हाई
वनतेनिकसचलेसवग्वाला॥ व्रजआवतनटवरगोपाला॥
सुरभीवृंदगोपवालकसंग॥ अतिअनंदगावतनानारंग॥
अधरअनूपमुरलिसुरकोरी॥ ऊंचेसुरनवजावत गोरी॥
सुनतश्रवणव्रजसुंदरिधाई॥ गृहकाजतजतजसवआई
कहतपरस्परमोहनआवत॥ देखिदेखिछविअतिसुषपावत
पूरणकलाउदितशशिजैसें॥ कुमुदिनिसरफूलीतियतैसें॥
नैनचकोररहेटकलाई॥ दिवसविरहकीतापनसाई॥

प्रेममगनआनंदभ्पतिकहतिसकलव्रजवाम
देखहुसखिजसुमतिसुवनशोभितअतिअभिराम
स्यामलतनपटपीतजलजमालवरहीमुकट
तइमनोंघनजीतघनदामिनिविगधनुषछवि

भ्रकुटिविकटदृगचंचलताई॥ अतिछविदेतिवरणिनहिंजाई
धनुषदेखिविविरखजनजानो॥ उडनकरतिडरिउडतनमानो
अफुलितनैनसरदअंवुजैसे॥ मनौकुंडलरविकरकेपरसे
गोपदरजपरागछविछाई॥ तामधिआयवैठेजनुभाई
एककहतिदेखहुवहशोभा॥ अतिसुखदेतिलेतमनलोभा
कमलवदनमुरलीरसलेई॥ कुटिलअलकऐसेछविदेई
मानोअलिगणसाजीसेना॥ सहितसकलवाहननिजऐना
अधरसुधालगिअतिदुषपाई॥ मुरलीसोमानौकरतलराई
शोभितनासापरमसुहाई॥ तानेसोंवउपमायहपाई
मनहुअनंगसहायकआयो॥ तिलप्रसूनमरनाहिंखजायो
सुनियहसखिमनहरषाई॥ निरषतहरिमुपछविसुषपाई

कृपा दृष्टि हरि उपन निहारी ॥ आये व्रजजन मन सुखकारी

कहति सुदित मन युवतिजन धनि २ सखि वे मोर
जिनके पाखन कौ मुकट कीनो नंदकिशोर ॥

धनि धनि सखि वे वांस जाकी मुरली अधर धरि
हरि पूजत निज सांसकी पुनीत ताकीस दृश्य

निज निज सदन गये सब ग्वाल ॥ आये घर हलधर गोपाल ॥
देखि दुहु मातन सुख पायो ॥ हरषि दुहुन कौं कंठ लगायो ॥
काहे आज अवार लगाई ॥ यह कहि वार वार वलि जाई ॥
रोहिणि सों कहि जसुमति मैया ॥ भूखे दूह हैं दोउ भैया ॥
मैं दोउन को देत न्हवाई ॥ तुम भोजन कों करहु चढाई ॥
निकर लये मुरली कर लीन्ही ॥ हरि करनें लकुटी धरि दीन्ही ॥
नीलांवर पीतांवर लीनो ॥ मुकट उनारि स्याम तव दीनो ॥
प्राण समान जसोमति जानी ॥ धर्यो संभार सदन नंदरानी ॥
छोरति अंग भूषण महतारी ॥ मुक्तमाल वनमाल उतारी ॥
कटि किंकिणि अंगद भुज छोरे ॥ निरख गात आनंदन थोरे ॥
पट लै दोउन के अंग कोरे ॥ उर लगाय लीने अति प्यारे ॥
तुम दोउ मेरे गाय चरैया ॥ और न कोऊ टहल करैया ॥

लीन्हे तुम हिं विसाह मैं तव अति रहे नन्हाइ
सुनि हंसि हरि वल सों कहत कहत कहति कूठ ही माय
यह तो समुझे न जाय साँच कूठ की वात कछु
जसुमति लेत वलाय मैं चेरी हंसि २ कहति

सुमनसुत अंगन परसाई ॥ तपत तरणि कौं जल लै आई ॥
परम प्रीति दोउ सुत अन्हवाये ॥ सरस वदन तन पौंछ सुहाये ॥
षटरस भोजन जाय जिमाये ॥ जसुमति के सुखजाय न गाये ॥
सीतल जल कपूर रस रच्यो ॥ लै झारी दुहु भैयन अचयो ॥

चुरूभरौमुखधोयउठेजब॥ वीरेपानदयेजननी तब॥
वीरास्वातसुदिनदोउभाई॥ब्रजदासनकुठनसव पाई॥
जसुमति केसुख कौन गनावै॥सारदहू कोहि पारन पावै॥
धन्यनंद धनिजसुमति माता॥महिमाअमितनकहिसकविधाता
ब्रम्हसनातन हैप्रभु सोई॥ जिनके पुत्र कहावत सोई॥
जोप्रभुसकलविश्व केस्वामी॥ तीनलोक पति अंतरयामी॥
विश्वंभरनिजनाम कहावै॥ताहिजसोमति मायखवावै
रातसुवावै प्रातजगावै॥ बालकज्यौंफुसलायबढावै॥

रहतमगनगुणस्यामकेनिसदिन आठौजाम
महरमहरिके प्राण धनमोहनसुन्दरस्याम
हरिस्वरूपबिसरतनाहिंब्रजकेनरनारीजिते
मगन प्रेमरसमाहिंनिसदिनआनन जानहीं॥

अथगोवर्द्धनलीला

कृष्ण प्रेमब्रजलोक समाने॥ देवपितरसवकालभुलाने
कातिकसुदिपरवाजवहोई॥इन्द्रहि पूजत ब्रज सव कोई
ताकीसुधबुधिसबनभुलानी॥सबकेमनमें ध्यान कन्हाई
सोतिथिअतिसमीपजवआई॥तवजसुमतिकेउरसुधपाई
कहतिनंदसों नंद कीरानी॥सुरपतिपूजातुमहिंभुलानी
जाकीकृपा वसत ब्रजमाहीं॥एकउवस्तकमी कछुनाहीं
जाकीकृपा दूधदधिगाई॥ सहसमथानीमथतसदाई
जाकीकृपापुत्रहमपाये॥जासुकृपासवविघ्नसाये॥
भईसफलब्रजमांखडाई॥कुशलरहीवलराम कन्हाई
सुरपति है कुलदेवहमारे॥गोपगायब्रज के रखवारे
तिनकी तुमसवसुरतिभुलाई॥रहेदिवसपाचकअवआई

कह्यौ सकल गोपन हूं कराई ॥ इन्द्र यज्ञ कौं आगे चढ़ाई ॥

भली दिवाई मोहिं सुधि कहन महरि सों नंद
भूलि गये हम देव कौ काज मोह वस मंद
हांय जोरि नंद राय विनय करत सुर राय सों
तुम कौं गयो भुलाय क्षमा कीजियौ मोहिं प्रभु

तवहिं नंद उपनंद बुलाये ॥ श्री वृषभान सहित सव आये
सवकौं देखि नंद सुष पायौ ॥ महर महरि मिलि सीस नवायौ
अति आदर सवहिन कौं कीनौ ॥ सादर सवकौं वैठक दीनौं ॥
मनहीं मन सव सोध कराहीं ॥ कंस कछू मांग्यौ तौ नाहीं ॥
राज अंस उनकौ जो होई ॥ विन मांगे हम दीनौ सोई ॥
वूझत नंदहि सव सकुचायो ॥ कौन काज हम सवन वुलायो
तवहि नंद सवकौं समुझायो ॥ मैं तुमकौं इहि काज वुलायो
सुरपति पूजा के दिन आये ॥ सो तुम सवहिन मिलि विसराये
मोहिं राज काज लपटानौं ॥ निसदिन लोभ मोह माहिं भुलानौ
इंद्र यज्ञ की सुरत भुलाई ॥ अति समीप दिन पहुंचौ आई

यह सुनि मन हरषे सवै देव काज जिय जानि ॥
हम सव भूले सुरपतिहिं मन लागे पछितानि
भली करी नंदराय हम सव कौं दीनी सुरति ॥
सुरपति कौं सिर नाइ क्षमा करावत पाप सव ॥

विदा होय सव गोप सिधाये ॥ घर घर वाजन लगे वधाये ॥
पूजा की विधि करत सवै मिलि ॥ जिहिं जिहिं भांति सदा आई चलि
अमित भांति पकवान मिठाई ॥ कहति घरनि घरघरनि निजाई
नंद महर घर वजत वधाई ॥ गावत मंगल अति हरषाई

नेवज करत जसोदा आतुर॥ आउद्ध सिद्धि धरहि मनि चतुर
मैदा के अनेक पकवाना॥ वेसन के वहु करत विधाना॥
घृत मिष्टान करत परपूरण॥ मिस्री करत पाक को चूरण॥
विविधि भांति पकवान मिठाई॥ कहलगि नाम कहौं सब गाई॥
और नारि ब्रज की संग लागी॥ घृत पकु करत सवै अनुरागी॥
जहां तहां वहु चढ़ी कड़ाही॥ जसुमति सवन सराहत नाहीं
जो सामा मागति है जोई॥ रोहिणि ताहि देति है सोई॥
मह्हरि करति रषि और निहारि॥ धरत जोरि विधि न्यारे न्यारे

सैंति सैंति अति नेम सो धरति अछूते जात
स्याम कहू परसै नहीं यह मन माहिं डरात
संक करत मन माहिं सुरपत पूजा जानि जिय
जसुमति जानति नाहिं अव देवन कौं देव हरि

खेलत तहां संतन सुखदाई॥ भीतर आये कुंवर कन्हाई॥
जननी कहति इहां जनि आवे॥ लरिकनि कौं यह देव डरावे॥
रहे ठठकि आंगहि हराई॥ मन ही मन हसि कहत कन्हाई
मैया री मोहिं देव दिखै है॥ इतनो भोजन वहु सव पैहै॥
यह सुनि खीज कहति है मैया॥ ऐसी वात न कहौ कन्हैया॥
जोरि जार करि देव मनावे॥ वालक कौं अपराध क्षमावे॥
वाहिर चले स्याम अनखाई॥ युवति कहति हरि गये रिसाई
जानत है हरि अव हि अयाने॥ देव काज वालक कह जाने॥
छूहे कहू स्याम यह भोजन॥ उनकी पूजा जाने को जन॥
और नहीं हम कहू जाने॥ के सुरपति के गोधन माने
यह कहि कहि इन्द्रहि सिर नावें॥ रामस्याम की कुसल न मानें
और देव नहिं तुम हि सरीसा॥ कहनहि कृपा करी सुरईसा॥
ऐसे सुरपति अर्चहित जसुमति करति विधान

द्वारे बैठे नंद जहं गये तहां कों कान ॥
जुरे नंद ढिग आय व्रज के जे उपनंद सब
बैठे अति सुख पाइ करत बात विधि यज्ञ की
दीपमालिका रचि २ साजत॥ पुहुप माल मंडली विराजत
ढोल निसान बाजने बाजें॥ मुदित ग्वालगण जित तित गाजें
गैयन चित्र विचित्र बनावें॥ अंगन आभूषण पहिरावें
सात बरष के कुंवर कन्हाई॥ खेलत मन आनंद बढ़ाई॥
द्वारन युवती हरष बढ़ावें॥ मंगल गान मुदित मन गावें
सथिया धुनि रचि गावहिं गाथा॥ पूजा देखि हंसे व्रजनाथा
मो आगे सुरपति की पूजा॥ मोतें और देव को दूजा ॥
व्रजवासी मोकों नहिं जानें॥ मो असति सुरपति कौं मानें
अब यह मेटौ यज्ञ विहाने॥ लीनो भोग बहुत दिन याने
व्रज वासिन पै आप पुजाऊं॥ गिरि गोवर्द्धन नाम धराऊं
यह विचार मन में ठहराई॥ गये नंद ढिग कुंवर कन्हाई
हरषि नंद पनियां बैठाये॥ वदन चूमि उर सों लपटाने
तब हरि बोले नंद सों मधुर मंद मुसकाय॥
करत पुजाई कौन की बाबा मोहि बताय॥
कौन देव सो आहि काहे कौं पूजत तिन्हें॥
मैं नहिं जानत ताहि कहौ मोहि समुझाय सब
नंद कहेउ तब सुनउ कन्हाई॥ इंद्र सबन देवन कौ राई ॥
तिनकों पूजत गोप सदाई॥ कुल में यह रीति चलि आई
तातें तिन्हें पूजियै राजा॥ जातें कुशल रहौ दोउ भ्राता
या पूजा तें सुरपति हरषै॥ होय प्रसन्न तब जल बरषैं
तृण अनाज उपजत है जातें॥ गाय गोप सुख पावत तातें
यातें सदा यज्ञ यह कीजे॥ जो गोधन धन बहुत न छीजे

तव हरि कहेउ सुनो नंददाता॥ ऐसे जो तुम कही यह बात॥
जहां इंद्र पूजत नहिं प्रानी॥ तहां कहा वरषत नहिं पानी॥
तव हरि ऐसे वचन सुनायो॥ तव नंदहि अति रोष हि आयो॥
सुनि हरि वचन रहे सकुचाई॥ कानि किहत अति चतुर कन्हाई॥
है बालक पव हौं भीति नाम्ही॥ देवकाज कहु जाने कान्ह॥
तव चुपका रिक ह्यो नंद राई॥ सदन जाउ तुम कुवर कन्हाई॥
ऐसे मैं जिन जाउ कहु भीर वड़ी है तात॥
कोजाने केहि भाव ते कित भी आवत जात॥
सोय रहो गोपाल मेरे पलका जाय तुम॥
मैं हूं आवत लाल पाछे तें तुम्हरे निकट॥
तव हरि मन इक वुद्धि उपाई॥ वैठे और महर ढिग जाई॥
तिनको हरि यों कहि समुझायो॥ आज मोहि सपनो इक आयो॥
सुरूप सुनीत एक अति चारू॥ चार भुजा तन सुभग सिंगारू॥
तिन मोसो यो कहेउ सुनाई॥ इंद्रहि पूजे कहा वड़ाई॥
मै तुमको इक देव वताऊं॥ गिरि गोवर्द्धन प्रगट दिखाऊं॥
यह पूजा सव इनहिं चढावौं॥ जाते सुख मांगे फल पावौ॥
तुम आगे भोजन सव खै है॥ प्रगट आपनो रूप दिखै है॥
चारि पदारथ के ये दाता॥ अन धन गोधन कीरति षाता॥
ऐसे देव छोडि घर माहीं॥ तुम पूजत सुरपति हि वृथाहीं॥
कोटि इंद्र सरणमे वे मोरे॥ सरणही मैं पुनि कोटिसवारे॥
गोवर्द्धन सम देव न दूजा॥ करहु जाइ उनहींकी पूजा॥
ताते मो मन मे यह भाई॥ पूजहु गोवर्द्धन अव जाई॥
चकित गोप हरि वचन सुनि कहु एक रूप पहचान॥
सुने न अवलों देव कहु प्रगट होत के खात॥
सुनी वात यह नंद सों वत सव उपनंद मिलि॥

कहा कहत नंद नंद समुझि परति नहिं सबन यह
सुनि यह बात सबन ब्रजपाई॥ देख्यो ऐसो सुपन कन्हाई
सुरपति पूजा देत मिटाई॥ गोबर्द्धन की करत बडाई
कोऊ कहत कान्ह कहै सांची॥ कोऊ कहत बात यह कांची
बालक जाने कहा सुजाई॥ कोऊ कहत कहै को भाई॥
कोऊ इंद्रहि कहत सकाने॥ हमतौ कछु यह बात न जाने
हलधर कहत सुनौ ब्रजवासी॥ कोमहि मजानन अविनासी
इनकौं बालक करि मति जानौं॥ जो हरि कहे उ सत्य करि मानौं
नंद निकट जो गोप सयाने॥॥ हरि कौ बल मतगप सब जाने
कहत नंद सों सो सुख पाई॥ कीजे सोई जो कहत कन्हाई
कहत नंद तब सबन सुहाई॥ मेरेहू मन में यह आई॥
हरि कौं सुपन झूठ नहिं होई॥ है प्रतीत मेरे मन सोई॥
काल्ही कौ सुपनौ हरि देख्यौ॥ भयो प्रात हीतासु बिसरेख्यौ
तातें सोई कीजिये कान्ह कहै जो इ बात॥
सब ब्रजवासी पूजिये गोवर्द्धन चलि प्रात
यही मंत्र ठहराय बूझत हरि सों हरष सब
कहौ कान्ह समझाय कौन भांति गिरि पूजिये
हरषि स्याम नंद सबन बुलायो॥ इंद्र यज्ञ हित तुम जो ल्याये
बहु ब्यंजन पकवान मिठाई॥ सो सब सकटन लद्द भराई
नाचत गावत सकल हुलासा॥ चलहु सकल गोवर्द्धन पासा
तहां जाइ गिरि बरहिं मनाई॥ पूजहु बहु विधि भोग लगाई
मांगि मांगि तुम सों गिरि खैहै॥ मुहमांगे तुमकों फल दैहै॥
मेरयौ कहेउ सत्य करि मानौ॥ मेरो सपन झूठ जिन जानौ॥
यह परचौ तुम आंखिन देखौ॥ तबहि मोहि सांचो करि लेखौ
जो चाहौ ब्रज की ठकुराई॥ तौ पूजौ गोवर्द्धन राई॥

कान्हजो कछु अज्ञा दीनी ॥ सबहिन धातमानसो लीनी ॥
केहोहि परस्पर सब सुख पाई ॥ चलहु गोवर्द्धन कहत कन्हाई ॥
घर घर सब होत कुलाहल ॥ फिरत गोप आनंद उमाहल ॥
मिलत परस्पर सौकमदे दी ॥ सकट नसाजत भोजन लैलै ॥

बहु व्यंजन पकवान बहु बहुत मिठाई पाक ॥
रस गोरस मेवा विविधि अमित भांति के शाक
खटरस के सब भोग कछु सकटन कछु कांवरन
गृह गृह ते सब लोग लैलै गिरि पूजन चले ॥

नंद महर के घर की सामा ॥ कहँ लगि वर्णों बताऊं नामा ॥
सहस सकट पकवान मिठाई ॥ रस गोरस बहु भार भराई ॥
नंद सदन ते लै बहु ग्वाला ॥ चले अग्रसर हर्ष विशाला ॥
पट भूषण सब गोपन साजे ॥ भांति अनेक बाजने बाजे ॥

नंदमहरिअरूमहरिजितेका॥औरगोप वहुभीर अनेका
वलदाऊअरूकुंवरकन्हैया॥सुभगसिंहारांकिये दोउ भैया
सखावृंदसुन्दरसव लीन्हे॥कोटिकाम छविलजितकीन्हे
सोभितनंदमहर के साथा॥चले सकलपूजन गिरिनाथा
जसुमतिअरुरोहिणिमहतारी॥नंदगांवकीअरुजे नारी॥
भूषणवसन संवारि संवारी॥चलीं हरषिउर आनंदभारी
पुरव्रषभान आदिजेग्रामा॥चलीसकलगोजन कीवामा
श्रीराधाव्रषभानदुलारी॥ललितादिक सव गोपकुमारी
नौसतसाजसिंगार अतिपट भूषणवहुरंग
यूथ यूथजुरिकैंचली कीरति जू के संग॥
सवके मनयह कामदेखनकोंहरिरूप दृग
परममुदितसववाम सव के मनमोहनवसे
चंदवदनसम सवम्रग नैनी॥सकलसुधर सम कोकिलवैनी
नव यौवनसव होहिं प्रवीना॥सवकोमन मोहनआधीना
चलीं सकलगोवर्द्धनपाहीं॥भई भीरअति मारग माहीं
सकरवृंदअरु गोप समूहा॥जातिचलेयुवतिन के यूहा
कौतुककरतगोपगणराजे॥ताल मृदंग अनेकनिवाजे॥
कोउ गावतकोउ नाचतजाहीं॥कोउ हांहें मग पावत नाहीं
कोउ सकटन साज संवारे॥कोउ एकन एक पुकारे॥॥
गावत मंगलगोपकुमारी॥निरषिस्यामछवितनदुषारी
होतकुलाहल अतिमगमाहीं॥कोउवात सुनतकछुनाहीं
कौतुकस्यामदेखि हरषाहीं॥अतिउत्साहसवन मनमाहीं
सखन संग खेलतहरिजाहीं॥ सवकीसुरतिस्याम केमाहीं
ब्रजवासिनकी भीरसुहाई॥उपमा मोपे वरणिनजाई
दो० उपमा न मोपे जातवनी भीरअतिसुन्दरभई

घह्योआनंदसिंधुकौंसुखविविधितनुधरसोहई
छविउजागरसिंधुकौधौंसुकृतपुंजसुहावने ॥
तिनमध्यसवकेस्याम्नायकसवाहिलायकपावने
दो॰ नंदमहरिउपनंदसव स्यामराम दोउभाय
पहुंचे गोवर्द्धन निकट निरषिसिखरसुखपाय
उतरेसाहितसमाज घहूंओरव्रजलोकसव
मधिशोभितगिरिराजकोटिकामशोभासरस
चहुदिसफेरकोसचौरासी॥ उतरे घेरसकल व्रजवासी
व्रजवासिनकोभीरअपारा॥लगे घहूंदिसचारुवजारा
वस्तुअनेकवरणिनहिजाई॥विनमोलेहिसवसोजमिलाई
ठौरठौरसवयुवतीआवैं॥ जहांतहांनट नाचदिखावैं
कहूंविदूषकहास हंसावैं॥ हर्षमांरुभति हर्षवढावें
नरनारीसवपरमहुलासा॥अतिआनंदउमगचहूंपासा
कृतपूजनविधिनंदरई॥अधिकारीनहेकुवरकन्हाई
कहेउकृष्णसवविप्रवुलाई॥प्रथमयज्ञआनंदकराई॥
पूछवेदविधितिनसौलीजे॥ ताहीविधिगिरिपूजाकीजे
तवहि विप्रनंदरायवुलाये॥आदरसहितगोपलेआये
हरिकौ कहेउ मानितिनलीनो॥प्रथमआरंभयज्ञकोकीनो
परमरुचिरवेदुकावनाई॥ सामवेदधुनिद्विजवरगाई
देखनकौधायेसवै व्रज केनर अरु वाम ॥
भयेदेवतागिरिवहीनाहिपुजावेस्याम
यहेमहरउपनंद नंदआदि ठाढ़े सवै॥
कहतजोकछुनंदनंदे करतसकलसोइतहों
पंचामृतवेद्रकलशभरायो॥डारिशिषरतेंगोलिअन्हायो
कहूंपैलेगंगाजलडारो ॥ चदनवदनतिलकसंवारो

भूषण वसन विचित्र चढ़ाये॥ सुमन सुगंध माल पहिराये
धूप दीप करि आरति मांजी॥ घंटा शंख झालरी बाजी॥
करत वेद धुनि विप्र सुहाई॥ चकृत नभ लषि सुर समुदाई
सुरपति पूजा कृष्ण मिटाई॥ थाप्यो गिरिव्रज तिलक चढ़ाई
देखि इंद्र मन गर्व बढ़ायो॥ व्रजवासिन के मन कछु भायो
पूजन गिरिहि मोहि बिसराई॥ गिरि समेत व्रज देहुं बहाई
अब देखहुं मैं इनको करनी॥ उपजी है इनको बुद्धि मरनी
गिरि को पूजन प्रेम बढ़ाये॥ सपने को सुख लेत मनाये॥
कितिक बार पुनि इनके मारत॥ ऐसे सुरपति मनहिं विचारत

कहेउ कृष्ण तब नंद सों भोजन लेहु मंगाय॥
गिरि आगे सब राखिके अरपहु विनय सुनाय
यह सुनि कै नंदराय त्यावहु ग्वालन को कह्यो
लीनो तहां मंगाय सामग्री सब भोग की॥

नाना भांति जाति पकवाना॥ विविधि मिठाई अमित संधाना
खटरस व्यंजन बहु तरकारी॥ दही दूध सिखरन रुचिकारी॥
मधु मेवा फल फूल अनेका॥ स्वच्छ स्वाद एक ते एका॥
खीर आदि बहु भांति रसोई॥ कहं लगि बरनि सके सब कोई
मूंग भात अरु बरा पकोरी॥ बहुतिक दधिबोरी अरु कोरी
कियो अन्न को कूट सुहावन॥ जैसो गिरि गोवर्द्धन पावन॥
परसि परसि गिरि आगे राषति॥ जैसी विधि सों मोहन भाषत
गिरि पूजत जाहि भांति कन्हाई॥ वैसें सब व्रज लोग लुगाई॥
गिरि गोवर्द्धन के चहुं पासा॥ कीनी बहु विधि सहित हुलासा
दोरिहि दोर वेदका राजे॥ अन्नकूट चहुं ओर विराजे
तिन मधि गोवर्द्धन गिरि पावन॥ परम अनूप स्वरूप सुहावन
चंदन केसरि रोरी छाया॥ शोभित अति चहुं दिसि गिरि माया॥

गिरिगोवर्द्धन राय को छबि नहिं परखवसान
ब्रजवासी जनके हिये ध्यान परम सुख दान॥
महिमा अमित अपार श्रीगोवर्द्धन भक्तकी
जिहिं पूजत करतार सारद विधि नहिं कहि सके
प्रातहिं ते परसत भोजन सब। गयो हरकि युगयाम नरीसब
कहेउ स्याम सोवत नंदराई। जेमहिं गिरि सों कहेउ कन्हाई
तब हरि कहेउ सबन समुझाई। भोग समर्पहु घंट बजाई।
मन में कछू खुटक जिन राखौ। दीन बचन मुखते कहि भाखो
नैन मूंदि कै ध्यान लगावौ। प्रेम सहित कर जोरि मनावो
हरि गोपन पूजा सिखरावें। अपनो पूज आप करावैं॥
जिन पर कृपा करत नंदनन्दन। तिन सों आप करावत वंदन
सबन माहिं हरि कहो जो लीन्हे। बहु विधि गिरि आराधन कीन्हे
तब प्रगटे गोवर्द्धन नाथा॥ यज्ञपुरुष प्रभु श्रुति के माथा
सहस भुजा तन स्यामत माला॥ मोरमुकुट वैजंती माला॥
नषसिष भूषण परम सुहाये॥ अंग अंग छबि रूलकत आये
भये देषि ब्रज लोग सनाथा॥ दियो दर्श गोवर्द्धन नाथा॥
जैजैजै कहि देव मुनि बरषत सुमन अकास॥
ब्रजवासी जैजै करत भरे अनंद हुलास॥
सहसो भुजा पसारि लागे भोजन करन गिरि
देखत ब्रज नर नारि अति अद्भुत हरिके चरित
कहत मुदित सब लोग लुगाई। कन्हहि की शोभा गिरि गाई
जैसे कान्ह स्याम तन सोहै। तैसाही गिरिवर मन मोहै॥
तैसेइ कुण्डल तैसिय माला॥ तैसेइ चंचल नैन विशाला
तैसोइ मुकट पीत पट तैसो॥ नखसिख रूप कान्ह को जैसो
द्वै भुज हरि के परम सुहाये॥ गिरि की भुजा सहस परिधाये

देखि दरस गिरिवर के रूरे॥ नंदजसोदा आनंद पूरे
कहत कि बड़े देव हम पाये॥ देवरूप परगट दरस दिखाये
ऐस्यो देव सुन्यो नहिं देख्यो॥ जीवन जन्म सुफल करि लेख्यो
ललिता राधहि कहति कुमारी॥ मैं यह बात समुझिहै पाई
यह लीला सब स्याम बनावें॥ आपहि जेंवत आप जिवावें
मैं जानी हरि की चतुराई॥ इंद्रहि मेंट आप बलखाई
हैं इनके गुण अगम अगाधा॥ मेरी बात मान तू राधा
इत हित देखो करगहे गोपन सों वत रात॥
उत आगहि धरि सहस भुज रुचि सों भोजन खात
श्री राधा सुख पाइ मुदित विलोकत स्याम छबि
भक्तन के सुखदाय नित नव करत विनोद तव॥
इत गोपन संग हरि वतराहीं॥ उत सब हिन को भोजन खाहीं
ग्वालनि एक बिलोवनहारी॥ रहि वृषभानदसन रखवारी
तासु नाम बदरौ लागायो॥ तिन घरही घरही ते भोग लगायो
प्रेम सहित बहु विनय सुनाई॥ सबके अंतरजामि कन्हाई
ऐसे प्रीति सुधित बनवारी॥ लई तासु बल भुजा पसारी॥
भोजन करत परम रुचि मानी॥ गुणसागर लीला यह ठानी
कहत नंद सों कुंवर कन्हाई॥ मैं जो बात कही सो आई॥
अब तुम गिरि गोवर्द्धन जाने॥ मेरे वचन सत्य करि माने॥
तुम देखत भोजन सब खायो॥ परगट तुम को दरस दिखायो
तुमरो भक्ति भाव पहिचानी॥ गिरि तुमरी लीला सब मानी
अब तुम माग्यो चाहो जोई॥ मांगि लेहु इन पै सब सोई॥
नंद कहत धनि धन्य कन्हाई॥ यह पूजा तुम हमहिं बताई
प्रीति रीति के भाव सों भोजन सब के खाय
भे प्रसन्न अति नंद सों तब बोले गिरिराय॥

सोऽब्लेहूनंदघरवानअबजोहमतुमसौंचहौ
मैंसीनोसुखमानिबहुतकरीमनभक्तिमन
भलीकरीतुममेरीपूजा॥ सेवकतुमनेऔरनदूजा॥
तेरेसुतबलमोहनभाई॥ इनकौकुशलमनंदसदाई॥
मैंहीइनकौंसुपनदिखायो॥ मैंहीसुरपतियज्ञमिटायो॥
अबतुममुसप्रसादलैलाहू॥ अपनेअपनेघरसबजाहू॥
ब्रजमैंबसौनिसंकसदाही॥ औरकछूमांगौहमपाही॥
यहसुनिथकितसकलनरनारी॥ भोजनकियोप्रथुअमिरधारी॥
तौतुमअपनेप्रियमतिहरियो॥ कान्हकहैंसोईतुमकरियो॥
अबजोतुमप्रसादलैसाहू॥ अपनेअपनेघरसबजाहू॥
अबबोलतसुखवचनप्रमाना॥ ऐसेपरछतदेखनआनो॥
नंदकहेवकहमांगोस्वामी॥ देखिदरशभयोपूरणकामी॥
सकलसिद्धिसबतुम्हरीदीन्ही॥ कृपासिंधुमैंतुम्हरेकीन्ही॥
मोहविवसअसुतमहिंबिसारे॥ भूलिफिरेउदेवनकेद्वारे॥
छं॰ फिरोभूल्योदेवद्वारननाथतुमहिंविसारिके॥
पूजातुम्हारीकहाजानोहमअहीरगवारके
आपहोहरिकृपादीन्हीसुप्रस्यामहिंआयके
दईबालककौबडाईनाथयहअपनायके॥
अबहमैडरकौनकोप्रभुशरणतुम्हरीपायके
इंद्रकहाकरिहैहमारीनाथब्रजपरआयकै॥
कोटिकोटिब्रह्मंडतुम्हरेरोमप्रतिजगदीशहौ
तुमहिंकरताहौभुवनकेतुमहिंसबकेईशहौ॥
स्यामहलधरदासतेरेकुशलयेदोउरहैं॥
करिकृपायहदेहुप्रभुहमऔरकछुनाहींचहैं
सुतनलैदोउडारिपारिपेदआपनेचरणनपरे

विहँसि गिरि लषि प्रीति पंकज पाणि इन्द्र माथन धरे॥

दो॰ नंद गोप उपनंद सब श्री वृषभान समेत
वारवार गिरिराज के चरण परत अतिहेत

सो॰ करि सब कौ सनमान दे प्रशाद निज पाणि सों
सबन कह्यो घर जान इन्द्र प्रसन्न गिरिराज तब

चलहु घरनि तब कह्यो कन्हाई॥ भयेउ प्रसन्न देव सब आई
भली भांति पूजा तुम कीनी॥ गिरिवर राज मानि सब लीनी
दोउ कर जोरि भये सब ठाढ़े॥ भक्ति भाव सब के मन बाढ़े॥
करि सब कार्य कर्म सब गिरि कौ॥ परसत चरण चलत ब्रज घर कौ
देखि चकित गण गंधर्व सो मुनि॥ कहत धन्य ब्रजवासी गुण सुनि
धन्य नंद कौ सुकृत पुरातन॥ धन्य धन्य पर्वत गोवर्द्धन॥
करत प्रसंसा सुर मुनि पुनि पुनि॥ वरषि सुमन करि है जै जै धुनि
निज निज लोकन देव सिधाये॥ ब्रजवासी सब ब्रज कौं आये
मुदित सकल ब्रज लोग लुगाई॥ गोवर्द्धन की करत बड़ाई
कहति धन्य जसुमति कौ जायौ॥ वही देव भा कान्ह पुजायौ
अब इन तें ब्रज में सुख पैहैं॥ गाय गोप सब सुख सें रहि हैं
वरष वरष नित इन्द्र पुजायौ॥ कबहूं प्रगट दरस नहिं पायौ

प्रगट देत हैं दरस गिरि सब के आगे खात॥
परम हरष नर नाग सब सब के मुख यह बात
खेलत नित नव ख्याल भक्त पाल नंदलाल ब्रज
दुष्टन के उर साल सुर नर मुनि मोहत निरषि॥

इंद्र देषि गोवर्द्धन पूजा॥ कियो क्रोध मो सम को दूजा
ब्रजवासिन मो कौ बिसरायो॥ मेरो बलि लै गिरिहि चढ़ायो
नेक नहीं संका उर आनी॥ कछु कान मेरी नहिं मानी॥
तेंतिस कोटि सुरन के नायक॥ मेघ वर्न सब मेरे पावक

कियो अहीरन मम अपमाना॥ क्रोधी इन अपने मन जाना॥
जानि बृद्धि इन मोहि भुलायो॥ गिरिहि पाय सिर निज धरायो॥
काह उन्हें दियो यह काई॥ मरणकाल ऐसी बुधि पाई॥
तुरत इन्हें सब देउ सजाई॥ देखौं धौं को करत सहाई॥
पर्वत पहिले खोदि गिराऊ॥ ब्रजजन मारि पताल पठाऊ॥
फूलि फूलि भोजन जिन कीनों॥ नेक न रखौ ताको चीन्हौ॥
सकल गोप यह नैनन देखैं॥ बड़े देव ताको फल देखैं॥
ताप्रा है ब्रज देउ बहाई॥ भुव पर खोज रहे नहिं राई॥
ऐसे सुरपति क्रोध करि मन मैं गर्व बढ़ाय॥
प्रलैकाल के मेघ सब लीने तुरत बुलाय॥
तिन्हे कह्यो सुरराय ब्रज पर बरषो जाय तुम
पर्वत प्रथम मिटाय पुनि बोरहु ब्रज लोग सब
मोसौं अहिरन करी ढिठाई॥ मेरी बल पर्वतहि खवाई॥
ताकारन मैं तुमहिं बुलाये॥ सेन समेत जाहु सब धाये॥
गिरि समेत ब्रज देहु बहाई॥ भूतल खोज रहे नहिं राई॥
सुरपति बचन सुनत घन तमके॥ का पर क्रोध करत प्रभु अनके॥
केतिक गिरि ब्रज हमरे आगे॥ तुम प्रभु क्रोध करत केहि लागे॥
छन ही मे ब्रज खोद बहावें॥ डूगर को धर नाम मिटावें॥
होत प्रलय प्रभु हमरे पानी॥ रहत अस्त यवटन कनिसानी॥
आप क्षमा कीजे सुरराई॥ हम करिहैं उनकी पहुनाई॥
यह सुन सुनासीर सुख पायो॥ हरषि पान दै तिनहि पठायो॥
चले मेघ सब सीस नवाई॥ आये ब्रज के ऊपर धाई॥
सराहौ मैं रविगगन छिपाने॥ देखत ही देवत अधिकाने॥
कीन्हो सब्द गरज घन भारी॥ अति हो घर भयानक कारी॥
छं॰ अति ही भयानक घटा कारी कज्जल ढूपट तरहीं

घेरलीनौ ब्रज चहूं दिस प्रबल पवन झकोर हीं॥
गरजत गगन घन घोर तड़पाति तड़त बारहिं बारहीं
होत शब्द अघात ब्रजन नरनारि चकित निहारहीं
गये बन जे गाय ले ते धाय फिरि ब्रज आवहीं॥
अंध धुंध अपार खोजत धाम पंथ न पावहीं॥
भैंतत जहां तहां बस्तुसब नर नारि मन सोचत महा
वैरसुरपति मो कियो अब होन धौं चाहत कहा
दो० उमड़ि घुमड़ि घहराय घन परन लगे जल जोर
टेरत सुत कौं मातु पितु ब्रज गल बल चहुं ओर
सो० ब्रजजन सकल बिहाल बिन राने जित तित फिरत
स्याम करत यह ख्याल देखि देखि मन में हंसत
अति व्याकुल जहं तहं नर नारी॥ कहत देत पुरुषन कौं गारी
आये पूजि गोवर्द्धन राई॥ ॥सुरपति निज कुल देव मिटाई
दीनौ गिरिवर यह फल भारी॥ लेहु सबै अब गोद पसारी
चढ़ौ अघारि कोप सुरराई॥ देत पलक में ब्रजहि बिहाई
आये बड़े देव गिरिराज॥ तौ किन आय बचावत आज
नंदसुवन यह पूजा ठानी॥ ताते इन्द्र चढ़ौ रिस मानी
कहत जजसो मति सों ब्रजबाल॥ कहा काम यह कियो गुपाल
सुरपति हैं कुलदेव हमारे॥ ब्रज ते मोह किये ते न्यारे॥
चढ़ौ आय ब्रज ऊपर सोई॥ अब सहाय काहे न गिरि होई
घन गरजत तरजत अति भारी॥ देखि देखि डरपति नर नारी
सकल विकल भे मन पछताही॥ लरकन दबते गोदन माहीं
भये सोच बस सब ब्रजलोगा॥ कहत भवन्यौ अब मरन संयोगा
देखि देखि ब्रज की दशा नंद महरि यह हि नात
कियो निरादर इन्द्र को सन मे बहुत डरात

स्यामराम दोउ भाइ लियेनिकटसोंचतमहर
अुरेगोप तहे आइ मनहीमन मुसकात हरि

कहत कृस्नसोंसव व्रजवासी ॥ सुनहु स्यामसुन्दरसुखरासी
तुमतोसुरपतियज्ञ मिटायो ॥ व्रजवासिनपरगोरीपुजायो
तुम्हरेकहेअहोव्रज मंडल ॥ सुरपति मानकियेंस्मसदन
ताहीतें सुरराज रिसाई ॥ दिये प्रलय के मेघ पठाई ॥
वरसत तेमघवा के पायक ॥ विषमवूंदलागतजनोसायक
भीजत गोपगाय गोसुतसव ॥ घरिकमाहि वूडतहेव्रजअव
राखिलेहुअवव्रजके नायक ॥ तुमही यहदुखमेटनलायक
दावानलतें राखे जैसे ॥ अघजलतेरासोंहरि तैसे ॥
वकी विनासनसकट संघाल ॥ तृणावर्तवत्सासुरमारन ॥
अघ मर्दनवकवदनविदारन ॥ तुमहीव्रजजनकेदुखटारन
दीजे अभैवेगनंदलाला ॥ वरषतमेघ महाविकराला
राखि लेहुवूडत व्रजखेयै ॥ अव चितवत हरिसवसुततेरी

जवजवगाढपरीहमें तवतुम कियोउवार
इहिंअवसरअवराखिये मोहन नन्दकुमार
व्रजजन के सुखदानि देखिविकलव्रजलोगसव
हंसिवोलेतवकान्हधरहुधीरअवहरहुमति

घलहुसकलमिलिगिरिकेपाहीं ॥ उनकोध्यानधरहुमनमाहीं
करिलेहैंगिरिराज सहाई ॥ रहि हैसुरपतिमनपछिताई
यहकहि हरिगोवर्द्धनआये ॥ अभयवोहदेसकलवुलाये
गायवत्सव्रजलोगलुगाई ॥ गयेसकलहरिकेसंगधाई
सवहीकेदेखत गहि धरते ॥ ज्यचकिलियोगिरिवरहरिकरते
किरुनी छोरवामकरराख्यो ॥ तवहरिव्रजवासिनअभाख्यो
करीसहायदेवगिरिराया ॥ आवहुतुमसव इनकीछाया

गायगोपगोसुतनरनारी॥ भयेसकल दुखमाहिंसुखारी
चकितदेखिसबलोगलुगाई॥कहतधन्यतुमकुंवरकन्हाई
प्रेमपुलकिउरआनंदभारीके॥परसतचरणधायसबहरिके
कान्हकहतदेखहुगिरिराई॥कीन्हीकिहिविधिसुरतसहाई
भक्तनहितहरिगिरिहिउठायौ॥तबतेगिरिधरनामकहायौ

छं० परयौतबतेनामगिरिधरबामकरगिरिवरधर्यो
देखिव्याकुलसकलब्रजजनसोचइकछनमेंहर्यो
करतजैजैगोपगोपीसकल मन आनंदभरे॥
स्यामसबकेमध्यठाढ़ेकरजनखगिरिवरधरे॥
घनअखंडितधारमूसलसलिलकीबरखाकरे॥
अंधधुंधअकासचहुंदिसपवनझकझोरतखरे॥
वज्रतीरगंभीरपुनिपुनिगरजपरबतपरगिरे
करतअतिउत्पातब्रजपरमेघपरलैकेफिरे॥

दो० बारबारबपसातयोंकियचकचौंधितचहुंओर
आररआररआकाशतेजलडारतघन घोर॥
हरिजनकेसुखदायगिरिकीनौविस्तारअति
सबब्रजलियोबचायबूंदनआवतिभूमिपर

कहतगोपसबमनहिंडराई॥गिरिवरनीचेधरहुकन्हाई
महाप्रलयपर्वतयहभारी॥अतिकोमलभुजनकतुम्हारे
नखतेंगिरै धीरकोधारै॥ऐसेबलबिनकौनसंभारै॥
देखिनंदव्याकुलमनमाहीं॥महांभारगिरिकोमलबांहीं
दाबतभुजाजसोदामैया॥बारबारमुखलेतबलैया
देखिभारअतिमनदुखपावैं॥पुनि२गोवर्द्धनहिंमनावैं
नाथआपनोभारसंभारी॥करियौकान्हरखीरखवारे
मैंपकवानमिठाईमेवा॥ल्याइरपूजिहैंतुमकौंदेवा

मातपितहिंहरिदेखिदुखारी॥नखहूंकवृद्धिकरीगिरिधारी
कहेउनंदसोंनिकरघुलाई।तुमहूंसवामिलिकरहुसहाई
लैलैलकुटएखिगिरिलेहू। मति राखौउर मैं संदेहू॥
गोवर्द्धनगिरीभयोसहाई।आपकहेउमुहिलेहुउठाई
यहसुनिजहँतहँगोपसवरहेलकुटदैगिरिलाय
कहतस्यामनवनंदसोंभलेलियोउचकाय
ग्वालेढिगवलरामदेखिदेखिलीलाहेसत
कौतुकनिधितुमस्यामकरतधरतसंतनसुखद
सातदिवसवीतेइहिभांती॥वरषतजलजलधरदिनराती
कोपिकोपिडारतजलधारा।मिटीनभ्रजकीनेकुलगारा
जलतजलदजलवीचहिधंवर।वैसोइगिरिवैसोइभ्रजसुर
धरुजलपवनअनलनभजाको॥सुरपतिकहाकरैकरिताको
भयेजलदजललेसवरीते॥ रहेउएकगुणहैगुणवीते
कहतवातआपसमेंवादर।।पठयोइंद्रहमैंदैआदर
कहेउदेउभ्रजजायवहाई।।काहेहैकेहजाइअवभाई
महाप्रलयजल वरषेआनी।भ्रजमेंवूंदनपडन्योआनी
भयेमेघमनमेसवकादर।आवकारिहेंसुरएजनिरादर
अतिभयननकीदशाभुलानी।।गयेइन्द्रपैसवैरिसानी
कहतमेघसुरपतिकेपाहीं।सुनहुदेवहमकहतडराहीं
कैमारौकैसरणउवारो।।।भ्रजपैजारनचलतहमारो
सातदिवसपरलैसलिलहमवर्षेभ्रजजाय
भ्रजवासिनभायेनहींनिदरयौहमैंवनाय
निघटगयोसववारिएकवूंदपडचीनहीं
यहअचरजअतिभारिकहतलगतलाजहमैं
यहसुनिचकितभयोसुरराई।पुनिसुनिवृत्तमेघसुनाई

कहा भयौ परलै कौ पानी ॥ यह कछु ब्रज की बात न जानी ॥
सुरपति मन यह करत विचारा ॥ पर्वत मैं कोउ है अवतारा ॥
तब सुरेस दोउ देव बुलाये ॥ आज्ञा सुनत तुरत सब आये ॥
देवन आय सकल सिर नायौ ॥ कौन काज सुरराज बुलायौ ॥
तबही देवन सों सुरराई ॥ ब्रजबासिन की बात सुनाई ॥
बीते वर्ष देत है पूजा ॥ सो अब देव कियौ [illegible] दूजा ॥
मोहि मेटि पर्वत कौं थाप्यौ ॥ ताते मैं अति रिस करि कोप्यौ ॥
दिये प्रलय के मेघ पठाई ॥ आवहु ब्रजगिरि सहित बहाई ॥
तेव रहे परलै जरि जाई ॥ ब्रज मैं नीर न [illegible] राई ॥
आये मेघ हार सब रोई ॥ कारन कहा कहौ सो मोई ॥
देवन कह्यौ सुनो सुरईसा ॥ प्रगट्यौ ब्रजहि ब्रह्म जगदीसा ॥

तुम जानत प्रभु भूमि जब दुखित पुकारी जाइ ॥
कह्यौ लेन अवतार तब सो विहरत ब्रज आइ ॥
कहै इंद्र पछिताय मैं भूल्यौ जान्यौ नहीं ॥
कीनी बहुत ढिठाय भय करि मन व्याकुल भयौ ॥

मैं सुरपति जिनही कौं कीनौ ॥ तिन आगे चाहौं बल लीनौ ॥
रवि आगे खद्योत उजेरी ॥ तैसी बुद्धि भई है मेरी ॥
कीनी बहुतै मैं अधिकाई ॥ कहा करौं अब मन पछिताई ॥
सुरन कह्यौ सुनिये सुरराई ॥ ब्रजहि चलौ नाहिं आन उपाई ॥
वै हैं प्रभु दयाल करुणाकर ॥ क्षमा करैंगे श्री सुन्दर वर ॥
सुनि विचार कीनौ सुरराजा ॥ यद्यपि वदन दिखावत लाजा ॥
तदपि वे स्वामी मैं दासा ॥ करिहैं कृपा अवश्य मोहि आसा ॥
अब नहि बनत रहै सुख गाई ॥ शरण गये अब होइ सो होई ॥
यह विचार मन मैं ठहराई ॥ चल्यौ शरण सुर संग लिवाई ॥
कामधेनु कौं आगे सुहाई ॥ सोच न चल्यौ ब्रजहि सुहाई ॥

अतिसकोचसुरपतिमनमाहीं॥आगेधरतपरतपगनाही
जगतपिताशोकरीढिठाई॥कहिहौंकहमवदनदिखाइ
शरणशरणगहिचरणपरिपरिहोंजायउताल
शरणागतिपालनविरदतजिहैनाहिगोपाल॥
दीनवचनसुनिकानकरिहैंकृपाकृपालप्रभु
यहेकरतअनुमानसुरनायकआयोब्रजहि
देखिसुरनकीभीरगभीरा॥अतिडरपेउभयेअधीर
दौरिकृष्णसोंजायसुनायो॥सुरपतिआपसैनसजिआ
कहतस्यामहँसिमतिहिडरावौ॥गिरिवरतजकितहूँमातिम
ब्रजबाहरसेनासबराखी॥वाहनतेंउतरयौसहसाखी
सकुचतचल्योकृष्णकेपासा॥कछुकदूरिदेखतनकछ्रकूल
धायपर्यौचरणनपरजाई॥कृपासिंधुराखौशरणाई॥
बिसर्यौतुमहिंतुम्हारीमाया॥अबतुमबिननहिंऔरसहा
शरणागतपुनिसुनिकहिबानी॥धोयेचरणनयनकेपानी
राखिराखित्रिभुवनकेराई॥मोतेंभूकपरीअधिकाई
मैंअपराधकियोअनजानी॥छमाकरौप्रभुजनसुखदानी
ज्यौंबालकपितुसौंबिरुझाई॥लेतपितामोहिंगोदउठार
ऐसेंमोहिंकरौजिनतारा॥जैसेसुतहिनपितुअरुमात
व्याकुलदेखिसुरेशअतिदीनबंधुयदुराई
अभयकियोकरमायधरिभुजगहिलियौउभर
लीन्हौहृदयलगायदेखिदीनताइंद्रकी
सिरनेहिसकतउठायअरवारपरसतचरण
कहतइंद्रसोंकुंवरकन्हाई॥तुमकतसकुचतहौसुरराई
तुमतुमसौंकीनीअधिकाई॥तुमरीपूजाहमसबखाई
...तापैब्रजबरषेपानी॥हमकछुतुमकौंरिसनाहिंआनी

यह दीनी मेरी ठकुराई॥ तुम सुधि जान न करी ढिठाई
कहा भयो जो मेघ पठाये॥ मैं सब ब्रज के लोग पठाये
तुम कछु उर मैं सोच न आनो॥ मैं तुम सों कछु बुरो न मानो
भली करी ब्रज देखन आये॥ तुम मेरे मन मैं अति भाये॥
अपने मन को सोच मिटाई॥ देवन सहित करो सुरराई
सुनि हरि बचन देव मन हरषे॥ जै जै करि कुसुमांजलि बरषे
पुलकि अंग सुख गद्गद बानी॥ कहत धन्य प्रभु जन सुखदानी
असरण शरण तुम्हारी बानी॥ यह लीला सब तुम ही जानी
धन्य धन्य सब ब्रज के बासी॥ जिनके प्रेम विवश अविनासी

प्रभुहि देखि अनुकूल मम धीर कियो सुरराय
मिटी त्रास उरतें तऊ बार बार पछिताय॥

कहत बार ही बार तुम मति अगनित है प्रभु
मैं भूल्यो संसार जान्यो ब्रज अवतार नहि

प्रभु आगे चाहौं मैं पूजा॥ मो ते मंद और को दूजा॥
अहो नाथ तुम प्रभु मैं दासा॥ रवि आगे खद्योत प्रकासा
मेरो गर्व कितक यह बाता॥ कोटिन इन्द्र तुम्हारे गाता
मैं अपराध कियो यह भारी॥ प्रभु राख्यो निज ओर निहारी
दीनबंधु तुम जन हितकारी॥ बिरद बखानत वेद पुकारी
कृपा करी प्रभु दरसन पायो॥ भयो सुखी तन पाप नसायो
ये दिन व्यर्थ गये बिन काजा॥ तुम को नहिं जान्यो ब्रजराजा
धन्य धन्य प्रभु गिरवरधारी॥ भंजन बिपत भक्ति हितकारी
दैत्य दलन प्रभु भार उतारन॥ संत हेतु द्विज हित तन धारन
अब प्रभु मोहि कृपा यह करिये॥ गिरिवरधर गिरि अब [illegible]
सुनि बिनती हरि भये सुखारी॥ नव गिरि कर ते धरे उतारी
सुत सहित सुरराज अनंदे॥ कामधेनु लै प्रभु पद बंदे

इन्द्र प्रलय घन दिये पठाई॥ सात दिवस ब्रज बरषे आई
अति बिस्तार बड़ो अति भारी॥ लीनो गिरिवर नखपर धारी
एक बूंद ब्रज में नहिं आई॥ लीने सब ब्रज लोग बचाई
हारमान सुरपति भय पाई॥ आनि पर्यो चरणन सिर नाई
कामधेन देवन कौं ल्यायो॥ ताहि अभय करि फेरि पठायो
अचरज बात जात नहिं बरनी॥ मानुष सों यह होय न करनी
परे गोप हरिचरणन आई॥ कहत धन्य तुम कुंवर कन्हाई

हम तुम कों जाने नहीं हो तुम त्रिभुवन नाथ॥
ब्रजवासिन सुख देन कों ब्रज में प्रगटे आय॥
तुम करि लेत सहाय परत जहां संकट बिकट
लीनो हमैं बचाय बिष तें जल तें अनल तें॥

करत बिचार युवति सब ठाढ़ी॥ प्रेम उमंगि उर आनंद बाढ़ी
कैसें गिरिवर लियो उठाई॥ अति कोमल तन स्याम कन्हाई
लेत धरत जान्यौं नहिं काहू॥ धन्य धन्य हरि की यह बाहू
सात दिवस परलै जल डार्यौ॥ इन्द्र पर्यौ चरणन जब हार्यौ
कहत सखा धनि धन्य गोपाल॥ कैसें गिरि करि धर्यौ बिशाल
यह करतूति करत तुम कैसें॥ हम संग सदा रहत हो जैसें
गाय चरावत हो मिलि हमसों॥ कौतिक बल्न है बूझत तुमसों
धाय चरण गहि जसुमति मैया॥ मुख चूमति अरु लेत बलैया
अति अस्नेह नैन भरि पानी॥ तन पुलकित मुख गद्गद बानी
कैसें कर जु धर्यौ गिरि तात॥ अति कोमल भुज तुम हो न्हात
विहंसि मात सों कहत कन्हैया॥ तेरी सों सुनु जसमति मैया
मैं न उठाक्त री श्रम पायो॥ नेक छियो ओ आपहि आयो

अब गिरि कौ पूजो बहुरि सब सों कहउ कन्हाइ
बूड़त तें राख्यो ब्रजहिं कीनो प्रकट सहाइ॥

निराहार निरजलव्रत नेमा ॥ नारायण पदपंकज नेमा ॥
और काज कछु मनहिं न लायो ॥ भजन करत सब दिवसो छायो
निस जागरन करन विधि ठानी ॥ प्रभु मंदिर लीप्यो निज पानी
पाटंबर अति दिव्य दिवाये ॥ विविधि पुनीत सुगंधि सिचाये
बांधी वंदन वार सुहाई ॥ सुमन सुगंध माल लटकाई ॥
चौक चारु बहु रंगन पूरयो ॥ सिंहासन तहं राख्यो रूरयो ॥
सालग्राम तहं नाम धराये ॥ भूषण वसन विचित्र बनाये
धूप दीप नैवेद्य करि प्रभु पर पुहप चढ़ाइ ॥
करी आरती प्रेम सो घंटा शंख बजाय ॥
प्रभु पद नायो माथ करि पर दक्षिण दंडवत
तुम त्रिभुवन के नाथ जोरि हाथ अस्तुति करी
आदर सहित करी नंद पूजा ॥ प्रेम भक्ति उर भाव न दूजा
करत कीरतन भजन सप्रीती ॥ तीनि याम यामिन जब बीती
तबहि महरि नंदराय बुलाई ॥ कहेउ जसोमति सों समुझाई
एक दंड द्वादसी सकारे ॥ पारन की विधि करो सवारे ॥
यह कहि नंद जसोमति पाही ॥ लै झारी धोती कर माहीं ॥
गये न्हान यमुना के तीरा ॥ संग नहीं कोउ तहां अहीरा
झारी भरि यमुना जल लीनो ॥ बाहिर जाय देह कृत कीनो
लै माटी कर चरण पखारी ॥ अति उत्तम सों करी मुरारी
अचमन लै बैठे नंद पानी ॥ वरुण दूत जल खोजत जानी
नंदहि लै गये पकरि पताला ॥ वरुण पास पहुंचे ततकाला
जान्यो वरुण कृष्ण के ताता ॥ भयो हरष मन गुनि यह बाता
अंतरजामी प्रभु घनस्यामा ॥ नंद लैन ऐहैं मम धामा ॥
भयो वरुण अति हर्ष मन पुनि २ पुलकित गात
नंदहि ल्यावे न्हत्य मम भली भई यह बात ॥

यह सुनि हरष घटा यव ढ़ौं गिरि पूजे सब न
अति हर्षित नंद राय दिये दान विप्रन विपुल
अक्षत रोरी पान मिठाई। पुहप हार दधि दूब सुहाई
जसुमति रोहिणि अरु ब्रजनारी। सजि २ ल्याई कंचन थारी
हरि कौ तिलक कियो दोउ मात। पुलकि प्रेम परिपूरण गात
बहु बक द्रव्य निछावरि कीनी। भुजगहि लाय कंठ सौं लीनी
ब्रज तिय हरि कौ तिलक लगावें। फूल माल गर में पहिरावें
इहि मिस अंग परस सुख पावें। निरखि बदन छवि विविधि रिझावें
होय यह मोरे पति गिरधारी। मन मोहन सुन्दर बनवारी
यह कामना सकल उर धारी। हरि छवि निरखति गोप कुमारी
कहो नंद सों बन गिरिधारी। सुनहु तात अब बात हमारी
गोवर्द्धन कों करौं प्रणामा। चलिये अब स्व निज २ धामा
यह सुनि सबन गिरि हि सम रस्यो। चले ब्रज हि मन हर्ष बढायो
आये सदन सकल ब्रजवासी। सहित स्याम सुन्दर सुख रासी
घर घर ब्रज आनंद अति गावत मंगल चार।
भये सुरपति जीत हरि गिरिधर नंद कुमार।
ब्रज मंगल ब्रज मोद ब्रज भूषण गिरिधर लाल
निज नव करत विनोद ब्रज ब्रजवासी दास हित

अथ नंद एकादशी वर्णन लीला

इंद्र हि जीत स्याम घर आये। ब्रज घर घर आनंद बधाये
ता दिन दसमी भई सुहाई। कातिक सुक्ल एकादशि आई
भक्ति मुक्ति दायक अति पावन। पाप आप संताप नशावन
नंद एकादशि ब्रज प्रतिपाले। वेद विदित सब धर्म संभाले
प्रथम हि दसमी संजम कीनो। बहुरि एकादशि को ब्रत लीनो

निराहार निरजल दृढ़ नेमा ॥ नारायण पदपंकज नेमा ॥
और काज कछु मन नहिं लायो ॥ भजन करत सब दिवस वितायो ॥
निस जागरन करन विधि ठानी ॥ प्रभु मंदिर लीप्यौ निज पानी ॥
पाखंवर अति दिव्य दिखाये ॥ विविधि पुनीत सुगंध सिचाये ॥
बांधी वंदनवार सुहाई ॥ सुमन सुगंध माल लटकाई ॥
चौक चारु बहु रंगन पूरयो ॥ सिंहासन तह राख्यो रूरयो ॥
सालग्राम तहं नाम धराये ॥ भूषण वसन विचित्र बनाये ॥
धूप दीप नैवेद्य करि प्रभु पर पुहप चढ़ाइ ॥
करी आरती प्रेम सों घंटा शंख बजाय ॥
प्रभुपद नायो माथ करि पर दक्षिण दंडवत
तुम त्रिभुवन के नाथ जोरि हाथ अस्तुति करी
आदर सहित करी नंद पूजा ॥ प्रेम भक्ति उर भाव न दूजा ॥
करत कीरतन भजन सप्रीती ॥ तीनि याम यामिनि जब बीती ॥
तबहिं महरि नंदराय बुलाई ॥ कहे जसोमति सो समुझाई ॥
एकादश द्वादसी सकारे ॥ पारन की विधि करो सवारे ॥
यह कहि नंद जसोमति पाही ॥ लै झारी धोती कर माहीं ॥
गये न्हान यमुना के तीरा ॥ संग नहीं कोउ तहां अहीरा ॥
झारी भरि यमुना जल लीनो ॥ बाहिर जाय देह कृत कीनो ॥
लै झारी कर चरण पखारी ॥ अति उत्तम सों करी मुरारी ॥
आचमन लै बैठे नंद पानी ॥ वरुणदूत जल पैठत जानी ॥
नंदहिं लै गये पकरि पताला ॥ वरुण पास पहुंचे ततकाला ॥
जान्यौ वरुण कृष्ण के ताता ॥ भयौ हरष मन गुन यह बाता ॥
अंतरजामी प्रभु घनस्यामा ॥ नंद लैन ऐहैं मम धामा ॥
भयो वरुण अति हर्ष मन पुनि २ पुलकित गात
नंद हित्याव नंदत्यमम भली भई यह बात ॥

जाहि धरत मुनि ध्यान विषम नेति जिहिं गावहीं
सो प्रभु कृपा निधान ऐहैं धनि धनि भाग्य मम॥

हरष सहित नंद हि जदुराई॥ भीतर महल न गये लिवाई
सादर विनय वचन बहु भाषे॥ धीरज दैनी के नंद राखे॥
रानी सबन नंद को देख्यो॥ जन्म सुफल अपनो करि लेख्यौ
कहतु कि धनि २ भाग हमारे॥ नंद हमारे सदन पधारे
जिनके पति त्रैलोक गुसाई॥ सुर नर मुनि सब ही के सांई
चितवत पंथ वरुण मन लाये॥ करुणामय अब भावत भये
जसुमति सोच करति मन माहीं॥ भई बेर आये नंद नाहीं॥
खबर लेन तब ग्वाल पठाये॥ यमुना तट नहिं नंदहि पाये
झारी धोती तट पर देखी॥ भये सोच बश ग्वाल विशेषी
इत उत खोज ग्वाल फिरि आये॥ कहन महरि सों नंद न पाये
झारी धोती तट पर पाई॥॥ सुनत महरि सुख गयो उड़ाई
निसा थके ले आज सिधाये॥ काहु जलचर धौं धरि खाये

अति व्याकुल जसुमति भई उठे रोइ अकुलाइ
सुनि धाये ब्रजलोग सब नंदहि खोजन जाइ॥
यमुना तट बन गांव महं नंद टेरत सबै॥
ढूंढ़ि फिरे सब ठांव भये विकल ब्रजलोक सब

रोवत वै हरि हलधर आये॥ रोवत मात देखि सुख पाये
पूछत जननी सों दोउ भैया॥ काहे रोवति है जसुमति मैया
विलखि जसोमति वचन सुहाये॥ यमुना तट कहं नंद हिराये
यह सुनि हरि बोले सुन माता॥ अबहीं आवत है नंद ताता
मो सों कहि गये अबहीं आवन॥ मत रोवै मैं जात बुलावन
प्रभु सरबज्ञ सकल के स्वामी॥ जल थल व्यापक अंतरयामी
जाने नंद वरुण के धामा॥ वरुण आनि सब विलसि घनस्याम

वरुणलोक हरि तुरत सिधाये ॥ सुनत वरुण आतुर उठि धाये ॥
देखत दरस परस सुख पायौ ॥ चरण सरोज आय सिर नायौ ॥
कहत आज धनि भाग हमारे ॥ त्रिभुवनपति मम धाम पधारे ॥
पाटंवर पांवड़े बिछाये ॥ मङ्गल नवदन वार बधाये ॥
रत्न जड़ित सिंहासन धार्यौ ॥ नायर सादर प्रभु बैठार्यौ ॥
छं॰ बैठारि सादर प्रभुहि धोवत कमल पद निज कर गहे ॥
जे पद सरोज मनोज अरि उर सदा परफुल्लित रहे ॥
जे पद पदम पदमालया उर रहत नित भूषण किये ॥
पाय ते पद जलज चलपति प्रेम परिपूरण हिये ॥
दो॰ विविध भांति प्रभु पूजि कै वरुण कहे गहि पाय ॥
कृपासिंधु अति कृपा करि दरस दियो मोहि आय ॥
मैं कीनो अपराध सो प्रभु उर नहिं आनिये ॥
क्षमा समुद्र अगाध सभा करौ निज जानि जन ॥
अनरक्षक जे दूत कृपाला ॥ ते लै आये नंद पताला ॥
यह कारज मैं उनकौ दीन्हो ॥ ते दूतन प्रभु नंदन चीन्हो ॥
यदपि कियो उन पातक भारी ॥ है वे सकल दंड अधिकारी ॥
तदपि दूत वे मो मन भाये ॥ जिन ते प्रभु के दरसन पाये ॥
देखि नाथ प्रभु दरस तुम्हारा ॥ मैं मान्यौ उनको उपकारा ॥
अब प्रभु हम सब सरण तुम्हारी ॥ राखि लेहु श्री गिरिवरधारी ॥
पायन परि आय सब रानी ॥ बड़भागनि आपन को जानी ॥
सनिन सहित वरुण अनुरागे ॥ अस्तुति करत जोरि कर आगे ॥
धन्य नंद धनि धन्य जसोदा ॥ धनि रतु माहिं खिलावत गोदा ॥
धनि ब्रज गोकुल के नरनारी ॥ पूरण ब्रह्म जहां अवतारी ॥
गुण तीत अवगति अविनासी ॥ ब्रज विहार विलसत सुखरासी ॥
शेष सहस मुख वरनि न जाई ॥ सहज रूप कौ करत बड़ाई ॥

करिअस्तुतिरानिन सहितपुनिरधरिपदसीस
लैप्रभुकौनंदरायढिग तवहींगयोअलीस ॥
हरषिउठेनंदराय देखिस्यामकौंशशिवदन ॥
लषिप्रभुकीप्रभुताय रहेसुदितसकलमति ॥

करतमनहिंमन नंदविचारा॥यहकोउआहिबड़ौअवतारा
भयौनंदमनेहर्षअपारा॥ ब्रम्हकरतमोसदनबिहारा
तवहिकृपाकरीजनसुषदाई॥वरुणहिजलदेराजवहाई
जायनंदकौकरगहिलीनौ॥चलहुतातब्रजकौंहसिदीनौ
करेउप्रणामवरुणसुखपायो॥नंदसहितब्रजहरिगृहआये
नंदआयब्रजकौतवदेख्यो॥तववहचरितसुप्रसौलेख्यो
देखिनंदकौंब्रजनरनारी॥गयौदुखसवभयेसुखारी॥
वूझतनंदहिगोपसयाने॥कितहिगयेतुमहमनहिंजाने
हारेखोजसकलब्रजवासी॥वयेवहुतुमविनाउदासी
नंदमहरीतवसवसोभाख्यो॥काल्हिएकादशिव्रतमैंराख्यो
आजद्वादशीयोरीजानी॥रैनिअछतगयोयमुनापानी
करिटेरीगयौयमुनजलमाही॥लैगयोवरुणदूतगहिपाही
वरुणलोकतेजायकैस्यायेमोहिगोपाल॥
येप्रगटेब्रजआयकोउउत्तमपुरुषविशाल॥
महिमाकहीनजातकोटिभांतिकरनीवरुण
सांचकहतमैंवात इनकोनरमतिजानियो
भयोअधीनवहुतअलरई॥परयौचरणकमलनपरआई
पनिसहितधोयपदपूजे॥जानिजगतपावनभावनदूजे॥
ब्रजनरनारिसुनतयहगाथा॥कहतभयेसवसकलसनाथा
जसुमतिसुनतसकलयहवानी॥कहतकहायहअकथकहानी
प्रभुकीमायामेअरुझानी॥कहतनंदसोंजसुमतिरानी

सो वर जन निसि न्हान सिधाये ॥ कुशल परी पुन्यन तें आये
हरि कौं चूमि लियौ उर लाई ॥ ल्याये नंदहि खोज कन्हाई
विप्रन बोलि दियौ बहु दाना ॥ घर घर बटी मिठाई पाना ॥
गावत मंगल नारि सुहाई ॥ बाजी नंद बधाई सब धाई ॥
नंद कहत है जसुमति बौरी ॥ तू भव कतहि करत मन बौरी
जाको त्रिभुवन पति सो ताता ॥ ताहि सदा मंगल दिन राता
कह्यौ गर्ग मुनि बानी जोई ॥ प्रगटत जात बात सब सोई
इनते समरथ और नहिं ये हैं सब के नाथ ॥
ब्रजवासी आनंद सब सुनि सुनि हरि गुण गाथ
धनि धनि ब्रज नर नारि कहत हमारे भाग्य सब
हम संग करत विहार श्री वैकुंठ निवास हरि

अथ वैकुंठ दरसन लीला ॥

कहत परस्पर सब ब्रजवासी ॥ हरि हैं श्री वैकुंठ निवासी
सो वैकुंठ अहै धौं कैसो ॥+॥ जन्म मरण भय जहां न ऐसो
जाको वेद पुराण बखाने ॥ हरि जहं बसत सदा सुख माने
जो हरि हमहिं दिखावहि सोई ॥ तौ बड भाग्य होय सब कोई
यह मनसा सबके मन आई ॥ जानि लिये भक्तन सुखदाई
तबहिं कृपा करि सब ब्रज लोगा ॥ पठवाये वैकुंठ विभोगा ॥
पर्म धाम जो वेदन गायो ॥ दिव्य दृष्टि दै सबन दिखायो
देखत भूल रहे सब ग्वाला ॥ पुर वैकुंठ अनूप विशाला ॥
भूमि कनकमणि दुति छवि छाई ॥ परम प्रकाश बरनि नहिं जाई
बापी कूप तडाग अमीके ॥ विविध नगन बांधे तट नीके
रतन कीसी पारा सुहाई ॥ जहां देव मुनि रहत रहाई
फूले कमल विपुल बहु रंगा ॥ करत शब्द खग गुंजत भृंगा

कल्पवृक्षकेवागघन सुमनसुगंधअपार
खगमृगसव तेजोभई दिव्यस्वरूपउदार
मंदिरवरनिनजाहिंचिंतामणिमैसोचितअ
जैसं ताहिलषाहिंजैसीजाकी भावना॥
सकल चतुर्भुजतहांकेवासी॥ सुद्धसत्वगुणमयसुखराशी
रमासहिततहंप्रभुसुखसीला॥शोभितनवजलदसमश्यामा
भूषण वसनदिव्यपरकाशी॥सुन्दरसकल रूपअविनासी
वदनप्रकाश हासमुखभारी॥कोटिचंद्रकीजेवलिहारी
मणिनजटितसिरमुकटविराजे॥भूषणवसनअनूपमराजै
दिव्यपारषदचवरडुलावै॥नारदतुंवरगुणगणगावै॥
चकितविलोकतसवव्रजवाला॥जान्यौप्रभुप्रभावतिहिंकाल
चारभुजातहंप्रभुहिनिहारी॥शंखचक्रगजअंबुजधारी
द्विभुजकान्हकोरूप न देख्यौ॥मुरलीमुकटपाणिनहिंपेख्यौ
नाहिंमुकटसिरमोरपखोवा॥कटिकाछनीनगुंजहरोवा
नहीभेषनटवरगोपाला॥भयेविरहवसतवसवग्वाला
व्रजवासीसोईरूपउपासी॥तासुरूपविनभयेउदासी
दो॰ अकुलानेद्रुगश्रवनकेदेखनकोतिहिंकाल
मोरपाखधरगुंजधरमुरलीधर गोपाल
व्रजवासिनकेध्याननटवरभेषगोपालको
अमितरूपभगवानतदपिउपासनरूपयह
विरह विवसहरिव्रजजनजाने॥तवहीतुरतसकलव्रजआने
कान्हदेखिसवभयेसुखारी॥रहेचकितशशिवदननिहारी
कहतसवैमनअचरजपाये॥कहांगये हमकैसेआये
देख्यौस्वप्नसवैइकवारा॥किधौसाचयहकरतविचारा
यहचरित्रसव मोहनकरही॥पुरवैकुंठदिखायेहमही

धन्य धन्य हम सब ब्रजवासी ॥ ब्रह्म हमारे संग विलासी
हरि के चरणा परे सब धाई ॥ करते गोप सब सुखन वड़ाई
हंसि २ सब सों कहत कन्हाई ॥ रहे क हा तुम सकल भुलाई
आज कहा ऐसो तुम देख्यो ॥ सो किन मो सों कहत विशेख्यो
हम कह देखे नंद दुलारे ॥ तुम ही सकल दिखावन हारे
भूतल नाग पताल तुम्हारो ॥ सकल जगत तुम्ह रो विस्तारो
यह सुनि स्याम मंद मुसकाई ॥ दिये सकल पुनि मोह भुलाई
करत चरित्र विचित्र प्रभु ब्रजवासिन के माहिं
लखि ऐशव ब्रह्मादि सुर मुनिजन मनहिं सिहाहिं
अति आनंद ब्रजलोग हरि के नित नव चरित लखि
सब कौं सब सुख योग ब्रजवासी प्रभु नंद सुत
सदा स्याम भक्तन सुखदाई ॥ भक्तन हित अवतार सदाई
संकट में जो नाम पुकारें ॥ ॥ तहां प्रगट तिन कौं निस्तारैं
मुख भीतर तिन सुमिरन कीनो ॥ तिन कौं तहां दरस हरि दीन्हो
दुख सुख में जे हरि कौं ध्यावैं ॥ तिन कौं नेक न हरि विसरावैं
देव दनुज खग मृग नर नारी ॥ भक्ति विवस सब ते गिरिधारी
चित दै भजे भाव जो जैसे ॥ ताकौं होत प्रगट हरि तैसे ॥
ब्रह्मा कीट आदि के स्वामी ॥ प्रभु हैं निरलोभी निहकामी
वेद पुराण साखि सब बोलैं ॥ भाव विवस सब के संग डोलैं
काम भाव ब्रज गोपिन ध्यायो ॥ मन वच क्रम हरि सों मन लायो
इक क्षण हरि कौं नाहिं विसारैं ॥ भोन काज चित हरि सों धारैं
गोरस लै निकसैं ब्रज माही ॥ जहां स्याम तिहिं मारग जाहीं
तिनके मन की प्रीति विचारी ॥ रीझे गोपीजन मन हारी ॥
नव सत साज सिंगार तन गोरस लै ब्रज नारि
वेचन इहि मग आवहीं मो सो प्रीति विचारि

अव इन संग विहार करै दान दधि लाय कै
यह मन कियो विचार हरि ब्रजमोहन लाड़ले

अथ दान लील ॥

दधि कौ दान रच्यौ इक लीला ॥ भक्तन की सुखदायक सील
दधि दानी निज नाम धरायौ ॥ ब्रजयुवतीगन सुख उपजायौ
स्याम सखन तब लियो बुलाई ॥ सब सों कहि यह बात सुनाई
ब्रजयुवती नित गोरस ल्यावैं ॥ या मारग ह्वै बेचन आवैं ॥
तिन्है रोकि जाय दान दधि लीजै ॥ गोरस खाय जान तब दीजै
यह सुनि सखा उठे हरषाई ॥ भली बात तुम कान्ह सिखाई
सबहिन मन भाति हरष बढ़ायौ ॥ कहत स्याम दधि दान लगायौ
तबहि जाय घेरो बन पंथ ॥ पावनि नित ग्वाल निज निज साथ

कहेउ स्याम सब सों समुझाई॥ रहौ तरुन की ओट लुकाई॥
जबहीं ग्वालिनि दधि लै आवैं॥ घेर लेहु कोउ जान न पावैं॥
यह सुनि सखा घेरि कै बाट॥ बैठे टाह बगन कौं ठाठ॥
उतते ब्रन बनि ग्वालिनि बेली॥ बेचन दधि हि चली अलबेली॥

हंसत परस्पर आपु में चली जाहिं जिय थोर॥
पाय घात में सखन सब घेर लई चहुं ओर॥
देखि अचानक भीर चकित रही चहुं दिस चितै
सहमी कछुक शरीर कित तें आये ग्वाल सब

सौंकित न्है ग्वालिन भई ठाढी॥ मनहुं चित्र कैसी लिख काढी॥
हाथ पायं अंग भये अडोले॥ कछु बदन तें बचन न बोले॥
तहं हंसि ग्वालन दियौ जनाई॥ मति डरपहु जिय कान्ह दुहाई॥
यह चोर ठग कोऊ नाहीं॥ अभै कान्ह कौ राज सदा हीं॥
आवत जात न भय कछु कीजे॥ दधि कौ दान लगै सो दीजे॥
नाम कान्ह कौ जब सुनि पायौ॥ तब युवतिन मन धीरज आयौ॥
बोली बिहंसि तबहिं ब्रजबाला॥ कहा तुम्हारे प्रभु नंदलाला॥
चोरी करि निहि पेट भरायौ॥ अब ब्रन में दधि दान लगायौ॥
तब अति बाल कहत कन्हाई॥ कहीं जु कछु कौन्ह लरिकाई॥
होउ जो कछु बालपन माहीं॥ परिहै समुझ अब हि क्षण माहीं॥
प्रगट भये तब कुंवर कन्हाई॥ देखि सबन बोले मुसकाई॥
रहि युवती तुम पोन्च सदाई॥ करि आई हौ बहुत ढिठाई॥

तब तौ हम लरिका हुते सही बात अनजान
सो धोखौ अब मेटि कै छांड़ि देहु अभिमान
हम मांगत दधि दान तुम उलटी पलटी कहत
करत नंद की आन दियें जाइ हौ जान सब

तब बोली ग्वालिन मुसकाई॥ अब तुड़र हम तजी ढिठाई॥

नदइ ते कछु तुम्है कन्हाई ॥ भयौ जानियै तव अधिकाई
काल्हि चोर चोर दधि खाते ॥ पर घर देखत ही भजि जाते
रातहि भयौ सुप्न कछु पाई ॥ प्रातहि भई आज ठकुराई
भली कही नहि ग्वालनि वानी ॥ तुम यह वात कछु नहि जानी
पिता रचित धन धाम जु होई ॥ पुत्र काज आवति है सोई ॥
तुम सौ प्रजा वसाई गांवहि ॥ तौ हम ठाकुर क्यौ न कहावै
कहेउ तवहि ग्वालनि रुहराई ॥ वात सभारे कहहु कन्हाई
ऐसो को वहि गयौ हमारे ॥ जो परजा ह्वै वसौ तुम्हारे
कंस नृपति के सव कहवावैं ॥ कहा भयौ जु वसत इक गावैं
जो तुम याते हो गरवाने ॥ तौ अव तजि है गांव सिताने
यह सुनि विहसि कहेउ वनमाली ॥ कहा वात यह कहत अवाली

गांव हमारौ छांडि कै वसिहौ कापुर माहि ॥
ऐसो को तिहु लोक मे जो मेरे वस नाहि ॥
का गनती मे कंस जाके हम कहवावही ॥
देहु दान कौ अंस रारि करत वे काज कत

वडी वात छोटे मुख माही ॥ आप संभारि कहत हौ नाही
तीनि लोक मह कस भुवाला ॥ भयौ तुम्हारे वस केहि काल
यह तुम वात कहौ तिन माही ॥ जो कोउ तुमको जानत नाही
हम इन वातन भय नहि माने ॥ जैसे हौ तुम तैसे जाने
हमसौ लीजी दान गनाई ॥ पहिले पैली लेहु मगाई
पीतांवर वोढन फटि जैहे ॥ तव पाछै पछितावो रैहे
ऐसे कहि ग्वालनि मुसकानी ॥ तव वोले हरि दधि के दानी
गुरु ग्वारिनि हम को कहु जाने ॥ हम नहि झूठी वात वखाने
झूठी हौ तुम हौ सव ग्वालिन ॥ सतर हाति हौ विनही काल
आजु हे भोनि कहेउ किन वेह ॥ नेरस हमर हू दान गमदेहु

नंदसौंह यौं जान न देहौं॥ वृकरें छोरि दहीसवलेहौं
काहेकों अठिलातकन्हाई॥ छांडि देहु मोहन लरिकाई
पहिलीपरपाटीचलो नईचलोकोआज
जानिपाय होकंस जोतोपुनि हाइ अकाज
हंसीघरी द्वै चारि वीतन लाग्यो यामयुग
वेनमैं रोको नारि वाद्धि जाय है वातपुनि
कहा कंसकाहिमोहि सुनावौ॥ अवहीं वाको जाय सुनावौ
लरिकाकहिरमोहिवखानति॥ मेरी लरिकाई नाहिं जानति
मारिपूतनास्वर्गपठाई॥ तृणावर्तमाहिंदियो गिराई
वत्सावकाअघासुरमास्यो॥ गिरिगोवर्द्धनकरपरधास्यौ
ऐसी हैमेरी लरिकाई॥ ॥जानवूझतुम देत भुलाई
तुमहीं हंसी करतिहौ ग्वारी॥ देखिदिखावत हौहढिगारी
वात जान कै भाषत नाहीं॥ आपहिं वैठी हौ वन माहीं
चोरीसदा वेचदधि जाहू॥ विना दान क्यों होतनिवाहू
अव तो आज पकरि मैं पाई॥ सवदोसन को लेडु चुकाई
सवै भलीतुम करी कन्हाई॥ वंधे असुर सो सुनी वड़ाई
गिरिधास्यौ वन खायहमारी॥ जानी हम सव वात तुम्हारी
मांगि लेहु अवहू दधि खाहू॥ होत दान सुनिहमको दाहू
हमैं कहत हौ चोरटी आप भये जो साह
वड़े भये चोरी करत अव लूटत हौ राह
लेइ दहीवलि जाउ हमको होत अवार अव
लियेदानकोनाउ एकवूंद नहिं पायहौ
यह तुम मोको कहा सुनाई॥ दधिमाखनसवलेहुछिंडाई
जोवनरूप अंगजो तुमरो॥ ताको दान लेउ गोसगरो
[illegible]॥ [illegible]

दही मही मोंसौ दिखरावौ ॥ नाहिन जोवन रूप बतावौ ॥
अंग अंग कौ दान गिनावौ ॥ लेखौ करि सब मोहि चुकावौ ॥
यह सुनि सब ग्वालिनि रुहरानी ॥ भये कान्ह तुम ऐसे दानी ॥
अंग अंग कौं दान चुकावत ॥ जोवन रूप हि दीठ लगावत ॥
जान परी अब गटीत लगाई ॥ जसुमति सों अब कहिहें जाई ॥
उरभान दृ उपर रिस करि कै ॥ चली सबै मटुकी सिर धरि कै ॥
तब हरि पीतांबर कटि कसि कै ॥ धरयो धाय आंचर पट हंसि कै ॥
रिस कै मटुकी लई छिड़ाई ॥ दधि माखन सब लियो लुटाई ॥
गहि भुज सब निरुक मोरी ॥ अंगिया फारि तनी गहि तोरी ॥

कहत कहेउ मानत नहीं ढीठ भई सब आइ ॥
दान देत झगरौ करत जोवन रूप लदाइ ॥
जो कहिहो घर जाय जननी नहीं पत्याय है
आवहुगी पछिताय निबहौगी पुनि कान्ह सों

भये कान्ह तुम निपट दुलारे ॥ देखहु फारे बसन हमारे ॥
तापर मांगत जोवन दाना ॥ यह अब लोक दसुन्यो न काना ॥
दधि माखन सब दियो लुटाई ॥ चली कहन जसुमति सों धाई ॥
यह कहि ग्वाल चली सब रिसभरी ॥ अबही तुमहिं संग बात कहि री ॥
यह सुनि हरि हंसि भौंह सकोरी ॥ गई उरहनी लै सब गोरी ॥
जसुमति सों तप जाय सुनायो ॥ कहत महरि सुत कौं सिषरायो ॥
आतहीं कान्ह भये अब ईतर ॥ रोकत युवतिन कौं बन भीतर ॥
दही दूध मब दियो लुटाई ॥ मांगत योवन दान कन्हाई ॥
चोली फारि हार सब तोरे ॥ गहि गहि आंचर पट झकझोरे ॥
ऐसो गोकुल भयो महर के ॥ जोबन दान लियो जिन घर के ॥
नित उत पात जात सहि नाहिन ॥ कहु लगि पीपर बन दें नाहिन ॥
कैसे गोरस बेचन जैये ॥ हरि मैं मारग चलन न पैये ॥

सुनतग्वालिनीकेवचनबोलीजसुमतिमात
मैंजानीतुमसवनकेउरअंतरकीबात ॥ ॥
आपफिरतइतरातकहतस्यामइतरभयौ
उरनलायनखघातउरहनकौदौरीफिरत
दसहिबरषकौकहाकन्हाई ॥ कहतुमसवमातीतरुनाई
दोषलगावतिस्यामहिंआनी ॥ कैसे धौंकहिआवतिवानी
हरिपरफिरतसवैमडरानी ॥ योवनमदमातीइतरानी
तुमकौंलाजलगतहैंनाहीं ॥ जाउसवैवैठौघरमाहीं
अहोमहरिऐसोनहिंकीजै ॥ विनबूझेगारीनहिंदीजै ॥
सुतवैसोमगचलननदेहीं ॥ मांगतदानदधदधिलेहीं
तुमहुलीजकरतिसुलभोरी ॥ ऐसेब्रजमेंवसिहैंकोरी ॥
तजिहैंआजहिंगांवतिहारौ ॥ वहुरिनसुनिहौनामहमारौ
ऐसेकहकहतडरपाई ॥ वसतनहीकिलअनताहिंजाई
मेरोकहाकछुघटजैहै ॥ झूठीवातनहींकोउसैहै ॥
जोवनदिनदैसवहिनवोरी ॥ तुमवांधतिआकाशहिंडोरी
मोसोंकहतिआपुतुमजैसी ॥ कोपतियायआनसुनेतैसी
बोलतिनहींसभारतुमसव मिलिभईगवारि
ऐसीकैसेंहरिकरैं वृथावढावतिरारि ॥
महरीसतहिरिसआयहमकूंबीभावैनहीं
जोतुमनाहिंपतियाहुवूझनदेखोआनसों ॥
तुमसुतकेकर्मनिनहिजानौ ॥ हावकौरेंटकआपनीजानौ
दसगायनकीकहावडाई ॥ आहिरजातसवएकहिमाई
महाढीठहरिमाननाहीं ॥ वनमैंखातगाहिरनाहीं
सखाऔरसंगलीन्हेडोलै ॥ वनकुंजनमेंकरतकलोलै
नेकुसकुचसंकानाहिंमानै ॥ सोईकरतजौकछुमनमानै

यहसुनिकहतनंदकीनारी॥कहतनमनकीवातदहारी

कहावसततुमेकहांकन्हाई॥कवहेरिवाहगहीवनजाई
कहतघातनहिनेकलजाह॥सुनिहैकहतिहारेनाह
मेरोकान्हअवहिअतिवारो॥तुमनहिअपनीओरनिहारो
ऐसीवातकहतहौआई॥झूठेदोषसहेउनहिजाई
नैकुनहींडरकरतईशको॥मनहुभयौमेरोवरषवसको
धन्यधन्यतुमकहतिहौमोकौंआवतिलाज
माखनमांगतरोयहरिदोषदेतिविनकाज
सुनहुमहरितुमवातहमारीसीखटोनाकछु
वनहितरुणहजातवालकहैआवतघरहि
एकदिवसकिनदेखौजाई॥वनमैंतरुकीओटछिपाई
हैहरिदसकेवीसवरषके॥देखहुअपनेनैननिरषिकै
जाइथलीमेसवदेख्यौहै॥एकएकदिनकरिलेख्यौहै
दसअरुवीसवातवनआई॥दौवलगावतिहैघरमाई
जरहिवरहियेप्रीतमतुम्हारी॥जोहरिकोनहिसकतिनिहारी
आपकरतढिगचावरजाई॥मोकोंसाखदिखावनआई
अहोमहरिकहियेकहतुमसों॥कहेविलगमानतिहौहमसों
सुतकीकानमानतुमलीनी॥गारीकोटिकहमकौदीनी
हमैंकहामोहनपियनाहीं॥जीवहुयुगयुगहरिव्रजमाहीं
कहाकरैजववढ़तरिझावैं॥तवहमतुम्हैकहनदयआवैं
भलोवाधहमकोतुमकीनो॥उलटयहिदोषहमारोदीनो
सुतकौहटकेतनेकनमाई॥हमहीसोंरिसकरतसदाई
कहाकरौतुमआइसवकहतिघरपुरवात
मोकौयहभावनहींतरुणतयहैसुहात

भक्त आपने गुन लेहु तुम न करौ हौ तिन माहिं
समुझि उरहनो देहु ऐसी मोसों मति कहौ॥

महरि वचन सुनि ग्वालि सकारी॥ निरखि तिन्है घर कौं लै ग्वारी॥
यह जसुमति गोपिन कौ क्यारी॥ कृष्ण प्रेम रस सागर सिगरी॥
कहत सुनत भक्तन सुखदाई॥ ब्रजवासी जन जीवन गाई॥
ब्रज पुर घर सबहिन सुनि पायौ॥ मोहन दधि कौ दान लगायौ॥
सब गोपिन मिलि रुचि उपजाई॥ जैये दधि लै जहां कन्हाई॥
यह अभिलाष सबन मन बाढ़ी॥ राख्यौ गुप्त न बाहिर काढ़ी॥
स्याम सबन कौं लियो बुलाई॥ कहे सबन सौं यौ समुझाई॥
काल्हि उठहु सब ग्वाल सवेरे॥ चलिहैं वृंदावन मग घेरे॥
प्रातहि यमुना के तट जाही॥ तरुन ढिंग ओट सब रहौ लुकाई॥
ब्रजयुवती मिलि आपस माहीं॥ नित प्रति दधि बेचन कौ जाहीं॥
राधा चन्द्रावलि कौ यूथा॥ ललिता दिक नागरी वरूथा॥
गोरस लै जबहीं सब आवैं॥ घेरि सबन तब दान चुकावैं॥

सुनि मन हरषे ग्वाल सब भली कही हरि बात
सांझ भई चलिये सदन काल्हि उठेंगे प्रात॥
निज निज घर सब आय मातु पितन कौं सुख दियौ
सोये सुख सों जाय रुचि सौं भोजन खाय कछु

प्रात उठे सब गोपकुमारा॥ जहां तहां बाल खुले किवारा॥
सुनी स्याम ग्वालन की वानी॥ जागत हू सोवत पर तानी॥
नंद द्वार टेरे सब आई॥ जागि कुंअर उठिये स्याम कन्हाई॥
ग्वाल टेर सुनि जसुदा माता॥ दियो जगाय स्याम सुखदाता॥
मात वचन सुनि अति अतुराई॥ उठे सेज ते कुंवर कन्हाई॥
लै पट पीत मुकुट सिर धारी॥ मुरली कर लै चले मुरारी॥
भली करी उठि प्रातहि आये॥ [illegible] तुम मन हुलसाये

आवन कहै है सब ब्रज भामिन ॥ घर घर तें दधि लै जगगामिन
हँसे सखा सब नारि बजाई ॥ मन में अति आनंद बढाई
कहत सबन सों है सिनंदलाला ॥ जाय द्रुमन सब घरो गुपाला
मुँह मूंदे सब रहो छिपाने ॥ जिहिं विधि युवतिन को अ
ब्रजही जानो युवति सब आई घनहि मँझाइ
कूद परो तब द्रुमन तें दय दये नंद दुहाइ
शंख शब्द घहराय कोजे मुरली शृंग धुनि
उर न जाय अकुलाय जैसे युवती गन सबै
घेर सखन इहि विधि हरपाई ॥ बहुरि तिन्है कहि रस मुसकाई
नितहि हमारे मारग आई ॥ दधि माखन बेचन है जाई
हरि कौ दान मारि निज जावौ ॥ आज दिये बिन जान न पावौ
ऐसें स्याम सखन समुझावत ॥ अपने मन की प्रीति बढावत
ब्रज वनितन लखि के सुख पाऊं ॥ तुम सों नाहिन कछु दुराऊं
इहि मारग बेचन दधि आवै ॥ अंतरगति मो सो हित लावै
भाषति है हैं वन सब बाला ॥ करत बात ऐसें नंदलाला
प्रात उठी सब गोप किशोरी ॥ सबकी सुरति स्याम की ओरी
अंग अंग आभूषण साजे ॥ केश संवारि चारु दृग आंजे
अँगिया अंग अनूप संवारी ॥ चित्र विचित्र बसन तन धारी
वेंदी भाल मांग मोतिन की ॥ अंग अंग छवि नग जोतिन की
दसन दमक अधरन अरुणाई ॥ चिबुक नीलकन की छवि छाई
गोरे तन छवि सुख सदन नव जोवन ब्रजनारि
लैले दधि निकसी सबै सुखमा वढी अपारि
जिन के पेंडे जाय भई ग्वालिनि इक ठौर सब
निज निज यूथ बनाइ दधि मटुकी सिर पर धरे
बेचन दही चली ब्रजनारी ॥ खट दस सहस गोप सुकुमारी

सबकेमनमेंगमिलहिंकन्हाई॥खटदससहसगोपसुकुमारी
करतजाहिगुनगानविहारी॥पगनूपुरकीधुनिअतिभारी
हरिजानीयुवतीआवतजब॥कहेउसखनदुमजायचढौअब
सुनतस्यामकेमुखसोंबैना॥धायचढीद्रुमबालकसैना
पंचसहस्रसखासमुदाई॥जहांतहांद्रुममेंरहेलुकाई॥
कछुकग्वालसंगराखिकन्हाई॥निकसगयेआपुनअगवाई
ठाढेभयेघेरिवनघाटी॥लैलैकरनसुमनकीसाटी
इहिअंतरआईब्रजनारी॥देखतधनलाग्योकछुभारी
पाछेइतेंलईहंकारी॥कहततिन्हैंअवहीतुमहारी
एकसंगजुरिभईतरुनीसब॥इतउतचकितचलींचितवतजब
आगेदृष्टपरेनंदनंदन॥मुकुटसीसतनचित्रितचंदन

लियेसखासंगमंगगहेठाढेयमुनातीर॥
चकितरहीयुवतीसबैलखिग्वालनकीभीर
भयोहरषउरमांहिंकहतवचनमुखभयसहित
आगेकैसेजाहिंमंगमेंगहोसांवरो॥

कोऊकहतिचलतिकौनाहीं॥कोऊकहतिघरहिफिरजाहीं
कोऊकहैकाकरैकन्हाई॥इनहूसोंकहाजायपराई
कोऊबोलउठीब्रजवाला॥लूटिलईहमकाल्हगुपाला
अतिहीढीठभयोहैकान्ह॥मांगतहैगोरसकोदान॥
सुनिऐसेंमोहनकेख्याल॥घरकौंफिरीसकलब्रजबाल
तबहरिग्वालनसैनबनाई॥कूदद्रुमविटपनतेंमहराई
जातिफिरीयुवतीब्रजगावहिं॥घेरिलईकोउजाननपावहिं
लखिग्वालनवनमेंचढ़आई॥अरबराइनहुतरहलाई॥
मानमृगपुतरीकरतारी॥कीनप्राणमोहनहितकारी
चकितहुमनचितईसबबाला॥इतउतनेनदेखिग्वाला

जो कहुं सुनत नेकु सी पैहै॥ वज्ररिपुमारिसबहिपरिहै
हम गृह राव जाय कहा बसत तुम्हारे गांव॥
ऐसी विधि जो कहत हौ को रहि है इहि ठांव
करत फिरत उतपात लिये सखा संग सबके
नाहिन नेकु डरात कठिन कंस को राज है
यह सुनि कान्ह उठे रिसयाई॥ लीनी कछु दधि बुध छिना
बसन छोरि तरु सों उरझायो॥ कछु दधि भोजन भूमि बहा
कहत जाय कंसहि गुहराबो॥ आजहि मोहि हमू सुत
मारौं एक पलक में बाही॥ मोको कहा बतावत नाहीं
अब तौ मोसों बैर बढ़ायो॥ लेहौं दान आपनो भायो
मेरे हाथ कहौं निबहन पैहौ॥ देखौं धौं अब कैसे जैहौ॥
तुम देखत रहिहौ हम जैहैं॥ गोरस कैसे बज्र घर ऐहैं॥
बाल ग्वाल न तुम को दैहैं॥ नेकहु तुम सौं नाहि डरैहैं॥
सुमिरहु तौ जन ऐहु जबहीं॥ नाहिं सभारि सकिहौ हरि तबहीं
एकु बूंद गोरस नहिं पैहौ॥ देखत ऐसही रहि जैहौ॥
धरिके जसुमति पै लै जैहौ॥ कहौ स्याम सुनि ग्वालन पैहै
आनो कहेउ हमारो अबहूं॥ हम पै दान न पैहौ कबहूं
गृहजन कहा बतावत हौ हम कंसहि लेहु बुलाइ
देखत ही तुम सबन के पूजा करौं बनाइ॥
जैहौ धौं केहि भांति अब तौ देऔंगो तुमहि
बात कहति अनखाति सूधे देती दान नहि
जो मानत नहिं कंसहि राजा॥ तौ अब भये तुमहि अराजा
तौ सिंहासन बैठत नाहीं॥ गाय चरावत कत बन माहीं
मोरपखन कौ मुकुट उतारौ॥ नृप किरीट माथे पर धारौ
पाहरन कहा गुंज के हारा॥ नृप भूषण किन करत सिंगारा

छत्र चवर सिर ऊपर राजै ॥ तजत सुरलि अवनो वतिचाजे
हमहू यह लखिकै सुखलीजै ॥ संगहि संग काज कछु कीजै
नगरत कहा दही के काजा ॥ लखि हमकौं उपजति है लाजा
आछी बुद्धि तुम्हारी नीकी ॥ तुम्हरे चित रजधानी नीकी
मेरो दासन दास कहावै ॥ सपनेहू यह ताहि न आवै
कंस मारिकै छत्र धराऊं ॥ कहा तुस यह सासु पुराऊं
ब्रजमें मेरौ राज सदाई ॥ और इहा काकी ठकुराई ॥
तुम कछु राज वडो करि मानौ ॥ मेरी प्रभुता कौं नहि जानौ

हमहू जानति है तुम्है लरिकाई तें कान्ह ॥
काहू कौं अपने वदन कीजत वहुत वखान
फिरत चरावत गाय कांधे कमरी करलकुट
देखी यह ठकुराइ कतिवढि२ वातें करति

यह कमरी कमरी तुम जानौ ॥ जितनी बुद्धि तितनौ अनुमानैं
या पर वारौं चीर पाटंवर ॥ तीनि लोक की यह आडंवर
ब्रम्हां भूल्यौ जाय निहारी ॥ सो कमरी कत निंदत वारी
कमरी के वल असुर संहारी ॥ कमरी तें सतन उद्धारी ॥
या कमरी तें सव सुख भोग ॥ जाति पांति यह मनसन योग ॥
सुनत हसी सव ब्रजकी वाला ॥ यह तुम सांच कही गोपाला
धनि२ वह कामरी तुम्हारी ॥ सव विधि तुम्है निवहन हारी
यहै ओढ़ि कै गाय चरावौ ॥ यहै सेज कै भूमि विछावौ
याही तें वरषा जल ढारौ ॥ शिसिर शीत याते निवारौ
याते ग्रीषम घाम वचावौ ॥ यहै उढकनी सीस वनावौ
यहै जानि यह ग्रह यह गाढ़ी ॥ यहौ सिखावति सव पै आढ़ी
यह जो कहन चहत है तुम सों ॥ कहौ सुत सुनयन सुनहु हमसे
करी जात अपनी प्रगरनी कै हमैं सहाय

हाहा करि हम नहीं छुड़ाये॥ ग्वालन संग न वच्छ चराये
नहीं गाय तुम दुही हमारी॥ ये सब बातियां रूठ तुमारी
भक्तन हित जन्मत जग माहीं॥ कर्म धर्म के मैं वस नाहीं
योग यज्ञ मन मैं नहिं ल्याऊं॥ दीन पुकार सुनत उठि धाऊं
भावाधीन रहौं सब पासा॥ और नहीं कछु मोकों आसा
ब्रम्हा कीट आदि के माहीं॥ व्यापक हौं समान सब ठाहीं

कहां कहां की बात कहि डरपावति हो नारि
स्वर्ग पताल हि एक करि बाधति बारहि बार
इहीं सुनावत काहि जो लायक तो आपु को
कौन मकौलि यह आहि बन मैं रोकत हौ तियन

केतिक दधि को दान कन्हाई॥ जेहि कारण युवती अरुझाई
दधि माखन सबही तुम लेहु॥ रीती जान हमें घर देहु॥
जो तुम याही में सुख पावौ॥ काहे को यह बात बनावौ
दधि माखन कह करौ तिहारो॥ सकल वणिज को दान निवारो
जो जो वणिज नित हित तुम ल्यावौ॥ लेखो करि सब मोहि चुकावौ
अब ऐसे कैसे घर जैहौ॥ ॥ जब लगि लेखो मुहिं न बुझैहौ
करति वणिज तुम नये बनाये॥ नित उठि जात जगात बचाये
सुनि बानी हरि नागर नट की॥ दै दै सैन युवति सब सटकी
मनही मन अति हर्ष बढ़ाई॥ बोली हरि सों सब मुसकाई
ऐसी कहौ बनज को अटके॥ अब लौं श्याम कहां तुम भटके
हमहू कोहि मन मांझ लजाहीं॥ कह मांगत दधि दान कन्हाई
वणिज हेतु रोकी अब जानी॥ तबहीं क्यौं न कही यह बानी

दो॰ हंसि बोली ब्रजकुंवरि कहा वणिज हम पास
कहेउ श्याम सों नाम धरि देहि दान हम तास॥
भूले कहा कन्हाय न जानौ वणिज युवती करत

दधि माखन चोले हौं छोरी ॥ उठि कर भुज गहि रझकोरी
तब पीतांबर कटि को प्यारी ॥ कहति भरा तुम ढीठ मुरारी
हरि रिस करि झंकहि गहि लीनी ॥ इहि मिस भेंट प्रेम की कीनी
टूटि गई प्यारी उर माला ॥ तब घेरे युवतिन नंदलाला ॥
गहि रझंक मवेत सव रूगरत रिस हि वढाइ
हसत सखा सव तार दे पकरे गये कन्हाइ
हांक दई नंद लाल तबहि सखन लल कार के
धाय परे सब ग्वाल लीने स्याम छुडाय तब
रिस करि बोले ग्वाल सयाने ॥ भई ढीठ हरि को नहि जाने
हम भई ढीठ भलो तुम कीन्हो ॥ देहो ग्वाब दई को चीन्हो
वनभीतर रोकी सब बाला ॥ देखो हमें कियो जंजाला ॥
बात कहन को तुम इत आवत ॥ बडे सुधर्मी आप कहावत
ऐसी साख सभा की भरि सब ॥ आवड गे नृपजीत सबै तब
जानी बात तुम्हारी सबकी ॥ तजइ ख्याल लरिकाई तबकी
जो युवतिन को हाथ लगे हो ॥ कियो आपनो तो तुम पैहो
जो यह बात घरन सुनि पैहैं ॥ मात पिता हमको कहकारि हैं
तासो मुक्ता हार कन्हाई ॥ घरहि कहा कहिहैं हम जाई
आपन भई सबै तुम भोरी ॥ हरि को दोष लगावति गोरी
जब तुम कटकी पीत पिछौरी ॥ तब उन मोतिन की लर तोरी
मागत दान स्याम कब सेतो ॥ तुम आबहि लाल ग्वाल नहिं देतो
लेहि छोरि सब ते अबहि देखत ही रहि जाऊ
रूक को राको री करति नंद नंदन हि डराऊ ॥
को त्रिभुवन के माहि मोहन के सर दूसरो ॥
तुम सब जानति नाहि नंद नवल ब्रजराज सुत
कहा बढाई इनको सारि सें ॥ इनको जानति नी कै सारि सें

नृपति त्रास वसुदेव निकारे॥ नंदजसोमति ने प्रति पारे॥
आये हैं सुभ घर के माहीं॥ काहू वदत नाहि ते नाहीं॥
पहिले जव उन भुजा झकोरी॥ तव हम रूटकी पीतपिछोरी
याते ढीठ कही तुम को हम॥ श्यामहि रिस कन हारभई तुम
इतने पर मानत नहिं हारी॥ तव ते हमें देत हो गारी॥
वहुत सही हम वात तुम्हारी॥ वणिज करत भ्रम रूगरत भारी
व्रज ऊपर मन मोहन दानी॥ अवलौं तुम यह वात नजानी
वोलि उठे तव कुंवर कन्हाई॥ अव नहि छोड़उं नंद दुहाई
अवतो दान आपनो लै हौं॥ तवही जान सवन कौं दैहौं
कौन वात यह कहत कन्हाई॥ मागत कहा जान नहिं जाई
फिर फिर करि करि नंद दुहाई॥ डरपावति हौ हमकौ जाई

डरपावहु तुम जाइ तिन्हजो कोउ तुमहि डराहिं
या डरपावत कौन कौं तुमतें घट हम नाहिं
देहैं जसुमति पाहिं तोरयो हार भली करी
यहौ वनत पै नाहिं इतनो धन कहं पाइहौ

एक हार मोहि कहा वतावौ॥ सव अंग भूषण काढ़ि दिखावौ
मोती माग जराऊ टीकौ॥ करनफूल वेसर नग नीकौ
कंठश्री दुलरी तिलरी गर॥ तापर और हार जो चौसर॥
सुभग हमेल विराटा वाजू॥ कंकण पोंचिन मुंदरिन साजू
कटि किंकिणि नूपुर अव देखौ॥ जे हरी छिपाये सव लेखौ
शोभा साज और अंग माहीं॥ सवको नाम लेत कौं नाहीं
याहू में कछु वांट तुम्हारौ॥ अचरज आय सुनो री मारौ
भूषण देखन सकत हमारे॥ याही लिये भये घट वारे॥
आपनहू कछु दई गढ़ाई॥ महरि जसोमति के नंदराई
आई पहिरि जितो हम जाहीं॥ यातें दूनो है घर माहीं॥

देखि परत कछु बहुत भुलाने ॥ बसुधौ सूनो नाखिल चाने
बाट कहां तौलों सब मेरी ॥ जौलों तुम नाहिं दान निबेरी
आभूषण को कह कहत बहुत वस्तु तुम पास ॥
मानो मैं जानत नहीं सो किन कहत प्रकास
लैहौ सब को दान समरु लेहिं गे बांटि पुनि
पैहौ तबही जान मैं तुम सौं सांची कहत
भये श्याम ऐसे रस नागर ॥ युवतिन में अब होत उजागर
कालहि गाय चरावन जाते ॥ छाकि मांगि ग्वालन संग खाते
कांधे कामरि लकुटी हाथा ॥ बन में फिरते बछरुन साथा
आज पीतपट कट कसियाये ॥ लै कर लकुटी बड़े कहाये ॥
भये कछू अब नवल सुजाना ॥ मांगत युवतिन सौं यह दाना
देहौ दान कि झगरति हो तुम ॥ बहुत तुम्हारी बात सुनी हम
प्रथम दान जंजाल निवारिये ॥ ता पाछे तुम हमहिं निवारिये
कहत कहा निदरे से हो तुम ॥ सहस हि बाल कहति तुम सों हम
आदि हि ते तुम को पहिचाने ॥ दान कहा सो हम नहिं जाने
ग्वालनि चली सबै रिस कारि कारि ॥ दधि मटुकी माथे पर धरि धरि
तब हरि गहि अंबर रू कारी ॥ जाति कहा हो री बन जारी
इतनो बणिज लिये तुम जाहू ॥ बिना दान क्यों होत निबाहू ॥
नाम तुम्हारे बणिज के सब मैं देउ बताय ॥
देउ दान तब मोहि तुम देखहु सब समुझाय ॥
सब क्यौं छांड़ौ जात एक होय तौ छोड़िये ॥
तुम बिचार यह बात देखहु अपने चित्त मैं ॥
एती वस्तु लिये तुम जाओ ॥ दान देति मेरी खिजराओ
मत्त गयंद तुरंगम तुम सौं ॥ कैसे दुरत दुराये हम सौं ॥
हंस मोर केहर मृग वारे ॥ कनक कलस मद रस सौं भारे

वाधेऊखलजबहिंजसोदा॥ हमहिंकुड़ायलियेतबगोरा
अबभये बड़ेवढ़ीचतुराई ॥ तातेजोबनदान सुनाई ॥
लरकाई़कीवात वखाने॥ कैसीभई कहा हम जाने ॥
कबधौं खायोमाखनचोरी॥ भैयाधौंबांधे कबडोरी॥
नेकहू ताकी सुधिनहिंजाने॥ मानअमानन तबहमजाने
भूलेसुरेकोज्ञान न होई॥ अपनोपरकछु समरूनकोई
खेलत खात हरषही माहीं॥ वाल पने के दिवस विहाहीं
दो॰ अबमनी सुरतकरतनहीन्हातियमुनकेतीर
कदमचढाये सवनके जब मे भूषण चीर॥
जलमेंरही कपाय बिनावसन नागी सबै
पुनिपुनिहाह कराय दिये वसन मेसवनतव
बिनावसन वाहर सब आई॥ हाथ जोरि सबविनयसुनाई
कैसीभांतिभई तब सबकी॥ सोसुधिभूलिगईअबतबकी
मोकौंकहतिचोरिदधिखायो॥ऊखलसौं हमजायछुड़ायो
भेदवचनजब कहे विहारी॥ सुनिके हँसिसकुची ब्रजनारी
कहतभयेअतिनिलजकन्हाई॥ ऐसी कहतनसकुचत राई॥
जाइ अपने लोगन के आगे॥ झूंठीबातबनावन लागे॥
करतहँसीतुम सबनसुनाई॥ निज निजगृहसबकोहिहैंभाई
झूंठीवातकहा हम जाने ॥ हमतौसाची सदा बखाने॥
जैसीभांति भजैमोहि कोई॥ मानत मैं ताकौंतैसेई ॥
जोझूंठीमोकौंतुम जानो ॥ तौकिनमेरीहितवपठानो
जोतुमअपने मन में ठानी॥ मैंअंतरजामी सबजानी॥
अबकी इतौनिवुरमनकीनी॥ काहेदानआतनहिंदीनी
दानसुने रिस होतिहै यहनाहिंहमहिंसुहाइ
भलीबुरीअबजोकहौसोसहिलेहिंकन्हाइ

छाँड़ि देहु सब जाहि सुनिये मोहनलाल अब
भई वेर बनमाहि मात पिता खिझहैं हमैं॥

काहे कौं तुम करति अवारी॥ दधि बेंचहु बन जाहि सवारी
मैं कहु करौं तुम्हैं यह भावत॥ लेखो करि लबदाव चुकावत
सुद्ध सुभाव समुझ सब कोई॥ लेखो करि दैहौं मुहि जोई
तब सोइ तुम सौं मैं लै लेहौं॥ तबही तुम्हें जान पुनि देहौं
काहे कौं हम सौं हरि लागत॥ जान न परत कहा तुम मांगत
बातन कछु जनावत नाहीं॥ लेखो कहा करत हम पाहीं
निपट रहि परे हमारे ख्याल॥ इन बातन कछु पावत लाल॥
अब तुम निपट करी बडताई॥ सुनि हंसि हैं ब्रज लोग लुगाई
मारग जिन रोंकौ हम पाहीं॥ घर तें लीजो दान उगाही॥
अब लौं यह कियो तुम लेखो॥ हम तुम री विचार सब देखौ
मोकों ऐसी बात सिखावत॥ कर कंकण दरपनहिं दिखावत
तुम्हरी बुद्धि दान हम लैहैं॥ काहे न जान तुम्हें हम दैहैं॥

आप भई हौ चतुर सब मोकों करति गंवारि॥
उगहत फिरि हैं दान हम दाढ़े कहि हैं द्वार॥
तुम्हैं देउं घर जान फेरि कहौ पाऊं कहा॥
नामै पैहौ दान नृप हि ज्वाब कह देउंगो॥

भली भई नृप मान्यो तुमहूं॥ चलि हैं कंस हि पै हम तुमहूं
तब तें लेन कहत हौ दानहि॥ नंद महरि की करि कै आनहि
हम हूं अब लौं ऐसी जानी॥ भये स्याम घर ही से दानी॥
अब जाने उ तुम कंस पठाये॥ नृप तें दान पहरि तुम आये
सुनि हरि ये गोपिन के बैन॥ हंसे कछुक तिरछे करि नैन
सो छवि निरषि कहति ब्रज नारी॥ कहा हंसे मुख मारि मुरारी
सोई कहौ मनहिं जो आई॥ तुम कों जसुमति नंद दुहाई

औरसोहतुम कौ गोधन की ॥ साची बात कहोतुममनकी
हमसे कहा हमसों कछु रीमे ॥ कैधौं कछु मन होमन खीजे
यहसुनिअधिकहसे गोपाला ॥ कहेंश्री दामा सोनंदलाल
यहअचरज इनकौतुमहेरो ॥ कहतिकहा तुमहोसुतकोरो
ऐसीबातनसौंहदिखावत ॥ तानेअधिकहसोमोहिआवत
तवहीश्रीदामातियनसोवोलउठेउमुसकाय
हंसनि स्यामतुमसममिकेवूमतिसोंह दिखाय
हम न दिखावैं आन हमस्रतुमऊनिजसगोमोत
यहैआनसीवान्तु यारे मैं खिसियात तुम ॥
सहजसहतनाहिनसकुचैये ॥ नाहिन लोगन सोंहदिवैये
वे हैं दानी प्रभु सवही के ॥ देऊ दान मागत कवही के
हमजानत वेकुंवर कन्हाई ॥ प्रभुतुम्हरेसुखअवसुनिपाई
होतिनहीं प्रभुता यहभाँती ॥ दहीमहीके भयेजगाती
वेगकुरवुम्हरीशिखकाई ॥ जानेप्रभुप्परूसव प्रभुताई
दधिखायाअरुभूषणतोरे ॥ छांडिदेऊप्पवदई निहोरे
जोकछुवच्यो सोऊप्पव लीजे ॥ क्योंहूजानहमेघर दीजे
तव हसिवोले स्यामसुजाना ॥ तुम घरजाहु देय कै दाना
आयौ हों पठयो मैं जाकों ॥ देउं कहाँ लैके पुनिताकौं
अवहीपठवै मोहिवुलाई ॥ तव ताके सन्मुखकोजाई
तुमसुख करौजाइ घरमाहीं ॥ नृपकोगारिमारकोखाई
जव नृप वरमोको अटकावे ॥ तवपुनितुम विनकोनछुड़ावै
लेतनामसुख नृपतिकोआसुख निदरसोजाइ
अपुनतौनृप नृपनिकेअव कहसमुमे लाइ
लियोकसको नाम ऐसीतुमहिंनवूमिये ॥
भलस्याम वतिजाकजोहिन दियेतेहिवदिये

जब हम कंस दुहाई दीन्ही॥ तबतौ नृपपर अतिरिस कीन्ही
अबे कहा नृपको सुधि आई॥ जो तुम ऐसे डरे कन्हाई॥
कहा कहेउ कछु जानन पायौ॥ कब हम कंसहि सीस नवायौ
कब हम नाम कंस कौ लीनो॥ कंसत्रास कबधौं हम कीनो
निपट भई तुम्ह वारि गंवारी॥ बसत हमारे गांव मंझारी॥
कितक कंस जाको हम मानै॥ कहा त्रास ताको उर आनै
तुम्हरे मनै बात यह आवत॥ कंस नृपति के हम कहवावत
तौ तुम कही कौन नृप जाके॥ आपुन कहवावत हौ ताके
ताको नाम हमहूं सुनि पावैं॥ हमहूं पुनि ताके कहवावैं
यह संसार लोक नृप माहीं॥ दूजा कंस नृपति तें नाहीं
सो नृप बसत कहां सो उ जानै॥ तौ हम सब ताही को मानै
यह सुनि हम अब अति डर पायौ॥ के धौं रूठि हहमहि डरायौ

जा नृप के हम हैं अरी कोन हिं जानत ताहि
जड़ चेतन नर नारि सब तिहूं भुवन बस जाहि
बसत सुमन पुर माहिं कहं लगि तिन्है प्रसंसिये
सब मानत है ताहि तिन पठयो मोहि यान है

सुनत गूढ़ मोहन की बानी॥ बोली ब्रजसुन्दरी सयानी
जोति तुम्हारे नृप की पाई॥ अबलौ राखी कहां छिपाई
जैसे तुम तैसेऊ वे हैं॥ ॥ एक रूप गुण के दोउ हैं॥
यह अनुमान कियो मन मोहम॥ एकै दिन दोऊ जन्मे तुम॥
जैसी प्रजा तैसेई राजा॥ ॥बन्यौ भल्यो अब संग समाजा
चोरी ठगी निपुण गुण दोऊ॥ यापर तरको और न कोऊ
बोलत नाहिंन बात संभारी॥ ठगति फिरति ठगिनी तुम नारी
भई ढीठ नहिं नेक विचारो॥ आवत मुख सोई कहि डारो
अपने गुण औरनपर डारो॥ जाति जनावति है है गारी

हमभई ठगिनीअरुवटमारी॥ तुमभयेकान्हसुधर्मीभारी॥
आपनेनृपकोंयेहसुनावो॥ ऐसेसियचुगलीजायलगावो॥
राजाबड़ेजानयहपाई॥ त्यावूहहमपरधोसचढ़ाई॥
तुमतौठगअछेवनेवनमेंरोंकीनारि॥
हमैंकहौकाकौंठग्योकोहमडारीमारि
तुमहींजानतस्यामयंत्रमंत्रटोनाठगी
ठगतफिरतसबवामआपनढंगऔरनकहत
मौनगहौवातेंसबपाई॥ यहेजानिहमपरचढ़िआई॥
जोचाहौसोईकहिडारौ॥ हमनहिंमानैंकिलुगतिहारे॥
तुममोहींकौंदोषलगावौ॥ मेंतौनृपकोपठयोआवौ॥
जोवनरूपलियेतुमद्रूतहौ॥ आवतिहौदुहिआरगनिर्त्तहौ॥
सोचनदूतनजायसुनायौ॥ नवनृपरिसकरिमोहिबुलायौ॥
सोसबमहलनतेंनृपराई॥ वैठौसिंहासनतरुणाई॥
तुरतहिमोहिदानपहिरायो॥ देवीरातुमपासपठायो॥
तिन्कोनामअनंगभुवाला॥ उनकौंदानदेहुब्रजवाला॥
तिनकीआनकहतहौकौने॥ पैहौजानदानकेदीने॥
सुनियहमोहनकेमुखवानी॥ प्रेमसिंधुयुवतीभगनानी॥
कामनृपातिकीफिरीदुहाई॥ अटकेउजौवनरूपहिआई॥
कोहमकहांरहतिकहआई॥ यहसुधिवुधितनदशाभुलाई॥
त्रसतभईडरमदनकेनैंनमूंदिधरिध्यान
कहतकान्हअवआरणहमलीजेसरवसदान
ऐसेंकहिमनमाहिंदेहदसाभूलीसवै॥
लेहुस्यामवलिजाहियहधनतुमहितसखिवौ
जोवनरूपनाहिंतुमलायक॥ सकुचतितुम्हेंदेतिब्रजनायक॥
नवलकिशोररूपगुणआगर॥ कहिस्यामसुन्दरवरनागर॥

यह जोवन धन तुम ढिग ऐसें॥ जलधि निकट जलकणिका जैसे
ध्यान मगन ह्वै हिं विधि ब्रजनारी॥ मनहीं मन विनवत महतारी
अंतरजामी हरि सब जानें॥ मनहीं की करनी पहिचानें
मनहीं सबन मिले सुखदाई॥ तनकी सुरति सबन तब आई
खुल गये नैन ध्यान तें तबहीं॥ देखे मोहन सन्मुख सबहीं
तब जान्यौ हम बन में ठाढी॥ सकुच गई अति अचरज बाढी
कहति परस्पर आप समाहीं॥ कहा हती हम जान न जाहीं
स्याम विना यह चरित करै को॥ ऐसी विधि करि मनहिं हरै को
रही चकित सी सब ब्रजनारी॥ बोल उठे तब कुंज विहारी॥
कहा ठगी सी हौ ब्रजबाला॥ परो कहा उर सोच विशाला

कह्यौ दान लेख्यौ कछू रह्यो जहां तहं सोच॥
प्रगट सुनावो सो हमें दूर करौ सब सोच॥
वडरि न रोकै कोय या मग में कोऊ तुम्हैं॥
निसिवासर भय खोय सुख सौं आवहु जाहु नित

हमैं और रोकै सो को है॥ रोकन हार सुवन नंद को है
टोना डारत सीस हमारे॥ आप रहत ठाढे ह्वै न्यारे॥
जाके काम नृपति को जोरा॥ ठगत फिरत युवतिन बरजोरा
सुनत स्याम बूझिय नहिं ऐसी॥ तुमकौं बान परी यह कैसी
कैसेहूं अब कृपा करौ हरि॥ जाहि सबै अपने अपने घरि
हानू मान घर को सब जाहू॥ वडरि न मेरो कोगो काहू॥
मैं हूं जानत हौं कछु लेखौ॥ तुमहूं आप समुझि मन देखौ
पिछलो देहु निबेर आज सब॥ आगे पुनि दीजो जानो जब
अब में भली कहत हौं तुमको॥ जो मानो ग्वालिनि तुम हमको
को जाने हरि चरित तुम्हारे॥ अहो रसिक वर नंद दुलारे
हमरो सर्वस मन अपनायो॥ अजहूं दान नहीं तुम पायो

लेखो करि लीजो मन भायो ॥ खाऊ कछू दधि हम सुख पायें

मख माखन लायक तुम्हें सखन सहित मिलि खाउ
सुख पावै हम देखिके लीजे दान उगाहि ॥
अब दधि दानी नाउं तुम्हरो प्रगट बखानि हो
खाऊ दही बलि जाउं ल्याई हम तुम्हरे लिये

तब हरि हँसि सब सखन बुलाई ॥ बैठे रवि मंडली सुहाई
दोनो बहुत पलास केल्याये ॥ शोभित सबके करन सुहाये
सुन्दर हरि सुन्दर सब ग्वाला ॥ सुन्दर दधि परसत ब्रजबाला
भक्त भाव के हाथ बिकाने ॥ ग्वालन संग खात रुचि माने
निज मटुकिन ते लै सब ग्वारी ॥ देति करति उर आनंद भारी
स्याम यतूखिन सौं मुख नावैं ॥ निरखि २ ग्वालिनि सुख पावैं
धन्य आपापुन को जान्यो ॥ सुफल जन्म सबहुन करि मान्यो
कहति धन्य यह दधि अरु माखन ॥ खात कान्ह जाकौ अभिलाखन
जो हम साध करत ही मन मे ॥ सो सुख पायो हरि सग बन मे
अति आनंद मगन सब ग्वारे ॥ नंदनंदन पर तन मन वारे ॥
प्यारी सो माखन हरि मांगत ॥ देखें तुम्हरो कैसो लागत
औरन की मटुकी को खायो ॥ तुम्हरे दधि को स्वादन पायो

श्रीवृषभानिकुंवारि तब दधि ल्याई मुसकाय
अपने कर अधरन परस दीनौ बिहसि खवाय
प्यारी की दधि खाय अलि पुचि नैं मोहन बिहसि
मधुरे कही सुनाय मीठो है यह सबन तें ॥

गोपिन के हित माखन खाहीं ॥ प्रेम विवस नहिं नेक अघाहीं
वे सिय गोरस भरी कमोरी ॥ परसत सबै होत नहिं थोरी
ग्वालन सहित स्याम दधि खाहीं ॥ परम हर्ष सबके मन माहीं
हसत परस्पर सखा सयानी ॥ मीठो कहि २ स्वाद बखानै

हरिहँसि सबके चितहि चुरावैं ॥ परमानंद सबन उपजावैं ।
विलसत ब्रजविलास सबवारी ॥ दधिदानी प्रभु कुंजविहारी
सुरगण तियन सहित नभमाहीं ॥ निरखि २ मनमाहिं सिहाहीं
धनि २ ब्रजकी युवतिसभागी ॥ खातब्रह्म जिनतें दधिमांगी
जाकारण शिवध्यानलगावैं ॥ शेषसहसमुखजाकों गावैं ॥
मनबुधिवचनअगोचरजोई ॥ जाकोपारनपावैकोई ॥
नारदादिजाकेगुणगावैं ॥ निगमनेतिकरि अंत न पावैं
गुणातीतअविगतिअविनासी ॥ सोप्रभुब्रजमैंप्रगटविलासी
छं० प्रगटसोप्रभुब्रजविलासी जाहिमुनिजन ध्यावहीं
योगजपतपनेमसंयमकरिसमाधिलगावहीं ॥
रूपरेखनवरणजाके आदि अंत न पाइये ॥
भक्तवस सोब्रम्हपूरणगोपवल्लभ गाइये ॥
कोटिकोटिब्रम्हांडजाके रोमप्रतिश्रुतिगावहीं
कोटब्रम्हप्रयंतजलथल आपसबउपजावहीं
आपकरता आपहरता आपही पालन करै ॥
खातसोप्रभुदानदधिलेगोपिकनके मन हरै
धन्यब्रजधनिगोपगोपी धन्यमन पावनमही
धन्यमोहनदानमांगत दूधनितमाखनमही ॥
धन्यब्रजइकपलककोंसुखऔरयहत्रिभुवननहीं
कहतसुरमुनिहरषिपुनि २ सुमन सुन्दरवरषहीं
कान्हगोपीग्वाल द्वैनहिं एकहीबहुतनधरैं
भक्तजनहितविरदजाकोंअमितलीलाविस्तरैं
ब्रजविलासहुलासहरिकोंनित्यनिगमागमकहैं
दासब्रजवासीसदायहगायआनंदपदलहैं
दो० दानचरितगोपालकोंमानविचित्ररसखान

वेद भेव पावै नहीं कवि किनि सकै बषान
गावत सुनत सुजान दधिदानी लीला रुचिर
प्रेमभक्ति कौ दान ब्रजवासी जन पावहीं ॥
ब्रजललना यौं हरिहिं सुनावै ॥ दूध दही माखन अरु ल्यावै
मटकिन तें लैलै हम देहीं ॥ खाउ स्याम तुम हम सुख लेहीं
गोरस बहुत हमारे घर घर ॥ लीजै दान पाछिलो भरि भरि
बहुतै गोरस जो तुम खायौ ॥ सो सौ दान आजु कौ पायौ
लेहु सबै अपनौ करि लेखौ ॥ फिरत पाइ हौ मागे मेरौ
स्याम कहौ अब भई हमारी ॥ मन हिं भई परतीति तुम्हारी
प्रीति भई हम सो तुम सो अब ॥ लै हैं मांगि चाहि हैं जब जब
निधरक अब बेंचहु दधि जाई ॥ घाटबाट कछु डर नहिं राई
ग्वालिनि भई स्याम बस माहीं ॥ घर कौं जात बनत है नाहीं
चकित रही सब ब्रज की नारी ॥ कहत एक सो एक बिचारी
सुनौं सखी मोहन कह कीनो ॥ दान लियौ कै मन हरि लीनो
यह लौं हम नहीं बदी सयानी ॥ बूझौ धौं इन सौं यह बानी
बूझनि कौं उमगी सबै मोहन सौं यह बात ॥
निकट जात रहि जात पुनि सकुच मगन ह्वै जात
मन हीं मन सकुचात कहियै कैसे स्याम सो ॥
कहत बनत नहिं बात प्रेम बिवस तरुणी सबै
सुनौ बात मोहन इक हम सो ॥ ढीठौ बहुत कियौ हम तुम सो
छमा करौ सो चूक हमारी ॥ अहो स्याम हम दासि तिहारी
हँसि हँसि कही कटुक हम बानी ॥ तुम हौं रिझावत हित मन आनी
कछु हम सौं डर सो नाहीं ॥ ॥ अति आनंद तुम सों मन माहीं
दधि कौ दान और जो जान्यौ ॥ सबै तु तुम्हारो कर हम मान्यौ
कहो स्याम तुम यह कह कीनो ॥ दान लियौ कै मन हरि लीनो ॥

हमतुमतेंकछु भेद न राख्यौ॥ कीनौसबै तुम्हारौभाख्यौ
यहकरनीतुमहीं अबजानौ॥ भलीबुरीजौ करी कछुमानौ
जोजासौंअंतर नाहिं राखै॥ सो तासौं कछुअंतर भाखै॥
नंदनंदनतुम अंतरजामी॥ वेदउपनिषद साखिबखानी॥
सुनहुबात युवती सब मेरी॥ तुमहितकारिरहौमोहिघेरी
तुमतें दूरहोत मैं नाहीं॥ रहत तुम्हारे निकट सदाही

तुमकारणवैकुंठतजिप्रगटतहौंब्रजआय
वृंदावनतुम्हरौमिलनयहनबिसारयौजाय
एकप्राण द्वै देह अंतरकहू नजानिहौं॥
यहनकह्यो अब नेह कतभूतल ब्रजबासकरि

अब घरजाउदान मैं पायौ॥ जानत यह लेख्यौ नियरायौ
हँसिहँसिजो भाषत बनवारी॥ कहन भई सब ब्रजकीनारी
परतनमनहिं विनाक्यौं जाई॥ करतकहा मोहनचतुराई॥
सबतन परमनहीं है राजा॥ जो कछु करै होइ सोकाजा
सोतौमनराख्यौ तुम गोई॥ घरकोजानकौनविधिहोई
वंदीगणमन के आधीना॥ चलतनहीं पगमनहिं बिहीना
जोतुम प्रीति करी मन मोहन॥ तौदुविधाक्यौंलाई गोहन
यहतौतुमजानौ ब्रजनाथा॥ घरहमजाहिदेहमनसाथा
मनभीतर मैं सबै मनायो॥ तुमही लैमोहिंनहाँ छिपायौ
कहतकहा वह दोषतुम्हारी॥ अजहूतजउहाँ कहैं सुकुमारी
यहअपनो मनलै घर जाहौ॥ लोकलाजडर जा पछताहौ
तौ अब हमैं छाँडिकिन देहू॥ हमकरिहैं अंतर किन नेहू

तातें धरती होय निज तजि दीजे सो बात॥
दीनौं मन मैं वासतव अब मनको पछतात
जबमन दीनौ मोहि तुमही लीनौ मोहितब

जोनसेहूमनरखोहितोमैंहूंप्रैहौंअनत॥
सुनहूंस्यामऐसी नहिकहिये॥सदेहमारे मन मे रहिये॥
तुमहीविना धृकमनसरवरघर॥तुमविन धृकसुतत्रातनार
धृकतुमप्रेमविनापितुमाता॥ तुमविहीन धृकसुतपतिभ्रात
धृकजीवन तुम विनसंसार॥धृकसुषतुम विननंदकुमार
धृकरसना तुमगुणनहिंगावें॥धृकस्रुतितुम्हरीकथानभावें
धृकलोचन जिनतुम ननिहारे॥धृकविचारजोतुमनविचारे
धृकदिन राततुम्हैं विनजाई॥धृकस्वासातुम विना विहाई
सोसव धृकजामेतुमनाहीं॥ तनमन धनतुम विना वृथाहीं
ऐसेकहितनदसाविसारी॥ भईसनेह मगन सवग्वारी
कवहू धरवनजानविचारे॥कवहूहरिकीओर निहारें॥
दधिभाजनलैसिर पर धारें॥कतहू धरणीं फेरउतारें॥
रीतीमटुकिन मेंकछुनाहीं॥कवहूंविचाररहतिमनमाहीं
विहसिकहेउतवसांवरेजाहुघरानव्रजनारि
सकुचतपिछिलेदानकीमैंलैहौंनिरवारि॥
ऐसेवचन सुनाय सखन सहित हरिघरगये
लैगेचित्त चुराय सुवतिन दानमनाय कै

अथगोपिनके प्रेमकीउनमत्तअवस्थालीला

रीतीमटुकीसिर पर धारी॥ चलीसवैउठिगोपकुमारी
एकएककीसुधिकछुनाहीं॥जाननिनहीं कहांहमजाहीं
जड़चेतनकछुनहिपहिचानें॥वनगृहकछुविचारनजानें
लोकवेदमें ईदाहोऊ॥ ॥आपसहित भूलीसव कोई
वेचतदधिवनहीमेंडोलें॥लेहुदहीकवहूकहिवोलें॥
कहततुमनवोलतक्योनाहीं॥लेहेदधिकैहमपैसाहीं

तरुतरु सों पूंछति इहि भांती ॥ वन मैं फिरत प्रेम रस मांती
मिलत परस्पर विवस निहारी ॥ कहति फिरति क्यों वन में वारी
तिन्है कहति अपनी सुधि नाहीं ॥ सो कछु नहिं समुझत मन माहीं
दधि भाजन रीते सिर धारैं ॥ भरी प्रेम तन दसा विसारैं ॥
कबहूं यमुना के तट जाहीं ॥ फिरत कबहूं कुंजन के माहीं
कबहूं बंसी बट तर आवैं ॥ गई कहूं नंद हरहिं बुलावैं
लीजै गोरस दान हरि कहं धौं रहे छिपाइ ॥
डर नि तुम्हारे जात नहिं तुम दधि लेत छिपाइ
लेहु आपनो दान पुनि रिस करि उठि धाइहै
हमैं न देहै जान वन मैं हम साढ़ी सबै ॥ ॥
बैठि गई मटुकी धरि तबहीं ॥ जानति घर मैं आई अबहीं
सखा संग लीने हरि ऐहैं ॥ दधि माखन को दान चुकैहैं
दधिहि दुराबति अंतर तरिकै ॥ दीठ गई मटुकिन मैं परिकै
रीती मटुकी सबन निहारी ॥ गई हरि उर मैं सब नारी ॥
जहं तहं कहत उठी सब ग्वाली ॥ गोरस हरि कै गयो कहुं आली
कोउ इक कहति कान्ह ढरकायो ॥ कोउ कहै सखन संग हरि खायो
भई सुरत कछु तब तन माहीं ॥ गई घरहिं हम तब तैं नाहीं
सकुच भई कछु गुरुजन डरतैं ॥ प्रातहिं तैं आई हम घरतैं ॥
रही कहां तब तैं वन माहीं ॥ यह तो सुरत हमें कछु नाहीं
जब हरि सखन संग दधि खाई ॥ गये बछरि वन कुंवर कन्हाई
तब लौं किलउ सुधि हम पाई ॥ भई कहा पुनि जानति नाई ॥
जानि परी हम कौं यह तोरी ॥ हरि गये सिर स्याम ठगोरी ॥
स्याम बिना यह को करै लायो दधि कौ दान
तन सुधि भूली तबहि तें वा की मृदु मुसुकानि
मन हरि लीनो स्याम ता बिन बिन है कौन विधि

ऐसे कहि सब धाम भर की आन बिचार हीं

मन हरि सों तन धर हिं चितावें ॥ ज्यौं गज मत्त चलन न पावें
स्याम रूप रस मद सौं मातो ॥ कुलमर्याद महा व्रत हातो
कर सनेह बंधन सों तोस्यौ ॥ सुरैन लाज कुंत कौं मोस्यौ ॥
गुरु जन अंकुश की सुधि आवै ॥ तब तन घर कौं पांव चलावै
ऐसे गई सदन ब्रजबाला ॥ नहिं भावत स्याम बिन नंदलाल
बूझत गुरुजन जब कछु तिनसों ॥ औरै बात बनावति तिनसे
गारी देत सुनत नाहिं कोऊ ॥ श्रवण भरे हरि पूरे दोऊ ॥
मात पिता बहु त्रास दिखावै ॥ नेक नहीं सो उर में ल्यावै ॥
बारबार जननी समुझावति ॥ काहे कौं तुम हमहिं लजावति
जहां तहां काहे तुम जावौ ॥ नहिं अपनी कुल कानि बिचावौ
दधि बेचौ घर सूधे आवौ ॥ काहे इतनी बिलम लगावौ
बूझे ज्वाब देति तुम नाहीं ॥ बसी कहा तुमरे मन माहीं

ऐसें सिखवत मातु पितु सैन करति कछु कानि ।
लागत हैं तिन कैं बचन उर में बान समान ॥
तिन्हैं कहत मन माहिं धक धक अपनी बुद्धि कौं
जिन्हैं स्याम प्रिय नाहिं तिन्हैं बनै त्यागे भले ॥

जिनकौं हरि की प्रीति न भावै ॥ तिनकौं सुख जिनि बिधि दिखरावै
ऐसे बिनय करति बिधि माहीं ॥ गुरुजन कौं निंदत मन माहीं
नेक नहीं घर मौं मन लागत ॥ बिसरत स्याम न सोवत जागत
नैन स्याम दरसन रस अटके ॥ श्रवन बचन रस तें नहिं सटके
रसना स्याम बिना नहिं बोलै ॥ मन चंचल संग ही संग डोलै
तासौं अंग सुगंध सुभानी ॥ सुरत स्याम के रूप समानी
चरन चलत याही दिस तेंही ॥ जिहि दिसि सुन्दर स्याम सनेही
लोक लाज कुल कान बहाई ॥ रंगी स्याम के रंग सुहाई

प्रातचली दधि लै ब्रज माहीं ॥ इन्द्री गण मन बुधि बस नाहीं ॥
तन लै निकसी बेंचन गोरस ॥ रसना मैं अटक्यौ हरि कौ जस ॥
दधि कौ नाम भूलि गई बाला ॥ कहति लेउ कोउ गोपाला ॥
भीज रहेउ मन मोहन के रस ॥ व्यापि गई उर माहिं दसादस ॥

फँसी सबै खग वृंद ज्यौं हरि छवि लटकन जाल
तरफराति तामैं परी निकसि सकति नहिं बाल
बोलति मुखनि संभारि पान किये जिमि वारुणी
बिथुरी अलक लिलार पग डगमग जित तित परै

दधि बेंचति ब्रज बीथिनि डोलै ॥ अलबल बचन बदन तें बोलै ॥
गोरस लेन बुलावत कोई ॥ तिनकी बात सुनत नहिं कोई ॥
क्षण कछु चेत करत मन माहीं ॥ गोरस लेत आज कोउ नाहीं ॥
बोल उठति पुनि लेउ गुपालहि ॥ अटकि रहो मन वाही ख्यालहि ॥
लेउ लेउ कोई बन माली ॥ गलिन गलिन यों बोलति बानी ॥
कोउ कहै स्याम कृष्ण बनवारी ॥ कोउ कहै लाल गोवर्धनधारी ॥
कोउ कहै रटति दाम हरि लायो ॥ कहूँ कहूँ कि तुम हि चलायो ॥
देह गेह की सुरति बिसारी ॥ फिरति सीस मटुकी दधि धारी ॥
जाहि देह की सुधि कछु होई ॥ दधि को नाम लेत सब सोई ॥
इहि विधि बेंचत सब दधि डोलैं ॥ आप बिकानी बिन ही मोलैं ॥
स्याम बिना कछु और न भावै ॥ कोऊ कितनो कहि समुझावै ॥
तेरे दरसन हित मति भई भोरी ॥ अंतर लगी सुरति की डोरी ॥

प्रगटेउ पूरण नेह उर जित देखैं तित स्याम
समुझाई समुझै नहीं सिख दै या कौं ग्राम
ज्यौं दीपक घर माहिं बाहिर नाहिं देख्यौ परै
गुप्त होत सो नाहिं जब तृण कै दाव भयो

इहि विधि मगन सकल ब्रजनारी ॥ [illegible]

सकल प्रेम की मूरति पूरी॥ कोई तिनमैं नाहिं अधूरी॥
एक सदा सबही को मानो॥ कहँलगि तिन कौं प्रेम बखानो
तिनमें श्रीवृषभानु दुलारी॥ सकल शिरोमनि हरि की प्यारी
नेक नही हरि तो सौं प्यारी॥ तिनकी कथा कहत बिस्तारी
दधि भाजन माथे पर धारैं॥ लेहु स्याम कहि बचन उचारैं
बूझति तिन्है और ब्रज नारी॥ बेचत कहा फिरत तू प्यारी
प्रात हि ते लीने दधि डोलैं॥ मुख ते नाम कान्ह को बोलैं
कहा करत यह हमें बतावो॥ कछु हम कौं निज बात सुनावो
उफनत चक्षु चुवत पंग माहीं॥ ताकी सुरति तोहि कछु नाहीं
इतते इनउनते उत जाई॥ बुधि मर्यादा सबै मिटाई
मैं जानी यह बात बनाई॥ तेरो मन हरि लियो कन्हाई

तिन्हें कहत मोहि नंद घर कहहु सुदेहु बताइ
जहां बसत वह सांवरो मोहन कुंवर कन्हाइ
है धौं याही गांव कै धौं कहुँ अंतर बसत॥
कान्ह रजा को नांव मै खोजत वाकौं फिरैं

पूछत बूतसों हों मैं आई॥ मोहिं देउ नंद सदन बताई
नंदहि के द्वारे पर ठाढ़ी॥ बूझत भानि सबै मतवाढ़ी
लोक लाज कुल की सुधि नासी॥ मन बंधि गयो प्रेम की फांसी
तब इक सखी परम हितकारी॥ हरि की प्यारी की अति प्यारी
प्यारी कौं निज ढिग बैठाई॥ सिखावचन कहन समझाई
अहो राधिका कुंवर सयानी॥ क्यों ऐसी अब भई अयानी
ऐसो प्रगट प्रेम नहिं कीजै॥ देखि बिचार धीर उर दीजै
हँसिहैं लखि सब ब्रज की नारी॥ एकहि बार लाज तैं डारी
ऐसे कहा फिरत बितत्यानी॥ मात पिता गुरुजनहि भुलानी
मो पै कृष्ण प्रेम धन पैये॥ एरि वय गुप्त न प्रगटैये

ऐसी तोहि वूझिये नाहीं ॥ समझ देख अपने मन माहीं
अजहू चेत वात सुन मेरी ॥ कहत कुंवर तेरे हित केरी

कृष्ण प्रेम धन पाइ कै प्रगट न कीजे वाल
राखिये उर यों गोय कै ज्यौं मणि राखत व्याल
तूं अति नागरि नारि पायौ नागर नेह ज्यों
तौ कत देति उघारि कहि है तोहि गंवार सव

मैं जो कहति सुनति कै नाहीं ॥ दैहै ज्वाव कछु मो पाहीं
कहति वचन कि मौन ही रैहै ॥ घर अपने जैहै कि न जैहै
लोगन मुख सुनि है पितु माता ॥ व्रज मैं प्रगटी है यह वाता
मानैगी मम वचन की नाहीं ॥ कै फिरि है ऐसेहि व्रज माहीं
ज्यों ये प्रीति स्याम सों जोरी ॥ लाज किये हू है कहा थोरी
ध्यान स्याम को धरु उर माहीं ॥ लाज छांडि कत भ्रमत वृथा हीं
सुख तौ खोलि सुनो तुम वानी ॥ कैसी कहति करे कछु जानी
कहा कहत मोसों तुम आली ॥ मन मेरो लीनो वन माली
तव तें मोकौं कछु न सुहाई ॥ जित देखौं तित कुंवर कन्हाई
अव लौं नहिं जानत मैं को हौं ॥ कहा कहत है अव तू मोहौं
कहा गेह को पितु अरु माता ॥ कहा दुरजव को गुरुजन भ्राता
कहा लाज कह कानवडाई ॥ तू कह कहत कहौं ते आई

वार वार तू कहत कहा मैं नहिं समझति वात
मेरे मन मैं धरि कियौ वात सुमति के तात ॥
रहत न मेरी आन अपनी सी मैं कर थकी
तू तौ वडी सुजान कहा देत सिख मोहि अव

मेरे हाथ नहीं मन मेरो ॥ ॥ सुनेको न सखि विसिख वचन तेरो
इंद्रीगण मन की अनुगामी ॥ सव इंद्रिन को मन यह स्वामी
सो मन हरि लीनो व्रजनाथा ॥ इंद्री गई सवै मन साथा

कृष्ण राधिका के चरित अति पवित्र सुख खान ।
कहत सुनत भव भय हरण रसिक जनन के प्रान ॥
रसिक सिरोमणि राय गोपीजन मन के हरन ।
कहौं सु अब सुखदाय रस लीला जो ब्रज करी ॥
देखि दशा राधा की ग्वाली ॥ सीक्षा करति दूती जो आली
चकित रही मन मांझ विचारी ॥ या सिर स्याम ठगौरी डारी
गई सखी सों हरि पै धाई ॥ कहति सुनौ प्रभु कुंवर कन्हाई
ढूंढ़ति फिरत तुम्हैं इक नारी ॥ अति सुन्दरि नवल सुकुमारी
पहिरे नीलांबर अति सोहै ॥ सुख दुति चंद निरखि मन मोहै
प्रातहिं तें लीने दधि डोलै ॥ लेहु गुपाल वदन तें बोलै ॥
भ्रमत भ्रमत अति विकल भई है ॥ वंशीवट की ओर गई है ॥
मन वच कर्म जान मैं पाई ॥ तुम सेवा को प्रान कन्हाई ॥
ताहि मिलौ कव हू सुखदाई ॥ कहत सखी कर कै चतुराई
तुम विन विरह विकल अति वाला ॥ मिलहु वेग ताकौं नंदलाला
सुनत स्याम मन हर्ष वढ़ायौ ॥ सांची प्रीति जान सुख पायौ
हरि हंसि विदा सखी कौं कीनौ ॥ आप दरश प्यारी कौं दीनौ
परम हर्ष दोऊ मिले राधा नंद कुमार ॥
कुंज सदन सोहत अनौ तन धरि छवि सिंगार
स्याम अरु घनस्याम कोटि काम रति दुति हरन
ब्रजवासी उर धाम युगल किशोर सदा बसहु
सोहत कुंज कुटी सुखरासी ॥ पिय घनस्याम आनन्द प्रकासी
विरह ताप तन दूर निवारी ॥ वोली मोहन सों नवल प्यारी ॥
कहा कहौं तुम सों सुन्दर घन ॥ कहति लजाति वात मन ही मन
होत चवाव सकल ब्रज माहीं ॥ सुनत श्रवण सहि जात सो नाहीं
जा दिन तुम गैया दुहि दीनी ॥ हाहा करि दहनी मैं लीनी ॥

सहज गहीवहियों तुममेरी॥ मैं हँसितनकवदन तन हेरी
तादिन तेगृह मारगजितितित॥ करतचवावसकलव्रजजनित
यहै कहे व्रज मे सव कोउ॥ राधाकृष्ण एक है दोऊ॥
यहसुनिवरगुरुजनदुखपावै॥ कटुकवचनकहित्रासदिखावै
निकसवद्वारजवहितुमआई॥ रहतसखेतव देषिलुगाई॥
निंदततुमकौमोहिसुनाई॥ सोमोपे हरिसह्यो नजाई
कहेत मन हिसवकौतिजदीजे॥ इनविमुखनकौसगनकीजे
धृक ऐतेनरनारिहहरिजिन्हेनतुम पदप्रेम
हितकरितुमजानेनहींकहा निवाहेनेम
मैं लीनौ दृग नेम सुनकु स्यामसुन्दरसुखद
तुम पद पंकज प्रेम यहैमतिव्रतपारि हौ
हरितुमविनकासोअवकहिये॥ व्रजवसिकाकेवोलनसहिये
तातेंविनयकरतितुमपाहीं॥ वा पैढेतुमआवहु नाहीं
जोआवैतौमोहिनजनावौ॥ मुरलीधुनिमोकौंनसुनावौ
मुरलीधुनिसुनिसुनिकन्हाई॥ विन देखेमोहिरह्योनजाई
प्रेमाकुलसुनिप्रियकीवानी वोलेविहसिस्यामसुषदानी
सांचकहत व्रज केनरनारी॥ तुममोतेनेकहुनहिन्यारी॥
कहन देहुगुरुजनकहुजाने॥ वेसपनेसवसुरत भुलाने
प्रकृतिपुरुष एकै हम दोऊ॥ तुममोतें कछु भिन्न न कोऊ
उभय देह लीला हितठानी॥ घट है भेद नहीं कछु पानी
जलथलजहां तहांतनधारो॥ तुम तज कहूं रहतनहिन्यारो
देहधरेकोयहै विचारा॥ मानिये कुलकुटवब्यवहारा
लोकलाजगृह छाडिनदीजे॥ मातपितागुरुजनडरकीजे
प्रीतिपुरातनराखिउरजाहुप्रिया अवधाम
प्रगटनकीजेवातयहकहतविहसि के स्याम

हँसति कहति कै धौं सरित्यानी॥ तेरी सौं मैं कछु न जानी
कहा कहेउ मोहि बड़ी सुनावै॥ तोहि सौंह मेरी जु दुरावै॥
कबहूँ कछु भाव यह पायौ॥ कै देख्यौ कै किनहू सुनायौ
ऐसी कहत और जो कोऊ॥ सुनती मोपै उतर न सोऊ॥
बूझति मोहि लगावति ताही॥ सपनेहु मैं देखेउ नाहिं जाही
ऐसी मोहि कहौ जिनि कोई॥ वृथा बातनि पर दुख होई॥
उचटाये पै है कछु मोसों॥ बहुरि नहीं बोलौं गी तोसों
तातें और काहि हित पैहौं॥ जातें हित की बात जनैहौं॥
यह परतीति न तोकौं होई॥ मैं राखति तोसों कछु गोई॥
चतुर सखी मन मैं जब जानी॥ मो तोसों कछु नाहिं छिपानी
त्रास भई याके मन माहीं॥ तातें बात कहत यह नाहीं॥
तब यह कही हँसत मैं तोसों॥ जिन मन मैं दुख मानै मोसों

मानी तेरी बात अब कहतु कहा वे स्याम॥
हमहू उन्हें जानै नहीं बसत कौन धौं गाम
हम आगे कोऊ आहि भई सयानी लाडली॥
हँसति कह्यो घर जाहि नैन नहि हरि कबहू लखे

सकुच सहित वृषभानदुलारी॥ गई सदन गुरुजन डर भारी
जननी कहति कहाँ हुती प्यारी॥ डोलति फिरति अजहू दैं गारी
घर तोहि तनक देखियत नाहीं॥ दधि लै जात फिरत बन माहीं
स्याम संग वैठत है जाई॥ आज ताहि धरवत हौं भाई॥
काहे कौं उपहास करावति॥ दीधि हि बेच सबै किन आवति
वृथा करति मैया रिस मोसों॥ को अब बात कहै री तोसों॥
ऐसी को बहि गई विधाता॥ स्याम संग सुनि हँसि मात
कौनै बात कही यह तोसों॥ ताको नाम लेहि किन मोसों
बबा भ्रात धनि धनि तू भाई॥ ऐसी बात कहति मोहि लाई

तू पर घर खेलन कत जाई॥ मैं वरजति नहिं नेकु डराई॥
स्यामा स्याम सकल ब्रजमाहीं॥ फिरहै ता जल गति तुहि नाहीं॥
बड़े महरि की सुता कहावति॥ काहे कौं पितु मात लजावति॥

खेलन कौं मैं जाउं नहिं कहा कहति री मात॥
मोपै जाति सही नहीं यह आंखों हीं घात॥
घर घर खेलन जात गोपन की सब लाड़िली॥
तू मोहीं सीसियात तिनके मात पिता नहीं॥

मनहीं मन समुझत महतारी॥ अबही तो मेरी है वारी॥
कहा भयो तन बाढ़ भई है॥ लरिकाई अबही नै गई है॥
झूठहि वात उड़ी यह सारी॥ स्यामा स्याम कहत नर नारी॥
खेलत देखि कहत सब कोऊ॥ अबहीं तो बालक है दोऊ॥
सुनत सुता सुख रिस की बानी॥ मनहीं मन की रति मुसकानी॥
लवगहि उर लाई चुचकारी॥ पर मोधति उर सो रिस टारी॥
खेलहु संग लरिकिनि न माहीं॥ खेलन कौं मैं वरजति नाहीं॥
स्याम संग सुनि होत दुखारी॥ झूठहिं लोग लगावति गारी॥
जातें कुल कौं दूषण होई॥ सुन प्यारी कीजै नहिं सोई॥
अब राधा तू भई सयानी॥ मेरी सीख लेहि जिय जानी॥
जननी के मुख की सुनि वानी॥ श्री वृषभानुसुता मुसकानी॥
मन २ विनय करति हरि पाहीं॥ सुनहु स्याम सुमसम घट माहीं॥

मात पिता मानत तुम्हहिं लोक लाज कुल कान॥
नहिं जानत तुम कौं सुखद जगत ईश भगवान॥
लेत तुम्हारो नाउं सकुचत हौं इनके निकट॥
यह है समुरु पछितात तुम विसुखन मैं कौ रह्यो॥

तुम मोहि कहेउ कानि कुल रखो॥ कौ विष खाय सुधा न चाख्यो॥
जिन त्रिलोकपति तुम पद दृढ़ नेमा॥ कैसे तिनसों निबहत प्रेमा॥

अहो स्याम मैं मन क्रम वानी॥ नाथ तिहारे हाथ बिकानी॥
ऐसें कृस्न हृदय में आनी॥ बोली जननी सों हँसि बानी॥
तू अब कहति कहा मोकौं री॥ अकथ वात है मो कछु तोरी॥
अब हरि संग न खेलौं जाई॥ जा कारण तू मोहि सुनाई॥
आवत देवा वा घर माहीं॥ यह सब वात कहौं उन पाहीं॥
देति गारि मोहि स्याम लगाई॥ ऐसे लायक भये कन्हाई॥
रोकी मोकौं काल्ह गली में॥ सखिन संग मैं जाति चली में॥
लागे कहन बंसुरिया मेरी॥ तू लै गई चुराइ सो दे री॥ ॥
छ व आठें मोसों है जिन सों॥ मोहि लगावति है तू तिन सों॥
सुनि सुनि कै राधा की वानी॥ मुख निरखत जननी मुसकानी॥

कहति मनहिं मन अवहिं लौं नहीं गई लरिकाइ
वा रहीं के ढंग सवै अपनी टेक चलाय॥ ॥
अव जेहैं मचिलाइ का पै जाय मनाय पुनि
हार मान रहि माय बालक वुधि जिय जानि कै

बोलि उठी हँसि कै दुलराई॥ पुनि पुनि कहि मेरी सि राई॥
कंठ लगाइ लई अति हित सों॥ रही चकित शोभा लखि चित सों॥
चतुर सिरोमणि हरि की प्यारी॥ परम चतुर वृषभान दुलारी॥
वात नहीं माता वह राई॥ ॥ नीकें राखि लई चतुराई॥
कृस्न प्रेम धन पाय छिपायो॥ संग सखी तिन हूँ न जनायो॥
जैसे कृपण महा धन पावै॥ धरत दुराय न प्रगट जनावै॥
सखी मिली जो मारग माहीं॥ कहे उ जाय तिन सखियन पाहीं॥
सुनहु सखी राधा की वातें॥ कैसी आज करीं उन घातें॥
वृंदा वन तें अवहीं आई॥ हर्षि सहित मैं लखि सग पाई॥
औरै भाव अंग छवि छाई॥ स्यामहि मिली भई मन माई॥
मोकों देखत ही हँसि दीनो॥ मैं हूँ हर्ष मनहिं मन कीनो॥

जव मैं कही मिलेहरि तोसो॥ तवरिसकरिफेरोसुख मोसों
मोसों तवलागीक हनकोहरि काकौनांव ॥
कैगोरेकैसांवरे वसत कोनसे गांव ॥ ॥
मैं तोजानति नाहिं लेति नाम तू कौन को॥
लखेतसवनहैमाहिसंयकहतिकैहसतिसुहि
ऐसेंकहि टेढ़ी करि भौहें ॥ चितइ नेकुनमोतन सौहें ॥
वहांनिघरक हैसुखगई री॥ जोरकहीतौकरतखई री॥
तव मैं यह कहि घर पवई री॥ मैंकुरी ते सच्ची भई री॥
दोऊ एकभये धन जाई॥॥ हमहू मोयहवात दुराई॥
घर धौजायकहा सवके है॥ कैसीधौंतहंवहिउपजै है
सुनि कैवातसखीमुसकानी॥ प्यारिहि देखनका लतुएनी
कहति सवैजवही हमजैहे॥ तवहींजीय प्रगटकरिदैहै॥
कहा रहै यहवात छिपानी॥ दूधदूध पानी सो पानी॥
औरिहुन देखतही लखजैहे॥ कैसे हमसोवात छिपैहै॥
तपसों भेदनहीं वह कैहै॥ सुनिहौ कैसे गाल वजेहै॥
दरसहू चरिमजाय तुम वाको॥ राधाकुंवरिनाम है जाको॥
मैं वूझी करि वहुचतुराई॥ नेकहू याह न वाकी पाई॥
सकेगुरुकीवुधिमहीवह काहुन पत्याय॥
एको वातद मानि है सौसौ सौंहे खाय ॥
यौं हीं सवपछिताय सुनतवचनया केवदन
अवजैहै रिसपाय वातन वैरवढाय है॥
कहावैर हमसन वहकरिहै॥ वातन कैसे हमाहिनिदरिहै
औरन सौं जाकरति मनवानी॥ मोहमुहू जानी तो सयानी
ताकी जानिभले हम पाई॥ हमहीं सौं यह वातचुराई
परिहै जव मेरे फंद माई॥ दूरकरौं वाकी लंगराई॥

जो नहिं हमसे भेद कहैगी ॥ तो पुनि कैसे के निव है गी ॥
हम सौं वैर किये कह पै है ॥ कुढारीलिये मटकी सिर वै है ॥
चलो सवै देखें घर ताकौं ॥ है निधरक कै धौं डर वाकौ ॥
वूझै वात कहा धौं कै है ॥ ॥ हम सौं मिलि है कै डुरजै हैं ॥
रिस करि हैं कै धौं हसि वोले ॥ वात छिपावै कै धौं खोले ॥
सहज सुभाव कि धौं गरवानी ॥ यह कहि चली अली अकुलानी ॥
गई निकट राधे के जवही ॥ जानि गई नागरि मन तवही ॥
ए सव मोपर रिस करि आई ॥ तव इक मन में वुद्धि उपाई ॥

काहू कौं कीनौं नहीं आदर करि चतुराइ ॥
मौन गही वोलत नहीं वैठि रही निजु राय ॥
लखि सव सखी सुजान वैठ गई ढिंग आपई ॥
औरै वात वखान आपस में लागी करन ॥

राधा चतुर चतुर सव आली ॥ चतुर चतुर की भेट निराली ॥
उन तो गही मौन निठुराई ॥ इन लखि लई ता सु चतुराई ॥
सुही चही आपुस में कीन्ही ॥ याकी वात सवै हम चीन्ही ॥
कहा भेद हमसों यह भाषै ॥ उलटे हम हीं पर रिस राखै ॥
वूझै इनहिं खुनटकी कोई ॥ कहा आज इन मौन लयोई ॥
हमसों कहा आोट इन लीनी ॥ खाटसई हम ही करि दीनी ॥
एक सखी तव विहसि सुनायो ॥ कहो मौनव्रत किन सिखरायो ॥
धनि वह गुरु मंत्र जिन दीनो ॥ कानलगत ही ऐसो कीनो ॥
कालि ओोर परभाते ओरे ॥ अभै भई कछु ओर की ओरे ॥
सुनि यह वात सवै हम धाई ॥ चकित भई देखन तुहिं आई ॥
कहा मौन कौ फल अव कहियै ॥ सुने कछु तो हमहू गहियै ॥
इक संग भई सवै तरुनाई ॥ मंत्र लियो तौ हमन वलाई ॥
अव तुमही कों हम करें तुरु देउ उपदेस ॥

हमहूं राखे मौनव्रज करैं तुम्हें आदेश ॥
हम कौं कियो अजान चतुर भई तू लाडिली
कहां सिख्यौ यह ज्ञान ऐसी विधि लागी करन

रहत एक संग हम तुम प्यारी ॥ आजहि पटक भई तू न्यारी
कहा भयो किन तोहि सिखाई। नई रीति यह कहा चलाई
हम तौ तेरे हित की करिये ॥ औरकहे तासो सब लरिये॥
सुनति कुवरि सखियन की वानी ॥ ठोली करत सबै यह जानी
गुणागारनागरी सयानी ॥ वोली सकल निठुरई वानी
तुम प्रीतम के वैरनि मेरी ॥ वूझति तुम्हें कहौ सखि हेरी
वाको कहति जु गैल मिली री। नहीं कहौ रन मोहि भली ऐ
कहेउ मोहि तुम स्याम मिले री ॥ मैं चकि रही सो हूं मुहि तेरी
मेरे अंग कुविओर वताई ॥ तव मैं भई वड़त दुष हाई॥
जिनकों मैं सपने नहिं जानों ॥ फिर फिर तिन की वात वखानो
मेरी कुछ दुराव है तुम सौ ॥ तुमहीं कहौ सखी सब हमसे
कहां रहति मैं कहां कन्हाई॥ घर घर करत चवाव लुगाई

और कहे तौ मोहि कछु नहिं व्यापे मन माहिं
तुमही कहौ जो वात यह तौ दुष होइ कि नाहिं
तुमपर रिस मो गात ताते आदर नहिं कियो
सुनु प्यारी की वात रही सबै सुख तन चिते

वोली एक सखी तिन माहीं ॥ हम तौ तोहि कहे कछु नाहीं
ताही पर होती रिस हाई ॥ जिन यह तासो वात चलाई
प्रथमहिं हमैं प्रगट यह करती॥ हमहू ताही सो सकलरती
क्यों सखि प्यारि यह दोष लगावै॥ झूठी वातन वेर वढ़ावै
तेरे स्याम कहां इन देखे ॥ काहे को सपने हू पेखे
भेदहि भेद कहत सब वाते॥ दै दै सैन करत सब घाते

प्यारी सब के मन की जाने ॥ सब सों रूखे वचन बखानै
कौन कौन को मुख सखि गहिये ॥ जाकौं जो भावै सो कहिये
मनतें गढ़ि गढ़ि वात बनावौ ॥ झूठी कौं सांची ठहरावौ ॥
बिना भीत ही चित्रत करौ ॥ बातन गहि आकाशहि फेरौ
नेक होय तौ सब ही सहिये ॥ झूठी सबै सुनत उर दहिये
आवत बोलन सुनि २ बातें ॥ रहियत मौन सबन तें यातें
वृथा और मोसों करत कहि कहि झूठी वात
भलो नहीं उपहास यह मैं सकुचति दिन रात
मिले सखी जो स्याम और कहा यातें भली
सुनियत है अभिराम नंद महरि कौ सुवन अति
कैसे हैं ए कुंवर कन्हाई ॥ जिन को नाम लेति यह भाई
नैननि भरि मैं देखे नाहीं ॥ सुनियत सदा रहत ब्रज माहीं
कहति लजाति बात इक तुमकौं ॥ इक दिन मोहिं दिखावौ उनकौं
देखौं धौं कैसे हैं तिन कौं ॥ तुम सब मिलि मोहति हो जिनकौं
सुनि वृषभान सुता की वानी ॥ हंसी सबै गोपिका सयानी
सुन प्यारी तैं सीख हमारी ॥ कहन देहु कहि करै कहारी
ताकों झूठ कहे कहा पैहै ॥ आपन कौं वे पाप कमै हैं ॥
यह काहू पै जात छिपायौ ॥ नेह सुगंध न दुरत दुरायो ॥
तो काहे कौं कान्है देख्यौ ॥ खरक दुहावन हू नहिं पेख्यो
सुन हो सखी राधा की वानी ॥ कहति कहा यह अकथ कहानी
रहति सदा ब्रज गांव मझारी ॥ इन नहिं देखे हैं गिरधारी
जो हम सुनी रही सो नाहीं ॥ ऐसेउ बायु वही ब्रज माहीं
सुनि प्यारी अब तोहि हम दिखरै हैं नंदनंद
तब वादि है यह राखि हो देखि उन्है छलछंद
जब ऐहैं इत स्याम तब हम तोहि बताइ हैं

ताहि देखिहे वाम हे उनहूं अभिलाष अति
तुमतें चाहि लीजियो उनको ॥ कहति नहीं देखे मैं जिनको
है कैसे कारे के गोरे ॥ सुन्दर चतुर किधौं अति भोरे
ताहि देखि वेऊ सुख पैहें ॥ तेरे हित वासुरी वजैहें
नानाभाव करेंगे जवहीं ॥ हमसव तोहि कहेंगे तवहीं
तुम हौ चतुर राधिका जैसे ॥ वेऊ स्याम चतुर है तैसे ॥
हँसति कहति सव गोपकिशोरी। चिरजीवहु यह सुन्दर जोरी
केवहूं तो फेद पहिरी आई। तवहीं देहि चिन्हाइ कन्हाई
सुनत संग सखियन की वानी। मन रविहसत कुवरि सयानी
चतुरई नीके गहि राखी ॥ सखियन सों हँसि ऐसे भाखी
जो मैं धौरे जिय मैं जानी ॥ मेरी वात प्रतीति न मानी ॥
जो अव मोहि स्याम संग पावो। तव कीजो अपनो मन भावो
कान्ह पीत पट वेसरि मेरी। लीजउ कोरि तवहि गहि एरी
यह सुनिकै सव हँसि उठी प्यारी वदननिहारि
आई ही अति गर्व करि चली सखी घर हारि
कहतु परस्पर हारि निडर भई अति राधिका
कवहूं तो हम घात परिहे दोऊ आय कै ॥
तीसहू दिन जो चोर धुरै है ॥ साह एकहू दिन तो पैहे ॥
वोली एक सखी तवतितसौं ॥ भेद लियो चाहति तक उनसों
दूर धरो मन तें यह माई ॥ वैठि रहौ अपने घर जाई ॥
अति वरवोलि कहूं कहा कीन्हो। केऊ निदुर भई कछु चीन्हो
वह नहिं फंद तुम्हारे आवै ॥ छुद्र वद वाके को पावै ॥
वूहसवा हैन मैं वडी सयानी ॥ मेरी वात लेऊ तुम मानी ॥
वोली अपर सखी सुनुमो सों। सीख देंचि अपुन में तोसों
फेरफार देखो हम परिहें ॥ ऐसे कैसे हमहि निदरिहें

अवतो भेद कियौ है प्यारी॥ हमहूं कौं यह रस है भारी
तवलग मन मैं धीर न लै है॥ जवलगि चोरी पकरि न पैहैं
निसि वासर अव हम सव कोऊ॥ स्याम स्याम देखि है दोऊ॥
ताही दिन तिनसो हम लरिहैं॥ जा दिन नीके पकरि निदरिहै
सव ब्रज गोपिन के वसी वात यहै मन आन॥
हरि राधा दोऊ मिलैं निसि वासर यह ध्यान
सवहिन मुख यह वात और कछु चरचा नहीं
नंद महरि कौं तात सुता महरि ब्रषभान को
यह चवाव करति सव गोपी॥ हमसौं वात राधिका लोपी
लरिकाई तें हम सव जानैं॥ कीनी प्रीति स्याम सौं याने॥
तव सत भावन ह्वै तो ठाई॥ अव हरि संग सीखी चतुराई
आज मौन धरि कियो दुराऊ॥ सदा होति केहि भांति चवाऊ
दिन द्वै चारि भोर अव टारौ॥ रह्यो स्वभाव और जिन पारौ
करन देउ इनकौं लंगराई॥ आपहि वात प्रगट ह्वै जाई
तव इक सखी कही यौं वानी॥ कहा कहत तुम वात अयानी
तुम जो कहति वह जानति नाहीं॥ हैं हम सव वाके नख माहीं
सात वरस तें प्रीति लगाई॥ तुम तौं आज जानि है पाई॥
वाकी चतुराई किन जानी॥ मौन कवहि धौं पीवत पानी
हरि के ढंग सीखी सव वोऊ॥ है वारह वानी वे दोऊ॥
है वह कान्ह के हूं पतियानी॥ फिरि आई तव मन रिसियानी
ऐसें सव ब्रजसुन्दरी मिलि कै करति वचाइ
राधा हमसौं उर मैं वसे और न वात सुहाइ॥
यह रस जान अनूप ब्रजवासी प्रभु प्रेम कौं
करि कै कृष्ण सरूप होय रही ब्रज कौ सरिस
श्री राधा प्रातहि तहं आई॥ जहं पूरी सव सखिन अथाई

अवतिलखि सवरहींचुपाई॥ पेखत वदनगयोसकुचाई
करतिहुती उनहीं कीवातें॥ सकुचभई तरुणीसवतातें
अतिआदरकरिकेवैठारी॥ कह्योकहा तूआईप्यारी॥
कहाहमारी सुधितैलीन्ही॥ वडीकृपाकछुहमपरकीन्ही
मैंकहआजअनीखेआई॥ तुमजुकरतिआदरअधिकाई
पूजनीकरिकरियेपहुनाई॥ मैंतोआवतिजाति सदाई॥
कैसी कहति वात तूंप्यारी॥ वैठनकोंनहि कहे कहारी॥
तूआईकरिकृपा हमारे॥ हमहू कहाकौनव्रत धारे॥
तव हंसिवालीकुंवरिसयानी॥ करी तर्क मोसोतुमजानी॥
तादिनकीवदलो यह कीनो॥ मोसोदाव आपनो लीनो॥
यहसुनि हंसीसकलव्रजनारी॥ कहनलगी सवगोपकुमारी

दावघातजानतितुमहिंहमतोवुद्धिसुभाव
ताहिमानआईसदा तैसे मानतिभाव॥
तुमराखीमनलायतादिनवातभईजुवह
हमडारीविसराय मानलई तेरीकही॥

चोरसवैचोरीकरिजाने॥ ज्ञानी सवमनज्ञानहिंमाने॥
सुनियहकुंवरिमनहिंमुसकानी॥ कहेउ सखीयहसांचवषानी
जैसीजाकेमनमैं होई॥ ॥ वातकहत सुख तैसीसोई
मैंतोसांचकहीतुम पाहीं॥ कैसेधौं तुमजानतिनाहीं॥
हरषि सकिनतवउरसोलाई॥ कहति कहातूंरिसभरिआई
हंसति कहतितोसोहमप्यारी॥ तूमतमानतिविलगकहारी
तुमहींउलटीपुलटीभाखौ॥ तुमहींरिसकरिउरमेंराखौ॥
तुमहींहरिकौंनामवखानो॥ तवमैंसुनेउकछुतुममानी
जवहरिसंगमोहिकहेलहियो॥ तवमनभावेसोकछुकहियो
अव कैसे हूं न्हानचलोगी॥ कैमासोंकछुफेर लरोगी॥

कहै वात गव वंधन कीनी॥ ॥नहिं भूली हौ जान मैं लीनी
गहि गहि सव की भुजा उठाई॥ चलह न्हान कवकी मैं आई

इहि विधि हास हुलास करि सखिन संग सुकुमार
चली न्हान यमुना नदी श्री वृषभान कुमारि॥
सकल रूप की रास नव नागरि मृगलोचनी॥
धरी अनंद हुलास कृष्ण प्रेम में एक मति॥

अथ स्नान लीला॥

चली यमुन सव नवल किशोरी॥ कनक वरन तन कोमल गोरी
करति परस्पर सव सुकुमारी॥ हास विलास कुतूहल भारी
गई यमुन तट गोप कुमारी॥ संग सोहति वृषभान दुलारी
देखि स्याम जल लहरि सुहाई। पैठी सलिल न्हान अतुराई
स्याम सहित न्हाति सव नारी॥ विहरत जल विहार सुखकारी
कंठ प्रमाण नीर में ठाढी॥ छिरकत जल अति शोभा वाढी
करत विविधि विधि हास विलासा॥ एक एक गहि करति हुलासा
लै लै करसों नीर उछारैं॥ निरखि परस्पर मुख पर डारैं॥
मानो ससि सेना पति आये॥ लरत जलस जल शस्त्र वनाये
सुनि तहं स्याम युवति मनरंजन॥ आये कोटि काम दुति भंजन
निरखत तट ठाढे छवि भारी॥ यमुना जल विहरत ब्रजनारी
कवहु मधुर कल वेनु वजावैं॥ न्हाने सुरन माहि कछु गावैं॥
काछे नटवर भेष वर चर्चित चंदन अंग॥
ठाढे उदंगि कदंव तें कीने अंग त्रिभंग॥
नव घम सुन्दर स्याम ब्रज तिय मन चातक सुखद
नख सिख अति अभिराम ध्यान काम पूरण सकल
पद नख इंदु प्रभा दुति हारी॥ चरण कमल शीतल सुखकारी

जानुजंघ अतिसुभग सुहाई। करभरम्भ लखि रहत सदाई
कटिपटपीतकाछनीकाछे॥ केसरकमलनपटतर आछे
क्षुद्रावली कनकछविछाई। नाभिगभीर वरनि नहिंजाई
मनहू मराल बालकीमैनी॥ सरसमीपं सोहतिसुख देनी
बड़े बड़े मोतिनकी माला॥ वीचरत्नावलिम्लकविशाला
मनहुँ गंगविच यमुनासाई। चलीधारमिलती नसुहाई
वाहुदंड दोउतटकमनीय॥ चंदनअगरेतर रमनीय॥
वनमालातरुतो रसुहाई॥ तीनभुवनशोभाजनुछाई॥
चिवुक सुचारुगाड़ मनमोहे। मुखछविसिंधुभ्रमरजनुसोहे
अधरदशनदुतिवरनिनजाई। तड़ितविवकहवहछविछाई

सुकनासारखजन नयनभृकुटीकामकोदंड।
मणिकुंडल रवि हरत सोहत सीससिखंड
उपमागई लजाइ निरखिस्यामकोरूपवर
जहँतहँरही छिपाय पटतरकोपहूँचीनही

उपमा हरितन देखि लजानी॥ दुरी भूमिकोउ वनकोउपानी
कोटिवदन अपनो वलहारे। मुकुटलटकभूमरकनिहारे
कुंडलनिरखिभ्रमतरविरहहीं। तपतहृदयछुण धीसनगहहीं
अलक नासिका करपद नैनन॥ अतिसुककमलमीनपदस्नम
लषिसकुचायरहतवनमाहीं। कहतहमेकविकहनव्यपाहीं
सदनदमक दामिनीलजानी। क्षणप्रगटतक्षणरहतछिपानी
ससुरूतसधरअधरअरुणाई। विद्रुम वंधूविंव लजाई॥
गगन रह्यो शशिवदननिहारी। घटतघटतनितशोचतभारी
चारुकठलखिअतिसकुचानी। रहत शंखजलमांझ छिपानी
वाहदेखि पहि विवरसमाने॥ केहरिकटिलखिवनहिंपराने
गज गतिगुलफनिरखिसरमाई। रुचीपांयन सकतउठाई

निजइच्छा छवि हरि वपु धारी ॥ दीन्ही पटतर मेटि पुरानी ॥

अनुपम छवि कवि क्यों कहै बिन उपमा आधार
ब्रज तिय मोहन मन हरण सुन्दर नंद कुमार ॥
अधर मानोहर बैन मंद मंद बाजत मधुर ॥
उपजावत मन मैन ब्रज सुन्दर नव नागरिन ॥

जल विहार करि गोप किशोरी ॥ निकरि चलीं तट कों सब गोरी ॥
जानु जंघ जल लों सब आई ॥ चुवत नीर अंचल छवि छाई ॥
परे दृष्ट मोहन तट माहीं ॥ ठाढ़े कदम विटप की छाहीं ॥
प्यारी निरषति रूप लुभानी ॥ पंगु भई मति गति वह रानी ॥
इतहि लाज सखियन की आई ॥ दरसन हानि कछु जल सों छिपाई ॥
मनहिं ज्ञान करि यह अनुमानी ॥ लैहैं आज सखी सब जानी ॥
जान गई यह अली सयानी ॥ जान बूझ सब भई अयानी ॥
बहुरौं न्हान लगीं सब पानी ॥ रहीं इते करि आन कानी ॥
प्यारी कबहुं स्याम तन हेरै ॥ कबहुं दृष्ट सखिन ते फेरै ॥
जानी सबै न्हान जल माहीं ॥ मेरी दिसि चितवत कोउ नाहीं ॥
तब मन में यह बात विचारी ॥ देखि लेउं अब छवि गिरधारी ॥
यह दरसन कब धौं फिर होई ॥ लख कि लगी अंखियां हरि दोऊ ॥

निरषति स्यामा स्याम छवि वारनि भेषन मोर ॥
नैन वदन शोभित मनो द्वै शशि चारु चकोर ॥
करत मुदित दोउ पान रूप माधुरी अमिय रस
तृप्त न क्योंहू मान विवस भये मन दुहुन के ॥

यद्यपि सकुच सखिन की गाढ़ी ॥ तद्यपि रुकी न छिन वन बाढ़ी ॥
उमगि गई सरिता की नाहीं ॥ सन्मुख स्याम सिंधु के माहीं ॥
भरी सलिल अनुराग अथाहा ॥ अवर मनोरथ [illegible] ॥
कुल मर्याद करार ढहाये ॥ लोक सकुच [illegible] ॥

धीरजअवाव गहीनहिंजाई॥ रहे थकितपलपथिकउराई॥
इकटकघोरअखंडित धारा॥ मिलीस्यामछविसिंधुअपारा॥
कहत सखी सव आपुसमाहीं॥ नैन सैन दे दे मुसकाहीं॥
देखहुरी प्यारी उत अटकी॥ नाजानिये कौनअंगलटकी॥
कालिहमै कैसें निदरी है॥ मेरेचित अवखुटपकरी है॥
वातकहत मैलसुखतुलसी॥ देखहुअवदेखतिकिमहुलसी॥
सुन्दरीपिय के रूपलुभानी॥ वैवातहिंअवसवहिभुलानी॥
इकटकरहीनेकनहिंमटकी॥ कोजानेकाहू के घटकी॥

भईभावभोरेकछू देखतही सुखदाइ॥
चित्रपूतरी सीरहे देह दशाविसराइ॥

उतवेरहेलुभाइ नागरनवलकिशोरसव
प्यारीमुखद्रगलाय नैननहीं भटकनकहुं

औरैभावभई सव प्यारी॥ वढेउप्रेमअंकुरतरुभारी॥
गईतासुजरसप्तपताला॥ पहुंचेउअंतरशिखरविशाला॥
वचनपत्रअविलोकनिशाखा॥ सघजगछविहछुइअभिलाषा॥
गुणविधिसुमनसुगंधनिकाई॥ लगीजईआनंदसुहाई॥
पूरणआसनवनिभरवारा॥ फललाग्योवर नंदकुमारा॥
रहेरीझतन मन धनवारें॥ अरसपरसदोउरूपनिहारें॥
तवइकसखीकहेउमुसकाई॥ प्यारीदेखेकुंवर कन्हाई॥
एई हैसुन्दरसुखदाई॥ ॥ जिनकीव्रजमे होतवडाई॥
त्माहिकहतिहीमोहिदिखावहु॥ देखिलेहुअवमनसुखपावहु॥
वहुतलालसा है मन तेरे॥ ॥ताहीते आयेहरिनेरे॥
पूरीसाधदरस अव पाये॥ इनहीं इनकूं वोलपठाये॥
एवौ चीन्हइन्हें सवनीके॥ येमनभावन हैं सवही के
भलेआकुंनआईयहो भलौतुम्हारौकाज

अवकछुहमकौंदेऊगी मिलेतुम्हैंव्रजराज॥
भयौनामैंरिहिसोचसुनि सुमिसखियनकेवचन
कहतिकरी मैंपोच इव जानीअववातसव
मैंहरि तनलखिरूपलुभानी॥ सोये देखि सवै मुसकानी
काल्हि कही इनसों मेंवेसें॥ देखीआज मोहि इन ऐसें॥
इन आगे मोंवात नसानी॥ अववे करत मोहिविन पानी॥
मोही पर मेरी चतुराई॥ परी उलटि उर अतिसकुचाई
कहत सखिन सोंज्वावनआयो॥तवमन मेंहरि पियकौंधायो
अहो स्यामसुन्दरसुखदानी॥ मैं प्रभुतुम्हरे हाथविकानी
अव सहायसुन्दरतुमकीजे॥ मेरीवातनाथ रखलीजे॥
ऐसो उत्तर देऊ जनाई॥ ॥जातेंमेरी पत रहजाई॥
ऐसें हरिकौं सुमरिसयानी॥ तव यहवातमनहिंमनवानी
उरमें भयोवुद्धिपरकासा॥ तवकीनोमन माहिंउलासा
सखिनकहेउअवघरचलप्यारी॥भईयमुनतटवहुतअवारी
कवकी न्हानइहांहमआई॥ ऐसेंकहिकीहसवपूछतःही
कियोदरसतुमस्यामकौंघरचोलिहौंकेनाहिं
कीन्हरहौमिलियौवहुरि यहकहिसवमुसकाहि
तवसखियनके साथचलीसदनकौंनारी।
उरमेंधरिव्रजनाथप्रेममगन वोली नहीं॥
हँसिवूझतइक गोपकुमारी॥ कैहौ स्याम कैसे हैंप्यारी
भायेरी तेरे मन माहीं॥ कैसुन्दर कछु कैधौं नाहीं॥
के हमसौंफिरवातलुकैहो कैअवमनकी सांचजनैहो
हमवरनेकैसें तुमपाहीं॥ कहूलेवेहरि हैं के नाहीं॥
कहति मनहिंवृषभानदुलारी॥ ऐसेरव्याल परी सववारी
वातनवातनकेरतिउघारी॥ येचाहतिअवदीलि...

मोहूं ते ये चतुर कहावें ॥ मोको बातन मांऋ भुलावें
ऐसे इतसौं वचन वखानौं ॥ इनकी चातुरता गहि मानौं
मेरे सिर सामर्थ कन्हाई ॥ कहा करि है मोसो चतुराई॥
प्यारी प्यके गर्व गहेली ॥ अंग अंग सुख पुंज भरेली॥
मंद मंद गति हंस सुहाई॥ पग द्वै चलत ठठकि रहजाई
मगन स्याम रस सुख नहिं बोले ॥ धरणी चरणन रखन कौ छोले

चितवत सँधे नेक नहि कान्ह तन अनखाइ
रही गर्व पिय स्याम के गरबीली गरबाइ ॥
सखिन कहेउ मुसक्याय क्यौं प्यारी बोलत नहीं
कै हम सौं अनखाय लियो मौन व्रत आज सुनि

कैकछु बात कहीनहि जाई ॥ कै तेसौ मन हर्यो कन्हाई
कबहूं जान पहिचानन तेरी॥ देखतही दृग तिन हिं डरेरी॥
सांची बात कहौ अब प्यारी॥ सोचि परयो मन तो हि कहारी
कहा रहोही हरिहि निहारी॥ इक टक नैन नमेष विसारी
सुनि सुनि सब सखियन की बानी॥ बोली हरि भावती सयानी
कहा कहति तुम बात अलेखे॥ मोसो कहति स्याम तुम देखे
मैं देखे के धौ नहि देखे ॥ तुमतो बार हजार के पेखे॥
तुम कहो हरि को रूप बतावो॥ मो आगे सब कहि समुझावौं
कैसे वरन भेष है कैसे ॥ अंग अंग वरनौ तुम तैसे
तब इक सखी कहेउ मुसकाई॥ हमतो ऐसे लखे कन्हाई
कूट बंद कछु हमैं नाहि आवै॥ साची बात सबन कौं भावै
देखे हम नंद नंदन जैसे ॥ वरनि बतावहिं तोको तैसे
स्याम सुभग तन पीत पट चटकीलो दुति कारि
शोभित घन पर दामिनी मनु चपलई विसारि
मंद मंद सुख दाय गरजति मुरली मधुर धुनि

चितवत अरु मुसकात वरषत परमानंद जल
विविधि सुमन दल उर वनमाला॥ इंद्र धनुष मनौ उदित विशाला॥
मुक्तावली बीच मन मोहै ॥ वाल मराल पांति जनौं सोहै॥
अंग अंग छवि रूप सुहाई॥ कदम तरे ठाढे सुखदाई॥
देखत मोहन वदन विभागा॥ उपजत है अंखियन अनुरागा॥
लोचन नलिन नये छवि छाजैं॥ तामधि पुतरी स्याम विराजैं॥
मनहुं युगुल अलि भाग निवारौं॥ पियतु मुदित मकरंद सुखारैं॥
ता मह चितवन सैन सुहाई॥ गूढ भाव साचत सुखदाई॥
अधर विंव रद दाड़िम दाना॥ सुखु नासिका देखि लजाना॥
भ्रकुटी धनुष तिलक सर धारी॥ मानहुं मदन करत रखवारी॥
मोरचंद्र सिर सुमन सुहाये॥ कामसरन मनौं पंख लगाये॥
गुरात आन युवतिन मन माहीं॥ निकसत बहुरि निकासे नाहीं॥
वारिज वदन मनोहर वानी॥ बोलत मनहुं सुधारस सानी॥
कुंडल झलक कपोल छवि श्रम सीकर के दाग॥
मानहुं मनसिज मकर मिलि क्रीड़त सुधा तड़ाग
भरे रूप रस राग ऐसे शोभा के उदधि ॥ ॥
तिन अंखियन की भाग अवलोकत हरि कौ वदन
अंग अंग सब छवि के जाला॥ हम देखे इहि भांति गुपाला॥
कछु छल छिद्र नहीं हम जानैं॥ जो देखे सो सांच वखानैं ॥
सांच हि झूठ करै जो कोई॥ सो वह झूठ आपही होई ॥
हम इतनिन मैं नहीं दुराऊ॥ कहति यथारथ सब सतभाऊ॥
या महिं जो कोउ झूठी मानै॥ ताकी बात विधाता जानै ॥
हम तौ स्याम निहारे ऐसे॥ तोहि लगै प्यारी कहु कैसे॥
तुम देखे मैं सांच न मानौं॥ अपनी सी गति सबकी जानौं॥
जिनको वार पार कछु नाहीं॥ द्वै अंखियन देखौं किमि ताहीं॥

जो तुम सब अंग अंग निहारे॥ धनि धनि तौ ये नैन तिहारे॥
मै तौ लखि इक अंग लुभानी॥ भरि आयो दोउ अखिन पानी॥
कुंडल अलक कपोलन छाईं॥ रही चकित उतने के माहीं॥
रूधे नैन नीर टक टाई॥ ॥ पहिचाने नहिं नेकु कन्हाई॥
मैं तब ते अपने मन हिं यह है रही पछिताय॥
देखन को छवि स्याम की चहियत नैन निकाइ
अति छवि अखियां दोय उमगि चलत वा पर खलिल
कैसे दरसन होइ सखी स्याम के रूप को॥
द्वै लोचन तुमरे द्वै मेरे॥ ॥ तुम देखे हरि मैं नहिं हेरे॥
तुम प्रति अंग विलोकन कीन्हे॥ मैं नीके एको नहिं चीन्हे॥
काहू को षटरस नहिं भावै॥ कोऊ भोजन को दुख पावै॥
अपने अपने भाग्य न काई॥ जो बोवै सोई लुनै बनाई॥
जैसे रंक तनक धन पाये॥ होत निहाल आपने भाये॥
सो हि तुम्हें अंतर है भारी॥ धनि तुम सब हरि अंग निहारी
तुम हरि को सम गिनि ब्रजबाला॥ ताते दरस देत नंदलाला॥
सुनहु सखी राधा चतुराई॥ आपहि निदरि हमहिं बड़ाई
आपुन भई रंक हरि धन कौ॥ हमहिं कहत धनवंत सबन कौ
हम हरि की संगति सब आरी॥ आपुहि निर्मल होत नियारी
धन्य धन्य लाडिली पियारी॥ धक २ धक २ बुद्धि हमारी
तू पूरण हम निपट अधूरी॥ हमहिं असंत संत तू पूरी॥
धनि धनि तेरे मात पितु धन्य भक्ति धनि हेतु॥
दे पहिचान्यो स्याम को हम सब आरि अचेत
धनि योवन धनि रूप धनि धनि भाग सुहाग तव
तू मोहन मन रूप चित्त जीव दृग जोरी अचेल॥
जैसौं तैं हरि रूप बखान्यौ॥ है तै सोई यह हम जान्यौ

देखनकौं हरि रूप उजेरी॥ आंख पेंच हिये जैसी तेरी॥
तैं जो कहति लोचनभरिआये॥ सो हरि तेरे नैन समाये॥
अतिपुनीत अस्थल सुभजानी॥ करी स्याम अपनी रजधानी
कियो वास हरि तो द्रगमाहीं॥ और वात दूजी कछु नाहीं॥
ऐसे स्याम संग ब्रजवाला॥ कहति परस्पर गुरा गोपाला।
तहां अचानक हरि पुनि आये॥ कटि कछनी नटभेष वनाये॥
मुरली अधर अरुण पर वाजे॥ कलधुनि नंद मनोहर वाजे॥
करति रही मनहीं में ध्याना॥ सोइ अंतरजामी जाना॥
आप गये तिरछी मग माहीं॥ भावाधीन सकल रहि नाहीं॥
तरुत मालत रुत रुण कन्हाई॥ ठाढे भये आप सुखदाई॥
थकित भई सब ब्रज की बाला॥ लगी विलोकन नंद को लाला॥

रत्नजटित पग पांवरी नूपुर मंद रसाल॥
चरण कमल दल निकट मनौं बैठे वाल मराल॥
उदित चरण नखचंद्र जनौं नारी व्योम प्रकाश करि
सुर नर शिव मुनि वंदा विरह ताप अज्ञान तिय हरन॥

जानु काम सत छवि न संवारे॥ युवतिन की मन बुद्धि बिचारे
युगुल जंघ छवि पर अपुनीता॥ रंभा खंभ मनहुं विपरीता॥
ठाढे धरणि एक पद लाये॥ कंचन द्रुम एक लपटाये॥
तन त्रिभंग की लटक सुहाई॥ अटक रही युवतिन मन आई
ब्रजयुवती हरि पद मन लाये॥ तिरपति मुनि दर्स भरि पाये
कुलिशांकुश ध्वज चिन्ह निकाई॥ इकटक रही चित्र सी चितलाई
अरुण तरुण पंकज दल चारू॥ मानहुं सुख मह के रति विहारू
कटि केहरि की कटि हिलजावे॥ सूक्ष्म सुभग कहति नहिं आवे
ता पर कनक मेखल सोहै॥ मणिन जटित सुन्दर मन मोहै
मनहुं वाल कन सहत मराला॥ बैठे संपति जोरि रसाला॥

किधौंमदनकेसदनसुहाई॥ बांधीवंदनवारि बनाई॥
ब्रजतियनिरषिसुखलेहीं॥ नैननिपलकपरनिनहिंदेहीं
शोभितनाभिगंभीरअतिमानहुमदनतडाग॥
रोमावलितटपरलसत रससिंगारकौबाग॥
ब्रजतियरहीनिहारिशोभानाभिगभीरकी
मननहिंसकतिनिकारिपरेउजायगहरेषसकै
उदरउदारिबरनिनहिंजाई॥ रोमावलितापरछबिछाई॥
रहीअटकिछबितासुनिहारी॥ परषतिबनतननिरषतनारी
कोऊकहतिकामकीसरनी॥ कोऊकहतियोगनहिबरनी॥
कहतिएकअलिबालकपाती॥ जुरिबैठेसबएकहिभांती॥
कोउकहैनीरदनीलसुहाई॥ सूक्षमधूमधामछबिछाई॥
एककहतियहएषिकोजाई॥ मरकतगिरिउरतेंप्रगटाई
उदरभूमिशोभितसोईधारा॥ जातिनाभिहृदअगमअपारा
दुहुंदिसफेरास्वातिसुतमाला॥ उपजतसुखमैनहरविशाला
शोभातेहिनसकतिब्रजनारी॥ रहीविचारिविचारिविचारी॥
उरमुक्तनकीमालबिराजे॥ तामधिकौस्तुभमणिछबिछाजे
निरमलनभमानहुउडराजी॥ शशिहिघेरिबैठीछबिसाजी
भृगुपदरेखस्यामउरमाहीं॥ मनहुंमेघभीतरशशिछाहीं
पीतहरितसितअरुणरंगधरकीलीबनमाल
मफुलितव्हैछबिकीरविमानहुंचदीतमाल
छबिबरनीनहिंजायकबुकठमणिकुंठकी
ब्रजतियरहीलुभायहरिउरवरशोभानिरष
ऋषभकंधभुजदंडसुहाई॥ निंदतिअतिहिगजसुंडनिकाई
करपल्लवनमुद्रिकासोहैं॥ बाहुविभूषणलखिमनमोहैं
मनुमृगारिविपम कीडारी॥ फूलरहीउपजातछबिभारी

हरिमुखनिरखत गोपकुमारी॥ पुनिपुनिप्राणकरति बलिहारी
कहतिपरस्परअतिमनलोभा॥ देखहु सखी वदन की शोभा
चिबुक चारुअधरनअरुणाई॥ पानरेख तापर छबि छाई
मंदहसन दुतिदसननिकाई॥ उपमा कापै जात बताई॥
अनुपम छबि चितलेतिचुराये॥ जग मोहनी हमारे भाये
गोल कपोल अमोलनवीने॥ मानहु मुकुर नील मणि कीने
बाजतमुरलीकरकीफेरन॥ चंचल नयनचपलमतिहेरन
मणिनजटितकुंडलकीडेलन॥ प्रतिबिंबत सबमुकरकपोलन
सोछबिकापैजातबखानी॥ लषिब्रजतियविनमोलबिकानी

सुभगनासिकाचपलदृगकुटिलभृकुटिकीरेख
जनुयुगखंजनबीचमुकुउडनसकतधनुरेख
घुघुरारेकचस्यामबासिजमुखढिगभ्रमरजनु
सीसमुकटअभिरामकोटिकामशोभाहरन

रूपसुधाविधिवदनविराजे॥ दुहुंकरअधरमुरलियाबाजे
मानहुं युगुल कमलपरमाही॥ लेत भरायसुधाशशिपाही
हरिमुखनिरखतनैनभुलाने॥ इकटकरहे निपलिनाहिंमाने
गोपकुमारिलखत नंदनंदन॥ स्यामसुभग तनचर्चितचंदन
कनकवरनपटपीतविराजै॥ देखिसखीउपमायहराजै
निर्मल गगन सरदघनमाला॥ तापरअस्थितदामिनिजाला
अंग अंग छबिपुंजसुहाये॥ निरखत युवतीजनमनलाये
कोउभाल तिलकछबिअटकी॥ मुकुटलटकछबिपरकोउलटकी
कोउअलकनलसतिचितलाई॥ कोउलषिभृकुटिसुरतिबिसराई
कोउलोचनछबिलषिललचानी॥ चितवनिमें कोउअरुझानी
कोउकुंडल रुलकलुभानी॥ कोउकपोलदुतिनिरषिबिकानी
कोउनासिकाकोउअधरनिकाई॥ कोउरदचमकनमांझभुलाई

कोउ बोलनि कोउ मृदु हसन को मुरली धुनि लीन
कोउ मुरली पर थकि कौतुकन पर आधीन ॥
चारु चिबुक दर ग्रीव कोऊ गरिगता में रही,
हरि सुख शोभा सीव थकी निरषित हँसोतहीं ।
कोउ सुन्दर बल बाहु बिशाला। निरषि थकी कोउ भूषण जाला।
कोउ कटि कोउ पट पीत निहारी। जग गुलफ पर कोउ वलिहारी
युगुल कमल पदन ष की शोभा॥ ब्रजवासी जन मन की लोभा॥
हरि प्रति अंग निरषि ब्रजनारी॥ गेह देह की सुरति बिसारी
अति आनंद मगन मन भूली। शशि मुख लषि जनो कुमुदिनि फूली
किधौ चकोर रहे टकलाई॥ पियत सुधा छवि शीतलताई
कै रवि कुंड लछवि हि निहारी॥ विकसित कमल वदन वरनारी
कै चकई गण मन सुख मानी॥ निरषि रही अति रति हरषानी
कै धौं नव घन तन छवि देखी॥ मोर चातकी मुदित विशेषी
किधौं मृगी मुरली धुनि मोही॥ स्याम लषति युवती इत सोहीं
हरि छवि अपरूप न में परसानी॥ सुरझन सकत युवति वितसानी
रूपरास सुखरास कन्हाई॥ प्रेम रजजन के सुख दाई॥
छवि सागर सुख कौ अवधि गुण मंदिर रस खानि
मोहि लियौ मन तियन कौ रासिक नरेस सुजान
मुरली मधुर बजाय प्यारी प्यारी नाम कहि,
अनुपम छवि दरसाइ गये सदन आनंदघन॥
रही ठगी सी गोपकुमारी॥ मन हरि लै गये नवल विहारी
पुनि पुनि कहति भई सुषमानी॥ धनि धनि राधा कुवरस्यानी
वड़भागनि तो सी नहिं प्यारी॥ तेरे ही वस री गिरिधारी॥
धनि श्याम धन्य तू स्यामा॥ धनि जोरी धनि प्रीति ललामा
एक प्राण है देह तुम्हारे॥ तो बिन रहित सदत हरि प्यारे

तोकों देखि बहुत सुख पावैं ॥ मुरली मैं तेरे गुण गावैं ॥
तेरी प्रीति साच हरि जाने ॥ जाते तेरे हाथ विकाने ॥ ॥
मन वच क्रमनि निर्मल तू प्यारी ॥ दुरीचारनी हम सब नारी
जे मैं घट पूरण महि डोलैं ॥ होय अवधलों सो ढग ढोलैं
परम सुजान नारि तें धीरा ॥ राख्यौ परषि हृदे हरि हीर
धनी न अपने धनहिं बतावे ॥ धरनि छिपाय न प्रगट जनावे
धन्य सुहाग भाग तू प्यारी ॥ कृष्ण सदा पति तू वर नारी ॥
सुनि सुनि बानि सखीन की प्यारी जिय अनुराग
पुलकि रोम गद गद हियो समुझि आपनो भाग
वचन कहेउ नहिं जाय प्रीति प्रगट चाहत किये
हरि उर रहे समाय बाहर दुरत प्रकाश नहिं
सुनहु सखी तुम करति बड़ाई ॥ सुनि सुनि मेरो मन सकुचाई
मोहि कहति स्यामहि तें जान्यौ ॥ हरि कौं भले परषि पहिचान्यौ
तब तें यही सोच मन माहीं ॥ कैसें हरि पहिचाने जाहीं
नैन दोष छवि अमित अगाधा ॥ ता पर पलक करति हैं बाधा
क्षणही मैं भरि आवत पानी ॥ स्याम स्वरूप यरै किमि जानी
मरूं करम अंग लखिये सोई ॥ पलक परत औरै छवि होई
क्षण क्षण मैं शोभा पलटावे ॥ कहो सखी उर केहि विधि आवे
देखन कौं दृग अति अकुलावें ॥ प्रगट लखत पहिचान न आवे
यह सखि नहीं परति कछु जानी ॥ विरह संयोग लाभ के हानी
कै दुख सुख के सम रस होई ॥ मुहि समुझाय कहो सखि सोई
पलतें होम अग्नि रुचि जैसें ॥ मिटति न हीं नैन निगति तैसें
जब छवि लखि नित नई छवि वाने ॥ इत कों भी द्रग तृप्ति न माने
विन पहिचाने कौन विधि करौं स्याम सौं प्रीति
नहि चहरूप न भाव कुह क्षण क्षण औरै रीति

यहजानी मैं वात है ज्ञानदकी खानि हरि॥
पहिचाने नहिं जातक हाकहौं द्वै लोचननि॥
वडो करौ विधिनायह आली॥ ससुरूप री देखत वनमाली
करपद उदरग्रीवकटिकीनी॥ सुखरद स्रुतिनासा भुवदीनी
भाल सिखर नखकेसव नाये॥ अधर जीवअरु वचन सुहाये
रचिपचि सुचिर अंग सव कीने॥ रोम रोम प्रति नैनन दीने॥
जोब्रज दोनो जन्म हमारो॥ देखन को मन मोहन प्यारो॥
तौ कत नैन दिये सव दोऊ॥ विधितैं नितुर और नाहिं कोउ॥
जोविधिना कौ वसकछु पाऊ॥ तौ अव पाछ्त ओर चलाऊं॥
रोम रोम प्रति नैन वनावै॥ इक टक रहे पलक नहिं लावै॥
तौ कछु घनें कहेउ सरिस्ते रौ॥ होय मनोरथ पूरण मेरी॥
हरि स्वरूप सखि जानि न जाई॥ वहकवि द्वै लोचन न समाई॥
मैं पचि हार रही वहुतेरो॥॥ एकहू अंग न नीके हेरो॥
जो देखौं तौ प्रीति करो री॥॥ देखन ही की साध मरो री॥
दुरत दुराये कौन विधि सखि तुम सों यह वात
देखे विन नंदनंद के धीरज धरत न गात॥
उझो फिरत दिनरात इन नैननि के संग लगि
सुख नहिं मैं गठहरात याकरुई जिक वात सव
सुनरी सखी दसा यह मेरी॥ जवते हरिमूरति मैं हेरी॥
सवहिं फिरी दरसन नहिं पाऊं॥ मनही मन पुनि पुनि पछताऊं॥
जव मैं सपने पिय यह मानो॥ निकरु जाय हरि के हिय पाहि जानो॥
तव मति विवई मैं रोई आई॥ होत तहां मोकौं दुखदाई॥
मेरे मन हरि मूरति भावै॥ सन्मुख दृष्टि तहां यह आवै॥
मेरिय देह होत सुहि वैरी॥ कितौ दुरावति दुरत न हेरी
मैं अंतर तजि लखत कन्हाई॥ यह पति अंतर देत वढाई

सख्यो दोष नहिं काहू केरौ ॥ करत स्याम यह सब रुकमेरौ
रीझे दरसन कबहू देहीं ॥ नई नई छवि करि मन लेहीं ॥
चपलाहू ते चपल घनेरी ॥ दसनचमक चौंधत है हेरी
कबहूं वाममन मुकरवनावै ॥ कबहूं कोटि अनंग लगावै ॥
कैसे सव छवि देखन पैयै ॥ कौनभांति यह साध पुरैयै ॥

मगन दरस रस लाडिली पुनि २ पुलकित गात
तृप्ति न मानति देखि छवि कह तिलरवे नहिं जात
लीनो सखियन जान हरि रंग राती लाडिली ॥
सुन्दर स्याम सुजान रोम रोम याके रमे ॥ ॥

कहति धन्य प्यारी वड़भागी ॥ नीके तूं हरि संग अनुरागी
तू है नवल नवल हरि श्रोऊ ॥ रूप अगाध सिंधु तुम दोऊ
हम जानी यह वात अगाधा ॥ तूं हरि की आराधिनि राधा
मिले तोहि करि कृपा कन्हाई ॥ किये सकल दुख दूर मिटाई
कहु प्यारी हम सों अब सांची ॥ कहे बनै अब तात न कांची
छांड़ि देहु अब यह चतुराई ॥ कहां मिले अब तोहि कन्हाई
खरक मिले कै कुंजन माहीं ॥ कै दधि वेंचन जात जहांई
कै अब उड़गड सन ते वांची ॥ कहि कैसें तूं हरि रंग राची
सुनि सखियन की बात अयानी ॥ बोली परम नागरी सयानी
कबरी स्याम मिले नहिं जानौ ॥ सुनहु सखी मैं सांच वखानौ
गृह वन कुंज सुरति नहिं मोही ॥ दधि वेंचत कै खरक विमोही
आज कि काल्हि कहौं का आली ॥ किया वास उर मैं वनमाली

नैननि तें सरकार रति नहिं नीके लखे न जात ॥
कहा कहौं तुम सौं सखी यह अचरज की वात
मिले मोहि जब स्याम सुनौ सखी तुमसों कहौं
करिकै उर मैं धाम तब तें मन मैं सौं हरयौ ॥

मै यमुनाजलभरन सिधाई॥ औचक हरितहं परे लखाई॥
मे तन चितै रहे सुसकाई॥ कहा कहौं सखि नैन निकाई॥
जीत आपने वल जनौ कोनी॥ सरद सरोजनकी छवि छीनी॥
जीते सकल रूपगुण जाती॥ नीलकोकनद अरूसतपाती॥
ये निस मुद्रित दिवस प्रकासे॥ सरग प्रति होत मलिन दुति नासे॥
आनंदकंद नंद सुखमूले॥ रहतिदिवस निसि छवि सो फूले॥
नरषि नयन में दसा भुलाई॥ उन मुसकान मोहनी लाई॥
सिथल अंग भे जैसे पानी॥ तबही ते उन हाथ बिकानी॥
सधो मारग गई भुलाई॥ ज्यों त्यों कर पहुंची घर आई॥
ता दिन तें अखियां ये मेरी॥ सुख दुख भूलि भई हरि घेरी॥
वसी नाय वा चितवन माहीं॥ अब वह सरण विसरत नाहीं॥
कै इन नैननि आप समानी॥ यह चितवन कछु जात न जानी॥

नहि जानति हरि कह कियो मंद मधुर मुसकाय
मन समुझत रीझत नयन सुख कछु कहे उनजाय
तव ते कछु न सुहाय कासों कहिये वात यह॥
अमल परी दृग आय अवलोकनि हरि विधुवदन

निकसे सखी एक दिन आई॥ द्वार हमारे कुंवर कन्हाई॥
मैं वाढी ही आजिर अकेली॥ देखि रही छवि यह अलबेली॥
चंचल नैन चितै चित चोरे॥ सुभग भ्रकुटि विव वक मरोरे॥
कोटि मदन तन दुति सम वाही॥ फेरत कमल कमल कर माही॥
मोहित लागि भये तह ठाढे॥ कियो भाव कछु आनंद वाढे॥
लै कर कमल भाव सों लायो॥ पीतांवर निज सीस फिरायो॥
मै गुरुजन डर सकान्आनी॥ वोलन सकी कछू मुखवानी॥
प्रेमसहित तेरे हरि आये॥ वैसेहि उनकौं फेरि पठाये॥
तू तौ चतुर कहा ती अति नारी॥ सेवा कछू करी नहि प्यारी

गुप्त भाव तोसों हरि कीनो ॥ बातन कुरै नहीं कछौ लीनो ॥
काहे कमल भाल सों छायो ॥ काहे पीतांबर हि फिरायो ॥
मैं कछु उतर तिन्हें जनायो ॥ घर आये काहे बिसरायो ॥
कहा करौं गुरुजन सखी भये मोहि दुख दाय ॥
सकुच रही तिनकी सकुच सुख कछु बचन न आय
इतनो कियो सयान मैं तब वेंदी कर परसि ॥
उर लाई हित मानि सन्मुख कीरि करि आरसी
अंतरजामी चतुर कन्हाई ॥ जानि लई मेरी चतुराई
आपन हंसि उत पात संवारी ॥ रहे कमल हिरदे पर धारी
रहे चिते अति हित चित लाई ॥ मोतैं सखी न कछु बनि आई
कहा करौं कछु दोष न मेरौ ॥ नयो नेह उत गुरुजन घेरौ
रही देखि मन आनंद धरि कै ॥ लियो कमल उर आसन करि कै
आंचर फेरि निछावर कीनों ॥ अरघ सलिल अंखियन सों दीनों
उमगि कलस कुच प्रगट भये री ॥ टूटि कंचुकी बंद गये री
अब मन होति लाज अति भारी ॥ सखी समुझि करनी वे हमारी
ऐसी मेरी मति अज्ञानी ॥ ॥ सो प्रभु मंगल मैं करि मानी
अति सुख मानि गये सुखदाई ॥ तब तें मोहन कछु न सुहाई
कहति सखी राधा सुनु भेरी ॥ सेवा मानि लई हरि तेरी ॥
अब काहे पछितात अनेरी ॥ तो हित स्याम जात करि फेरी
नीके कीन्हे भाव सब तू अति नागरि वाम ॥
उन लीन्हे सब जानि कै चतुर सिरोमणि स्याम
अब हि को सनमान गुरुजन के न घिचा हिये
गये स्याम हित मानि अब प्यारी चाहति कहा
तेरे बस हरि भये दधि दानी ॥ हम यह बात भले करि जानी
तैं वेंदी उन पाग संवारी ॥ उनको तुम उन तुम हिं जुहारी

सुनहु सखी मोहन सुखरासी ॥ और किये रहति दरस की प्यासी ॥
मिकसत जब सुन्दर रहत भाई ॥ कमल नैन कर वेणु सुहाई ॥
ना जानिये सखी तेहि काला ॥ चक्कन न भव ए ॥ किलान्चन भल
सुरत सबद्र भमि रैमनु माहीं ॥ नखसिख ज्यों चख देख्यो चाहैं
इतने पर सम सुमृत नहिं वैना ॥ चितै रहत ज्यों चित्रत नैना ॥
सुनौ सखी यह सांच किसपनौ ॥ कै दुख सुख कै सभ्रम अपनौ
कहा करौ गुरुजन डर मानौ ॥ मन में रोउन हाय विकानौ
अबते द्वार दरस मोहि दीनौ ॥ तबते मन अपनौ करि लीनौ
भाग दसा आये सदन मेरे स्याम सुजान ॥
मैं सेवा नहिं करि सखी गुरुजन को डर मान
यहै चूक जिय जान मोहन मन हरि लै गये
अब लागी पछितान फेर कौन विधि पाइये
अबते प्रीति स्याम सों कीनी ॥ तबतें नींद दृगन तजि दीनी
फिरत सदा चित चक्र मद्यौ से ॥ रहत हिये अति सोच घनौ से
मिलहिं कवन विधि सुखर कन्हाई ॥ यहै विचार विचारत जाई ॥
यह दुख सखी कौन सों कहिये ॥ पसु वेदन ज्यों आप हि सहिये ॥
सुनु प्यारी तू हरि रंग राची ॥ चातक है तासो हम सांची ॥
तावे चतुर औ रनहिं कोऊ ॥ तुम अरु स्याम एक भये दोऊ ॥
वाको नहीं कछू अब बांची ॥ कहो बात मे रेख खाची ॥
ऐसी भई आप तूं भोरी ॥ उनको मन तें लाय लसौरी ॥
मे उन कौं मन प्रथम सुरायौ ॥ तबु उन तेरो मन अब पायो ॥
अब काहे कौ करत सयानी ॥ नंद नंदन वर तू पटरानी ॥ ॥
तोसी और कौन वह भागी ॥ तेरे संग स्याम अनुरागी ॥
किनसौ स्याम संग सुरुमानी ॥ अब कत घूंघट रहति वौरानी ॥
स्याम करी माहि बावरी मन करि लिया अधीन

वैसोज्यों वाकी अलक अटके मो दृग मीन ॥
अब मोहिं कछु न सुहाय मन मैं रै से रैनहीं ॥
मिल्यो स्याम अपनाय रूप ठगौरी डारि सिर
वार वार मैं तोहिं सुनाई ॥ ॥ तबतें अब यह बात न आई
अपनीसी बुधि जानति तेरी ॥ ॥ मैं पाई इतनी कहं एरी
देखतही हरि रूप लुभानी ॥ मोतें बुधि सुधि सबहि हिरानी ॥
ऐसे कहि प्यारी अनुरागी ॥ गदगद वचन स्याम रंग राची
पुनि पुनि कहति यह सुखखानी ॥ मन हरि लियो छैल दधि दानी
तब इक सखी सखी सों बोली ॥ तू कत होति जानि कै भोली ॥
यह सुनि रसन कौ निदरानो ॥ सुद्ध बात तिन प्रगट बखानी
तुम जानति स्याम यह छोटी ॥ है यह ज्ञान बुद्धि की खोटी
रहत सदा हरि के संग माहीं ॥ हम सों मन रुक रति सो नाहीं
कियें रहति हम सों हठ खोटी ॥ बात कहति सुख कोटी पोटी
भये स्याम याही के बस अब ॥ देखि छके वे हां चोटी छबि ॥
भली बनी सुन्दर अब जोटी ॥ देखौ दै बन तें यह खोटी ॥
कहति सखी तू यह कहा निपट गँवारी बात ॥
को प्यारी घर दूसरी जाके बलबल जात ॥
रूप सील गुण धाम यह सब मैं ब्रज आगरी
इह सलौनो स्याम धन्य न याते और कोउ
प्रीति गुपतही की है नीकी ॥ ॥ कही बात सखि अपने जी की
मैं रीझी या पर अति भारी ॥ क्यों खोटी जो कछु पियारी
जो हरि को इक छन मन मोहै ॥ सो मोहन या को सुख जो है ॥
जैसे स्याम नारि यह तैसी ॥ ॥ यह कैसो सखी अनैसी ॥
नागरि नवल नवल वे नागर ॥ सुन्दर यह जोरी छबि सागर
सुनहु सखी ऐसें ए राजें ॥ एक प्रान द्वै देह बिराजें ॥

एकहुंपलकवहूं नहिंन्यारे॥ सोवतजागतजान हमारे ॥ ॥
पूर्वनेह नयौवह नाहीं ॥॥ देखहुंसखी समुझमन माहीं
मेरोकह्यौ मानयह लीजे॥ इनसों भावप्रीतिकरिकीजे
इनकीप्रीतिरीतिके माहीं विनाप्रीतियेजाने नजाहीं
जवलग इनसोंप्रीतिनमाने तवलगि इनकी रीतिनजाने
इनकीप्रीतिलख्योजोचाहीं तोकरिइनसोंप्रीति निवाहीं
सखीवचनसुनिसखिनकेभयो हियेश्रतिचैन
धन्यधन्य वाकोसवैकहति सप्रेम सुचैन
धनिधनितेऐज्ञानतेंइनकोजान्यो भले॥
हमसवनिपटअजानवातकहतिश्रौरेकछू
हम इनकौऐसे नहिं जाने॥ येव्रजआयगुप्त प्रघटाने
श्यामाश्याम एक है एरी॥ तौइतनेउपहास सहेरी॥
एदोऊ इक दूसरि तूरी॥॥ तेरिहू प्रीतिश्याम सों पूरी
इनसोंतेरीप्रीति पुरानी॥ तवतेंप्रीतिपुरातन जानी
धन्यश्याम धनि धनितूश्यामा हमसव वृथा भईविन कामा
श्यामराधिकासहजसनेही सहजएक दोऊ है देही॥
सहजरूपगुणपूरणकामी सुन्दरसहजसहजवनधामी
देखि दुहून की प्रीति विशाला भईविवससवव्रजकी वाला
श्यामश्यामरंगरस पागी सोवत तें मानहु सवजागी
उपजीप्रीतिदुहूनकोसाची दूरगईदुविधामनकाची
भईयुगुलरसवससवगोपी लाजसकमर्याद लोपी॥
सवके नयनरूपरसअटके श्रीश्यामानागरनटके
छं॰ नवलनागरश्यामश्यामा प्रेमतनसवके फसे ॥॥
नयननासाश्रवणरसनाअंगप्रतिदोऊवसे ॥॥
उठतवैठतचलतसोवतजगतनिसिवासरपरी

नहीं विसरीं ध्यान कबहूं सकल ब्रज की सुन्दरी ॥ ॥

दो॰ गई सकल निज निज सदन युगुल प्रेम रस लीन
बिछुरति नहिं एक हु घरी जैसे जल अरु मीन
रहे श्याम उर छाय बिन देखे दृग कल नहीं
गृह कारज न सुहाय गुरुजन त्रासन कछु नहीं

वे कछु कहें करें कछु और सास ननद तब मारन दौरें
कहैं यही पितु मात सिखायो ऐसो ढंग तुम्हें बतायो
कहा तुम्हारे मन यह आई अपनी सुधि बुधि कहां गवाई
तुम कुलबधू लाज नहिं आवे कहं लग कोउ तुम्हें समुझावे
कब की यमुना न्हान गई हो ऐसी अब तुम निडर भई हो
तुम राधा को संग करति हो हरि के पाछे वही फिरति हो
बड़े महर की सुता कहा वै यह सब बात उन्हें बनि आवे
उनको सब उपहास उठावत ब्रज घर ख्याति यही कहावति
ऐसे तुमहूं नाम धरे हो ॥ ब्रज लोगन पै हमें हंसे हो
हम अहीर ब्रजपुर के बासी ऐसे चलो होय नहिं हांसी
लोक लाज कुल कानें करिये फूंकि फूंकि धरणी पग धरिये
ऐसें कहि गुरुजन समुझावें लाज काज मर्याद सिखावें

सुनि युवती गुरुजन वचन विहंसि रहीं धरि मौन
हरि राधा उपहास की महिमा जानें कौन ॥ ॥
कहति तासि ये बात जैसी मति जाके हिये
सुख उलूक ही रात रवि को तेज न मान ही

विष को कीट सो रुखी रुच मानें कहा सुधारस स्वादहि जानें ॥
ये अहीर इनको प्रिय गोधन नंदनंदन सुर स्तुति शिव को मन
तिनको महिमा कहा ये जानें जिनके गुण मुनि गर्ग बखानें
धनि राधा कुंवरि सयानी श्यामहिं मिली कर्म मन बानी

स्यामकामके पूरण हारे ॥ पूरणकरितिन कौउरधारे॥
धन्यधन्यस्यामावनवारी॥ यहरखलीला ब्रजविस्तारी॥
ऐसेगोपीगण करिध्याना॥करतस्याम स्यामागुणगा
स्यामरूपस्यामाअनुरागी॥ रोमरोम ताही रंग पागी॥
गईसदन मन लागतनाहीं॥मनमोहनविनसरणयुतजाहीं
मनहीमनगुरुजनपरखीजे॥ इनविमुखनकौसंगनकीजे
कौनभांतिकरिइनसो छूटों॥क्योंवहदरससरससुखलूटो
वारवार जियअतिअकुलाई॥केसेहूं हरिविन रहेउनजाई
धकगुरुजनकुलकानधकधकलज्जाधकधाम
धकजीवनवहुदिननकौविन सुन्दर घनस्याम
पलक कलप समजायब्रजवासोप्रभुदरसविन
सदनन नैकसुहाय मन हरिलीनो सांवरे॥

अथ वारके मिलनकीलीला

श्रीवृषभानकुवरि वरगोरी॥ कृष्ण प्रेम उनमत्तकिशोरी
तनविह्वलमनहरिकेपासा॥ दुरतनहृदयप्रेम परकाशा
चलीयमुनजलआपअकेली॥रूपशीलगुणरासिनवेली॥
दृगनस्यामदरसनकीआसा॥मनहीमनयहकरतिहुलासा
चितकौचोरकहूंजोपाऊं॥ तौउनकौसताप नमाऊं॥
राखोंबांधि हृदय सोलाई॥भुजकी दृढकरिदामवनाई
जैसैलियोचोरिमनमेरो॥ तैसेलेउं छोरिउन केरो॥
छोडूंनाहिंकरों गाकोरी॥ ऐसीजानिविचारतिभोरी
इततेप्यारी यमुनहिंजाई॥ उततेआवतिधरहिकन्हाई
नीलजलदतनशोभितआछे॥नटवरभेषकाछनीकाछे
दूरिहिते देखनहीं जान्यो॥जीवनप्राणतुरतपहिचान्यो

नहिं सुहात तुम विन दिन राती । प्राणनाथ तुम हित सव भाती
तुमते विमुख जननके माही । रह्यो जात मोपै प्रभु नाही
मातपिता अति त्रास दिखावे । निंदत मोहि नेक नहि भावे
भवन मोहि भाठी सो लागे ॥ इकछण सोच नही उर त्यागे
कहँलगि अपनी विपत वताऊं । तुम विन सुख को अंत न पाऊं
सुन्दर स्याम कमल दल लोचन । करहु कुसगति को दुख मोचन ॥
वयरह विनय स्याम सुनि लीजे । चरणन ते न्यारी नहि कीजे ॥
कुलकी कानि कहा लगि मानो । यह मन मोहन तुमहि लुभानो

छं॰ मन लुभानो तुमहि मोहन और तेहि भावे नहीं
विन लखे गिरिधर न सुन्दर कहु सुख पावे नहीं
लोक डर कुल लाज गुरुजन कानि कहँ लो कीजिये
सिंह सरण कृपाल जवुक चाम क्यो सहि जीजिये ॥

दो॰ निरषि स्याम प्यारी वदन सुनि सुनि वचन सिहाय
प्रेमाधीन विलोकि अति हरषि लई उर लाय ॥
सीतल पकज पान परस हरयो तन विरह दुख ॥
प्रेम विवस भगवान वोले प्यारी सो हरषि ॥

कत दुख पावति हो तुम प्यारी । यह लीला तुम हित विस्तारी ॥
वसत सदा मै तुम मन माही । तुम मम उर तें वाहर नाही
दीजो सयन मोहि कहुं आई । तव मै तुम पै ऐहो धाई ॥
अव ग्रह जाहु आय है कोउ । यो संकेत वढ्यो हित दोउ
व्रज यमुना मग विच दोउ ठाढे । प्रेम सकोच अतिहि मन वाढे
विछुरत वनत न रहत तहाई । चितवत चकित चपल चहुं घाई
तबही युवति व्रजते कछु आई । कछु यमुनाते व्रज को जाई ॥
दहुं दिश तरुणिन आवत जानी । मन हीमन राधिका लजानी ॥

चले तुरत हंसि कुंवर कन्हाई । मिले हांक दै ग्वालन जाई ॥
रहे कहां तब ते सब ग्वाला ॥ ऐसे टेर कह्यो नन्दलाला ॥

गये भाव करि स्याम यह लियो नागरी जान
कहिहों यही सखीन सों कीनो यह अनुमान
सखी माहि हरि संग अबहिं आय सब बूझिहैं
जानति इनको रंग मन सोचति लाडिली

उत सुवातिन मोहन को देख्यो जाति राधिका हिंग ते पेख्यो
कहन लगीं आपुस में बातें । देखहु सखी प्यारी की घातें ॥
बात कहति मिलि कुंजविहारी हमहिं लखत दीने हैं टारी
बूझत हौं कछु बुद्धि उपै है ॥ सांची एकहु नाहि जनै है ॥
इतहु उत ते आई नारी ॥ कहति कहां तू जाति प्यारी ॥
अबहिं लखे तोहिं बन बारी कहां गये पछतात कहारी
कहा दुराव बनत अब कीन्हे हम बहां तें तब हीं लखि लीन्हे
कान्ह कहा बूझत हो तुमको सांची बात कहो तुम हमको
मन लेगये तुम्हारो चोरी ॥ सो पायो अपनो तुम गोरी
स्यामहिं मिल अपनो मन लीनो देखत हमें टारि क्यों दीनो
सदा चतुराई फबती नाहीं ॥ अब तो आय परी फंद माहीं
हमहिं बूझत तुम निदरही हो कहां रहत हरि के से निवही हो

कहत रही जब तबहि तुम हरि संग देखहु मोहि
तब कहियो जो भावई लीजो बेसरि खोहि
अब हम लेहिं छुडाय बेसरि देहो के नाहीं
के करिहो चतुराय और कछू हम सों अबहि

तब हंसि कह्यो नगर की प्यारी तुम सब भई अजान कहारी
मैं मूरख तुम चतुर बडेरी ॥ ऐसहिं बेसरि ले हो मेरी
यही कहन हमको तुम आई इत उत ते सब मिल उठ धाई

बेसर एक लेन को कौं ॥ पीतांबर दिखराबहु मोकौ
पीतांबर अरु बेसर लीजै ॥ प्रगट जाय तब ब्रज में कीजै
ता पै एक बजत कर दोऊ ॥ इतनो ज्ञान करो सब कोऊ
तु राधा हम तोसो हारी ॥ धन्य धन्य तेरी महतारी
तेरे चरित कहा कोउ जानै ॥ बस कीनो घनस्याम सुजानै
अबही दारिबतायें तिनको ॥ हम देखे तेरे ढिग उनको ॥
तापर निदरत है तू हमसो ॥ कहत न बनत हमें कछु तुमसे
अग अग विरचि कपट चतुराई ॥ निजकरि विधि नातो है कर्दै
इतनी बुद्धि स्याम के नाहीं ॥ जितनी है प्यारी तो माहीं ॥

स्याम भले अरु तुम भली रजक रूप धर जाय ॥
बेसरि छोरत हौ सखी विन काजे उठि धाय
जान्यौ तुमरो ज्ञान दौरि परी मो पर सबै ॥
जो तुम हती सुजान गहती बाह दुहन की

कहुं प्यारी साची अब हमसौ ॥ कछु तो स्याम कहत है तुमसौं
हा हा बात कहै सोई प्यारी ॥ भेद कहे तो सौंह हमारी
तो ढिग ते मोहन हम हेरत ॥ गये उतै ग्वालन को टेरत ॥
तू क्यों ठठकि रही मग माहीं ॥ कहा कह्यौ मोहन तो पाहीं
सहज होय हमसौं यह भाख्यौ ॥ उर में कछु रोस जिन राखौ
मैं यमुना तट जात रही री ॥ ब्रज तें आवत तुम हिलही री
पूरखन लगी तुम हिं मग माहीं ॥ तरु छै पाय गये हरि पाहीं
मैं तुम ही तन रही निहारी ॥ उन पूछ्यो सुखि ग्वाल कहा री
मैं सुन सन्मुख दोउन खोली ॥ हो नाही कछु सखन हि बोली
ग्वालन टेरत गये कन्हाई ॥ तुम ने री बेसरि कों धाई
सुनि यह बात सुवति सकुचानी ॥ कछु तो परतीत भई सो जानी
[illegible] टेरत गये कन्हाई ॥ यह तो हम श्रवन सुनि पा[illegible]

ग्वालन टेरत गये कन्हाई॥ यह तो हम इंग्मवनसुनिपाई
तबहंसियों सखियन कह्यो सुनलाड़िलीसुजान
हम मानीं तेरी कहीतू मतिरिस जिय ग्रानि॥
लीनेंकंठ लगाय ग्रति निर्मल तू लाड़िली ॥
झूठहिकरत बचायब्रजघर घर तेरी सबै ॥
ग्रब चालिहै यमुना के धामा॥ संगचलेंहम है सब स्यामा
चूकपरी हमसों यह तेरी॥ नाम लियों बंसीर को टेरी ॥
ग्रहो सखी तुम निपट ग्रनैसी॥ जानतिमो हिग्रापहो जैसी
झूठहि धाई दोष लगावत॥ ग्रबुलागी मोकों दुलरावन
ग्रागकबुद्धि तुम्हरे धों कैसी॥ हो तुम बड़ी पेट की मैसी॥
यह सुनि हंसति चलीब्रजनारी॥ गई यमुन तें गेह कों प्यारी
ऐसें सखियन कों बहरायो॥ कृष्णसनेह न प्रघट जनायो
नागरि स्यामा स्याम सनेही॥ चतुर स्याम स्यामा वो नेही॥
स्यामा बसत स्याम तन माही॥ बसत स्याम स्यामा मन माहीं
वृद संकेत बगवे घर दोऊ॥ मात पिता कछु जानें न कोऊ
कै सेंइ करि करि दिवस बितायो॥ निसन घटेरसबिरह सतायो
ग्रति ग्रातुर दोऊ मन माहीं॥ क्योंहू नींद परति है नाहीं॥
विरह दीन निसि तसमल्लिलपैरतथकेनिहार
वृड्डहमतितमउरकह्यो मिल्यो पार भिनसार
सुनितम वृरको टेरग्रति ग्रानंद दुहंनमन
ग्रतिहीउठेसवेरलगीचटपटीमिलनकी

ग्रथ संकेत के मिलन की लीला॥

स्याम उठत लखि जननी जागी॥ हरिमुखकमलनिरखग्रनुरागी
वृकत मात जाउं बलि प्यारे॥ ग्राज कहातुम उठे सकारे॥

उत्तमजलभरिदीन्हींमरी॥स्तुतिमातलक्ष्मीकीसुखसार॥
विवसस्यामप्यारीसकुचे॥ मगनध्यानवृषभानसुताके॥
उत्तरवृषभानसुतासुकुमारी॥ उठीप्रातकहभवविचारी॥
ग्रीवासोमोतीलरतोरी॥ आंचरवांधिमातकीचोरी॥
गृहव्याजेअपनेउरधारौ॥ कुंजधामवनजानविचारौ॥
आसनगईभवनफिरआई॥ गईभवनतेंफिरअगनाई॥
मातकह्योनरह्योनहिंजाई॥ इतउतफिरतभवनवितताई॥
मनहिंकहतिकवमिलेकन्हाई॥ कुमलितयवनधामकुमारि॥
मातकह्योकीउठीसवारी॥ जातकहांप्रातहि तू प्यारी॥
आजकहांहतउततूडोले॥ मुखतेंकछुवचननाहिं वोले॥
मातिनमागिमोतीसरी॥ राखीप्रथमदुराइ॥
तन्हींमिसकरिकैसकुचवोलतिनाहिंडराइ॥
पनिफनिचितईमातलखीग्रीवभूषणविना॥
तवजानीयहवात खोईकहूंमोतीसरी॥
जननीगहेतवहिंसिहराई॥ कंठसरीतेंकहांगवाई॥
अतिनकामजराउवनायौ॥ वहुमोलकोपरमसुहायौ॥
तेरेलियेमहरवनवायौ॥ मोतीकौहितकारियहिरायौ॥
कौनेलयौकहांतेंगरयौ॥ कालहितेरेंतोगरहरयौ॥
वूझतीहिजवावनआवे॥ कहांसोचतिनवगरवतावे॥
सुनिराधिकामातकीवानी॥ मनविहसतऊपरभयमानी॥
वालतितहींहृदयहरपाई॥ कहतिभलीवुधिवाकहुआई॥
अवहींआकोंखोजपठेहैं॥ यामिसजानस्यामपैं रहें हैं॥
कहतिमातसोंवतभयभानी॥ मोहिनतसुधिकहांहिरानी॥
कालिसखिनसंगयमुनान्हाई॥ तहींकहूंधोंतिनहिंचुराई॥
कैधोंगिरीकतहूंजलमाहीं॥ यहतौमैंकछुजानतिनाहीं॥

चंद्रावलिललितादिकनारी॥इतीसकलव्रजगोपकुमारी
देरवकुंजायमुनतटहेरी॥अहोराधिमैंन्हातरहेरी ॥
युवतीएकरहीरटकलाई॥पूंछिदेखिहैंधाकोंजाई ॥
जैहैकहांजलजलरीमेरी॥तिनन्हींलईभईसुधिएरी ॥
आजभवेरलगेगीमोही॥ढूंढौंगीव्रजघर घरओही ॥
ऐसेंकरिमातामतिभोरी॥हरषिचलीवृषभानकिसोरी
निधरकचलीसदनतेंप्यारी॥मनअटक्योंवनकुंजविहारी
मनहींमनयोंसोचतिजाई॥कैसेंहरिसोंदेऊंजनाई ॥

वारवारनंदनंदकुंतआतुरओहतराह॥
प्यारीउसमगिउठकीनैनचकोरनचाह॥
भरेविरहरसमाहिंपुराणमंदिरढूंरस्छ
फिरफिरआवहिंजाहिलगीचटपटीप्रेमकी

ननतोकरतरसोईआतुर॥लषिलषिजातस्यामघनसु
कहाअवेरकरतनूमैया॥भूषलगीमोहिकहतकन्है
जसुमतिकह्योतातवलभाई॥अवकिलवनाहिंपैंवढ़ाई
सखासंगसवलेऊबुलाई॥वोलिलेऊअरूहलधरभाई
सादरकह्योस्यामवलभैये॥दाऊजूजेवनकोएये ॥
मोकऊभवाहिन्हींरुचिभैया॥सरवनसंगतुमखाऊकन्है
संगसखनलैतवमनमोहन॥जैंवनकोवैठेसवगोहन
खटरसव्यंजनसरससंवारे॥परसधरेरोहिणिपनवारे
स्यामसरवनकोआयसुदीनो॥आपनहूकरकोरहिलीनो
तवहींकोकिलकेसमवानी॥वोलिउठीराधासुखदानी
नंदमहरीपिछवारहिआई॥कैठहिललिताकोगुहराई
घरसवनमगजातअकेली॥आवहुवेगतुमदोनमहेली
विनभैवेमोहनउठकरतकोरागिराय॥

जैंवतही छोड़े सखा चले बनोहि आतुराय ॥
देखि चकित दोउ मात चौकि रहीं मग रे सखा
कहत कहां चले जात अति आतुर गोपाल तुम
अवही ग्वाल आयो कहि मोही ॥ बन में गाय बियानी लाही
मैं जेंवन वैठ्यो विसराई ॥ सो सुधि मोहि अवहिं के आई
तुम जेंवहु मैं देखहु जाई ॥ करी स्याम तिन सों चतुराई ॥
लाही मेरी गाय वियानी ॥ यह कहि चले हरषउर आनी ॥
हंसत सखा सब मन माही ॥ नहीं गाय बछरा वहां नाहीं
है प्यारी रानी वह राधा ॥ हम जानी यह बात अगाधा
जननी नहीं कछु यह जानो ॥ वारवार कहि के पछतानो ॥
भूषे स्याम गये उठि धाई ॥ राज करो यह गाय बिधाई ॥
गई सैन दै बन श्री स्यामा ॥ पहुंचे तहां जाय घनस्यामा
देखत हरष भये मन दोऊ ॥ फूले अंग समात न कोऊ ॥
मिले धाय गहि अंक समाला ॥ कनक बेलि जनों नील तमाला
मिलि बैठे दोउ कुंज सुहाई ॥ कोटि काम रति छवि हि लजाई
नवल कुंज नव नागरी नव नागर नंदनंद ॥
प्रेम सिंधु मर्यादत जि मिलेउ मागि आनंद ॥
विलसत मदन विलास को टि मदन मन मथन
जुगल रूप को रासी नित्य विलास बिलास निधि
नागर स्याम नागरी स्यामा ॥ शोभित कुंज कुटी छवि धामा
चितवत दुर दुर नैंन लजो है ॥ सो छवि वरन कहै कवि को है
रीके स्याम नागरी छवि पर ॥ नागरि निरषति स्याम सुभग वर
देह दसा की सुरति विसारै ॥ परसपरस दोउ रूप निहारै ॥
शोभित वदन महा छवि छाये ॥ सिथल संग श्रम विंवु सुहाये
इन्दीवर राजीव कमल जनु ॥ फूलि रहे मकरंद भरे मनु ॥

बैठे कुंज द्वार सुख पाई॥ कोमल किसलय सेज सुहाई॥
लटकति चंडुरि सिंघु मनत केली॥ ललित लही तरु डारि नवेली॥
हरित भूमि छवि वरनि न जाई॥ वहत समीर सुमंद सुखदाई॥
आये उलहि मेघ सुखकारी॥ परति बूंद शीतल मन हारी॥
भीजत सुरंग चूनरी सारी॥ मन सकुचत ललि रिव रसिक विहारी॥
बूंद बरषत मोहन पातन॥ सोसहि सिकरत प्रेम की पातन॥
भीजे रस रंग प्रेम सुख जल भीजे दोउ गात॥
भीजे भंवर कुंज गृह स्यामा स्याम सुहात॥
यह अब ब्रज को गाय को मानै को कहि सकै॥
गोपसुता के साथ रमत ब्रह्म द्रुम कुंज तर॥
इहि विधि कछ दिन सखन माही॥ कह्यो स्याम स्यामा के पाही॥
अब घर जाउ सो उर नियराई॥ मात पिता करिहैं दुचिताई॥
यह रस रीति गुप्त की नीकी॥ तुम प्यारी अति मेरे जी की॥
करते कौ रडारी मैं आयो॥ तुमरो बोल सुनत उठि धायो॥
मेरो प्रान बसत तुम माही॥ इक छिन तुमकौं बिसरत नाही॥
सुनि सुनि बातें पिय की प्यारी॥ करत मनहि मन आनंद भारी॥
अति सनेह बोली सकुचाई॥ सुनहु प्राण प्रीतम सुखदाई॥
कहा करौं पग जात न घर कौं॥ मन अटक्यौ नहि मानत डर कौं॥
द्रग तुमकौं देखत सुख पावैं॥ गुरुजन मोहि नेकु न भावैं॥
बरजहु अपनी चितवन तुमहरी॥ ऐसी समुझ सुमर की निमनाहरि
तुमरी नेकु सुनत यह बानी॥ सहियत हैं हम सर्व सहानी॥
वसीकरन है इनके माही॥ विवस भये मन मानत नाही॥
ऐसी विधि परस्पर करत दंपति निज अनुराग॥
मेरे पर सुखानंद रस वदत आपने भाग॥॥
स्यामल ई उरलाय प्रिया बोधि पठई घरहि

चलेआप सुखपाइ सुन्दर पुनसुखकेसदन ॥
करतिजननिअवसेरविशाला ॥ पूंछचे सदनस्यामतेहिकाला ॥
लीनेधायलाइ उर मैया ॥ कहांतलाल कोलेऊं बलैया ॥
करतेकोरडारिउठिभागे ॥ सुनतगाय माहीं अनुरागे ॥
लोहीगाय आपनी जानी ॥ तातेंप्रीतिअधिक उर मानी ॥
वहतो नाहिन मेरी मैया ॥ वृथाभम्यो मैं सुनरी मैया ॥
गोवर्द्धन यमुनातट सारे ॥ वृंदावन ढूंढत सब हारे ॥
कोऊ सखा संगतहं नाहीं ॥ फिरोअकेलो बन के माहीं ॥
युवतीएकमिली धौंकाही ॥ सो पकराइ गई घर माहीं ॥
सुनिजसुदाअतिमनपछिताना ॥ धोयोपदलेतातोपानी ॥
तुरत स्यामकोभोजनदीनो ॥ निरखिमुखारविंदसुखलीनो ॥
लीलासागरकुंवरकन्हाई ॥ सदासदा भक्तन सुखदाई ॥
ब्रजवासीमसुसद गुणआगर ॥ नंदनंदनसुंदरसुखसागर ॥
लखमोकीरतिनंदनी ॥ रूपरासिगुणखानि
चलीस्यामसुखदैभवन नागरिनवलसुजान
लईसखालिके हाथ आंचरतें मोतीलरी ॥
सखीमिलीइकसाथ बूझतकहांतेलाडिली
तासोंयों मुखकहिसमुझायो ॥ गईहुतीयहकाज बनायो ॥
कह्योसखीतूसुनरीप्यारी ॥ ऐसीनिधरकभई कहांरी ॥
कुंजकुंजतूफिरतअकेली ॥ संगनहींकोईसखी सहेली ॥
मोकोंसिखयालिनहिंलीनी ॥ ऐसीतैंकरनीयह कीनी ॥
भ्रातहिगईअबहिंतूआई ॥ बीत्योदिवसनिसानियराई ॥
पायोहारिकिधोंपुनि नाहीं ॥ देखोसोहिसाधमनमाहीं ॥
चतुरसखीमनमें यहजानी ॥ मिलवातेंहै यह रूठीवानी ॥
यहतोगईस्यामकेपास ॥ आवतिहै करमोगविलास ॥

कहै प्यारी मैं किन हार चुरायो ॥ कैसे तुम तहां ते पायो ॥
ब्रज जुवतिनमय वही मैं जानी ॥ कहै तौं सब के नाम बखानी ॥
ताको नाम लेहि किन लीन्हो ॥ प्यारी ते रसुराग मैं चीन्हो ॥
चोर तुम्हारे कुवर कन्हाई ॥ तिन सो जाय कुलम तू भाई ॥

रस बस कीन स्याम ते कहा बतावति बात ॥
कहै देत रस रंग भरि भरसोहै सब गात ॥ ॥
कहत वह कावति मोहि कहा द्वार कहू स्यालनी
तब ते जानति तोहि जब ते वै हरि संग किये

इन बातन कछु पावति हेरी ॥ तोहि यहै नित भावति हेरी ॥
देखति मोहि अकेली जबही ॥ नई बात उपजावति तबही ॥
बिनहीं देखे झूठ लगावै ॥ नाहक मोसे बैर बढावै ॥
सौंह दिये बूझति मैं तोही ॥ जो रकहति कै देख्यौ मोही ॥
जब जानी प्यारी बिरुझानी ॥ तब यह चतुर सखी मुसकानी ॥
तब हसि कहै जाइ घर प्यारी ॥ तू जीती मैं तोसी हारी ॥
चली भवन ब्रषभान दुलारी ॥ भीति अबसेर करति महतारी ॥
गई मात पधा नाहि आई ॥ दिवस गयो निसि जाम विहाई ॥
हार काज मैं त्रास दिखाई ॥ ताते रूस रही कहू जाई ॥
कहै धौं काके घर माही ॥ कहां जाउ मैं ढूढन ताही ॥
जाइ हार बहु विधि पछताई ॥ सुता सनेह भीत कम्बकुलाई ॥
सुनि है बात महरि पहू जबही ॥ मो पर खोभति रिस ढारि है तबही ॥

सोचति जननी विकल अति मातन लहति विस्राम
उरड राति वाही समै गई कुवरि निज धाम ॥
देखत ही उठि धाय ह्रषित लई उर लाय कै ॥
सुता मात उर लाव सोच मिट्यो धीरज भयो

लेरि भात हार मैं पायो ॥ जाकारण मोहि त्रास दिखायौ

मनहींमनकीरीतिसकुचाई ॥ पोंचकरीमैं याहि रिसाई
अतिपुनीत राधिका प्रवीनी ॥ कृष्नमिलनहितयहमतिकीनी
अगमअगोचर है प्रभुजोई ॥ व्रजवनितनवसकीन्हीसोई
जो प्रभुसिवसनकादिकध्यावैं ॥ व्रजगोपिनसंगसोसुषपावैं
हरकीकृपाअगोचर भारी ॥ निगमननहूंतेंअगमननारी ॥
प्रीति विवस सनुते गिरिधारी ॥ राजाएक पुरुष कहनारी ॥
देवकिउदरप्रीतिवसआये ॥ प्रीतिहितेजसुमति पेप्याये
प्रीतिविवसवनधेनुचराई ॥ प्रीति विवसनंदकुंवरकन्हाई
प्रीतिहिके वस दहीचुरायो ॥ प्रीतिविवस ऊषल बंधवायो
प्रीति विवस गोवर्धन धारी ॥ प्रीति विवसनरवर वनवारी
प्रीति विवसगोपिनसंगकामी ॥ प्रीति विवसवृंदावनधामी

स्यामसदावसप्रीतिके तीनिभुवन विष्यात
बिना प्रीति नहिंपाइये नंदमहर को तात ॥
प्रीतिकरहुचितलाइ ब्रजवासीप्रभुपदकमल
कहतसंतश्रुतिगाय प्रभुहि रीझिहैप्रीतिकी

अथ प्यारी के गृहकोमिलनलीला

भये स्यामनागरिवस ऐसे ॥ फिरतछांहसंगहि संग जैसे ॥
वदनकमलके रूपलुभाने ॥ रहतमिलीमुखज्योंमंडराने
वचन नादरसमृगज्योंगीधे ॥ नैनकटाक्षवंक सर वींधे ॥
कवहूं स्याम यमुनातटजाहीं ॥ विनप्यारीदेखे अकुलाहीं
कवहूंकदमचढिसुगअवलोकैं ॥ कवहूंजाइवनकुंजविलोकैं
रहतवनलगतकहूमननाहीं ॥ मिलनप्रकासेचहतमनमाहीं
तववृषभानपुरीजनआवैं ॥ मुरलीमधुरवजावैं गावैं ॥
प्यारीप्रघटस्यामगतिदेखी ॥ मनहींमनाहिंसिहातविशेखी

अतिअनुरागभरेदोउनागर॥गुनसागरऔररूपउजागर
अरसपरसदोउचाहतऐसे॥शशिचकोरअंवुजअलिजैसे
चलीयमुनवृषभानुदुलारी॥मोभितसंगनवलब्रजनारी॥
देखेनंदसुवन तोहि प्यारी॥व्याकुलप्रेमविवसमतिभोरी॥
सखिनसंगलखिनागरीमनडरपीसकुचाय॥
स्यामपरेफंदकामके कौनकहैसमझाय॥॥
सखियनकेसंगकोच्वोलिसकतनहिंवचनमुष
हृदयभयोअतिसोचदीखविरहव्याकुलहरिहि
इतहिसखिनसोवातवनावै॥उतहिस्यामकोभावजनावै॥
मुखमुसकायसकुचिपुनिलीन्हो॥सहजअलकनिरखाइतकीन्हो
एकसखीयमुनासोआवति॥ताहिटेरियेंवचनसुनावति
मेरेसदनआइयोआली॥ यहसुनिहरषभयोवनमाली॥
प्यारीगुप्तभावजोकीन्हो॥स्यामसुजानजानसोलीन्हो
हरषिगयेतवनिजगृहमोहन॥प्यारीचलीसषीकेगोहन
चतुरसखीमनमेंलखलीन्हो॥भावकछूहरिसोइनकीनो
हसिकैआपुसमैंवतरानी॥हरितनलषिकछुयहसुसकानी
पुनिमुसकायकमलकरफेरयो॥मदनवुलायसखीकोटेरयो
गयेस्यामउतहर्षवढाई॥येअतिचतुरकरीचतुराई॥
औसभावकैसंगनकोऊ॥आजुरैनमिलिहैं ये दोऊ॥
लैयमुनातेजलअतुराई॥सखिनसंगप्यारीघरआई
भावदियौनिसिआयहैमेरेमोहनआज॥॥
अतिहर्षितअंगनसजतिभूषनवसनसमाज
सहजरूपकीखानिअंगसिंगारतिलाडिली
कोकहिसकैवखानित्रिभुवनपतिहरिवल्लभा
अंगसिंगारकियोहरिप्यारी॥वेनीरचिनिजपानिसंवारी

मोतिनमांगजड़ाऊटीको ॥ कीयेबिंदुवंदनकोनीको ॥
लोचनअंजनरेखबनाई । भवनतरिवननकीछबिछाई ॥
नासानथअतिहीछबिछाजै ॥ नागबेलिरंगअधरनराजै ॥
सुभगअंगसबनौशतकाजै ॥ सुगंधसुरंगबसनसुभभ्राजै ॥
मनमोहनकोपंथनिहारै ॥ कबहूंकउतकंठाजियधारै ॥
भयोबिलंबसखिअसनिहारी ॥ कहतकिअबऐहैंगिरिधारी ॥
आवनपैहैंकीधौंनाहीं ॥ कैआवतहैंहैंमगमाहीं ॥
कैधौंतातमातभयकरिहैं ॥ कैआवतमेरेघरहरिहैं ॥
आवहिंगेकैधौंहरिनाहीं ॥ यौंसोचतिप्यारीमनमाहीं ॥
कबहूंरचिरचिसेजसँवारै ॥ हरिपैहैंमनहर्षबिचारै ॥
सुमनसुगंधसेजपरधारै ॥ पुनिपुनिकैअभिलाषनिहारै ॥

आवहिंकबहूंआनकोहजोमोगहघनस्याम
डारतिअतिअनुरागभरिसुभगपावड़ेधाम ॥
प्रगटेकृपानिधानयौंअभिलाषाकरतहीं ॥
कोकरिसकेबखानभयोजोसुखलखिदूहनमन

वहरसकापैजातबखानी ॥ वहछबिकलकमंदमुसकानी ॥
वहमृदुमधुरपरसपरबानी ॥ वहसंयोगप्रेमसकुचानी ॥
वहशोभावहचितवनबांकी ॥ वहसनमुखउमंगदुहूंघांकी ॥
वहसुखश्रीराधामाधौको ॥ जोकहिसकैकहैजगकोविदको ॥
जाकीमहिमावेदनजानै ॥ कवितांकोकेहिभांतिबखानै ॥
स्यामास्यामसेजपरसोहे ॥ अरसपरसदोऊमनमोहे ॥
युगलअंगछबिसागरदोऊ ॥ कोटिकोटिरतिसमनहिंकोऊ ॥
मनमन्मथरसबिबसबिहारै ॥ युगलपरसपरअंगसंवारै ॥
नटपटपागउघारतिप्यारी ॥ अलककसुधारतश्रीगिरधारी ॥
रसबिलासदोऊअनुरागे ॥ आलिंगनचुंबनरसपागे ॥

हासविलासविविधिरसकीनी॥यहिसुखरैनिजामत्रयबीती
अतिरसमत्तजुगलअलसाने॥पुनिपौढ़ेदोउलपटाने॥

निसिनिघटीनमतामिटीउड़गनजोतिमलीन
गयेकुमुदकुम्हिलायकै भईदीपछबिछीन
बिगसेसरनसरोजभयोपवनसीतलसुरभि
धरीउतारिमनोजधनुषआपनेपनचते॥

सरसवचनबोलींतबप्यारी॥जागहुप्राननाथबनवारी
भईप्रातकोसमयकन्हाई॥प्राचीदिसिपीरीपरिआई॥
चंदमलिनबिरहीसुखहानी॥अलिकुलदेखसुदिनसकुचानी
बोलतमधुरजहँतहँबानी॥मिलेकोककरिसुखमानी॥
उठहुप्रानपतिसदनसिधारो॥हैब्रजघरघरघेरहमारो
लगीरहतपरखतब्रजनारी॥जामाहिंजिनगुरुजनभयभारी
सुनतउठेमोहनमुसुकाई॥चलेसदनअपनेअतुराई॥
रहतनिकसनसखियनजानी॥दोपहरसतनदशाअलसानी
मधवटदरसदैगयेकन्हाई॥यहउनकोमनसाधपुराई॥

सीसमुकटमोतिनकीमाला॥पीतवसनकटिनैनविसाला
स्यामवदनतनसुन्दरताई॥अंगअंगप्रतिवरनिनजाई
देखिरूपमनरह्योलुभाई॥निकसगयेग्रहकुंवरकन्हाई
वारवारग्रहलाडिलीयहसोचपछितात
गयेस्यामआलसभरेनेकनसोयेरात॥
देखेजनिसखिकोयस्यामगयेमेंसदनते
मैंराख्योहैगोयअवलगियहरससखिनसों
देख्योआइपवरिहैप्यारी॥जहांतहांठाढीब्रजनारी॥
सकुचगईचिंताउपजाई॥वारवारमनमनपछिताई॥
हरिसोंप्रीतिगुप्तहीमेरी॥सोइनआजप्रगटकरहेरी॥
निकसेस्यामहमारेघरसों॥इनजान्योहैहेअटकरसों
नितहीनितवृतीतरआई॥मैंनिदरयोइनकोंसतराई॥
अवतोस्यामप्रगटइनदेखो॥करिहैमोसोंवहुतपरेखो॥
यहतोदांवभलेइनपायो॥अवकैसेकरिजायछुपायो॥
अवहींवूझहिंगीसवआई॥कहकरिहौंउनसोंचतुराई॥
मृषटकरोंतोहोयननीती॥राखनगुप्तकहीहरिप्रीती॥
सोचपरीकछुवातनआवै॥वारवारमनप्रभुहिमनावै॥
प्राननाथहरिहोउसहाई॥जातेमेरीपतिरहिजाई॥
जैसेंवोधसखिनकोंहोई॥दीजेनाथवुद्धिअवसोई॥
ऐसेसोचतिलाडिलीकवहप्रभुहिमनाय
कवहुंप्रभुकेसमुझमनप्रेममगनह्वैजाय॥
भयोवोधउरआयसुमिरतहीमनभावनो
कहिहोंसखिनवनायमनमनहरषीनागरी
परमकुसलराधेहरिप्यारी॥रच्योसखिनकोवोधविचारी॥
अतिआनंदपुलकितनअमायो॥सोचमोहउरतेविसरायो॥

जोसुंदरिसुन्दरकुंवरकन्हाई ॥ गयेप्रातसखियनदरसाई
उनसौंसाईरूपवखानो ॥ यहविचारप्यारीउरआनो
प्यारीपियकेगर्वगहेली ॥ अंगछविपुंजभरेली ॥ ॥
बैठीसदनविराजतसूरी ॥ स्यामसनेहसदारसपूरी ॥
करतपरस्परकरिपरिहास ॥ कहतिचलोराधाकेपास
हौइहैनिधरकघरमैंवैसी ॥ देखेडचलहचदनछविकैसी
कैसेअंगअभूषनकैसे ॥ कछुवदलेकैधौंहैवैसे ॥
आजरैनहरिसौंरतिमानी ॥ कहिहैकहासुनैंचलिवानी
राधागईसवनीव्रजनारी ॥ गईजहांवृषभानदुलारी
देखिनागरीसुखनहिंबोली ॥ जानोंआईकरनठठोली
सहजरहीबोलीनहींकछुवदनसोवैन ॥
निकटवुलायोसखिनकोंनैननहीकीसैन
इतलीन्होइनजानिपरनचतुरआलीसवै
यहकछुरचतसयानदेखिहमैंबोलीनही
अपनोभेदनहींकछुदेहै ॥ कहावाधरचिकैधौंकेहै ॥
अपनोजापुवलचोरचुरावे ॥ कैसेइप्रगटनकाइजनावे
निधरकभईस्यामसंगपाई ॥ भूलेइमतियाकीलरिकाई
निरषहभ्रकुटीत्योरनिहारी ॥ कहेकहाधौंबातसवारी
राखहुगर्वतुमहुसवकोऊ ॥ देखहुबोलनहींकिनकोऊ
कहाविहंसतकहकुंवनारी ॥ सुनोअहोवृषभानकुमारी
आजकहाउरवमूंदरहीहै ॥ कापररिसकरिमोनगहीहै ॥
हमसोंकहतनहींसुभागी ॥ हमतोसंगसखीहैंतेरी ॥
केदेवनकोध्यानधरोरी ॥ कैस्वभावकछुयहेपरयोरी ॥
जवआवतिहमतेरेप्यारी ॥ तवतवयहेधरनतूधारी ॥
तुमदरावकरीरातिहमसों ॥ हमहकछुराखतिहैतुमसों

जो हुते सुन्दर कुंवर कन्हाई ॥ गये प्रात सौं वयन दसाई ॥
उनसों आई रूप वखानौं ॥ यह विचार प्यारी उर आनौं ॥
प्यारी पिय के गर्व गहेली ॥ अंग छवि पुंज भरेली ॥ ॥
बैठी सदन विराजत सूरी ॥ स्याम सनेह सदा रस पूरी ॥
करत परस्पर करि परिहासा ॥ कहति चली राधा के पासा ॥
हाँ हूं है निधरक घर मैं वैसी ॥ देखहु चलहु वदन छवि कैसी ॥
कैसे भृंग अभूषन कैसे ॥ कछु वदले कै धौं हैं वैसे ॥
आज रैन हरि सों रति मानी ॥ कहि है कहा सुनें चलि धानी ॥
यों धाय गवनी ब्रजनारी ॥ गई जहां वृषभान दुलारी ॥
देखि नागरी सुख नहिं बोली ॥ जानों आई करन ठठोली ॥
सहज रही बोली नहीं कछु वदन सों बैन ॥
निकट बुलायौ सखिन कौं नैनन ही की सैन ॥
इतली न्हो इन जानि परम चतुर आली सबै ॥
यह कछु चतस्यान देखि हमैं बोली नहीं ॥
अपनो भेद न हौं कछु देहै ॥ कहा बाधा रचि कै धौं के है ॥
अपनो जाप वल चार दुरावै ॥ कैसे हूं मप टनक हू आवै ॥
निधरक भई स्याम संग पाई ॥ भूलि इमाति या कौं लारि काई ॥
निरखहु भृकुटी त्यौरा निहारी ॥ कहै कहा धौं बात सवारी ॥
राखहु गर्व तुम हूं सब कोऊ ॥ देखहु वा सैं नहीं किन कोऊ ॥
कह्यौ बिहँसि तक इक ब्रजनारी ॥ सुनो अहो वृषभान कुमारी ॥
आज कहा मुख मूंद रही है ॥ का पर रिस करि मौन गही है ॥
हम सौं कहत नहीं क्यों गोरी ॥ हम तो संग सखी हैं तेरी ॥
कै देवन को ध्यान धरौरी ॥ कै स्वभाव कछु यह है परौरी ॥
जब आवति हम तेरे प्यारी ॥ तब तब यह है धरत न भारी ॥
तुम इप बकरि रारति हम सों ॥ हम हू कछु राषति है तुम सों ॥

हमदेखतकछुऔरसुभाऊ॥यहदेखतहरिकौंसतभाऊ
ताकीअस्तुतिकहावखानै॥तूनहींभलेस्यामकोजानें॥
तवहंसिकह्योसखिसुनुप्यारी॥धोखोमनतेडारऊटारी
प्रातहितूजोअजनिहारे॥गयेकान्हवेमेघनकारे॥
मोरमुकटसिरमोरनहोई॥कटिपटपीतनदामिनसोई
मुक्तमालवनमालसुवेस॥नाहिंवगपांतनधनुषसुरेस॥
पगनूपुरधनिगरजनिनाही॥मतिराखोधोखोमनमाही॥
देखेतेप्रातहिगिरधारी॥काहेकोसोचतिमनप्यारी॥

धनिधनिव्रजकीनारितुमहरिकोविलपतरूप
मोहिहोतधोखोतवहितवदेखतवहरूप॥
तुमदेखतिहरिगातकेसेहगठहरायसव॥
मोपैलखेनजातकरिहारीकेतोजतन॥

तुमदरसनपावतरीकैसे॥मोहूस्यामदेखावहुतैसें॥
वेतोअतिकुविचपलकन्हाई॥तुमकैसेदेखतठहराई॥
कैसेंरूपहृदैमेंराखो॥मोसोंसखीसांचसवभाषो॥
मैंदेखनपावतिनहिनीके॥रहतिसदाअभिलाषाजीके
धनिधनितूवृषभानदुलारी॥धनितुवपिताधन्यमहतारी
धन्यसोदिवसरोनितिथिवारा॥जवतेंलीन्होरीअवतारा॥
धनितेरेवसकुंजविहारी॥धनितूंवसकीन्हेगिरिधारी॥
भावभक्तिमेंमतिधनिसोऊ॥सकलभावधन्यतुमदोऊ
तोहिस्यामहमकहादेखावें॥तूहरिकहंहरितोकोभावें
एकजीवदुइदेहतुम्हारी॥वेतोमेंतुमउनमेंप्यारी॥
उनकोपटतरकोतूदीजे॥तेरीपटतरउनकोलीजे॥
सुधासुधागुनक्योंविलगाई॥गूंगेकोगुरकहेउनजाई॥
तूउनकेउरमेंवसीवेतोरेउरमाहि॥

अरस परस ज्यों देखिये दरपन दरपन छाहिं
कहे कौन पै जाहि तुम दोउ निर्मल गात अति
वै तेरे उर माहि तू उनके रंग में रंगी ॥ ॥
नीलांबर स्यामल छवि तेरे ॥ तुव छवि पीत वसन उनके रे
घन भीतर दामिनी विराजे ॥ दामिनि घनके चहुंदिस राजे
तुम अनूप दोऊ सम जोरी ॥ नंद नंदन वृषभान किशोरी
सुनि २ सखियन के मुखवानी ॥ बोली राधा कुंवरि सयानी
सुनु ललिता सांची कहु मोसों ॥ में पूछति सकुचति हों तोसों
मोसों मानत नेह कन्हाई ॥ मेरी सौं कहि मोहि सुनाई ॥
तुम तो रहति स्याम संग नितहीं ॥ मिलत जाय उन सों जित तितहीं
उनके मन की तुम सब जानो ॥ हा हा मोसों सांच बखानो ॥
सुन राधा इतरात कहा री ॥ तो ते और कौन है प्यारी ॥
तेरे वस नंदनंदन ऐसे ॥ रहत पोन पग आवस जैसे ॥
ज्यों चकोर ससि के वस माहीं ॥ है सरीर के वस परि छाहीं ॥
नाद विवस म्रग दीपक जैसे ॥ मनमोहन तेरे वस तैसे ॥
मिली खरक तू स्याम को दई धेनु दुहि ताहि ॥
तेरे वस हरि नवाहत कहा भरावति मोहि ॥
वरनों कहा सतर है ने कहू तुम न्यारे नहीं ॥
हो तुम एकहि देह वे दछिन तू वाम अंग

अथ गर्वव्याज विरहलीला ॥

सुनि प्यारी ललिता मुखवानी ॥ ऐसी वात जिय में यह आनी
और नहीं कोउ ऐसम की ॥ हौं राधा आधे अंग हरि की
अपने ही वस पिय को करि हौं ॥ अनत जात देखहु तो लरिहौं
ऐसे गर्व कियो जिय प्यारी ॥ घर घर गई सकल व्रजनारी

सहि अंतर आये गिरि भारी ॥ गर्व विभंजन जन सुखकारी ॥
हरि अंतरजामी अविनासी ॥ जानी प्यारी गर्व उदासी ॥
उरकि रुकि प्यारी तन हेरो ॥ प्यारी देखत ही मुख फेरो ॥
कह्यो कान्ह तुम मानत नाही ॥ उत्कत फिरत वरनन्व जमाही
मिस ही मिस जब तिनको हेरो ॥ नेकु नही छांडत घर घेरो ॥
कोउ जैसे तैसे अपने घर ॥ तुम आवत मानत नाही डर ॥
ऐसे प्रेम पगर्व कर प्यारी ॥ प्राननाथ तन नाहि निहारी
जाने द्वारे लगे कन्हाई ॥ बैठि रही अभिमान बनाई ॥

हृदय स्याम सुखधाम मेरो रख्यो गर्व बसाइ
ठौर तहा पायो नहीं रह्यो स्याम सकुचाइ
जहा रहत अभिमान तहा वास मेरो नही ॥
सोरंगधाउ सुजान आप लगे पछितान हरि

तुरत हि गवन तहा ते कीन्हो ॥ नहीं दरस प्यारी को दीन्हो
चकृत भई प्यारी मन माही ॥ यहा स्याम आये क्यो नाही
आपुन आय द्वार पर देख्यो ॥ तहा नहीं नंदलाल हि पेख्यो
ताकत ही फिरि गये कन्हाई ॥ मन ही मन राधा पछिताई
मोते चूक परी अति भारी ॥ ताते मोहन मोहि बिसारी ॥
इक तो बैठि रही गरबानी ॥ दजे मैं हरि सो रूठ रानी ॥
तेरी बुद्धि जानि के हीनी ॥ मोसे स्याम निठुरता कीन्ही
वे वृजलायक कुंज विहारी ॥ मोसी उनके कोटिक नारी ॥
कासों कहों हरि हि कोल्यावे ॥ कोऽब मोको हरि हि मिलावे
भई विरह व्याकुल अकुलाई ॥ बदन सरोज गयो कुम्हलाई
लल आपुन को निदर कहावे ॥ सुमिरि प्रीति उर भरि भरि आवे
नेकु नही धीरज उर धारे ॥ नैन सरोजनि ते जल ढारे ॥
भई विकल अति नागरी विरह विथा की पीर

खानपान भावै नहीं सुधि बुधि तजी सरीर ॥
घर बाहर न सुहाय सुख सब दुख दायक भये
रहे उसांस उरछाय व्रजवासी प्रभु मिलन कौं ॥
राधा मदन सखी पुनि आई ॥ देखि दसा मन अति भइ पाई
अति ब्याकुल तन बदन मलीना ॥ नीर बिहीन मीन जिमि दीना
कर गहि खूंरत व्रज नारी ॥ कहा भयो तोकूं री प्यारी ॥
ऐसे बिबस भई तू जाहै ॥ हमहिं सुनाय कहत नाहि काहे
अति प्रसन्न देख्यो तोहि तबही ॥ क्यों मुरझाय गई री अबही
बछरि लषे धौं कतहूं कन्हाई ॥ उनहीं तोहि ठगोरी लाई ॥
स्याम नाम सुनि श्रवनन जागी ॥ जान्यो हरि आये अनुरागी ॥
आतुर सषी कंठ लपटानी ॥ चूक परी मोते कहि बानी ॥
अब अपराध छमो रिस त्यागी ॥ करुना करि मोहि कहु अनुरागी
चूकत भई सब व्रज की नारी ॥ रहीं सोचि राधिका निहारी ॥
सीतल जल ले मुख परसायो ॥ पूछि आचरन बदन सुनायो ॥
आज भई कैसी गति तेरी ॥ परम चतुर व्रज में सु तेरी ॥
भयो अलिन के बचन सुनि कछु चेत उर आय ॥
तब जानी ये तो सखी गई हृदय सकुचाय ॥
क्यों तुव बदन मलीन काहे तू ऐसी भई ॥ ॥
कहु प्यारी परवीन वार बार बूझत सखी ॥
बोली तब सखियन सों प्यारी ॥ तुम सों कहूं दुराव कहा री
मैं तो हरि के हाथ बिकानी ॥ उन मोहि तजी कुटिल मति जानी
अपनी कथा स्याम की करनी ॥ प्रघट कहौं तुम सों सब बरनी
बैठी ही मैं सदन अकेली ॥ मांके आप द्वार हरि हेली ॥
मैं मन में कछु गर्व बढायो ॥ आदर करि नाहिं भवन बुलायो
उन मेरे मन की सब जानी ॥ अंतरजामी सारंग पानी ॥

कमलनैन वे सर्वप्रहारी ॥ जातरहे हँसि मोहि बिसारी ॥
तबतें बिरह विकल अति कीन्हे ॥ अहंकार फल मोहि दीन्हे ॥
चितन रहे कितनो समुझाऊं ॥ अब कैसे करि दरसन पाऊं ॥
भयो भवन मो कंचन आली ॥ नाहि सुहात बिना बनमाली ॥
सुनहु सखी लालन भये याऊं ॥ अब हरि मिलहिं सो करहु उपाऊ ॥
बिनवन मोहन कैंच सकल्हाई ॥ भये सुखद सब अति सुखदाई ॥

गिरिकन्यापतितिलककादाहत अनलसमान
शिवसुतवाहनभषनभष भयो है लाहलसान
जलधिसुतासुतहार भयो इन्द्र आयुध सखी ॥
मलयज मनहु अंगार साधा अगारिपु बसन वर ॥

सखी सदा मेरो यह हैरी ॥ भयो काम मोको अब वैरी ॥ ॥
वारिजभवसुतप्रयकी चाली ॥ अब नाहि कीरहै हरि सों अली ॥
रितु विचार जो मान हि करिये ॥ सोउ जारि जाउ न मनमें भरिये ॥
अब सु भाव रहि है हरि साथ ॥ मोहि मिलाव इस पिय जनाथ ॥
सुन राधे करनी यह तेरी ॥ हमसों भेद कियो तैं येरी ॥
उनके गुन जैसे नहि जाने ॥ अब हीं ते ऐसे ठग वाने ॥
एकहि बार मिली तू धाई ॥ नहि राखी मरजाद बड़ाई ॥
तैं हीं उनको मूड़ चढ़ायो ॥ तब नहि हमसों भेद जनायो ॥
भवन विपिन सगडोलन लागी ॥ वेव्हतन निरखन अनुरागी ॥
निज कर अपनो महत गंवायो ॥ परवस परिक बनै सुख पायो ॥
मेरो कह्यो अजहु मन माहीं ॥ हित करि मान हि गौ धौं नाहीं ॥
धीरज धरि कत मरत वृथा ही ॥ तू है मान करति क्यों नाहीं ॥

बात आपनी आपने कर हि देख विचार
भई कहा ऐसी विवस एरी एकहि बार ॥
पुरुष भंवर जिय जान भोगी चहत प्रसून के

विनाकियेकछुमानकौनेपियनिजवसकियौ
कहतसखीतुमतौयहवात ।। कंपहोतसुनिमेरो गात ।।
मैं तौमानस्याम सौं कीन्हौ ।। तातैं इतनादुखमोहिदीन्हौ
अवतौभूलिमाननहिंकरिहौं ।। स्यामीमिलहिंतौपायनपरिहौं
विनतीकरि२उनहिंमनाऊं ।। यहअपनोअपराधछमाऊं
चूकपरीमोतेमैंजानौ ।। उनतेंयहअपराधनमानौ ।।
वेंआवतहैं मेरेनीके ।। मैंहीं गर्वधस्यौ सखिजीके
मेरे गर्वतेंकाहसस्यौरी ।। मिट्योहृदयसुखदुखहिंभस्यौरी
जातेहानिआपनी होई ।। कहौसखीकीजे क्यों सोई ।।
मानविनानहिंप्रीतिरहैरी ।। प्रगटदेखिमोहिकहाकहैरी
धायमिलेकीगतितेरी सी ।। भईअधीनफिरतचेरी सी ।।
अपनो भेदउनहिंतें दीन्हो ।। तवदुरावहमहींसों कीन्हो
भयविनप्रीतिहोतिनहिंप्यारी ।। तजहिंमानसुनसीषहमारी
पतिपुनिसिखवततुमसखीमानकरनकोमोहि
मनतौमेरेहाथनाहिमानकवनविधि होहिं ।।
उमगिभरयेदिनरातिस्यामगुननिअभिलाषकरि
मननहिंमानतवात मानअजो कैसे सखी ।।
मनसों सोअवघाम भयोरी ।। कहाकहौंहरिसंगगयोरी ।।
अवअपनोहितउनहींजानो ।। मुदितभईअपमानन मानौं
इंद्रीसवस्वारथरसपागी ।। वाहसंगमनहीं के लागी ।।
घरकूटकोरह्यौपरैरी ।। मनहिंविनाकोमान करैरी ।।
अवकोऊ मेरे संग नाही ।। रहीअकेलीमैंतन माहीं ।।
तापरभयोकामअववैरी ।। विरहअगिनितनजारत है री
इतनेपरतुममानकरावति ।। कहौकवनसखियहकहनावति
मैंतौचूकआपनी मानी ।। मोहिमिलावहुस्यामहिंआनी

कमलनैनवे सर्वप्रहारी ॥ जातरहे हँसि मोहि विसारी ॥
तवतेंविरहविकलअतिकीन्हे ॥ अहंकारफलमोहिदीन्हे
चितनरहेकितनोसमुझाऊं ॥ अवकैसेकरिदरसनपाऊं ॥
भयोभवनमोकूंवनआली ॥ नाहिंसुहातविनावनमाली
सुनहुसखीलासनभेयाऊं ॥ अवहरिमिलहिंसोकरहुउपाऊ
विनवनमोहनकुंवरकन्हाई ॥ भयेसुखदसवअतिसुखदाई
गिरिकन्यापतितिलककादाहतअनलसमान
शिवसुतवाहनभषनभषभयोहलाहलसान
जलदिसुतासुतहारभयो इन्द्रआयुध सखी ॥
मलयजमनहुअंगारसाषाम्रगारिपुवसनवर ॥
सखीसदामेरोयहहेरी ॥ भयोकासमोकोअव वैरी ॥ ॥
वारिजभवसुतअयकीचाली ॥ अवनाहिंकोउहेहरिसोंआली
रितुविचारजोमानहिंकरिये ॥ सोउअरिजाउनमनमें भरिये
अवसुभावएहिहेहरिराया ॥ मोहिमिलावहुसखिसमया
सुनराधेकरनीयहतेरी ॥ हमसौभेदकियो तैं येरी ॥
उनकेगुनजैसेनहिजाने ॥ अवहीं ते ऐसे ठग वाने ॥
एकहिवारमिली तू धाई ॥ नहिराखीमरजादवडाई
तेहींउनकोमूड़चढ़ायो ॥ तवनहिंहमसौभेदजनायो
भवनविपिनसगडोलनलागी ॥ वेवहुतअनिरखनअनुरागी
निजकरअपनोमहतगँवायो ॥ परवसपरिकवनेसुखपायो
मेरोकह्योअजहूमनमाहीं ॥ तितकरिमानहिंगीधौंनाहीं
धीरजधरिकतमरतवृथाहीं ॥ मूहूमानकरतिकोंनाहीं ॥
वातआपनीआपनेकर हदेखविचार
भईकहा ऐसीविवस एरीएकहिवार ॥
परुषभँवरजियजानभोगीवहुतप्रसूनके

अवतौक्योंहूंमाननकरिहौं॥ऐसीवातकहैतेहिलरिहौं
अवजोमिलहिस्यामकहूभागी॥फिरतरहौंसंगहिसंगनागी
आलीनंदनंदनमोहिभावै॥सोईहितजोआनिमिलावै॥
ऐसेकहिप्यारीअनुरागी॥दारुनविरहविथाउरजागी

देखिदसासाहिनासकीअलीउठीअकुलाय
हमराधाकीप्रियसखीरचियेवेगिउपाय॥
कहोस्यामसोंजायऐसीचूकपरीकहा॥
दीजियाहिमिलायकरिकुरिशतिपीरीभई

सखिनकहोतवसुनरीप्यारी॥मतिहियसेयव्याकुलसुकुमारि
अवहिजायहमस्यामहिल्यावैं॥नेकुधीरधरितोहिमिलावैं
पटसोंपोंछिवदनवैठाई॥तरकवातवहुभाषिसुनाई॥
नेकुनहीधीरजउरधारै॥वारवारमुखकान्हउचारै॥
सावधानकरिसखीसयानी॥गईदौरहरिपैअतुरानी
लखिहरिसिखललितमुसुकानी॥हरिहसिलखेदुहूनमनजानी
तवहरिललितासौंमुसुकाये॥वूझतचितवतनैनचुराये॥
अतिआतुरआईढिगधाई॥काहेवदनगयोमुरझाई॥
वोलीललितातवमुसुकाई॥सुनहुचतुरनंदनंदकन्हाई
आजएकअचरजलखिपायो॥परसविचित्रनजातवनायो
अतिहीअद्भुतरचनाजाकी॥वरनतवनतभांतिनितताकी
रीझिरहीमैंताहिनिहारी॥रीझहुगेलखिकुंजविहारी॥

मैंआईतुमसोंकहनचलहुदिखाऊंनैन
देखिपरममुखपाइहौजोमानोमोवैन॥
एकरूपनूपमवागसुवरनवूरननजायकहि
उपजतलखिअनुरागआतिविचित्रआनखन्यो

युगुलकमलअतिअरुनविराजें॥तापरराजहंसछविछाजें॥

द्वै कदलीतरु तापर सोहैं ॥ बिनु दल फल उलटे मन मोहैं ॥
तापर म्रगपति करत बिहारू ॥ म्रगपति पर सरवर एक चारू
द्वै गिरिवर सरवर पर राजैं ॥ तिन पर एक कपोत बिराजैं ॥
निकट सनाल कमल युग फूले ॥ सोभित तें अधदिसि को मूले
त्यो पुनि कपोत पर नीको ॥ एक सरोज भावतो जीको ॥
तापर एक अमी फल लाग्यो ॥ कीर एक तापर अनुराग्यो
तहां एक कोयल द्वै खंजन ॥ तिन पर धनुष सुभग मन रंजन
धनु पर [illegible] द्वै नागिनि वारी ॥ मनिधर एक नागिनी भारी ॥
ऐसो अनुपम बाग सुहायो ॥ घरत नेह जल कछु कुंभिलायो
[illegible] घनस्याम सींचि सो दीजै ॥ सो भाँ देखि सुफल दृग कीजै
करि बिचार देखहु गिरिधारी ॥ बनी ललित सब अंग पियारी

सुनहु स्याम सुन्दर नवल छैल छबीले लाल ॥
तुमहिं मिलन कों नवल वह अति ब्याकुल है बाल
[illegible] भयो जो मान कियो प्रेम के लाड़ ते ॥
अति सुन्दरी सुजान प्यारी जीवन जीव की ॥

बरनों श्री वृषभान दुलारी ॥ चित दै सुनहु लाल गिरधारी
कहौं प्रथम बेनी रुचिराई ॥ लसत पीत पट या छबि छाई
[illegible] अनक कुटिल अति त्यागी ॥ श्रीश सुख सुधा चुरावन लागी
रेखा [illegible] सेंदुर सुहाई ॥ सोभित सीस न जात बताई
मानहुं [illegible] रवि की री ॥ तिमिर समूह बिदारि उजेरी
सोभित [illegible] दल स्कुटि अति नीकी ॥ मन हरि लेत भावतो जी की
[illegible] निज बस चारी ॥ मनहु मदन धनु धरे उतारी
[illegible] लिलाट सुहाई ॥ मनहु रूप को पारि बंधाई
चपल नैन बिच नाक सुहाई ॥ सोभित अधरन की अरुनाई
मनुं [illegible] खंजन बिच सुक सोभा ॥ देखि एक बिंबा फल लोभा

दसनकपोलचिवुकदरग्रीवा।।वरनिनजातमहा मतीवा
सुभगअंगसवभेषन सोहे।।कोटिकामतियनिरषत मोहे

अतिकोमलसुकुमारतनसकलसुखनकीसीर
तुमविनमोहनलालपियव्याकुलअधिकअधीर
भरिरलोचननीरस्यामस्यामसुखकहिउठति
चलऊहरऊयहपीरमैंआईलिषिधाय कै॥

प्यारिहिविकलसुनतसुखधाई।।सहिनहिंसकेउठेअकुलाई
चलेविहसिललिताकेसाथा।।प्रेमहिकेवसभेव्रजनाथा
प्रेमविवसप्यारीपहंआये।।देषिवसदामनअनिमिषताये
परीविकलतनदसाविसारी।।प्यारीमुखदेखतिगिरिधारी
नीलांवरनिजकरतेंटारी।।कीनोसनमुखवदनसुधारी॥
जलदपटलमानहुविलगाई।।दियोचंदनिकलंकदिखाई
भयोचेतपरसतपियपानी।।सनमुखहरषपरतसकुचानी॥
लईउसांगभरिअंककन्हाई।।विकलदोषअभरिसोभीआई
युगुलपरसपरलाषिसयुपाये।।इतनेहिविरहदोऊसरसाये
कंचनवेलितमालसुहाया।।मनहुप्रेमरससुधासिंचायो
हरषितदुहुंदिसमुसुकनिफूले।।परमानंदफलनिफरिफूले
मुरछानिविरहतुरतविसराई।।लाषियहमिलनिसषीहरषाई

वहचितवनिवहहसिमिलनिवहसोभासुखसार
भईविवसललितानिरषिइकटकरहीनिहारि
रहेपरस्परदेषिउतआतुरदोऊकिवांह॥
परननदेतनिमेषतृषितनुकोनहिमानही॥

ललिताकहतिसखिनसोंवानी।।देषहुसषिराधाअतुरानी
कैसेअनाअंगछविलेई।।मिलेहुस्याममनधीरनदेई॥
रूपाववनजिसिअवतनीरा।।सोऊताधारतपनिधीरा॥

वहआतुरछविलेउरधारैं॥नेकुनहींदृगइतउतटारैं
ज्योंचकोरचंदहिटकलावै॥याकीसरिसोऊनाहिपावै
होमआगघृतगतिहैजैसी॥याकीदसादेखियततैसी॥
जदपिस्यामसंगस्यामैंपिआरी॥छविनिरषतअतिआनंदभारी
हावभावकरिपियमनमोहे॥विविधविलासवदनछविसोहे
विरहविकलमनतदपिभ्रमावै॥मिलनप्रतीतिनउरमेंआवै
तृषावंतजिमिसलिलहिदेखी॥उपजतअधिकपियासविसेषी
चितवतथकितरहतचितमाहीं॥सपनकिसत्यईसयहआहीं
बुधिवितर्कवहुभांतिवनावै॥देखहुअनदेखेठहरावै॥

कवहूंकहतिहोंकवनहोंकोहरिकरतिविचार
यहसुखभावतिकौनकौंचकृतरहतिनिहारि
निपटअटपटीवातसम्रीरूपरतनाहिंप्रेसकी
उरकिसुरकिउरझातउरझनहींमेंसुरझती॥

उतहरिरूपइतेदृगप्यारी॥लषिसषिमनहुकरतिहैरारी
आतुहकारभरेभटदोऊ॥नेकहुहारनमानतकोऊ॥
इतसुदृष्टकरिकामसहाई॥सैनसाजिसरदृगनचलाई
उनउतभूषनजालअपारा॥अंगअगराचव्यूहसवारा
इतहिकटाक्षवानअतिचाषे॥वारहिंवारहनतरनराषे
उतनाहिंवदतवियाअतिसूरे॥पुलकिअंगभानहुसरपूरे
इतअनुरागउतहिछवताई॥छिनछिनअधिकअधिकाई
छविसतरंगसरिताअधिकानी॥लोचनजलनिधितापितमानी
उतउदारछविअंगस्यामके॥इतलोभीअतिनैनवामके
ललितासंगसषिकालीन्हे॥दंपतिसुखदेखतदृगदीन्हे॥
लषियहमिलनसखीअनुरागी॥कहतिकिधनिरदोउवडभागी
धन्यनवलनवलायहजोरी॥धनिधनिप्रीतिनवलीमेरीजोरी

धन्यमिलनधनियहललधनिधनिधनिवनिअनुपम
धनिसुखलुटतपरस्पर धनि धनिभाग सुहाग
धनिधनिपुनिपुनिभाषि हर्षिचली सिगरीअली
युगलरूपउरराषि एक हियलपरवेअतुल॥

अथपरस्पर रूप अभिलाष लीला॥

सोभितस्यामराधिकाजोरी।अरसपरसनिरषत तृनतोरी
हरिराधेप्यारीछविदेखी।भयेविवसउर हर्ष विसेखी॥
कवहुंपीतपटहारतवारी।कवहुंमुरलिवारतगिरिधारी
कवहुंमालमुकुतनकीवारे।कवहुंतनमनवार निहारे॥
कवहुंसिहातदेखमनमाहीं।राधासमसोभाकहुंनाहीं
इनकोपलकओटनहिंकीजे।रूपसुधानैननपुटदीजे॥
कवहुंनिरषिसुखहरिसकुचाही।कोटिकामजिनदेखसमाही
चपलनैनरीरचअनियारे।भवभावनानागतिभारे॥
कोटिकुरंगकमलघलिहारी।खंजनमीनडारियेवारी॥
लोचननहिठहरातकामके।काहूअंगसुखरंगवामके
भयेस्यामप्यारीवसऐसे।फिरतगुडीडोरीवसजैसे॥
एकटकनैनअंगछविपोहै।भयेविवसलोषरूपविमोहै
उठेउचतहैतुरतहीवैठेवैठत पास॥ ॥
चलेचलतसंगवामकेज्योतनछाहाविलास
रहीसुरतिकछुनाहिंदेहदशाभूलीसवै॥
अभिलाषामनमाहिंप्यारीहीकेरूपकी॥
सगनस्यामस्यामारसमाही।निजस्वरूपकीसुधिकछुनाहीं
राधारूपदेखिसुखपावे।पुनिपुनिअभिलाषवढावै॥
मायस्तनभूषणप्रियपाही।अपनेअंगसंभारतजाहीं॥

तजितरिवरनकुंडलीउतारे॥ वेसरिलेनासापरधारे ॥
वेनीगूंथिमांगपुनिकरहीं॥ सीसफूलअपनेसिरधरहीं
वेंदीभालसवारततैसी॥ सोभितहैप्यारीकेजैसी॥
प्यारीद्रगतेंअंजनलेहीं॥ अतिहितकरिअपनेद्रगदेहीं
भूषनवसनसजतसववैसे॥ प्यारीअंगविराजतजैसे॥
प्यारीकोपियकीछविभावे॥ ताहाकरियोंवचनसुनावे
कुंडलमुकुटपीतपटपाऊं॥ मैंपियतुमरोरूपवनाऊं॥
हंसिरमांगिरसवलीन्हो॥ पियकोभेषनागरीकीन्हो
गोरेकान्हसांवरीराधा॥ निरषिपरस्परपूरतसाधा॥

कवहूंमुरलिलेनागरीअधरधरतिमुसकाय
मंदमंदपूरतिसुरतिरिझवतिपियहिवजाय
कवहूंवजावतिस्यामअरसपरसअधरनधरत
पूरतहैमनकामसकलकामपूरनयुगल॥

हरिकोंअपनेरूपनिहारी॥ आपुहिहरिस्वरूपलषिप्यारी
यहअभिलाषउरतवधारी॥ कहतिसुनहुपियगिरिवरधारी
तुमवैठोमानिजढिगव्हैके॥ तुमहिंमनाऊंमेंपदछ्वैके॥
मोकोंयहअभिलाषविसेखी॥ सुखपैहोनैननयहदेखी॥
सुनतस्याममनमुसकाई॥ सुरवैठेकरिमानरुखाई॥
तवप्यारीमनअतिअनुरागी॥ हरिसोंमानछुटावनलागी
कहतमानतजिप्रानपियारी॥ मोतेचूकपरीकहभारी॥
हंसतहमेंतुमरिसकीमानी॥ कहाएकांततुहिपरीसयानी
वृथाहठीलीमाननकीजे॥ अवकरिकृपामोहिसुषदीजे
वारवारकराहिगहिभाषैं॥ सीसनवायचरनपरराषैं॥
आननआननजो़िनिहारै॥ पुनिपुनिवचनअधीनउचारै
क्योंइतनोहठकरतनवेली॥ वोलतिक्योंनहिंगर्वगहेली

तव नागरि पिय लषि सुख पायो ॥ मिट्यौ बिरह मन हर्ष बढ़ायो ॥
कहति भलो पिय मान दिषायो ॥ मेरो मन अभिलाष पुरायो ॥
त्रिय के रूप स्याम छवि देखी ॥ पुनि पुलकित मुदित विशेषी ॥
दंपति हरष मनहिं मन कीन्हो ॥ तव वन कुंज चलन चित दीन्हो ॥
प्यारी मुकुर पानि लै देख्यो ॥ नटवर रूप आपनो पेख्यो ॥
सहतहि हसत भेष सब डार्यो ॥ सहज रूप अपनो पुनि धार्यो ॥

चले हरषि वन कुंज को युगल नारि के रूप ॥
इक गोरी इक सांवरी सोभा परम अनूप ॥
अंग अंग छवि जाल अति विचित्र भूषण वसन
श्री राधा नंद लाल सोभा अवधि विलास निधि

जात चले ब्रज वीथिन दोऊ ॥ लषि नहिं सकत नारि नर कोऊ ॥
नंद नंदन त्रिय छवि तन काछे ॥ सोभित है राधा संग आछे ॥
बार बार पिय रूप निहारी ॥ मनहीं मन रीझत है प्यारी ॥
कहति सखी देखे जिन इनकौं ॥ बूझतें कहि यौं कहतिन कौं ॥
तिहू भुवन सोभा सुख की निधि ॥ का रहे तिनकी गोपकवनी विधि
पग नूपुर बिछिया छवि छाजै ॥ गज गति चलत परस्पर बाजै ॥
स्याम गोर सुन्दर सुख जोरी ॥ मर्कत मणि कंचन छवि यो री ॥
भुज भुज कंठ परस्पर राजै ॥ यह छवि की उपमा नहिं छाजै ॥
जात युगल वन कौ सुखदाई ॥ उत तें चंद्रावलि सषि आई ॥
दूरिहि तें लषि रही निहारी ॥ इकटक नैन निमेष निहारी ॥
पुनि पुनि मन विचार करि जो है ॥ एक राधिका दूसरि को है ॥
व्रज युवतिन इक इक करि जानो ॥ यह धौं कौन नहीं पहिचानो ॥

और गांव तें यह कहुं आई है व्रज माहिं ॥
अतिहि सलोनी सांवरी अबलौं देखी नाहिं ॥
राधे मन सकुचाहि चंद्रावलि आवति निरखि

रहीस्याम सुखपाइहिं ब्रजहीकौंफेरविहारहिं

कहतिआइपियकौफेसिसमाई॥ करतेंकरछूटत है नाई॥
उतआवतलषिसखीसयानी॥इतहिस्यामकेनेहभुलानी॥
दुखसुखहरषनहींरसमानी॥उतचंद्रावलिइनरंगराती॥
कहतिनिकटदेखहुभौंजाई॥वूझैंयाहिकहांतेंआई॥
देषिस्यामसुसकविसुसकाने॥कहिचतुराईइनपहिचानी॥
इनतेंनिपुरकेऔरनकोऊ॥कैसीवुद्धिरचीइनदोऊ॥
येदोऊअतिचतुरसयाने॥निजकरइन्हैंविधातेजाने॥
औरकहाइनकौंकोउजाने॥मोसोंनहींपरतपहिचाने॥
सुखचकोहिसबइनाहिजनाऊं॥जानवूझकाहेनिदराऊं॥
जोइनकोंमैंटोकतिनाहीं॥जिहैंजीतमनहिंमनमाहीं॥
येचतुरईपलेकविदोऊ॥प्रगटकरोंइनकेगुणसोऊ॥
ऐसेवदरिइनहिंनाहिंपाऊं॥आजप्रघटकहिलाजनजाऊं॥
कहिराधेयहकौनहैसंगसेवारीनारि॥ ॥
कवहुइनाहिदेख्योनहींअतिसुन्दरसुकुमारि
कोहैइनकौनाय कौनगोपकीये सुता॥
भल्योघन्योहैसाथ जैसी येतैसी सुमइ॥
मथुरातेंयेआजाहिआई॥हैइनतेंकछुप्रीतिसयाई॥
एकदिनाललितासंगमाहीं॥देषिवेचन हम गइ तहांही
उनहीकेसंगभईचिन्हारी॥तवहीकौंपहिचानिहमारी
वहहैसनेहजानकेआई॥ऐसीशीलसुभाव सुहाई॥
मैंपरहतेंइतआवनलागी॥येउसंगआगेअनुरागी॥
सुनराधायहसहजसुहाई॥शीलसनेहरूपअधिकाई॥
इनकौंब्रजमेंक्योंनवलावौ॥अपनेनिकटहियानवसावौ॥
कैव्यषभानपुरीकेगोकुल॥राखहुइन्हैंहुलसाइसहितसुल

तुम हौ नवल नवल हैं येऊ ॥ दोऊ मिल स्यामहि सुख देऊ
ऐसो है यह नारि सुहाई ॥ और नारि मन लेति चुराई ॥
हमहू कौं अबहू नाहिं मिलावौ ॥ नीके इनकौं बदन दिखावौ
हमहि देखि सकुचत कत प्यारी ॥ हमसो घूंघट करत कहारी
ऐसेही चंद्रावली गह्यौ स्याम कर जाय ॥
यह कहि अबलौ नहि सुनी तियसौं तिय सकुचाय
आवहि बदन उघारि घूंघट पर हातो कियो ॥
सुखछबि रही निहारि मानकरि लोचन सुफल
बारहि वार कहति मुसकाई ॥ चितवति कियों नहिं बदन उवाई
मथुरा मैं है बास तुम्हारो ॥ कहा नाम सुख वचन उचारो
कियौ राधिका यह उपकारो ॥ दुर्लभ दरसन भयौ तिहारो ॥
कछुइ कमें पहिचानति तुमकौं ॥ काहे कौं सकुचाति हैं हमकौं
कवहूं चिवुक गहि बदन उठावै ॥ कवहूं कपोल परस सुख पावै
कवहू चुटकि कहति सुख फेरो ॥ नैन उठाय नेकु इत हेरो ॥
नैन नैन सों हरि नहि जोरैं ॥ रहै लजाय भाव सों भोरैं ॥
चंद्रावली देखि मुसकानी ॥ हंसि बोली राधा सों बानी ॥
ऐसी सखी मिली ये तुमकौं ॥ तौ काहे न विसारो हमकौं
जब सो इन सो प्रीति लगाई ॥ बहुत भई तुमकों चतुराई ॥
अबलौं इनकौं कहा दुरायौ ॥ हमहू सों कबहू न जनायौ
त्रिभुवन की उपमा सब गुणनिधि ॥ सकै है इन हि बनाइ है विधि
तुम अरु कुसल यह कुसल क्यों न प्रीति दृढ़ होय
जाने ही चल जाहु बन आप स्वारथी दोय ॥
दंपति कियौ विचार सुनि चंद्रावलि के वचन
यासों नाहि दुवार हरषि मिले उरलाय तब
चले कुंज गृह हरषि विशाला ॥ उभय बाम विच मदन गुपाला

वामभागप्यारी कोलीनो ॥ दक्षिणभुजासखीपर दीने ॥
विविधविलासनिविषनवधमानो ॥ एतिसमेतलषिमदनलजानो ॥
कैधौंकेषनलता सुहाई ॥ ललितनमालविटपलपटाई ॥
गयेकुंजवनदंपति विहरई ॥ सुमनपुंजअलिगुंजसुहाई ॥
वरणवरणकुसमितद्रुमनाना ॥ करतिकोकिलामंगलगाना ॥
वहतसमीरत्रिविधसुखदाई ॥ पावनमंजुलभूमिसुहाई ॥
लषिछविपुंजकुंजअनुरागे ॥ सहचरिसहितयुगलचलिआगे
नवदलकुसुमतल्पकमनीया ॥ वैठेनवलवरणकरवरणीया ॥
करतविलासविविधिमनमाने ॥ कोटिरतिकामलजाने ॥
शोभितगोरस्यामसुभजोरी ॥ निरषतछविहरषीतृणतोरी
सनेरसिकदोउरसरसिकाई ॥ वसेनिसादोउकुंजसुहाई ॥

तैसोइविपिनसुहावनौ तैसियपवनसुगंध
तैसियनिर्मलचाँदिनी तैसोइसुखसंबंध
तैसोइकुंजनिवासतैसोईयमुनापुलिन ॥
सकलसुखनकीरासि तैसोइरंगभीनेयुगल

वनहिंधामसुखरैनविहाई ॥ उठेभोरदोउछविअधिकाई
वैठियुगलरंगरसभीने ॥ आलसयुतअंचनभुजदीने ॥
अरसपरसदोउछविहिनिहारै ॥ रीझपरस्परतनमनवारैं ॥
अरुणनैनन्रवसेरसुहाई ॥ विनगुणमालहृदैछविछाई
लटपटिपागरसमसोभौंहैं ॥ कुंडलझलककपोलनसोहैं
प्रियावदनछविस्यामनिहारत ॥ अरझीलटमुकुतनिरवारत
अरुणनैनसुरतिरसपागे ॥ नंदनदनपियसंगनिसिजागे
टूटेहारसरगजीसारी ॥ नखछिखसुंदरपियअतिप्यारी
चलेकुंजतेयुगलविहारी ॥ ब्रजवासीसषिलषिबलिहारी
सुन्दरस्यामसुंदरीस्यामा ॥ जीतेसुन्दररतिपतिकामा

सुन्दर अविलोकनि मृदु बोलनि ॥ सुन्दर चाल ढुरनि मृग डोलनि
सब विधि सुन्दर सुख निधि दोऊ ॥ सुन्दर उपमा कौन हि कोऊ
अति विचित्र नंदलाल की लीला ललित रसाल
जो सुख दुर्लभ सिव सनक सो विलसत ब्रजबाल
गये युगुल ब्रज धाम सखी सहित निसि रस विलसि
बसत प्रिया उर स्याम स्याम हृदय प्यारी सदा ॥

अथ श्रृंगार भूषण वर्णन लीला

भवन सिंगार किशोरी ॥ बहुरौं अंग सिंगारत गोरी
ढ़ै सबन दान पहिराये ॥ रति रण जीति पिया सों आये
टि कि किणि बसन नवीने ॥ बाजूबंद भुजन को दीने
कंकण उर हार सुहाये ॥ सरुवनि चारु स्रवण पहिराये
बेसर अंजन दृग दीनो ॥ बेंदा ललित भाल पर कीनो
मास सम भाग सुहाई ॥ ता मधि रेख सिंदूर बनाई ॥
सों बिमुख जानि कुकादर ॥ बांधति कुच मनो किये निरादर
यो विहसि सुधरन को बीरा ॥ सुखद हृदय हार सधीरा
भित सकल सिंगार सुहाई ॥ श्रीवृषभानकुंवरि छवि छाई
बसि रव कुसुम विसिष की सेना ॥ कियेकान्ह बसपंकज नैना
स फूल सिर पति छवि छाजे ॥ मनहु भाग मणि प्रगट विराजे
भी जराव फूल अरुणाई ॥ हरति प्रात रवि की छवि छाई
चंद्रवदन मृग शिशु नयन भृकुटी कुटिल कलंक
अलक कलक छवि देति जनु शोभित रजनी अंक
कुंदकली सम दंत तिल प्रसून नासा सुभग ॥
जीव बंधु की भांति अधर अनूपम चिबुक तिल
गिषि कल कंठ कपोत लजाहीं ॥ पीक लीक झलकनि तेहि माहीं

कहो स्याम देखे जो याही ॥ तुरत होय पयूके वस माही ॥
जो मोहन पासो भून रागो ॥ कहा चले मोरी या आगो ॥
यह आई कोहलोक ते अति सुन्दर वर नारि
ब्रज में तो ऐसी नही कोऊ गोप कुमारि ॥
कोऊ ल्यायो याहि के धौ आई आपही ॥
सो बैरी मम आहि जो लाइ याको ब्रज महि ॥
सुनी कहूं इन हरि की शोभा ॥ आई है ताही के लोभा ॥
जैसे सुन्दर कुंवर कन्हाई ॥ तैसी सुन्दर यह ब्रज आई
मनहीं मन पान २ पछिताई ॥ पूछत अति विवहि यह आई
तू है कौन कहा ते आई ॥ यहां कौन ताको ले आई ॥
नाम कहा है सुन्दरि तेरो ॥ तुम जहं रहति कौन सो घेरो
कहो न मुख ते वचन सुनाई ॥ मति सकुचो कहि मोहि दिखाई
हम तुम दिनन एक है गोरी ॥ तू कछु रूप अधिक नाहि थोरी
यहां अकेला तू क्यो आई ॥ काहू संग और नाहि लाई ॥
सुन्यो नहीं अन्याव यहां को ॥ ऐसे कहि डरपावति ताकौं
करत कान्ह ब्रज में वर जोरी ॥ लेत तियन के भूषण छोरी
जो अपनी पति चहति सयानी ॥ तौ घर जाइ मानि मम बानी
लेइ वसन ते अंग छिपाई ॥ देखे जिन कहुं कुंवर कन्हाई
तेरे हित की कहति हो मान वहे मतिमान ॥
आइ है ब्रज आपही तू उन को कहा जान ॥
ऐसो ढीठ किआनि त्रिभुवन मे कोऊ कहू ॥
जैसो ब्रज मे कान्ह मन भायो सब सो करत ॥
नैकु नहीं काहू कर माने ॥ मथुरापति हि रहत सकाने
उनके गुण नीके मे जानो ॥ तो सो अपनो दसा बखानो ॥
हम मग [illegible] सो चलन जाही ॥ घेर लई इग मग के माही ॥

परमचतुर तुमकौं मैं जानी॥ हमसौं तुम कछुक रतसयानी
अतिही सुन्दर रूप तिहारी। देखत होत मन मुदित हमारी
शोभित वेसर नाक सुहाई। अति अनूप अधरन अरुणाई
दसन दमक दामिनी लजावति। चिबुक नील कण अति छवि नावति
कहि ऐसे मुखकी मृदु वानी॥ हमें सुनावति नाहिं सयानी
कहौ वचन काकी हौ घरनी। काकी सुता सहत मन हरनी
कैरिसके रसके इत हेराति॥ मेरे सन्मुख लोचन फेराति॥
कछु रस कछु धरको मन माहीं॥ धीर धराति नागरि जियजाई
यह तौ बोलाति है नहीं अति गरबीली बाम॥
देखत ही यह रीमिहैं छैल छबीले स्याम॥
भई सौंति यह आइ अब हरि याके वस भये
यौं वियोग उपजाय उपजायो उर विरह दुख॥
रही दीव दरपन हिं लगाई। टराति नहीं छविकी अधिकाई
उरमें भयो विरह दुष भारी॥ देखि दशा रीझे गिरि धारी॥
कबहु चलतीं निय ढिंग हि कन्हाई॥ कबहु रहति लषि छवि हिं लजाई
औचक पाछे तें सुख दाई॥ मूंदे नैन कमल कर लाई॥॥
चौंकि चकित भई मन में प्यारी॥ जानो आये छैल विहारी॥
डरति रही मैं मन मैं जाकों॥ मिले आइ सुन्दर हरि ताकों॥
तव कछु सुरत भई मन माहीं॥ वह तो ही मेरी पर छाहीं॥
सकुचि दरपन कर तें पियपाहीं॥ मन ही मन दोऊ मुसकाहीं॥
जानि वूझि के पिय घनस्याम हिं॥ लेति विपुल सौंपन कौंन माहीं
स्याम पिया लोचन करि लायो॥ अति हित वेनी उर परसायौ
शोभा कहा कहै कवि कोऊ॥ मेचक गौर सुभग अंग दोऊ॥
ताविच मनहु पन्नगी आई॥ रही कनक गिरि सों लपटाई
वेष्टित भुज मूंदे करन दीरघ खंजन नैन॥

तुम्हरी महिमा पियको जानै ॥ इक सुन्दर अरु परम सयाने
हंसत चले तब कुंवर कन्हाई ॥ रसिक पुरंदर जन सुखदाई
हरषित गये सदन नंदलाला ॥ इत नागर उत हरष विशाला
जब प्रीति विंब सुरति जिय आवै ॥ समुझि सुदसा सकुचत बपावे
तेहि अंतर संग सषिन लवाई ॥ चंद्रावलि राधा ढिंग आई
लषि प्यारी आदर अति कीनो ॥ तुरत सबन को बैठक दीनो
सादर सनमानी सबै दिये हराषि कर पान ॥
पिय संग सुख चाहति कहन रहति सकुच पनि मानि
गद्गद सुर मुख बैन बार बार भाषति हराषि
पुलक प्रेम जल नैन पुलकि गात पूरे सबै ॥
कहति सखी सुन राधा गोरी ॥ आज कहा अति हर्ष किशोरी
हम तेरी नित ही प्रति आवैं ॥ इतनो आदर कबहूं न पावैं
पायो आज पस्यो कछु तेरी ॥ कै धों मिले स्याम कहूं हेरी ॥
उमग्यो प्रेम हरष उर माहीं ॥ हमैं सुनावति हैं क्यों नाहीं ॥
सुन सखियन के वचन सयानी ॥ बोली प्रिया हरषि के बानी
आये आज सखी हरि मेरे ॥ कहे जात नाहि गुण उन केरे ॥
जैसी भांति मिले हरि हमसों ॥ सो कहित कहों सुनो साषि तुम सों
मैं अपने सब अंग सिंगारति ॥ लिय मुकुर कर बदन निहारति
पाछे आनि भये हरि ठाढे ॥ चतुर सिरोमणि छवि सों बाढे
भाव एक भार मैं साजा ॥ ताहि कहति साखि लागति लाजा
लषि अपनो प्रति बिंब भुलानी ॥ जानु औरे तिय मन हि डरानी
पाछे ते यह जानि कन्हाई ॥ मूंदे नैन आनचक आई ॥
तबही चौंकि चकृत भई मैं समझी निज भोर
लगो दिन उरहन तुम्हें भई फिरति हो चोर ॥
सुनि राधा सुख बात हिय हरषी सब गोपिका

पुलकित प्रफुल्लित गात कहत धन्य तू लाडिली ॥
स्याम संग सुख लूटति है री ॥ ऐसे उन सों नहिं कहीत है री ॥
स्याम भये तेरे अनुरागी ॥ भली भई तू हरि रस पागी ॥
अब हरि तोतें अति रति माने ॥ तेरो अंतर हित पहिचाने ॥
आवत जात रहत घर तेरे ॥ रहत नहिं रहत तोहि विनु हेरे ॥
चतुर रूप गुण तुम दोउ नीके ॥ परम भावते हो सखि ही के ॥
आज लाल मेरे गृह आये ॥ बड़े भाग्य मैं हित करि पाये ॥
देखदरस नैनन सुख पायो ॥ करी आज आनंद बधायो ॥
यह उपकार तुम्हारो आली ॥ मोहिं मनाय दिये वनमाली ॥
तुरत लाय हरि मोहिं मिलाये ॥ मैं अपने अपराध छमाये ॥
नंदनंदन पिय नैन समाये ॥ भावत नहीं नेक विसराये ॥
सुनि यह राधा की रसवानी ॥ देत असीस सखी हरखानी ॥
नंदनंदन वृषभानुकिशोरी ॥ चिरजीवहु सुन्दर यह जोरी ॥

प्रेम भरे छवि सों भरे भरे आनंद हुलास ॥
युगल माधुरी रस भरे ब्रज में करत विलास ॥
करत अनेक विहार रूप रासि क्रीड़ा निधि युगल ॥
राधा नंदकुमार ब्रजवासी जन सुख करन ॥

अथ नैन अनुराग लीला ॥

हरि अनुराग भरी ब्रजनारी ॥ लोक सकुच कुलकानि निवारी ॥
सास ननद गारी दे हारी ॥ सुनत नहीं कोउ कहत कहा री ॥
सुत पति नेह जगत यह ऐसो ॥ ब्रज त्रिय तिन तिनका सो लेसो ॥
छूटे लोक मर्यादा डारी ॥ ज्यों अहि केंचुर फेरत निहारी ॥
ज्यों जलधार भरे तृण नाहीं ॥ जैसे नदी समुद्रहि जाहीं ॥
जैसे सुभट खेत चढ़ि धावे ॥ जैसे सती वहुरि नहिं आवे ॥

जैसे जभी नंद नंदन कौं ॥ नेकडू डरी नहीं गरुजन कौं
तैसेहिं प्रेम विवस गिरिधारी ॥ जोगज पंकन सकुहिं निहारी
ब्रजवनिता मन नहिं विसरावै ॥ छण छण प्रीति नहिं दिषि सुषपावै
आये पुनि तेहि ओर विहारी ॥ सखिन सहित वैठी जहं प्यारी
और देखि सकुचे मनमाहीं ॥ तातें निकट गये हरि नाहीं ॥
तहीं मग निकसे सुखदाई ॥ सुन्दर नटवर रूप दिखाई

सीस मुकट कुंडल श्रवण उर चटकीली माल
पीत वसन कटि काछनी तन दुति स्याम तमाल
चलत लटकती चाल वंक विलोकन मृदु हसन
अंग अंग छवि जाल रसिक नवल नागर छयल

औचक देखि स्याम ब्रजनारी ॥ भई चकित तन दसा विसारी
जात चले ब्रज खोर अकेले ॥ कोटि काम कौ छवि पर हेले
पग द्वै चलत वहुरि फिरि हेरें ॥ कमल सनाल कमल कर फेरें
मग मटा तिलक अलक घुंघुरारी ॥ तन वन धातु चित्र रुचिकारी
मृदु मुसुकाय सरारत भौंहैं ॥ नैन सैन दै दै मन मोहैं ॥
निरषत ब्रज युवती थिथकानी ॥ दुख सुख व्याकुल मन अकुलानी
गये कलपतरु छोह कन्हाई ॥ रूप ठगौरी तियन लगाई ॥
लागी कहन परस्पर वानी ॥ लोचन मन अनुराग कहानी
सुनहु सखी यह नंद दुलारो ॥ हठ करि यह मन लेत हमारो
छण छण प्रति अवि और वनावै ॥ सो ना कछू कहत नहिं आवै
मन तो इन नहीं हाथ विकानो ॥ हम सपि यह कछु भेद न जान्यौ
नैन निसाद करी नैनन सौं ॥ कियो मोल सैनन वैनन सौं ॥

वेच दियो मन आप ही मृदु मुसकन धन पाय
परी रहां हीं वीच ही नैना वडी वलाय ॥
भयो स्याम को जाय अव रुचि मानी मन तहां

मैपचिरहीवुतायकोसनहीइतकोफिरैं ॥
अपमनहितहमैहूसोंकीनौ॥भेदहुमारौसवकहदीनौ॥
मनतौगयोनैनहूमेरे॥तिनहूचोलिकियेहमैचेरे॥
अवयेरहतनहाशिवकाई॥सोईकरतजुकहतकन्हाई॥
जितहिचलतवैतितहीजाही॥हरिकेसन्मुखरहतसदाही॥
भयवेजाइगुलामस्यामके॥रहेनकाहूओरकामके॥
वाकौकछुअपमाननजानू॥फूलेफिरतअधिकसुखमाने॥
जगउपहासमुनतवहुतेरौ॥लाजसंकटीनौसवडेरौ॥
आरतपथमर्यादवहाई॥लोककवेदकुलकानगवाई॥
मैसमझायरहीवहुतेरौ॥नैकहुकहौसुनतनहिमेरौ॥
ललितत्रिभंगीछविपरअटके॥मोसोंतोरिसगाईसटके॥
हरिअवछोंडतनिकौनाहीं॥वैठेरहततआपतिनमाहीं॥
राखेवांधअलककीडोरी॥भाजजाहिमतकहूंकरोरी॥
अवयेलोचनस्यामकेमखीहमारेनाहि
वसेस्यामरसरूपयेस्यामवसेइनमाहि॥
कहाकरैंसखिस्यामनैनन्हीमैदोषयह॥
हटकरभयेगुलामतनककस्वमुसकानपर॥
वोलीअपरएकव्रजनारी॥सखिलोचनलोभीअतिभारी॥
जवहीलखतकमनीयकन्हाई॥तवहीसंगलागतउठधाई॥
मेरौहटक्योनेकुनमाने॥लखतजाइवहछवितलचाने॥
ज्योंखगछूटतफदवधिकते॥भागिचलतउठिवेगअधिकते॥
पाछैफरनफिरतडराई॥जाइसघनवनमाहसमाई॥
त्योंहगमातुछूटपराने॥हरिछविसघनवनजायसमाने॥
अववेइतकीनाहिनिहारौ॥वहछविनिरखिरहथिउरधारौ॥
जदपिसुधाछविपियतअघाई॥तदपितृपतिनाहिमनलाई॥

भई सखी नैनन गति ऐसी ॥ भरे भवन तसकर की जैसी ॥
देखि स्याम छवि धन अधिकाई ॥ अति लालची रहे ललचाई
लेत न बने जो न नहिं जाई ॥ चकित भयो निज सुधि बिसराई
रहे बिचारहिं मांझ भुलाने ॥ नहिं कछु लियो न त्याग पराने
नैन चोर हरि मुख सदन छवि धन भांति अनेक
तजत बनत नहिं एक हू लेत बनत नहिं एक ॥
सखि ये नैना चोर हरि मुख छवि चोरन गये ॥
बांधे अलक नि डोरि हरि की चितवन पाहरू ॥
भली भई हरि हू न हिं बांधे यो ॥ निदरि गये तैसो फल पायो
ये नहिं मानत कहेउ हमारो ॥ सखि इन हीं सब काज बिगारो
कहति और एक गोप कुमारी ॥ सखि ये नैन के धीं बटपारी
कपट नेह हम सों करि भारी ॥ करी हमें गुरुजन तें न्यारी ॥
स्याम दरस लाइ करि दीनो ॥ हमें आपने बस करि लीनो
प्रेम ठगोरी सिर पर साई ॥ फिरत संग हीं संग लगाई ॥
बिरह फांस गर डारि हमारे ॥ करी बिकल नहिं अंग संवारे
कुल लज्या संपदा हमारी ॥ सो इन लूटि लई सो षि मारी
कहा एते परी मोह बन माहीं ॥ लगन गांठ दृग छूटत नाहीं
कौ हूं नेह जीव नहिं जाई ॥ सुमिर नैन गुण मन पछिताई
कासों कहैं सखी यह बाता ॥ भये नैन हमको दुख दाता ॥
हमको बिरह दुसह दुष देहीं ॥ आप सदा दरसन सुख लेहीं
इहि बिधि निदरत दृगन को भरी प्रेम ब्रजनारि
होत मगन सुख बिरह रस नैननि स्याम निहारि
यही भजन यह ध्यान स्याम रूप रस गण कथा
नहिं जानत कछु आन निसि दिन ब्रज की सुंदरी
कोऊ कहति नैनन ... [illegible] ॥ ... [illegible] ॥

कविकरणचारालपिललचाने॥फंदगयेचितवनलपटाने
हारिछविसरकपरेद्रगजाई।ध्यानेहिकिलापभयेविसमई
रहतदीनसनमुसरकलाये।दुसमुससमकिसबैविसराये
कहतवातहैवड़ेसयाने॥वहछबिलेनगयेअतुराने॥
सोतोकछहाथनहिंआवो।आपनयोड्नसाथ बंधावो
ऐसोकोत्रिभुवनजोजाई॥आवैसखीसमद्रअथाई॥
हारजातयेनैनन जाने॥मानपमानकछु नहिंमानै॥
परेरहत शोभाके द्वारे॥नेकहुंलाजनहींउर धारे॥
जाकोवानपरीसखिजैसी॥धरीटेंकउरमैंतिनतैसी॥
इतअसियनबहटेकपरीरी॥लुब्धतज्योंकमलनभ्रमरीरी
जोसुरकनलिनीकेवसमाई॥जिमकापेमदीकांडनहिंभाई
लोभेवसजिममीनमगआपवंधावतआय
रूपलालचीनेनतिभिभयेस्यामवसजाय
सकेनकाउछिडुलोकलाजकुलकानगिर
स्यामसलोनेसिंधमिलेत्रिवेनीह्वैनयन॥
सखीनयनअवहरिसंगलागे।मनवचकमउनसोंअनुरागे
सन्मुखरहतसदासुखपाये।भूलगयेमगदृगनेवाये॥
ज्योंमणिदेखिउरगसुखपावे।ज्योंचकोरचंदहिटकलावे
मुदितरंकजैसेधनपाई।तैसीइनकीगतिअवभाई॥
अवयेनैनफिरतनहिफेरे।कियेसखीहमयत्नघनेरे॥
देखसुभगस्यामइनजवते।नितुरभयेहमसोंयेतवते
जवमैंघूंघटपटघेरेरी।तबयेंशिशुकोसरनअरेरी॥
हरिअंगसंगलागिअरिधाये।मनहूइनहिंअतिपालकसे
मदुमसकनिरसपायमिठाई।छणन्हीमैंमतिगतिविसराई
आतिहुवपसेननेकविचारे।निमिसरूइनवलधीरन धारे

लाजलकुटउर में डरपाये॥ वेसरिवरकह्दुडरनडराये॥
फिरेन मैं वहु भांति वुलाये॥ गयेतनकहरि केफुसलाये
अव हमतलफतउनविनामरतवहेंअपसोस
गय खोटो सरिकअापनीकहापारखहिदोस
प्रेमविवसतियवृंद ऐसेदोषतिद्रगन कौं॥
तवहि छैलव्रजचंद टेरसुनाई वांसुरी॥

अथ मुरलीलीला

रूपनप्रेमरस पूरणतातें॥ करतहुतीनैनन की वातें॥
परीश्रवणदोहिअंतरजाई॥ हरिकीमुरली टेर सुनाई
भई चकित सुनि सब व्रजगोरी॥ परीअाय मनो [illegible] सठगोरी
भूलिगई सुधिअखियनकेरी॥ ह्वैगईमानोचित्र उकेरी॥
द्रवसुखमनकोवरननजाई॥ इकटकरहीपलकविसराई

देहदसासव तुरतभुलानी॥स्वेदचल्योयहिमानहुं पानी
भईविवसमौतिकोगतिभूली॥प्रेमहिंडोरिमोमेंकाफूली
कवहूंसुधिकवहूंसुधिनाहीं॥कवहूंमुरलीनादसु नाहीं
कछुकसंभारीधीरउधारी॥कहतिपरस्पर गोपकुमारी
आखियनतैंमुरलीहरिप्यारी॥वैवैरनियहसौति हमारी॥
व्रजमैं धौंकितनतैंयहआई॥भईकठिनहमकोंदुखदाई
आवतहींऐसेढिगजाके॥भयेस्यामतुरतहिंवस ताके॥
जेमसकोंहमतपकियौषटऋतुसवव्रजवाम
सोरसमुरलीलेनअवसाजहिंवसकरिस्याम॥
गावतमोटीतानमुरलीसंगअधरन धरे॥
अवजाकेवसस्यामऔरनविवसकरीवही॥
ऐसौत्रिभुवनकोनसयानी॥जोनमोहिसुनयाकीवानी
यहनौभलानहींव्रजआई॥भईसौतिहरिके मनभाई॥
अवयाकेवसगिरिधरधारी॥नेकअधरतें करतनन्यारी
याहीकेअवरंगरंगेरी॥मधुरवचनसुनिरीझगयेरी॥
कर पल्लवकनताहिधैठाई॥रहतग्रीवतापरलटकाई
वारहिंवारअधररसप्यावैं॥तासोंअतिअनुरागजतावैं
दरवडीरीयाकीअधिकाई॥पियतसुधारसहमहिंदिषाई
परीरहतिवनमैंधौकैसी॥भईढीठआवतहीऐसी॥
दिनहींदिनअधिकातजातरी॥सखीनहींयहभलीवातरी
आवतहीहमरोंधनलीनो॥चाहतऔरकेहाधौकीनो
मेंजोकहतिसुनोरीगोरी॥सजगरहोसवनवलकिशोरी॥
मुरलीहरिकरायेवनि है॥कछुदिननमैंहमेंनगनिहै
फिरिहैंयाकेसंगलगिलोकलाजग्रहत्यागि
जवजवजहयहवाजिहैमोहनकेसखलागि

करि है नाना रंग यह जानत दोना कछु ।
या मुरली के संग देखहु हरि कैसे भये ॥
यह सुनि कहति एक ब्रजनारी ॥ सखी बात यह कहति कहारी
अब यह दूरि होति है कैसे ॥ जाके बस नंदनंदन ऐसे ॥
एक पाय ठाढ़े ता आगे ॥ रहत त्रिभंग अंग अनुरागे ॥
अधर सेज पर सैन कराई ॥ कर पल्लवन पलोटत पाई ॥
कबहूं कमिल गावत हैं तासों ॥ होति विवस पुहमी सब जासों
मुरली अति मोहन को भावै ॥ ताके गुण सखि कहन को पावै
जानत राग रागिनी जेते ॥ हरि संग मिलि गावत हैं तेते ॥
नाना विधि को गति न बजावै ॥ तान तरंग अमित उपजावै
जैसे हो रीझत मन मोहन ॥ तैसिय भांति रिझावति गोहन
रहति सदा मुख ही सौं लागी ॥ अधर पियूष स्वाद रस पागी
मधुर मधुर कल वचन सुनाये ॥ पुनि हरि के मन हि चुराये ॥
ऐसी को अब हरि के करतें ॥ टारि करै याको निज वरतें ॥
अब मुरली छूटै नहीं यों के बस भये स्याम ॥
प्रगट कियो सब जगत में मुरलीधर निज नाम
हरि को करि बस माहिं मुरली लूटै अधर रस ॥
उर डर मानति नाहिं हम सबतें बोलति निठुर
निठुर वचन अब हमहिं सुनावै ॥ हरि को मन हमतें उचटावै
आरज पथ कुल कान छुड़ावै ॥ हम सबहिन को निलज करावै
ऐसे ढंग मुरली के आली ॥ हमतें निदुर किये बनमाली ॥
यह तो निठुर काठ को जाई ॥ प्रगट किये अपने गुण आई
अपनोई स्वारथ यह जानै ॥ कपट राग हरि के संग ठानै ॥
मुरली निठुर किये बनवारी ॥ मुरली ने हरि हम मन बिसारी
बन को व्याध कहां यह आई ॥ ऐसे कान्ह रति यो छुनाई

कहाभयोमोहनमुखलागी॥अपनीप्रकृतनहींइनत्यागी

एकसखीवूझतभईऐसें॥मुरलीप्रगटभईयहकैसे॥

कहोरहतिकाकीहैजाई॥कौनजातिकैसेंइतआई॥

मातपिताहैंयाकेकैसें॥जैसीयहतेरूपोऐसें॥

बोलीअरुइकतियासयानी॥अबलौंतुमयहबातनजानी

सखितुमअबलौंनहिंसुन्यौमुरलीकोकुलधर्म

सुनौसुनाऊंमैंतुम्हैंजाकोजातिअरुकर्म॥

तुमसोंकहौंबखानिमैंजानतियाकेगुणनि

सुनिसुखपैहौका नयामुरलीकौकुलकथा

वनमेंरहतवांसकुलजाई॥यहतौयाकीजातसुहाई॥

जलधरपिताधरणीहैमाता॥तिनकेगुणनकरौंविख्याता॥

वनहतेतिनकौघरन्यारौ॥निपटैंजहांउजाड़अपारौ

गुणनिएकतेंएकउजागरि॥मातपिताअरुमुरलीनागरि

परअकाजविस्वासनजाने॥येहैंइनकेकुलहिबखाने

नाजानियेकवनफलआली॥कृपाकरीयापरबनमाली॥

सुनहुसखीयाकेकुलधर्मा॥प्रथमकहौंमेघनकेकर्मा॥

वेवर्षतजलसवजगमाहीं॥गिरिवनसरसरितासवठाहीं

चातकसदारहतकरिआसा॥एकवूंदकौंमरतपियासा॥

धरणीसवहीकौंउपजावै॥आपनदेसाकुमारिकहावै॥

उपजतप्राणिविलसतवाहीमें॥सोकछुछोहनहीताहीमें

ताकुलसुतमुरलिकाजानौ॥अबआगेगुणप्रगटबखानौ

वनहींतेंप्रगटेअनललयेसियाकोभार॥

प्रगटभईजावंसमेंकरतिजावतिनिहिछार॥

ऐसेगुणकीआहियहमुरलीसखिवासकी

आईनिजकुलदाहिऔरकौनयातेंनिठुर॥

याकी जाति स्याम नहिं जानी ॥ किन जाने कौनी पटरानी ॥
कहिये चलौ स्याम सों जाई ॥ सुनत वजे गे कुंवर कन्हाई ॥
सखी कहा यह बात बखानी ॥ स्यामहिं कहा भलो तुम जानी ॥
निज कुल जाति विलमन लाई ॥ ह्वै है तासों कौन भलाई ॥
जाको हम षट ऋतु तप कीनो ॥ सो फल तुरत मुरलि यह दीनो ॥
जे सन्मुख ते विमुख कहावें ॥ विमुख तुरत उत्तम फल पावें ॥
घरके वन वन के घर कीन्हे ॥ कपटी परम स्याम कों चीन्हे ॥
एक अंग की प्रीति हमारी ॥ वे कपटी वह्न रीति विहारी ॥
ज्यों चकोर चंदहि न मानै ॥ चंदा नहीं नेक उर आनै ॥ ॥
जल के तीर मीन तन त्यागे ॥ जल कौं तनक दया नहिं लागे ॥
ज्यों पतंग उड़ि जोति जरेरी ॥ जोति नहीं कछु कृपा करेरी ॥
जाति एक मेघ घन कों जाने ॥ वह कछु ताही प्रीति न माने ॥

इन सबहिन ते हरि निठुर तैसिय मिली सहाय
अब मुरली अरु स्याम की जोरी बनी बनाव ॥
ये अहीर वह वेनु काहिन प्रीति बढावही
दुहुअन को वन रैन जैसे वे तैसी वह ॥

मुरली नैं हरि कों पहिचान्यो ॥ हरि को मन मुरली सों मान्यो ॥
नितुर निठुर मिलि वान वनावे ॥ वाही के बल धेनु चरावे ॥
वाही की लकुटी कर धारी ॥ वाही की वंसी अति प्यारी ॥
हम सों वैर सदा हरि कीनो ॥ दधि ले मारग जान न दीनो ॥
पुनि भेद हि मन हृयो हमारो ॥ कीनो कुल कुटंब तें न्यारो ॥
बहुरी बोलि सखियन को लीनो ॥ ता परसों तिय मुरलिया कीनो ॥
सुनि जननी किन काज ररेरी ॥ कंस कहै सो को उन करेरी ॥
यह मारि यों करत सब फरई ॥ कौन विधि धौं कापर परई ॥
[illegible] रिहरि भयो तहारी ॥ सो घर कुल तें भई नियारी ॥

धनिधनियाकौवंसधनिमुरलीहरीमुखलगी
सखिनसहितपरसंसमोंमुखमेंसिधरस्यो
मुरलीमैंसुरलीभरकरी ॥ महिमाकापैजातनिवेरी ॥
जाकौंयशगुणगंधर्वगावैं ॥ वेदभेदजाकौनहिंपावैं ॥
सुनतनादत्रिभुवनमनमोहै ॥ देवदनुजनरखगमृगजोहै
वानीललितमंत्रसुखदाई ॥ वाजतिहरिमुखसोहिसुरमें
ब्रह्मादिकमनमोहकरावै ॥ सिवमनकोंदससमाधिलगावै
मायायोगकुमकीजोई ॥ शोभितअधरमुरलिकासोई ॥
हरिकोस्वासजासुकीवानी ॥ ताकेगुणकोसकैवखानी ॥
जबमुरलीनंदनंदवजावै ॥ व्रजललनासुनिकैसुखपावै
चकृतहोइतनदसाभुलावैं ॥ प्रेमविवससुधिबुधिविसरावैं
जकीथकीजहंतहांहिजाहीं ॥ मानहुलिखीचित्रकीमाहीं
कबहूंदुखकबहूंसुखमानें ॥ कबहूंनिंदहिकबहूंवखानें
ऐसीदिसाहोतिघटघटकी ॥ वाजतिमुरलीजबनटनटकी
छं॰ जबहिमुरलीस्यामकरगहिअधरराखिवजावहीं
तरुलतानतरंगअगनितगतिअमितउपजावहीं
रहतसुनिध्वनिमगनजलथलजीवजहंसोनहंसहीं
कहतब्रह्मानंदजासोंपासकऊपूजतनहीं ॥
सवसयानसमानज्ञानगुनमानतवहीलौंअहै
लोकवेदमजादपतिव्रतचारफलतवलौंचहै ॥
नवहिंलौंमनचपलबुद्धिसकलरूपधनधामकी
सुनीसपनेहुंनाहिंजवलौंअबयेमुरलीस्यामकी
दो॰ धनिधनितेनरनारिजगधनिधनितिनकेभाग
व्रजवासीप्रभुवासुरीजिनकेमनमेंलाग ॥

राखत हैं यह आस जन ब्रजवासीदास ह
करहु हिये में वास मुरलीधर मुरली धरे॥

अथ रासलीला

वंदौ युगल चरण सुखदायक॥ श्री रसरासि नायका नायक
नंदनंदन वृषभाननंदनी॥ सुर नर मुनि ब्रह्मादि वंदनी॥
रास रसिक रसरास विलासी॥ नित्य धाम वृंदावन वासी
रूप रास आनंद निधामा॥ मंगल पद श्री सुन्दर स्यामा
बहुरि रास पति पद सिर नाऊं॥ रास चरित मंगल अब गाऊं
वेदव्यास जो रास बखानो॥ सो गंधर्व ब्याह विधि जानो॥
ब्रजगोपिन हरि हित तप कीनों॥ स्याम होय पति यह व्रत लीनो
नंद नंदन तिनको वर दीनो॥ चीर हरण लीला तब कीनो
करिहैं तुमरे मन की भाई॥ सरद रैण सुख मल मधराई॥

सोजवदरस सुखदऋतुआई॥एकरजनीपरम सुहाई
भक्तमनोरथपूरणकारी॥यासुतनिरदैविदितसुभचारी
गयेस्यामवृंदावनमाही॥जहँवसतऋतुरहतिसदाई

श्रीवृंदावनधामकीशोभापरमपुनीत॥
वरनसकैकोविविधविधिमनबुधिवचनअतीत
सबचैतन्यस्वरूप भूमिलताद्रुमगुल्मतृण
धारेइच्छारूप सुन्दरस्यामविहारहित

जाकीमहिमाशिवमुनिगावैं।ब्रह्मादिकरजकणनपावैं
जाकीमहिमाश्रीमुखवानी।संकरषणप्रनिस्याम्बस्थ
चिंतामणिमैंभूमिसुहाई॥कोमलविमलरम्यसुखदाई
सकलसुमंगलकीजननीसी।कुसलचरणपंकसरमणीसी
फिरतस्यामजहँनागेपायन।चरणचिन्हअंकितसवगायन
पावनहूकीपावनकारी॥ब्रजवासीप्रभुकोअतिप्यारी
वरनवरनधरविटपसुहाये॥परमअनूपनजाहिंवताये
सदासुमनफलसंयुतसोहैं॥अमितसुगंधस्वादमनमोहैं
नवपल्लवदलपरमसुहाये॥जगमगातनगजोतिलजाये
विपुलकांतिशोभितवहुरंगा॥अतिविचित्रछविउठतितरंग
परमप्रकासदसहूदिशमाही॥कोटिसूरशशिपटतरनाहीं
पत्रपत्रप्रतिछविस्यामकी॥मोहतलाखिमनकोटिकामकी

औरवौरशोभितपरमतैसेइलतावितान॥
वृन्दाविपिनतरुवोलसबनरवोपछविकोखान
औरसकलसुखधामवृंदकुंजादिकस्यामके॥
यहाँविहारविश्रामनितप्रतिसुन्दरसुखद॥

विपुलकुंजमंजुलछविछाई॥तिन्हैंसवाँरतकामसदाई
वहतिसमीरधीरसुखदाई॥सीतलपरमसुगंधसुहाई

चित्र विचित्र विहंग मृगनाना॥ बोलत डोलत विविध विधाना॥
गुंजत भृंग लुब्ध मकरंदा॥ अति छवि पुंज मंजु वन वृंदा॥
तैसिय यमुना परम सुहाई॥ पुलिन पुनीत वरनि नहिं जाई॥
रेती महा छवि झलकन रेती॥ मानहु परम कांति की खेती॥
फूले वनज विपुल वहु रंगा॥ गुंजकरत मधु माते भृंगा॥
सो वृंदावन छवि समुदाई॥ सम्यक वरनि कौन पै जाई॥
जाको पटतर कोनहिं आना॥ वन अनूप अद्वैत वखाना॥
ऐसो कछू परत है हेरो॥ है अस्थूल वपुष प्रभु केरो॥
गोपीजन दृंद्रीगणतामें॥ है चैतन्य आप हरि जामें॥
नित्य धाम ताही तें गायो॥ यह पटतर मेरे मन भायो॥

सुखनिधि रसनिधि रूपनिधि वृंदाविपिन उदार
शारद नारद शेख शिव वरनत विधि श्रुति चार
सुखद न कोऊ आन वृंदावन सम दूसरो॥
सकल वीर सुखदान सुख पावत मोहन जहां

तहां वितिस्त इक रंख सुहायो॥ मणिमै सुभग सुनिन मैं गायो॥
ताग अद्भुत कमल विराजै॥ खोडश पत्र चक्र सम राजै॥
योजन पंच तासु परमाना॥ रासस्थान सुवेद वखाना॥
मध्य कर्णिका अति कमनीया॥ वैठे तहां कान्ह कमनीया॥
शोभा अमित नेति श्रुति वानी॥ ताते गिरा कहात सकुचानी॥
कोमल स्यामल अंग सुहाये॥ निरखि कोटि सत काम लजाये॥
नटवर भेष साज सब साजै॥ अंग अंग भूषण छवि छाजै॥
शिखी शिखंड मनोहर माथे॥ बीच बीच मुक्ता मणि गाथे॥
जलज माल वनमाल सुहाई॥ कुंडल झलक अलक छवि छाई॥
कटि पट पीत काछनी काछे॥ ललित सिंगार सुभग अति आछे॥
मणिगन जटित नूपुर पग नीके॥ चरण कमल भावन जन जी के॥

मरलिकैसकीतिनोहिंअतिधुनिमोहे॥ उकठेविटपहरीतसवसोहैं
तरुवेलीसवसुधसपाता॥नवअंकुरदलप्रफुलितगाता।
सुनिसुधिसेषनागअनुरागे॥ नागसकलसोवततेंजागे
जड़चेतनगतिभईविपरीता॥हरिमुखमुरलीसुनतपुनीता
जेनरनारीतिहुंपुरमाही॥भयेनादवसतनसुधिनाही
सुनिधुनिचकृतभईअतिभारी॥जेव्रजसुन्दरिगोपकुमारी
जदपिमुरलिधुनित्रिभुवनपरसी॥तदपिजथाविधितिनहींदरसी
यारसकोतेईअधिकारी॥नंदनंदनपियकोअतिप्यारी

सुनतहिंवोरीसीभईविसरीसवैअपान॥
लगीठगौरीसीमनहूंमुरलीकीधुनिकान
रह्योनउरमेंधीरवाजीवाजीकहिउठी
आकुलविकलसरीरसुनिमुरलीव्रजकीतरुनि

खटदससहसगोपिकागोरी॥मुरलीसुनतभईसवभोरी
कोउधरनीकोउगगननिहारें॥कोउमनहीमनवुद्धिविचारें
घररतरुनिसवेचितलानी॥आरजपथग्रहकाजभुलानी
लैलैतिनकोनामवुलावे॥मुरलीमेंहरीसवनवुलावे
रहिनसकीधुनिसुनिअकुलाई॥जोजैसेसोतैसेधाई॥
लोकलाजगुरुजनडरडार्यो॥चलीसकलग्रहकाजविसारी
काहूदूधउफनतेहिंछांडे॥काहूदीधिहिजमावतभांडे॥
काहूकरतरसोईत्यागी॥कोउपतिहिजिवावनभागी॥
वालकगोदसंभारिनलीन्हें॥दूधपिवावतहीतजिदीन्हें
कोउसिंगारकरतउठिधाई॥उलटेभूषनवसनवनाई॥
वाजूवंदपगनसोंवांधे॥लैमंजीरभुजनमेंसांधे॥
किंकिनिडारिगईगरमाहीं॥हारलपटतकरसोंजाहीं
सीसफूलकेरननधरेकरनफूलधरिभाल

चलींसकलमुरलीसुनतविभ्रमताकीचालि॥
खंजनकीदृगएकएकरहीखंजनबिन॥
रहीनकछुविवेकभईबिवसमुरलीसुनत॥
मुरलीसोंहरिटेरसुनाई॥उपजीप्रीतिसकलउठिधाई॥
मुरलीधुनिमारगगहिलीनो॥औरतकछूउरसोंमनकीनो॥
प्रेमसुरससकलब्रजनारी॥पंचभूतअरुगुणतेंन्यारी॥
रोकरहेसुतपतिपितुमाता॥तेकिमरुकहिंप्रेमरसमाता॥
चलींध्यानधरिहरिउरमाहीं॥गढ़सनकुमरुकीकछुनाहीं॥
जोप्रारब्धकरमवसकोई॥राखीरोकिपतिनगृहसोई॥
भयोविरहदुखतिनकोऐसे॥कोटिनजन्मकर्मफलजैसे॥
पुनिधरिध्यानहरिहिउरलायो॥कोटिस्वर्गफलपानऊपायो॥
योंकरिभोगत्यागतनवाला॥दिव्यदेहधरिमिलीगुपाला॥
इहिविधिवनसबचलीकिशोरी॥लोकवेदमर्यादातोरी॥
आतुरनिकसचलीसबऐसें॥जरतभवनवलियतहैजैसें॥
एकएककीसुधिकछुनाहीं॥कुंडनचलीस्यामपहँजाहीं॥
गेहगुरुजनतजिलाजतजिब्रजसुन्दरीनिकाय
मुरलीधुनिरसरंगरलिमिलीस्यामवनजाय
नटवरवपुगोपालअधरसधरमुरलीधरे॥

कनक
चिपन

॥प्रदतसुप्रदेरिसुखपायो

वाके वचन प्रेम रस साने ॥ प्रेम प्रतीति कसोटी आने ॥
कहो अहो तिय ब्रज कुसलाई ॥ निसि का इ वन कौं उठि धाई ॥
अर्ध रात केहु डर नहिं कीनौ ॥ ऐसो कहा काज मन दीनौ ॥
यह कछु भली करी तुम नाहीं ॥ निज पति तजि धाई वन माहीं ॥
देत पंथ निदरी तुम भारी ॥ जाहु अजहु घर वेग सँवारी ॥
यह सुनिके गुरुजन दुख पैहैं ॥ वह रौं तुम कौं त्रास दिखैहैं ॥
निज पति तजि पर पति भजै तिय कुलीन नहिं होय
मरे नरक जीवत जगत भलौ कहै नहिं कोइ ॥
युवतिन कौ पति देव कहत वेद मैं हूं कहत ॥
करहु तिनहिं की सेव जो तुम चाहत सुख लह्यो ॥
और कछु जिय में जिन राखौ ॥ करिये वेद वचन जो भाखौ ॥
तजिके कपट करहु पति सेवा ॥ तिय कों पति तजि और न देवा ॥
कूर कपूत भाग विन रोगी ॥ वृद्ध कुरूप कुबुद्धि वियोगी ॥
ऐसेहु पति कौ तिय त्यागै ॥ वडो दोष ताके सिर लागै ॥
ताते मानहु कही हमारी ॥ जाहु सकल घर कौ ब्रज नारी ॥
तातो तुम्हरे है धौं नाहीं ॥ ऐसे कहि २ हरि पछिताहीं ॥
कैसे उन तुम आवन दीनौ ॥ कैसो धौं यह विधि तुम कीनौ ॥
के धौं कहि आई उन पाहीं ॥ के धौं वे जानत है नाहीं ॥
नव यौवन तुम सब सुकुमारी ॥ निसि वसिवो वन अनुचित भारी ॥
जो यह बात सुनै ब्रज काऊ ॥ हमैं तुम्हैं दूषण दैसि दोऊ ॥
अब ऐसी कौ जो मति कबहू ॥ करौ विचार देखौ मन तुमहू ॥
वारंवार युवतिन भरमाई ॥ ऐसे सब सौं कहत कन्हाई ॥
निठुर वचन सुनि स्याम के युवती उठी अकुलाइ ॥
चकित भई मन गुनि रही मुख कछु वचन न आइ ॥
वदन भयौ मुरझाय जनु तुषार कंजन पर्यौ ॥

उडुगनसुगंधलपटस्वरूथोरा॥गुंजतभेंवरखारूषितथोरा॥
वैठतहांस्यामसुखसागर॥कोटिकामममनमथनउजागर॥
करतविलासहांससरलीला॥कोटिकनंगरंगसुखसीला॥
परिरंभनचुंबनकुचपरसन॥हियक्कलासअनंदरसवरसन॥
कामभावगोपिनहरभायो॥कियोसवनकोमनकोभायो॥
असअद्भुतरसप्रेमवढायो॥वढ्योसिरसरसअंगउपजायो॥
सुनीपियवचनसकलअनुरागी॥भूषणवसनसंवारनिलागी॥
लषिउलटेभूषनसकुचानी॥निरषिपरस्परपियमुसकानी॥
नवसतसाजअभईसवबाढी॥परसप्रेमआनंदरसबाढी॥
वंसीवटकविधामअनूपा॥कोटिकल्पतरुसमसुषरूपा॥
तहांरच्योरसरासकन्हाई॥भक्तकपरमयभूमिसुहाई॥
कुं॰ भईभूमिकपरमयपरमवराषिजलकमकुमसिंची
परमकोमलसुभगयोतलयोतिमणिकंचनखिची
हरषितहेघनस्यामसुन्दररासमंडलविधिरची
वरनिकपिजातसोछविनिरषिसागरगतिलची
एकएकहियुवतिकेविचमधुरमूरतिस्यामकी॥
तिनमध्यजोरीरासनायकराधिकाघनस्यामकी
एकरूपअनेकवपुधरिसवनकेविचराजहीं॥
करीयहलीलाअगटप्रभुउननेमरमकोउनजानहीं
भईमेंडलजोरिगाढीजातनहिंछविसुखभनी
सहसवत्तिसउदितशशिमनोमध्यघनदमनिकी
दो॰ तेहिअवसरललनासहितभयेसुरमुनिसर्व
देवनटीकिन्नरवधूतुंवरादिगंधर्व॥ ॥
सो॰ देषतचढेविमानहरषिहर्षिवरषतसुमन॥
रसतअदितमनमानधन्यरेमनधन्यकोंह

सुरगरासबबाजेंत्रबजावें॥निरखतब्रजसुंदरीछविपावें
नूपुरकंकरणकिंकिरणिवाजे॥मंदमधुरमुरलीसुरगाजे
तालमृदंगबीनमुहचंगा॥सुरमंडलसारंगिउपंगा॥
तंत्रअनेकविविधिगतिसाजें॥मिलेएकसुरसोंसबगाजें
निर्ततपियसंगचंचलबाला॥जनुक्रीडतघनदामिनजाला
बिचरस्यामबीचब्रजगोरी॥मरकतमणिकंचनकीजोरी॥
सभगतमालतरुणनंदलाला॥कनकलतासमसबब्रजबाला
करसोंकरजोरेछबिछाजें॥कोटिकामछबिनिरखतलाजें
वृंदावनउरमनहुंविशाला॥लसतरासमंडलकीमाला॥
हरिब्रजनारिपरस्परसोहे॥कोटिकामरतिकेमनमोहे
सटकिचलतगतिनागरनटकी॥लटकनमुकटलटकघूंघटकी
जनुबनघनदामिनीबरूथा॥निरखिनचतमोरनकेयूथा॥
छं० नचतमानोमोरयूथनमुकुटदसकनयोफबे॥॥
चलतिगतिलैनागरिनसंगस्यामनटनागरजबै
धरणिपगपटकनिमटकिकरभौंहमटकनकाहपरे
ग्रीवचालनिहलनिकुंडलकरजुफेरनमनहरे॥
मणिकंठमुक्तामालउरबनमालचरणनलोंबनी
बदनपंकजअलकअमनझलकछबिसकैकोभनी
पटपीतफरकनकाछनीकटिलालकिंकिणिसोहई
बलयचित्रितबाहुभूषणस्यामतनमनमोहई॥
लखिरहतनंदलालतियछबिविविधिविधिवरणीयही
सुभटपाटीभालमुक्तासीसफूलनछबिरही॥
जटितमालजरावबेंदीउदितदुतिभ्रूवककी॥
ललितबेसरिनाकखंजननयनश्रुतिताटककी॥
अधरदसनकपोलचिबुकनकंठभूषणअतिबने

करतरासविलासप्रभुतहरतमनमोहनमन॥
दो॰ कबहूंलसितगतलेचलनचलसुघरनंदनंद॥
निरषिहरषितेसेचलतनवलनागरीचंद॥
सो॰ कबहूंविषमसुरावामलटकिलेतिनृतनगतिहि
रीझरसिकघनस्यामतापरतनमनवारहीं॥
निर्तनसरसपरसपियप्यारी।बोलतबलिहारीबलिहारी
कोउकलिधुनिपियकेगुणगावे।कोउअभिनयकरिभावबतावे
कोउसंगीतकलागुणधारी।कोउउघटतचरकतकरतारी
नितनतालभेदगतिलीना॥सुघरएकतेएकप्रबीना॥
जानतरसिकपियाविकमिलमोले।जबपईताथेईकहिबोले
तानतरंगरंगकरउपजावे।लेतउपजअतिरसबरषावे
कबहुंकउघटतकलकनहाईं॥फिरतहुभुजमिमवालसई
गिरतमाणिनकेभूषणतनते॥झरतफूलजनोरूपलतनते
लूटकिरचनिरततअलबेली॥ग्रीवधरेमंजुलभुजमेली
कोउपियकेसंगमिलकेगावे॥कोउमुरलीकोटीनबजावे
काउहिस्यामलेतभुजभरिके।तजेकमलमुखचुंबनकरिके
समतरासपियसंगछबीली॥परमप्रेमरसरंगरंगीली॥
छं॰ रसरंगरंगीलीप्रेमभरीइमरासरसरसपियसंगकरे
निरषिदेवप्रसूनबर्षाहिहरषिउरआनंदभरे॥
धन्यब्रजधुनिबालब्रजकीधन्यजनपुनिपुनिकहे
करतरासविलासपूरणब्रह्मजहेपरघटअहे
शंभुअजसनकादिनारदआदिगुणगणगावही
निरखिछबिनिधिस्यामस्यामाअत्यसुखविसरावही
देवनारिविसारिपतिगतिपरसपरकोहसोचही
मेजबभविविधिनीवह्नमनकोनिरषिसुखमनलोचही

कह्यो भयो उरधरवसी अरुअमरपदवीजोलही
करतिसुखजो स्याम संग ब्रजनारि सो त्रिभुवननही
वारवार मनाय विधिना कहतियह वरदीजिये॥
होयदासी ब्रजवधुनकी कृस्नपद रतिकीजिये॥
दो० धनि२कहिवरषहिसुमनमुदितसकलसुरनारि
धनिमोहन धनिराधिका धनि ब्रजगोपकुमारि
सो० धनि२रासविलास धनि सुन्दरता धन्य सुख॥
धनिवृंदावनवाससुरललना विधकोकहति
रमत रास यहगोपकुमारी॥ नंदनंदनप्रियकी सब प्यारी
करतिगान कोकिलालजावे॥ हावभावकरिपियहिरिझावे
रागरागिनी समयसुहाये॥ सहजवचन जिनके मनभाये॥
गातिसुगंध निर्तत सबगोरी॥ सहजरूपनिधिनवलकिशोरी
पगमहिपटकि भुजनलटकावे॥ फंदाकरनअनूप बनावे॥
निरषिलेत उपजत छविभारी॥ रीझरहतलषि छविगिरधारी
वेनी छुटि लटै बगराही॥ अलकै वेसर सों उरझाही॥
श्रमजलविंदुवदनदुतिकारी॥ मनहु सुधाकरगणचंद्रमरूरी
अतिवसहोत निरषिमनमोहन॥ फिरतसबनकेगोहनसोहन
नारिनारिप्रतिरूपप्रकासै॥ एकहिएकसबनकोभासै॥
अद्भुतकौतुकप्रगटदिषायो॥ कियो सबनके मनको भायो
निततअंगथकित भैनागरि॥ रूपप्रेमगुणपरमउजागरि॥
छं० भईनिततथकितनरुणीरूपगुणनउजागरी॥
उमगितवउरलायलीनीस्यामलषिनवनागरी
गिरतउरतेंहारटूटे निरषि प्रेमभजनावही॥
अतिप्रीतिश्रमजलपोंछिपटसोंपाछैपवनडुलावहीं
उरझिवेसरिसीरहीमुक्तकमलकरसुरझावही॥

द्वैसिविहवलगात भूषणसिथिलअरुमथारही
कहियषनमदुतापरस्पर निजपाणिअसमहिविवारहे
दो॰ ऐसोविधिब्रजसुन्दरिनदेतपरमसुखस्याम ॥
लखिपतिगतिस्वाधीनअतिभईगर्वितावाम
सो॰ परमप्रेमकीखानरूपशीलगुणआगरी ॥
क्यौंनकरैअभिमानजिनकेवसत्रिभुवनधनी
कहतिभईनिज२मनमाहीं ॥ हमसमऔरयुवतिजगनाहिं
अवगिरधरहमवसकरिपाये ॥ करतहमारेमनकेभाये ॥
अवहमतेंनाहिह्वैहैन्यारे ॥ रहिहैंसदासमीप हमारे ॥
जोइ२हमकहिहैंसोइकरिहैं ॥ सदाहमारेसंगविचरिहैं
कोउपियऐसभुजनकोदीने ॥ कहतिवचनयोंगर्वहिलीने
सुनोस्याममैंअतिश्रमपायो ॥ अवतौमोपैजातनगायो
एककहतिश्रमपायपिराहीं ॥ मोपैनृत्यहोतअवनाहीं
एककंठभुजमेलिसियानी ॥ रहीलटकवोलतिनाहिंवानी
ऐसेंभावगर्व के कीन्हे ॥ हरिअंतरजामी सव चीन्हे ॥
गर्भदेखिमोहनमुसकाने ॥ मैंअविगतिमोकोनहिंजाने
करतसदाभक्तनकीभाई ॥ एकगर्वस्यामहिनसुहाई
सोयुवतिनकेमनकीजानी ॥ दूरकरतहितयहजियठानी
प्रेमअभूषणकनकसममैलिनगर्वतेहोय ॥
विरहअगिनतायेविना निर्मलहोयनसोय
यहविचारजियआनलेवृषभानकुमारिसंग
ह्वैगयेअंतरध्यानब्रजवासीप्रभुसंगते ॥

अथअंतर्ध्यानलीला

प्रेमवसयवनहितसुखदाई ॥ अंतरकरिवनदूरेकन्हाई

गोपिनजबदेखे हरिनाही ॥ चकितभई तनसबमनमाही ॥
कहत एक तूंकुंवरि कन्हाई ॥ उठीसकलजहं तहं अकुलाई ॥
भई विकलकछुमरम नपायो ॥ पायमहाधनमनहु गंवायो ॥
खोजतिजहंतहं हाथपसारे ॥ आति आतुर चहुं ओरनिहारे ॥
तबसबहिनमिलकेयहजानी ॥ लेगई हरिकोकुंवरसयानी ॥
कछु हर्षकछुरिसउरधारी ॥ देतिभईहंसिरिसकैगारी ॥
इनसमानकपटीकोउनाही ॥ करतसदाद्विविधामनमाही ॥
चलहुखोजकुंजनमें ऐहै ॥ जानकहांहमतेवन पैहै ॥
ढूंढनचलीसकलवनमाहीं ॥ चरणचिन्हखोजतिसबजाहीं ॥
देखतिजहं तहं फिरतिअधीरा ॥ कोउवन घनकोउयमुनातीरा ॥
कोउकुंजनकोउपुंजन हेरै ॥ स्यामस्यामकरिकोऊ टेरै ॥

दो॰ एहिविधिसबखोजतफिरैं विरहातुरब्रजबाल
भई विकल पावतिनहीं कछुखोजतिनंदलाल
यदपि कियोहरिख्याल नेक दुरवनकुंजमें ॥
तदपि भई बेहाल यबतिस्यामदेखविना ॥

पलकांतरविधिकोदिनजिनको ॥ वनअंतरआतिबडदुखतिनको ॥
भई विरहव्याकुलविजवही ॥ हरिपदचिन्हलषतिभईतबही ॥
कुलिसकमल ध्वजअंकुशजामें ॥ जगमगातवनमनमाहंतामें ॥
निकटचिन्हप्यारीचरणनके ॥ अरुणकमलदलकेवरणनके ॥
वंदनकरनलगी रजसोई ॥ शिवविरंचिजांचत है सोई ॥
कछुइकधीरधस्योमनमाही ॥ खोजलेततादीमगमाहीं ॥
कुंवरिकान्हप्यारीसंगलीने ॥ फिरतसकलकुंजनरसभीने ॥
कबहूंकुसुमबनमालबनावे ॥ निरखिहरषिप्यारीहिपहिरावै ॥
कबहूंसुमनसवांरतवेणी ॥ परमसुभगशोभाकी श्रेणी ॥
कबहूंसरोजसुगंधसुघावे ॥ नागरिमनअभिलाषबढावे ॥

कंव कंठभुज दोउ जोरे ॥ घनदामिनि छूटनहि कैसे ॥
अतिप्यारी के रस वस मोहन ॥ भये हैं रत होत तेहि गोहन ॥
अतिहित लखि अनुकूल अति सिरिहिताउ तिय
तातें उपजो गर्व जिय में अति प्यारी पीय ॥
एक प्राण द्वै देह तहां गर्व कहं पाइये ॥
यामें नाहिं संदेह देह धरे को भाव यह ॥
तव प्यारी के मन यह आई ॥ मेरे ही वस कुंवर कन्हाई ॥
मेरे हित वांसुरी वजाई ॥ मेरे हित सव तिय न वुलाई ॥
मेरे हित रस रास वनायो ॥ सव हित तज मो सों मन लायो ॥
मो सम सुन्दरि चतुर उजागरि ॥ और नहीं युवती को आगरि ॥
ऐसे गुण तिम नाहिं मन माही ॥ उठि कि रहिं निगाहि पिय को ॥
वैठि जात कव हूं मग माही ॥ कहति के मेर पायें पिराईं ॥
चलन कहति तिस जहां कन्हाई ॥ मोपे पग न चल्यो नहिं जाई ॥
नृत्य करत में अति श्रम पायो ॥ तातें पग नहिं जात उठायो ॥
सुनहु मित्र मोहन सुखदाई ॥ कंध लेहु पिय मोहि चढ़ाई ॥
ऐसे तिय जव वचन वखाने ॥ गर्व जानि गिरिधर मुसकाने ॥
जहां गर्व तहं रहत न कवहीं ॥ अन्तर्ध्यान भये हरि तवहीं ॥
तुरतहि विकल भई अति प्यारी ॥ देखत देख रति गिरधारी ॥
चकित भई तव नारी गर्व किन हित जिय मान
मन हीं मन पछितात अति भूली तन सुधि वास
मैं कीनो अभिमान नारि वाढ़ि श्याम को सदा ॥
वे पिय परम सुजान जानत हैं मो जीव की ॥
भई विकल सम रत निज करली ॥ सो वह दसा जाइ नहिं वरनी ॥
विरह विथा वाढ़ी अति तन में ॥ परम अधिक लीरी वृतियन में ॥
नैन सलिल भीजत तन सारी ॥ कासि कासि पिय करति कारी ॥

हाहानाथअनाथनकीजे ॥ वेगिस्याममोहिदरसनदीजे
मैंतुमकृपापायगरवानी ॥ तातेसखीसंभारिनवानी ॥
सोअपराधक्षमाप्रभुकीजो ॥ यहदूषणमनमांहिनलीजो
वेगिकृपाकरिमिलोदयाला ॥ अहोकमलदलनैनरसाला
विरहविकलयोंवदतअकेली ॥ सेवतमुनिखगमृगद्रुमवेली
तहखोजातेआईसवनारी ॥ दूरहितेदेखीतिनप्यारी ॥
मुखशशिजोतिरूपकीरासी ॥ जनुघनतेविछुरीचपलासी
द्रुमसाखाअविलंवितठाढी ॥ रोदनकरतिविरहदुखबाढी
व्याकुलचकितचहूंदिसजोवे ॥ कमलचरणनखभूमिकुरोवे
जितिततेंधाईसवेव्रजसुन्दरिअकुलाइ ॥
व्याकुललखिअतिलाडिलीलीनीकंठलगाइ
कहांगयेगोपालवारवारवूझतसवे ॥ ॥
मुरछिपरीतनवालमुखतेवचननआवई ॥
देखिदसासवतियअकुलानी ॥ चैडारीअंकमगाहिपानी
कहिराधाक्योंवोलतिनाहीं ॥ काहेमुरछपरीमहिमांहीं
यावनमेंकसेतूआई ॥ कहांगयेतजितोहिकन्हाई ॥
निरखिवदनसवहिन्दुखकीनो ॥ मनहूंअमीनिधिअम्रतवीनो
कोउलागसवारनअलके ॥ कोउअंचरतेपोंछतिपलके
नैननीरकछुसुधिनहिंदेही ॥ अतिव्याकुलविनस्यामसनेही
वूझतिधुवतिकहांवनवारी ॥ चलियतहांताहिलेप्यारी
सुनतनामपियकोअनुरागी ॥ विरहमांहनिद्रातेजागी
जान्योआयकुंवरकन्हाई ॥ नैनउघारिमिलनकोधाई
जोदेखेतारसवव्रजवामा ॥ अतिहीविलपिउठीतवस्यामा
कहतिमोहित्यागीनंदनंदन ॥ तुमहनहीमिलेजगवंदन
मैंअपनेजियगर्वभुलानी ॥ नहिंउनकीमहिमाकछुजानी

बोलीप्रियसौंमंदमतिमैअभिमानवसाय
लीजैकंधचढ़ायसुहिमोपैचल्योनजाय॥
वेप्रभुपरमसुजानविहसिकह्योमोहिचढ़नकौ
ह्वैगयअंतर्ध्यानअपनीचूककहाकहौं॥
गयेस्यामधौंकितवनमाही॥मेरोहायपरेकछुनाहीं
देखिदसाव्याकुलसबनारी॥कहतिनिठुरहरिअति
मुरछिपरीधरणीअकुलाई॥स्यामविरहदुखसह्योनजा
त्रियापरुषसोंमानजुकरहीं॥पुरुषनहींऐसोउरधरहीं
देखहुस्यामतजीहमकैसे॥नाहिवूझियेउनकोंऐसे
कहतिराधिकासोंब्रजनारी॥मिलिहैस्यामधीरधरुप्यारी
चलींआपखोजनसबवनमे॥विरथिकलककुछभिमतनमें
टेरतजहँतहँघोषकुमारी॥अहोरासपतिकुंजविहारी॥
कहादोषप्रियहमतेंभाजिकै॥जातप्राणतुमविनतन
छमाकरोप्रभुचूकहमारी॥मिलहुकृपाकरिवेगमुरारी
तुमविनहमकोंसुनहुकन्हाई॥सिगरेकल्पसमानविहा
कतहिफिरतवनघनवनघोरे॥गाड़हैकुशकंटकअनिया
जरतसकलतुमदरसविनविरहअग्नितनवाम
मंदमधुरमुसकनसुधावरसिवुझावोस्याम॥
सकलविस्वसुखधामगावततुमकोंजगतसव
तिन्हेंहोतकतवामजोदासीविनमोलकी॥
सदाहमारीरक्ष्याकीनी॥गरलअनलजलतेंरखलीनी
अवकतनिठुरहोतहोप्यारे॥विरहजरावतगातहमारे
तुमपदवसतहमारेहियमें॥तेकरकसालतहैंजियमें
अहोनाथयहकैहजियधारो॥सुखदेवोदुखदेतमुरारी
ऐसैकहतसकलवनडालों॥भलवलवचनवदनतेंबोलैं

ऐसें कहति सकल वन डोलैं ॥ अलबल वचन वदनतें बोलैं
आति अकुलाइ गई मन माहीं ॥ जड़ चेतन कछु समुझत नाहीं
बूझति वन विटपन सों धाई ॥ तुम कहुं देखे कुंवर कन्हाई
अहो कदंब अहो अंबन माल ॥ हमहिं बतावो कित नंदलाल
अहो जुही मालती निवारी ॥ लखे कहूं इत जात विहारी
हे चंपक हे श्रीफल कदली ॥ हे दाड़िम हे जामुन वदली
तुम देखे मनमोहन लाला ॥ स्याम कमल दल नैन विशाला
हे पलास हम दास तुम्हारी ॥ अहो कहो सुखरास विहारी

हे अशोक हरि शोक तुम सत्य करो निज नाम
लेत नहीं यश हे पनस क्यों न कहत कित स्याम
हे मंदार उदार हे पीपर हरि पीर मम ॥
कहि कित नंदकुमार सुंदर घन तन सांवरो

हे चंदन तन जरत जुड़ावो ॥ नंदनंदन पिय हमहिं बतावो
हे अवनी चितचोर हमारे ॥ कित राखे नवनीत पियारे ॥
तुमतें दूर कहूं हरि नाहीं ॥ क्यों न मिलाय देत हम पाहीं
कहि धौं कुंद मकुंद कहां है ॥ हमको देहु वताय जहां है
हे वर नटनागर हि वतावो ॥ कहुं निकुंज नंदसुवन दिखावो
कहु धौं मृगी मया करि हमकों ॥ पूछति हैं सुहाग करि तुमकों
हे पिय तडहडहे नैन तुम्हारे ॥ तुम कहुं मोहनलाल निहारे
हे दुखदवन पवन सुखकारी ॥ कहि स्युत गत सरवन तुम्हारी
जहां होय बलवीर विहारी ॥ कहत जाय किन विथा हमारी
हे तुलसी तुम तो सब जानो ॥ क्यों नहिं हरि सों प्रगट बखानो
तुम तौ सदा स्याम की प्यारी ॥ कहत नहीं यह दसा हमारी
बोलत नाहिं कोउ कहत तरुनकों ॥ लगे खेद दइ नेह के मनको
इहिविधि वन वन ढूंढ सव ब्रज तिय विरह उदास

इतउततेंफिरआवहीं कुंवरि राधिका पास॥

मनहुंमीरविनमीनज्यौंतियाकुलनरकचीकुण

स्यामविरहव्यतिदीनकनकलेतसूंनीनागरी

कुंडलमुकटकेसघुंघरारे ॥ गोरज रंजित दृग अनियारे
पीतबसनबनमालविसाला ॥ बेनबजावतमधुररसाला
सखनमध्य गोधन के पाछें ॥ चंदन चित्र सुभग तन आछें
सांझ समय आवतजब देखें ॥ तब हमजन्मसुफलकरिलेखें
ऐसें कथतसकलव्रजनारी ॥ हरिगुणरूपकथा बिस्तारी
अमृत कहतस्यामगुणरूपा ॥ उपजीउरअतिप्रीतिअनूपा

भूलिगई सुधिदेह कीभयौविरहदुखगौन
केवलतनमें यह जोगई तेहिजानतिहमकौन
भृंगीकीटसमान मगन ध्यान रस नागरी ॥
बिसरी सकलअयान भई आपही कृष्णतन ॥

लागीकरनचरितसबहरिके ॥ पूरणप्रेम भई गिरिधर के
ये लीला उनहीकोसोहै ॥ नेक नहींजानति हम को है
एकभईदधिचोरकन्हाई ॥ एक पकरिगहिभुज लेआई
एकजसोमतिकोवपुधरिके ॥ बांधतिहैउखलसोहरिके
इकभईगायगोपगोपाला ॥ बोलतवेसेइबचनरसाला
कारीधौरीधूमरिकहिके ॥ हटकतफिरतलकुटकरगहिके
कहतिएककंवरगिरिधारी ॥ गायगोपसबरहौसुखारी
कहतिएकमंदौसबलोचन ॥ मैं करिहौंदावानलमोचन
एक अमलअर्जुनतरुभंजे ॥ एकबकासुरवदनविभंजे
एकवस्त्रकोनागबनाई ॥ तापरनिरतकरतहरषाई
एकदहीकौदानचुकावै ॥ एकात्रिभंगव्हैवेनबजावै ॥
मगनभईसबपरबसमाहीं ॥ तनअभिमानरह्योकछुनाहीं

अन्तरनेकरह्योनहींभईस्यामव्रजबाम
तबअंतरकरिनाहिसकेभयेनिरंतरस्याम
प्रगटभयेततकालतिनहींमधिनंदलाडले

एकदुहुन कौं मानत नाहीं ॥ ताकौं कहा कहत जग माहीं
उत्तम प्रीति कहावति जोई ॥ कहहु स्याम हम सौं तुम सोई
हम अबला जानत कछु नाहीं ॥ तातें पूछति हैं तुम पाहीं
सुनि गोपिन के वचन रसाल ॥ भये प्रेमबस परम कृपाल ॥

यदपि जगत गुरु अजित प्रभु जानराय व्रजचंद
प्रेम विवस भे हारि तदपि अपने सुखनंद नंद ॥
कहत भये तब कान सुनहु प्राणवल्लभ प्रिय ॥
नहिं तुम सम कोउ आन निपुन प्रेम के पंथ में ॥

तदपि तुम पूछति हो जैसे ॥ प्रगट करौं लक्षण सब तैसे ॥
एक जो प्रीति परसपर होई ॥ स्वारथ हेत परत सब कोई
जैसे पशु पशु को जानें ॥ आपुस में अति हित करि मानें ॥
सो वह प्रीति निकृष्ट कहावै ॥ जासों सब संसार बंधावै ॥
दूजी प्रीति एक दिस जोई ॥ करति धर्म अधिकारी सोई ॥
जैसें मात पिता चित धारिकै ॥ रखत हैं सुत कौ हित करि कैं ॥
सो वह मध्यम प्रीति कहावत ॥ उत्तम गति ना तें जन पावत
जो वह दोउ उभन कों नाहिं जाने ॥ गुण दूषण कछु उर नहिं माने
तिन्हें सुनो मैं कहत बखानी ॥ कै कृतघ्न कै पूर्ण विज्ञानी
उत्तम प्रीति जानिये सोई ॥ अनायास उपजत उर जोई ॥
दुहु दिस हेत करि प्रीति बढावे ॥ नहिं निमित्त तामें कछु आवे
अंतर नेकु परे नहिं कोई ॥ प्रीति पुनीत जानिये सोई ॥

छं० नहीं अंतर नेकु ना सोधि प्रीति उत्तम सो कही ॥
करिमो सों तुम सबन सोइ मैं रिणी तुमरो सही ॥
करहु जो उपकार तुम प्रति कोटि कोटि जनम भरी
कबहु होउ न उरिन तुम ते हे प्रिया ब्रज सुन्दरी ॥
करै ऐसी कोन जैसी तुम न जो करनी करी ॥

लोकवेदमर्यादममहितनोरितृणरंगपरिहरी
करइमनसेंदूरसबयहदोषमेंतुमतेकियो ॥
कियोसतरपरमसुखमोंपिरहदुखतुमकोंदियो
दो॰ ऐसप्रेमाधीनह्वेकहिकहिवचनरसाल॥
दूरकरीयुवतीनकेमनतेगासगुपाल॥
सो॰ बोल्योपरमानंदव्रजवासीमभवचनसुनि
परमसुदिततबवंदप्यारीप्रियनंदनंदको॥

अथ महामंगलरासलीला

सुनिप्रियकसुखकीरसवानी॥गोपीजनसबमनहरषानी
हृसनहरिलालहुमनायो॥मनतेसबसंदेहमिटायो॥
दो॰ वससबनकीप्रीतिकहाई॥वहरिरासरसरुचिउपजाई
वेंधाइसुखसबकोउपजायो॥वहभावसबकेमनभायो
यहजान्योसबहिनतबहीते॥करनरासरसप्रियसबहीते

अंतध्यानचरितसवभूली॥ वैसेइ आनंदके रस फूली
वेहीरसमंडत विधिजोरी॥ विच २ स्यामवीचुविचगोरी
वैसेइ मधिनायकहरिराधा॥ भइ परस्पर प्रीति अगाधा
वैसेइ मुरलीस्यामवजाई॥ वैसेइ थकित भयो उडुराई
वैसेइ सुरविमाननभसाहे॥ वैसेइ सुरमुनिगंधर्व मोहे॥
वैसोहि खगम्रग सव वन वेली॥ वैसोहि यमुनापुलिनसुहेली
वैसिय पवनत्रिविधिसुखदाई॥ वहै रासरस रूप निकाई॥
छं० करै वैसोइ रासरसपुनियुवतिअतिछविछाजही
गौरअंगकिशोरवैससुदेसमुख शशि राजही॥
जोरिपंकजपाणिवाहुमरनालमंडलसाजही॥
मध्यसवकेस्यामस्यामारूपरास विराजही॥
मुकुटकुंडलवसनभूषणवराअंगनराजही
अंग अंग अनंगरति लखि कोटि २ न लाजही
चरणनूपरकिंकिणीकटिवेलनूपुरवाजही॥
वीनतालमृदंगचंगउपंगसुरसुख साजही
दो०॥ अरसपरसनिरखतछविभरप्रेम आनंद॥
नवलनागरीब्रजवधू नवनागर नंदनंद
सो०॥ रहेनिरखिसुरभूल सोहितसुंदरीभगनमुख
पुनि २ वरखत फूल धन्य २ ब्रजकोहिसुखन
सोहतिहरिसुखमुरलीकैसे॥ कोरिदिगविजेनृपतिवरजैसे
वेठीपाणिसिंहासनगाजे॥ अधर छत्रसिर ऊपर राजे॥
चमरचहूंदिसचिकुरसुहाये॥ वेतपाणिकुंडलछविछाये
वोलवोलि २ वरजतसवकाहू॥ कहतनिकटकोउमतिजाहू
दराहित सवकरतजुहारे॥ सन्मुखआदरसहितनिहारें
मधुकरपिकवंदीगुणगावे॥ मागधमदनप्रसंसिसुनावे

नवमंत्रकीनोव्याहकोसबसखिनमंगलगाइयौ
ललितकुंजबितानसुभगलतानमंडपदुतिघनी
बहुरंगवंदनमालचहुँदिसचारुसुमननछविबनी
अतिविचित्रपवित्रयमुनापुलिनसुभवेदीरची॥
बरननसकैछविकौनविधितिहुँलोकशोभाकोमची

दो० नंदनंदनलाडिलौश्रीवृषभानुकुमारि
दूलहदुलहनराजहीशोभाअमितअपार
भरीपरमउत्साहललितादिकब्रजसुन्दरी
प्रीतिरीतिकीचाहलगीकरनबिवाहबिधि

मोरमुकटरचिमोरबनायो॥सोसिरधरगिरवरधरआयो
तनघनस्यामपीतपटसोहै॥घनदामिनिताकेछिबिकोहै
बनमालागरमाहिंबिराजे॥निरखतइंद्रधनुषद्युतिलाजै
ललितअंगतनभूषणलाला॥कुंडलझलकतनैनविशाला
सकलकलागुणरूपनिधाना॥त्रिभुवनसुन्दरपरमसुजान
जाकेमनमथसैनुबरानी॥फूलेविटपसुमनवहुभाँती
कीरकोलाहलपिकअकुलाले॥मंजुमोरनिततसंगइाले
नभसुरपतिदुंदुभीबजावै॥नाचतकिन्नरगंधर्वगावै॥
बरषतसुरगणसुमनसुहाये॥ब्रजतियकरतिसकलमनभाये
कुँवरिलाडलीसुभगसभारी॥गोरेअंगचुनरीसारी॥
नखसिखमणिभूषणछबिराजे॥मुखशोभालखिकोटिससिलाजै
प्रीतिरीतिजिहिंहितकोमानो॥मोसुभघरीविधाताबानो
छं० सुभघरीसोबानीविधाताहेतजिहिंहढ्ढतलियो
सरदनिसिपूनोविमलससिनिरषिजनमफलतहियो
अधरमधुमधुपर्ककहिकेपानिग्रहणसुधिकरी
पढतनभविधिदयाचावरीसुरनजयध्वनिउच्चरी

निजदासकरिसवजानियेवृषभानपुरकेलोगजू
अरुसिद्धनवनिद्धसंपतितुमसकलसुखवानिजू
ऐसोविनयकरिनंदकेचरणनलगेवृषभानजू॥
तवनंदअतिआनंदभरिबोलेसहितअनुरागजू
सुनहुश्रीवृषभानजूतुमधन्यअतिवड़भागजू
तुमसेसमृद्धनसोंसुनहुसम्बंधभागिनपाइये
परमनिर्मलयशतुम्हारोलोकलोकनगाइये॥
अतिनेहकान्हरसोंतुम्हारोप्रीतियहपलरनई
दईकन्याकरिकृपागुणरूपसुखसोभामई॥
पूरेमनोरथसकलअवहमवड़ेसवभांतिनभये
वृषभाननंदअनंदप्रमुदितपरस्परचरणननये
मन हर्षितनागरीनागरनवलकिशोर
लखिरसरीतिसखीनकीप्रेमप्रमोदनथोर
विलसतिअतिआनंदव्रजविलासव्रजनागरी
प्रीतिविवसव्रजचंदकोकहिसकेसुहागसुष
रतमनोरथसवमनभाये॥त्रिभुवनपतिदूलहकरिपा
गहरीतिसवकरिव्रजनारी॥गावतिजसुमतिकोरसगारी
वकेकरणछोरनविधिकीनी॥रचिपचिग्वालिनचतुरनिदीनी
कहतस्यामसोछोरोककन॥परमानन्दमुदितगोपीजन
ड़ेचतुरतोखोलहुगिरधर॥यहनहोयगोवरिवोगिरवर
छोरोकेदाउकरजोरो॥दुलहिनकेपाइपायनिहारो
इकहावतहोव्रजनाथा॥काहेकेपनलगेदोउहाथा
गहुवेगिकिसुनहुकन्हाई॥पकरहुजसुमतिमायवुलाई
वरपरकेकरणछोरे॥प्रेमउमंगिउरहरषितथोरे॥
चिहारेककरणनहिंछूटत॥निरखिवृषभजातियसुषलूटत

केमलैकमलपेसोभनपानिलाङ्लीलाम॥
लौकिकविकृतसम्बेलमतरेम्मकटीलीनाम॥
दुलहनंदकुमारदुलहिनिश्रीकीरतिकुवरि॥
सैननमगणाग्मधारमविमलयेहजारीसदा॥
यहारसरासमचौतहारिकीनो॥ब्रजयुवतिनवोछितभये
ब्रजनित्यसुखहिनकुंजविहारी॥करीभासनिसषटउमपार
सादनहीयुवतिनमनराषी॥सोभागवतमसौसुखभए
वेदउपनिषदसास्त्रतावे॥ब्रह्माशंभुसहस्रमुखगावे
नारदसारदऋषिषयअनंता॥कहतसुनतपावतनअंता॥
सोरहसहसगोपसुकुमारी॥तिनकेसंगलालगिरधारी
कियोरासरसरहसगाथा॥पूरणकरीसकलमनसाथा
हावभावरसहासविलासा॥नैनसैनमुखवचनप्रकासा
भुजभरिमिलनअधररसचाषन॥नृत्यगानरसरूपविसरायन
सुणरवतिअधिकरसरीती॥इहिविधिरासकरतसबबीति
भयोसमयब्रह्मासुभकाला॥सेसरसकृभद्दममसबबाल
तवश्रीयमुनागमनंदलाला॥सोहतसंगसकलब्रजबाल
सोहतसकलब्रजबालसंगनंदलालतवयमुनामये
सरदनिसारसरासकरिपूरणमनोरथसवभये॥
जैसेमहामदमत्तगजवरयूथकरणीसंगलिये
फिरतवेनसरसरितक्रीडातिनदरिअतिनिर्भयाहिये
त्रिभनंदसुतजगवंदआनंदकंदरसनिधिस्यामये
मोटेवंदभयोदब्रजनित्यप्रेमवसआनन्द भये॥
रमतवदम्नयमनसकेलिमनिमरतमानदूं॥

दासब्रजवासीप्रभुगुणनागपरसुरगानई॥
दो० धनिवृंदावनधन्यसुखधन्यस्यामधनिरास॥
धनि२मोहनगोपिकाजितनव करतविलास
नहिंसुरपुरसमतूलवृंदावनसुखएकपल
कहिंकोहिवरषहिंफूलसुरगणमनआनंदभरे
जमुनाजलक्रीडतनंदलाला॥सोरहसहससंगब्रजबाला॥
माधराजतदोउवहांजोरी॥दंपतिगोरसांवरीकिशोरी॥
कोरकटिलौंजलमेंसुखसाजें॥काउउरग्रीवालौंछबिछाजें
ताकीउपमाकविकोकहई॥अतिअपारछबिपारनलहई
छिरकतपाणिपरस्परमोहे॥नंदनंदनपियकेमनमोहे
सलिलसिथलसोहननंदनंदन॥सेंदुरभालकुमकुमाचंदन
पचरंगभयोयमुनजलतातें॥छविमेंलहरिउठतिहैजातें
रूपछकीदासीतियगणतामें॥करतिविहारसंगयदुनस्यामें
एकरूपरंगभरिभरिलेहीं॥हासविलासकरतछविदेहीं
एकनलेअथाहजलडारें॥मुखव्याकुलताकूपीनिहारें
इकभाजतिइकपाछेधावें॥एकस्यामढिगएकरिलआवें
कंठलगायलतीपियताई॥सोसुखकविसोंकह्योनजाई
करतकेलियमुनासलिलव्रजललासंगस्याम
निसिभ्रमभिटिआलसगयोभयेसुखीसुखधाम
अलखलखीनहिंजायअविगतिकीगतिकोकहै
योगीइकतनपाइ सोभागीव्रजतियनको॥
जलविहारविहरतअपराई॥रासरंगमनतेनहिंजाई
युवतीमंडलकरिकरजोरे॥स्यामास्यामभव्यकरिलोरे
वहीभावमनसेंउपजावें॥निरखि२मोहनसुखपावें
विहरतिनारिहसतनंदनंदन॥अंककभरी२नैनआनंद

आजु पटसम्पूट मन माही

नवइकूलनकौं विहसिकै आयसु दीनौ स्याम
नानाभूषण वसनवर तिन वरषे अभिराम
किये रुचि अनुहार ले ले ब्रज की सुन्दरी ॥
कीनौ नवल सिंगार उर आनंद न जाइ कहि

करि सिंगार तन नवल किशोरी ॥ हरि सन्मुख ठाढ़ी सब
निरषि स्याम छवि मन ललचाहीं ॥ विद्रम करत घर कौं सु
हंसि बोले मृदु मदन गुपाला ॥ जोइ सदन अब सब ब्रजबा
अति आदर दै दै सुखदाई ॥ पाराण पर सब सदन पठाई
निसि सुख टरत न कामह मन तें ॥ चली सदन सकल दामवन तें
अति आनंद रह्यो उर भरि कैं ॥ भांवरि दै आई संग हरि के
मन के सुफल मनोरथ कीने ॥ नंदसुवन हित पति कर लीने
गई सदन सब हर्ष बढ़ाये ॥ घर घर लोगन सोवत पाये ॥
जग स्वामी हरि यह मति गनी ॥ ब्रजयुवतिन सब छिन घर मनी
प्रातकाल सब ब्रजजन जागे ॥ निज निज काज में सब लागे
नंद धाम गये नंद के लाला ॥ काहू नहिं जान्यो यह ख्या
यह रहस्य लीला वनवारी ॥ संत जनन मन आनंदकारी
८० यह रहस्य लीला स्यामकी सब संतन उर मन भावनी

ज्ञान ध्यान पुराण श्रुति मति सार परम सुहावनी
यह मंत्र यंत्र अनंत व्रत फल ध्यान दंपति को रहै
भाव करि नित भाव मन बिनु भाव यह सुख ही लहै
धन्य श्री सुकदेव मुनि भागौत यह रस गाइये॥
निगम नेति अगाध सो गुरु कृपा बिन नहिं पाइये॥
सुरुचि कहि जे सुने सीखें प्रीति करि जे गावहीं॥
ऋद्धि सिद्धि सब कहा गनाऊं भक्ति अनुपम पावहीं
उर बसै रस नेम दृढ पद प्रेम राधा स्याम कौ॥
अहहि अचल निवास वृंदाविपन बन निज धाम कौ
यहै आसा राखि कै उर सदा ब्रजवासी कही॥ ॥
कृपा कीजै स्याम स्यामा शरण पद पंकज गही

दो॰ चरित ललित गोपाल के रास बिलास अनेक
कापै बरने जात सब इतनो कहा बिबेक॥
सो॰ इकसी तरै अघाय ज्यौं पपील का सिंधु तें॥
कह्यौ यथा मति गाय निम ब्रजवासी दास ह॥

अथ मान चरित्र लीला

नित्य स्याम स्यामा सुखकारी॥ करत नित्य नव चरित बिहारी
निर्गुण निरविकार अविनासी॥ भक्त मनोरथ सदा बिलासी
नित वृन्दावन धाम सुहायो॥ नित्य रास रस बेदन गायो
भक्तन हेत बिबिध तन धारै॥ भक्तन हित लीला बिस्तारै॥
सदा भक्तिबस कृस्न कृपाला॥ दयासिंधु प्रभु दीन दयाला
सरद रैन रस रास उपायो॥ युवतिन प्रति निज रूप बनायो
सुफल मनोरथ सब के कीन्हे॥ पति हित का सब कौ सुख दीन्हे
[illegible]

गोपिन गर्व रास में कीनौ ॥ सो मैं अंतर करि हरि लीनौ ॥
रही साध इनके मन माही ॥ इनकौ साम मनायौ नाहीं ॥
जे ब्रज भक्त परम हित मेरी ॥ करौं साध पूरण इन केरी ॥
अब इक मान चरित उपजाऊं ॥ पाय न परि २ सब न मनाऊं ॥
करि विभेद रस रीति मे देऊ मान उपजाइ ॥
इनके सुख मंडित वचन कहवाऊं सुखदाय ॥
सकल गुणन के धाम परम विचक्षण रसिक मणि ॥
नव रस सागर स्याम एक प्रेम रस वस सदा ॥
श्री राधा मन मोहन प्यारी ॥ नव नागरि नव रूप उजारी ॥
रास नित्य रिझये गोपाला ॥ ता रस मगन फिरत नंदलाला ॥
करत भवन सिंगार पियारी ॥ सो चकचौंधी मे गिरि धारी ॥
देखि प्रिया पिय कौं हंसि दीनौ ॥ हरषि स्याम अंक भरि लीनौ ॥
रहे थकित छवि संग निहारी ॥ जो तन कमल अस्य स्वकि री ॥
इहि अंतर पिय के उर माहीं ॥ देखी निय निज तन पर छाहीं ॥
रूकि उठी प्यारि भई न्यारी ॥ अति सनेह भ्रम सुरति बिसारी ॥
और नारि पिय के उर जानी ॥ आपुन विषे प्रीति घट मानी ॥
राखत सदा हिय मे याही ॥ न्याय मोहि दिखावत ताही ॥
कियो मान यह भ्रम उपजाई ॥ कहत वचन पिय सो अनखाई ॥
अब जान्यौ पिय बात तुम्हारी ॥ ऊपर दीखो प्रीति हमारी ॥
हम सो मुह की बात मिलावत ॥ यह प्यारी उर माहिं बसावत ॥
धनि न्यारी को भाग्य है बसत तुम्हारे हीय ॥
याही सौं हित राखि कै अब मन मोहन पीय ॥
भली करी सुख मानि मोहि दिखाई आनि कै ॥
यह प्यारी सुखदानि उरते जिन न्यारी करौ ॥
ऐसे कहि मुसकाय किशोरी ॥ कछु रिसक रिजि यभौंह मोरी ॥

चकितस्यामलखिसुनसुखवानी॥कहतकहानागरिसयानी
सांचकहतकैधौंकरिहांसी॥कतरिसकरितियहोतउदासी
समुझीनहींकहाजियआई॥ठठकिउठीकेअतिभ्रमवाई
हँसिभुजगहनलगेमनमोहन॥वैठतक्यौंनहिंममप्रियगोहन
माहिहुयोजिनदूररहोजू॥वसतहियेकिनताहिगहोजू
तुमचतुरऔरसवैअयानी॥हमदासीअरुयेपटरानी॥
उरमैमनभावतीवसाई॥हमसौंकरनकौंहमैंवनाई॥
लषि२प्रियावदनसुखकारी॥हसतमनहिंमनकुंजविहारी
कहतकहाभामिनिभईभोरी॥तोविनउरकोवसतकिशोरी
तूममश्रवणनयनसुखदानी॥जीवनप्राणअधारसयानी
वृथाक्रोधकततजियमेंआनै॥मेरौकह्योनहीक्यौमानै॥

सुनउस्यामहिरदेवसत सोछिपयेनछिपाय
ज्योंशीशीकेमाहिजलपरगटपरतलखाय
वातैंकहतवनायवहदेखतहमसौंहसत
जैहैकहाभनखायउरतेंतवपछिताय है

जोवहकहैकरोतुमसोऊ॥वहनागरितुमनागरदोऊ॥
मतहिविकजावहमोहिकन्हाई॥भलीकरीतुमसोतदिखाई
जाउचलेअवमैंसुखपायो॥ऐसेकहि२मनहिंवढायो
रिसकरिमौनरहीमनिप्यारी॥देतमनहिमनवाकोगारी
सोचतस्यामदेखिमनमाहीं॥वोलसकतनाहिंप्रियाहिडराहीं
कहतवृथाजियमाननकीजै॥नहिंअपराधजानिजियलीजै
कोरिसकरतप्रियामनमाहीं॥मेरेउरतेरीपरछाहीं ॥
यहसुनिकुंवरिराधिकारानी॥वोलीरिसकरिपियसौंवानी
कहावनावतवातैंहमसौं॥जाउचलेवोलौनहिंतुमसौं
यहकहिओटगईहैप्यारी॥भयेविरहवसतवगिरधारी

गोपिनगर्वरासमैंकीनो। सोमैंअंतरकरिहरिलीनो॥

जेब्रजभक्तपरमहितमेरी। करौंसाधपूरणइनकेरी॥

करिविभेदरसरीतिमैंदेहुंमानउपजाइ॥
इनकेसुखमंडितवचनकहवाऊंसुखदाइ॥
सकलगुणनकेधामपरमविचक्षणरसिकमणि
नवरससागरस्यामएकप्रेमरसवससदा॥
श्रीराधामनमोहनप्यारी। नवनागरिनवरूपउजारी॥
रासोनित्यरच्योगोपाला। तारसमगनफिरतनंदलाला॥
करतभवनसिंगारपियारी। सोचकततहांगयेगिरिधारी॥
देखिप्रियापियकोहंसिदीनो। हरषिस्यामअंकमरिलीनो॥
रहेथकितछविअंगनिहारी। जोतकमलसुखस्यामबिहारी॥
इहिअंतरपियकेउरमाहीं। देखीतियनिजतनपरछाहीं॥
रूठिकेउठीप्यारिभइन्यारी। अतिसनेहभ्रमसुरतिबिसारी॥
औरनारिपियकेउरजानी। आपुनविषेप्रीतिघटमानी॥
राखतसदाहियमेंयाही। न्यायमोहिदिखावतनाहीं॥
कियोमानयहभ्रमउपजाई। कहतवचनपियसोंअनखाई॥
अबजानीपियबाततुम्हारी। रूपरहोकीप्रीतिहमारी॥
हमसोंमुंहकीबातमिलावत। यहप्यारीउरमाहिंबसावत॥
धनिधनियाकेभाग्यहैंबसततुम्हारेहीय॥
याहीसौंहितराखियैअबमनमोहनपीय॥
भलीकरीसुखमानिमोहिदिखाईआनिकै
यहप्यारीहैसदानिउरतेंजिनन्यारीकरौ॥
ऐसेकहिहठसतकार्यकिशोरी। कछुरिसकरितियभौंहमरोरी॥

आजदसाकसीलखतेंवदकहांगवाइ॥
कौतनरहेभुलायभांतिव्याकुलदेसतसुम्हि
रह्योवदनकमलायऐसोसोचकह्यपरो॥
बोलेस्यामसखीहितजानी॥विरहविकलतामानम
कियामातवृषभानकिशोरी॥मैंकछुनहिंअपराधकियो
लषिमेरउरनिजपरछाई॥रूसरहीकारिकोपघथाही॥
मैंकहिकैवहभांतिमनाई॥नहिंप्रतीतिराधामनभाई॥
विनुसमुझेइतनोहठकीनो॥तबतेमोहिमदनदुखदीनो
ऐसेकहिसोचतबलिवीरा॥लेतनयनभरिसाँसअधीरा
परमचतुरदूतिकासयानी॥विरहविकलतापियजियजानी
कह्योधीरधरियेबनवारी॥चलियेबनकोकुंजविहारी॥
मैं प्यारी लेतुमहिंमिलाऊं॥आजकहांतोतुमसोंपाऊं
गईसदननेलेवनधामहिं॥तहांविठारिधीरधरिस्यामहिं
मैंलेआवतिराधाप्यारी॥कितिकबातयहसुनहुविहारी
मेरेआगेकी वह वारी॥कहासानकरीहैसुकुमारी॥
ऐसेकहिचतुरअलीआतुरलखिघनस्याम
श्रीवृषभानललीमहाचपलचलीव्रजधाम
मनरचतसयान नईमनाऊंबातइक॥
अबहिंछुडाऊंमान मोसोंधौंकहिहैकहा
हरिसौरूसिमानिकरिवैसी॥अबहींकहाभईवहवैसी
करतविचारयहैमनमाहीं॥गईसखीराधा के पाहीं॥
कुंवरिकिशोरीपरमसयानी॥सुखदेखताहिदूतिकाजानी

इतो कहा अब तोहिं प्यारी री ॥ जबते बलि खिनि जश्चहडरी री ॥
तादिन दर्सन लषि भ्रम कीनो ॥ सो इमन्दि मोहिं दीनो ॥
स्यान दोषि पिय निकुज माही ॥ कियो इतो हठ कुंवर याही ॥
यह सुनि समुझि मन हिं पछताई ॥ महाचतिकं अंग विह मिलनचाई ॥
रिस करि तुरत मान विसरायो ॥ सुनि कर धाम स्याम सुख पायो ॥
हसि के कह्यो सखी सो जारी ॥ वो हरि सो कहि श्रावत प्यारी ॥
मैं अंग भूषण वसन संवारी ॥ श्रावत बन माहिं जहां बनवारी ॥

यह सुनि हर्षी दूतिका गई जहां घनस्याम
श्रति व्याकुल तनसुधि नहीं विह्वल कीनो काम ॥
बैठत उठत अधीर क्यों हू सचु पावत नहीं ॥
बढ़त विरह की पीर श्री राधा राधा रटत ॥

राधा विरह विकल गिरधारी ॥ कहं माल कहं मुरली डारी ॥
कहं मुकुट कहं पीत पिछौरी ॥ नहिं कछु सुरति भई मति बौरी ॥
कबहूं लोटत कुंजन माहीं ॥ कबहूं बैठ द्रुमन की छाहीं ॥
कबहूं मूंदि दृग ध्यान लगावे ॥ कबहूं प्यारी के गुण गावे ॥
गहे टेक कबहूं द्रुम डारी ॥ तकत प्रिया पथ पलक न मारी ॥
देखि दसा दूतिका सियानी ॥ कही स्याम सों आतुर बानी ॥
काहे को करे रात विहारी ॥ मैं ल्याई वृषभान दुलारी ॥
विरह विषाद दूर करि डारो ॥ नेकु धीर अपने मन धारो ॥
सुनि प्यारी को नाम कन्हाई ॥ मिले दूतिका सों उठ धाई ॥
कह्यो प्रिया कहिं श्रति अकुलाये ॥ नयन सरोज नीर भरि आये ॥
तु बहु सिक सो दूतिका प्यारी ॥ श्रावत प्रिया अबहिं बनवारी ॥
मैं जो मान किया तुम मैं कीनो ॥ विधि ना आज राखि सो लीनो ॥

श्रावत है वृषभान की भुज भरि अंक लेह
अब अपने मन हर्षि के दूरि करो संदेह ॥

मुखशशिकनकलतासमगोरी ॥ बालहरनछविनैनकिशोरी
भूषणवसनअनूपसुहाई ॥ अंगअंगशोभितछविछाई
अंगसुगंधमनोहरताई ॥ भ्रमरभीरचहुंओरसुहाई
हंसि२कहतसखीसौंबातें ॥ झरतसुमनजनोंरूपलतातें
ऐसेकरतप्रकारपियारी ॥ गईजहांपियकुंजविहारी
परसप्रेमदोउमिले श्रीराधानंदनंद ॥ ११ ॥
गुणआगारनागरयुगलछविसागरसुखकंद
जोप्रभुपरमअपार वेदभेदजानतनहीं ॥
सोब्रजकरतविहार वरनिपारकोपावहीं
कुंजनमंजुफूलनछविछाई ॥ भंवरगुंजसुखपुंजसुहाई
फूलनसेजरुचिरारचिकीनी ॥ चित्रविचित्ररंगरसभीनी
फूलेखगअगणकरतकिलोलैं ॥ जहंतहंमधुरमनोहरबोलैं
फूलेवृंदावनतरुडारी ॥ तनमनफूलेपियअरुप्यारी
सहचरिसोहतमनोहरजोरी ॥ राजतयुगलकिशोरकिशोरी
हावभावरसकोउपजावें ॥ हासविलासकरतसुखपावें
सखीकहुतनक्रिअतनीके ॥ सकुचिहसीप्यारीसंगपीके
नैनकोरपियकोहियलाग्यो ॥ तबहिश्यामपीताम्बरदाग्यो
यहछबिनिरखितपीवलजाई ॥ अंचलरहीजोरीसुखदाई
धनिराधाधनिकुंवरकन्हाई ॥ धन्यमानरसकालसुहाई
धन्यकुंजवनधनिमहिपावन ॥ धन्यलताद्रुमसुमनसुहावन
धन्यसखीधनिसबब्रजवासी ॥ तिनसंगविहरतप्रभुअविनाशी
गयेस्यामस्यामासदनसखीसहितघाय ॥
मानचरितरसकेलिकरिब्रजवासीबलिजाय
मानचरित्रअनूपजेसुभावगावहिंसुनहिं ॥
तेनपरैभवकूपराधाकृष्णप्रतापते ॥

मुखशशिकनकलतासमगोरी॥वालहरनछविनैनकिशोरी
भूषणवसनअनूपसुहाई॥अंगअंगशोभितछविछाई
अंगसुगंधमनोहरताई॥भ्रमरभोरचकरशोरसुहाई॥
हँसि२कहतसखीसोंवातें॥करतसुमनजनोरूपलेनातें
ऐसेकरतप्रकाशपियारी॥गईजहांपियकुंजविहारी
परमप्रेमदोउमिले श्रीराधानंदनंद॥॥
गुणआगरनागरयुगलछविसागरसुखकंद
जोप्रभुपरमअपार वेदभेदजानत नहीं॥
सोव्रजकरतविहार वरनिपारकोपावहीं
कुंजनरंगसुरंगछविछाई॥भंवरगुंजसुखपुंजसुहाई
फूलनसेजरचीचिरवीनी॥चित्रविचित्ररंगरसभीनी
फूलेखगभगकरतकिलोलें॥जहंतहंमधुरमनोहरवोलें
फूलेद्रुमवनतरुडारी॥तनमनफूलेपियअरुप्यारी
सहचरिसोहतमनोहरजोरी॥राजतयुगलकिशोरकिशोरी
हावभावरसकोउपजावें॥हासविलासकरतसुखपावें
सखीकह्योनवकेअलिनीके॥सकुचिहंसेप्यारीसवहीके
नैनकोरपियकोहियलाक्यो॥तवहिस्यामपीताम्बरढाक्यो
यहछविनिरखिसखीवलजाई॥अंचलरहीजोरीसुखदाई
धनिराधाधनिकुंवरकन्हाई॥धन्यमानरसकालसुहाई
धन्यकुंजवनधानमहिपावन॥धन्यलताद्रुमसुमनसुहावन
धन्यसखीधनिसवव्रजवासी॥तिनसंगविहरतप्रभुअविनासी
गयेस्यामस्यामासदनसखीसोहितपाय॥
मानचरितरसकेलिकरिव्रजवासीवलिजाय
मानचरित्रअनूप जेसुभावगावहिंसुनहिं॥
तेसपरैभवकूप राधाकृष्णप्रताप ते॥

करतचरितनानागिरधारी॥सुखसागरभक्तनहितकारी
जाकौंसुखसकध्याननलावै॥सनकादिकमुनिजनकेमै
जाप्रभुकोपयपरमवियास्द॥गायकनअहिपतिमनस्मर
सुरवलजनहूअकामअभोगी॥योगसमाधिनयक्तयजी
सोप्रभुसवकेअंतरजामी॥ब्रजतियप्रेमभक्तिवसकामी
वह्ननायककहेंकरतविहारा॥ब्रजघरघरसुखनंदकुमारा॥
रसलीलानानाउपजावैं॥काहूरुठावैंकाहूमनावै॥
अरसपरसतियसवपहजानें॥हीरहैंसवकेधामसुभानें
ऋवधवदतकाहूसौंजाई॥काहूकेघरवसतकन्हाई
सोऊकहतजाकेघरआवन॥जातिमातताकेमनभावन॥
वृजगोपीतिनकौंपतिजानें॥कोउआदरहिंकोउअपमानें
खेडितवचनसुनतसुखपाई॥यहलीलाहरिकेमनभाई॥
वृजमेंकरतविहाररहैंसुवृजवनितनकेसंग॥
अखिलकामपूरणकरणभरेप्रेमरसरंग॥
कोटिकामकमनीयसुंदरसुखसागरनवल॥
रमणीमनरमणीयवृजभूषणब्रजललाडिलौ
वृजवीथिननंदनंदनगाई॥अगअगसुंदरछविछाई॥
ललिताआइगईतेहिपैंडे॥मनमोहनरोकोमगमेंडे॥
देखतछविललिताम्रुसुकानी॥वोलीविहसिस्यामसौंवानी
कतरोकतमगमैंविनकाजे॥जाउचलेजितहौंहितसाजे
मूठहिहूतौसनेहजनायौ॥कवहूहमारेधामनआयौ
हरिहसिकह्यौआजहमऐहैं॥तेरीसौंहमअनतनजैहैं॥
ऐसेकोहिमधुरसकाई॥छांडिदईमगछैलकन्हाई
ललितागईसदनउपमानी॥ऐहैंस्यामआजयहजानी
सामोहितयहपैजानिहारैं॥भोमआपनेसेजसंवारैं॥

भूषणवसन नवलतन साजे ॥ खंजन से दृग अंजन आंजे ॥

दो॰ कहतिस्याम आये नहीं होनलगी अधरात
गये आसदय मोहिपुनि कहा धरीजियनात
सो वहुनायकस्यामकिधौं लुभाये अनतकहि
मनमनसोचत वाम कारण कहु आयेनहीं॥

कै धौं कछु ख्याल हिय चितदीनो॥ कै धौं मात पिता डर कीनो
कै धौं सोय रहे अलसाने॥ कै मोघर आवत सकुचाने ॥
ऐसे सोचत रैन विहानी ॥ जहां तहां वोले तुम खानी ॥
तव वैठी अपनो मन मारी॥ कछु सोच कछु रिस उर धारी॥
हरि निसिवसे सखी सीला के॥ सुन्दर स्याम धाम लीला के
तहं सुखसोवत रैन गमाई ॥ प्रात होत ललिता सुधि आई
चले सहज सीला सों कहिके॥ जियसकोच ललिता को गहिके
आये ललिता सदन विहारी॥ चितै रही मुख की छवि प्यारी
अंजन रेख अधर पर राजै ॥ पीक लीक नैनानि छवि छाजै॥
सोहत ललित कपोलन नीको॥ लाग्यो वंदन का हू तीको॥
तुरत मुकुर लै उठी सयानी ॥ दिखरायो हरि सन्मुख आनी
कहति दोषि जव वदन सुधारो॥ लाल कहूं लव प्रात सिधारो॥

पीकपलक अंजन अधर देखि स्याम सकुचाय
रहे निचौहे नैन करि वचन कह्यौ नहिं जाय॥
ज्यों ज्यौं सकुचत स्याम त्यों त्यों हठि नागरि कहति
देखहु छवि अभिराम हा हा मुख कत फेरियत

सकुचति कहा वाल के सांचे॥ आये तो मो गृह रंग राचे
रैन नहीं तो प्रातहि आये ॥ धनि श्रुहि जिन स्वांग वनाये॥
तुम जिन मानहु किलग कन्हाई॥ मैं तो करति अनंद वधाई
क्यौ मोहन दरपन नाहिं देखो॥ सुधे मोतन काहे न पेखो ॥

गढेकवचैवत क्यौ नाहीं ॥ कहुंकछु बूक परी हमपाहीं ॥
रहे मूक कै कहा ठगे से ॥ सोहत हौ अलसात जगे से ॥
उत्तर मोहि देत क्यौं नाहीं ॥ मैं नवही ते वकत घणाहीं ॥
तव चितयें द्रग कोर कन्हाई ॥ भाव प्रतिह्याधीन जनाई ॥
ग्वालि प्रवीन आनन्द लीनी ॥ तुरत रोस उरते तज दीनौ ॥
हँसि करि मोहन कंठ लगाये ॥ भले स्याम ऐसे हू आये ॥
अमित अंगजागे निसजाने ॥ अति सनेह मनही मन माने ॥
अंग सुगंधि मरदि अन्हवाये ॥ वसन अभूषण दै पैंठाये ॥
रुचि भोजन दै सेज पर पौढ़ाये घनश्याम ॥
रसवस करि नवनागरी किये सुफल मनकाम
सुरमुनि सकत न गाय प्रभु ब्रजवासीदास की
प्रेम प्रीत वस आय सो गोपी वल्लभ भयौ ॥
कहत सो हकरी रसिक विहारी ॥ तुम प्रिय मो हि प्रानपतें [illegible]
सदा वसत तुम मो मन माहीं ॥ तुम बिन लहत अनत सुख [illegible]
ऐसे काहि आनि प्रीत जनावे ॥ चतुर वचन कहि चित हित [illegible]
यहे भाव युवतिन सौं भावै ॥ सवहिन के मन की रुचि [illegible]
कुल मर्याद लोक डर त्यागी ॥ सब गोपी हरि सौं अनुरागी ॥
दिन देखे रस भाव बढ़ावै ॥ नैनन देखत ही सुख पावै ॥
महा सनातन जग सुखकारी ॥ यह लीला ब्रज मैं विस्तारी
ललिता कौ सुख दै सुखसागर ॥ चले सदन अपने नटनागर
उतते भग आवत चन्द्रावलि ॥ देखि रही सुन्दर [illegible]
वने विशाल कमल दल लोचन ॥ चितवत चारु सार मद मोचन
उन्नत सकल स्याम अति हेरी ॥ सौर सकरी भई भेंट भेरी ॥
बिहँसि कह्यो चन्द्रावलि प्यारी ॥ कहां रहत ह्यां [illegible]
तुमकैसैं विसरत प्रिया हँसि बोले घनस्याम ॥

आज आय सुख लेहिंगे रैन तुम्हारे धाम ॥
सुनि हर्षी जिय वाम चली मदन मुसकाय कै
लषि सुख पायो स्याम मुदित गये अपने भवन
चंद्रावलि मन अधिक उछाह ॥ भूली फिरत कहत नहिं काह
सुख केक रत मनोरथ नाना ॥ वासर कल्प समान विहाना ॥
भेष अस्त रवि निसि नियरानी ॥ उडुगन योति दोषि हर्षानी ॥
हरि सुखमा के भवन सिधाये ॥ चंद्रावलि भवन न आये ॥
सूने घर देखी सो ग्वाली ॥ आतुर गये तहां वनमाली ॥
सुखमा लषि हरि को सुष पायो ॥ आति आदर करि कै बैठायो ॥
काककला कोविद वर नारी ॥ हाव भाव मोहे गिरधारी ॥
वसे तहां मोहन सुख पाई ॥ चंद्रावलि की सुरत भुलाई ॥
इत चंद्रावलि सेज सवारे ॥ वारवार हरि पंथ निहारे ॥
कवहुं भवन कवहूं अंगनाई ॥ कवहूं रहत द्वार टकलाई
कवहूं सोच करत मन माहीं ॥ आवैंगे मोहन कै नाहीं ॥
कवहूं आलग कछु जिय जानो ॥ धोवत है नैनन ले पानी ॥
कवहूं कहत हरि आय है उर में हर्ष बढाय ॥ ॥
कवहूं विरह व्याकुल जरत अति आकुल अकुलाय
कवहूं कहत सुख पाय बहु रस रागी रस रागी पिय
वसे अनत कहूं जाय मोसों रूठी अवध वदि ॥
ऐसे हिय मैं रैन विहानी ॥ सुनी श्रवण वायस की वानी
भई काम दुख वाम उदासी ॥ जाने स्याम कपट की रासी ॥
कहत न मन की मन के माहीं ॥ स्याम नाम खोटे सब आहीं
कोयल स्याम स्याम अलि देखो ॥ स्याम जलद अहि स्याम विसेषो
तिनही की करनी हरि लीनी ॥ मोसों प्रीति कपट की कीनी ॥
ऐसे आप विरह वस बाला ॥ सुखमा सदन रहे नंदलाला ॥

प्रात भये उठि चले तहांते॥ आलस भये नैन रंग राते॥
चंद्रावली सदन चलि आये॥ ठाढे अजिर रहे सकुचाये॥
मंदिर तें रिस भरी गुवारी॥ नखतें सिख लौं रही निहारी
मन रूठ हाँसि कही गिरधारी॥ प्रात होत आये मेरे धारी॥
कियो मान मन में अति भारी॥ आंगन में ठाढे वनवारी॥
और नारि के चिन्ह विलोकी॥ रोकि निरिस हिस्कातिनसों
तव वोली करि मान तिय कहा काम मम धाम
ताही के पर जाइये वसे जहां निसि स्याम॥
प्रात दिखावत मोहि आये रंग कनाय के॥
मैं सुख पायो जोहि भले वने हो लाल अव॥
विन गुण शोभित है उरमाला॥ वीच रेख चख चंद्र समान
अधर दीप सुत रेख सुहाई॥ नागवेल रंग पलक रंगाई॥
लपटो पाग महावर लाये॥ आलस नैन अरुण छवि छाये
चंदन भाल मिल्यो कज्जल वंदन॥ यह छवि अधिक वनी नंदनंदन
वलय गाड्वर पीठ धरे हो॥ जान्यो नागरि रंग भरे हो॥
इतने पर डाहन मुहि आये॥ सोंह करन को इत उठि धाये
जाउ तहीं जासो मन मान्यो॥ जैसें हो तैसे मैं जान्यो॥॥
विहसि के बोले नवलाल विहारी॥ तुम तें और कौन मुहि प्यारी
तुम विन मोहि कहूं कल नाहीं॥ वसत सदा मन तेरे माहीं॥
यह चतुराई कहां पढि आई॥ चीन्हे हो गुण रास कन्हाई॥
यह कहि गई भवन में भामिन॥ रीझे स्याम देखि छवि कामिन
मन मलाइ भये प्रेम गाढे॥ द्वार कपाट दिये तिन गाढे॥
पौढि रही तिय सेज पर वदन मूंद अनखाय
हरि तन पुनि चितयो नहीं उर में प्रेम वढाय॥
प्रेम गति लखी न जाय जो चाहें सोई करें॥

पौढि रहे संग जाय पौढी त्रिय जहां मानकारि
जो देखै तौ संग कन्हाई ॥ चली बेझरि तब तिय उठि धाई
खोलि किवार अजिर में आई ॥ देखे ठाढ़े जहां कन्हाई ॥
विनय करत नैनन की सैनन ॥ चकित भई देखी तिय नैनन
भीतर भवन गई पुनि प्यारी ॥ तहं अंक भरि गहि लई मुरारी
तब नागरि सागरि दृभुलाई ॥ चेटक करि बस करी कन्हाई
मान छुड़ाय यह लास बढ़ायो ॥ तिय कौं सुख दीनो सुख पायौ
तब निज धाम गये गिरधारी ॥ चंद्रावलि उर आनंद भारी
तहां सखी दस पांच क आई ॥ चंद्रावलि बैठी जहि ठाई ॥
और वदन और अंग शोभा ॥ निरषि रहीं दृग दै मन लोभा
कहत प्रिया कह हरष बढ़ायौ ॥ कर न लूटका हू कछु पायौ
क्यौं अंग सिथल भरगजी सारी ॥ यह छवि कही न जात महारी
हमसौं कहा दुरावति प्यारी ॥ हम जानी तोहि मिले मुरारी
चंद्रावलि करि चतुरई ज्यों अवसर कन नाहि देह
रही मंद मुख मंद हंसि भीजी स्याम सनेह ॥
रह्यो ध्यान उर छाय वह लीला बिसरै नहीं
मुख सौं कह्यो न जाय गूंगे कौं गुर सौं भयो
तब बृंत वाली कहि आली ॥ युवती मन मोहन वनमाली
है लीला अद्भुत सब जिनकी ॥ कही न जात बात सषि तिनकी
हाहा करति चंद्रावलि हमसों ॥ हम हू सुने स्याम गुण तुमसों
कै तोहि मिले यमुन के तीरा ॥ कै तोहि मिले भवन वलवीरा
तब चंद्रावलि गदगद बानी ॥ हरष सहित हरि कथा वषानी
सुनि हरि चरित ललित सुषकारी ॥ भई प्रेम वस सब ब्रजनारी
चंद्रावलि धनि धन्य कही तब ॥ कहन लगी हरि के गुणगण सब
नंदनंदन सब लायक हैं री ॥ सबहिन के सुषदायक हैं री ॥

वसेरैनुकाहूके जाई ॥ ॥ काहू देत मातसुखसु
काहूको मनेआपडरावैं ॥ काहूसौंअपनोमनसारै
काहूकेजागतसिगरीनिस ॥ काहूकोउपजावतहैं सु
व्रजवासीप्रभुकेमनभावैं ॥ जैसेइ तैसेचरित उपावैं

यहलीलाआनंदमई सकलरसनकोसार ॥
भक्तनहितहरिकरतहैं गावतरत संसार ॥
घरघरकरतविहारव्रजयुवतिनकेसंगहरि
गावतहैंश्रुतिचारव्रजवासीप्रभुकेयशहि

श्रीराधावृषभानदुलारी ॥ नंदनंदनपियकीअतिप्यारी
सहजरहैंअपनेमनमाही ॥ नंदसुवननिसिअंतनमाहीं
नंदभवनके मेरे गेहा ॥ रहैसदाचितयहै सनेहा ॥
स्यामवसेकाहूनारी के ॥ आयेप्रात सदन प्यारी के
रतिरंगचिन्हअंगपरवाने ॥ सोहतनैनअरुणअलसाने
प्यारीदेखिरहीसुखपियको ॥ जान्योंअगलभ्योमनतियको
नवमनविहसिकह्योश्रीराधा ॥ आजकन्योपियरूपअगाधा
परउपकारहेततनधारो ॥ परखनसवकोसाधविचारो
कहापढीयहनीतिवतावो ॥ हमहूकोसो मम सुनावो
कहोकहूकाकोसुखदीनो ॥ धनिरेयहउपकारजोकीनो
धनियहवातआजमैंजानी ॥ क्योंनहिंकहियतअगवानी
धन्यमोहियहदरसदिखायो ॥ धनिरजासौनेहलगायो

भलीदिखाईआजयह अद्भुतछविअभिराम
सुरउदयलोचनकमल चंद्रउदयउरस्याम ॥
उरकुचकुंकुमदाग अधरदसनछविराजई
रंगोमहावरपाग यहशोभाअनुपमवनी

नीऊठिभोरयहाँकोआये ॥ काहेको इतने सरमाये ॥

तासौं कहि सब बात जनाई ॥ दूती करि हरी पास पठाई ॥
कहत स्याम तासों यह बानी ॥ वेगमिटो क्यों मान सयानी ॥
दूतो गई करती मन साधा ॥ वैठी तहां जाय जहां राधा ॥
प्यारी मान तहीं हठ बैठी ॥ हृदय रोस भौंहें करि ऐंठी ॥
उर मैं सौति साल अति साली ॥ नेक नहीं इत उत कहूं हाली ॥
दूती कछु थाह नहिं पावे ॥ विना मान कहि मन नवनावे ॥
मन ही मन दूती पछिताई ॥ अति आतुर मोहिं मानि गठाई ॥
यह इत उत केहु नाहिं निहारे ॥ कहा करौं मन मांझ विचारे ॥
तब कहि उठी दूति का नारी ॥ मान कियो वृषभानु दुलारी ॥
कहा करौं मोहन अति कीन्ही ॥ उनकी बात आज मैं चीन्ही ॥
ऐसे मैं उनको नहिं जाने ॥ अब केसे उन सो मन माने ॥

घर २ डोलत फिरत निसि बोलत लगत न लाज
आय दिखाय प्रात मुहि तट के रति रक साज ॥
मैं आई अति आज जित चाहो तित ही फिरो
उनको इहां न काज राज करौ ब्रज मैं सदा ॥

दूती सुनि प्यारी की बानी ॥ अंतर प्रेम रोस लपटानी ॥
कह्यो यमुन ते मैं यह आई ॥ सखी एक यह बात जनाई ॥
तब मैं रहन सकी घर मांहीं ॥ भली प्रकृत हरि की यह नाहीं ॥
अब हरि तें हम निरखत हैं ॥ पर घर जान की सौं हक रत हैं ॥
मन पछितात कहत घनस्यामा ॥ भूले रामो कस्यून कामा ॥
तू जिन मान तजे सुनि मोसों ॥ यहै कहन आई मैं तोसों ॥
अब समझे अरु हम समझावें ॥ घर घर जान की बान मिटावें ॥
अब मोको यह बात लखाई ॥ जाहि न पर घर कबहु कन्हाई ॥
जब दूती यों बात बखानी ॥ द्वारे हैं हरि तब यह जानी ॥
उमग उठी रिस मन मन मांहीं ॥ बाहर प्रगट कियो सो नाहीं ॥

मानतिनाहिंमनायोप्यारी॥कोजानेजियमेंकहाधारी
हाहाकरिमैंवहुसमुझाई॥सुनतनअधिकहोतरिसहाई
तुमआतुरवेसीगतिवाकी॥आवतिनजातिवीचमेंथाकी
आपहिंचलिलीजियेमनाई॥औरभांतिनहिंवनतवनाई
यहेवयारजैसीयेजवहीं॥पीठआइयेतैसीतवहीं॥
मोसीजोपठवोतुमकोरी॥नाहिंमानतवृषभानकिशोरी
हौंतोकहतितुम्हारेहितकी॥पाईहैकछुवाकेचितकी
चलेवनतहेलालअवऔरयत्ननहिंकोइ
काछकाछियेजौनहाँसोनाचनाचियेसोइ
आपकाजमहाकाजवडेकहिगयेवातयह
तजहुस्यामडरलाजकरिविनतीतियतेंमिलहु
चलोचलेतुमरेहटजैहैं॥देखतप्रेमउमंगउरऐहैं॥
सखीसंगतवनवलविहारी॥गयेभवनवैठीजहँप्यारी॥
आगेभयेसकुचकेठाढ़े॥अतिआधीनप्रेमरसवाढ़े॥
नेकनहीं इतउतकहुडोले॥चित्रलिखेसेमुखनहिंवोले
यदपिलालगाढ़ेअतिजीके॥सकलसयानपभूलेनीके
प्यारीदेखिपियाहिंमुसकानी॥जियहरपेमोतेयहजानी
अतिआनंदभयोमनमाहीं॥चुपहीरहीकह्योकछुनाहीं
मनमनकहतनअवउचटाऊं॥आदरकरिपियकोवैठाऊं
मोसोंस्यामवहुतसकुचाने॥अवनहिंजहँधामविराने
सहचरीकह्योदेखरीप्यारी॥कवकेठढेहैंगिरिधारी
मानमनायोप्यारीपियको॥तूपियजियपियजीवनजीको
प्राणहिंतूनाहिंनसुखीकैसो॥यहकहभयोसुन्योनहिंऐसो
करिआदरवैठारीपियहँसिलेकंठलगाय
घरआयेनाहिंकोजियऐसीकिमसकवाय

मल यज्ञ उरज छाय उर धारे॥ है शशि मनहु उदित उजियारे
नयन कछु सकुचत से ऐसे॥ शशि के उदय सरोरुह जैसे॥
पुतली अलि उडि सकेन जानो॥ उरकर लहि अधघात न मानो॥
उरम गात से डगापग डोले॥ रस मसि गातहि सो गात अमोले
अंग अंग शोभा के सागर॥ धनि २ जहां वसे रतिनागर॥
विहँसि कहे चले स्याम तव तरुकर तुम वात
समुझी सब हम आय हैं आज तुम्हारे गात॥
सुनि हर्षी जियु नारि पुलकि गात आनंद उर
ऐहैं आज मुरारि सांझ परे मेरे सदन॥
प्रातहि ते मन हर्ष वढायो॥ नौसत साज सिंगार बनायो
वारवार दर्पन मुख देखे॥ भूषण वसन अंग अव रेखे
कहु सुत छवि छाजत वेणी॥ मांग संवारत दीध सुतश्रेणी
भवत जीय सुत रख सवारे॥ धन धौत उर को नाम सुधारे
हीरावलि उर पर लै धारे॥ स्याम मिलन सुख मनहि विचारे
रचि २ सुमनन सेज बनावे॥ केसर चंदन अगर मिलावे॥
वडु नायक नंद सुवन कन्हाई॥ गये अनत याको विसराई
वासर ऐसे करत विहानो॥ एक जाम निसको नियरानो
परयो सोच विरही अकुलानी॥ स्याम न आये कहा धौं जानी
गये समुझी कोक हि आवन॥ आज कन्हि आय मन भावन
कै धौं आवत हैं अवु धाये॥ किधौं परे केउ फंद पराये॥
वे वड रसगी रसराविहारी॥ कैधौं मेरी सुरति विसारी॥
कुमुदा के घर हरि रहे वढो अधिक उर हेत
भींजि दोउ प्रेम रस अरस परस सुख लेत॥
मुदित स्याम संग वाम छिन सम वीतत यामिनी
याको युग सम जाम वीतत नभ तारे गनत॥

इतनो कहत द्वार लौं आये ॥ चोलन भीतर तें लखि पाये ॥
देखत ही रिस में भइ राती ॥ पाही सुनाइ स्याम को बाती
धन्य २ यह घरी विधाता ॥ आये मेरे जू सुख दाता ॥ ॥
ऐसे कहि चुप व्है रही मुरि बैठी रिस गात ॥
मधुरे वचन नसौं कहत निकट सखी सों बात
आये हैं करि गौन चतुर नारि संग निसि जगे
इतसों मिलिहैं कौन फिरति कहां को ऊब ही
कृपा करि अब इत हिन आवें ॥ उतहीं जाय जहां सुख पावें
सखी लखे सब अंग स्याम के ॥ जागे कहूं निसि संग बाम के
कहुं चंदन कहुं बंदन रेखा ॥ कहुं काजर कहुं पीक सु देखा
लखि स्वरूप हरि तन भसकाई ॥ मान कियो यह दियो जनाई
मनमन सोचत कुंवर कन्हाई ॥ परे कठिन तिय के फंद आई ॥
मेरो नाम सुनत ही ऐंठी ॥ मान कियो मोसों फिर बैठी ॥
तबहि स्याम कीनी चतुराई ॥ सैनन ही सों सखी बुलाई ॥
सो कहि चली जात घर माई ॥ तू जावे दीमान दिढाई ॥ ॥
सुनत हि ठाढ़े भये कन्हाई ॥ तहां सखी सहजाहि चलि आई
निरखि बदन तब उन हांसि दीन्हो ॥ सखी कह्यो तुम यह कह कीनो
तब हंसि कह्यो सखी सौं गिरधर ॥ मैं मनाय लेहौं तु जा घर ॥
यह सुनि विहसि गई कहि आली ॥ जाय मनाय लेहु बनमाली ॥
रसिक नवीमणि जानमणि विद्यखान गुणराय
आवन है तहां ते गये तिनको दरस दिखाय ॥
रही अकुली वाम फिर कै चितयो द्वार तन ॥
तहां न देखे स्याम अधिक सोच मन में भयो ॥
तब जानी फिर गये कन्हाई ॥ मन ही मन तिया पछिताई
भई विरह व्याकुल अति नारी ॥ मिटि गयो मान हरष दुख भारी

सुनलधन्यनयकृतभट्टारहीसाल्हसंगोष्ठि

निजगृहरहेसदानंदलाल॥परमविचित्रस्यामकेख्याल
व्रजवासीप्रभुकीकथाअतिविचित्रसुखखान
कहतसुनतगावतगुणनहरषतसंतसुजान
व्रजनायकघनस्यामनटनागरगुणआगरे॥
व्रजवासीसुखधामगोपीपतिनंदलाडिले॥

अथगुरूमानलील

सखिनसंगवृषभानकिसोरी॥चलीन्हानप्रातहिउठिगोरी
जाकेघरनिसिवसेकन्हाई॥ताघरतांहिबुलावनआई॥
ठाढीभईद्वारपरजाई॥कढेतहांतेकुंवरकन्हाई॥
औचकमिलनजानतकोऊ॥रहेचकितइतउततेदोऊ
फिरीसदनकोतुरतेप्यारी॥न्हानजानकीसुरतविसारी॥
भईविकलतनरिसअतिवाढी॥रहिगईसखीनिरखिरवठाढी
रहिगयेठाढेस्यामठगेसे॥सकुचानेउरशोचपगेसे॥
जवदेखेहरिअतिसुरझाये॥तवसखियनगहिभुजसमुझाये
उलटिभईसवहरिकीघाई॥देकेवाहप्रियाजहांल्याई॥
देखीस्यामआइजहराधा॥वैठीमानहृदायअगाधा॥
रसहीकेरसमगनकिशोरी॥भईस्याममतिदेखतभोरी
ठाढेचकितचित्तअकुलाहीं॥मुखतेवचनकहेनहिजाहीं
व्याकुललषिनंदलालको सखियनकियेविचार
अवदोऊजेसेमिलेकरियेसोउपचार॥
अतिरिसनारिअचेतकोसुनिहैकासोकहैं
इतयेधरतनचेतपरीरुठावनवानइन॥
प्यारीनिकटगईसवआली॥ठाढेपौरिरहेवनमाली
कहतमानकीनोतेप्यारी॥न्हानजाननेफिरतकहारी॥

तेरो ढूनासमरदलसुख्समाहीं॥मोरक कृतिकोसुध नाहीं
देखतपियाभईसुसिगाही॥चलत हौंगिनेकोकगठाहीं
कुंजभवनमहें होंइ देखें॥तयमेंनेनसुफलकरिलेसे॥
अवहीकहतक्रपामोहिकोजी॥जोपूछियेदड सोदीजे॥
अंतिअसतभीतमकोलेरो॥इवतगहहिमकहींसुनिगेरी
तवकारणवृषभानुदुलारी॥मेरेपायपरतगिरधारी॥
अवमैंपायपरतिहौंतेरे॥करअपराधछमोंहरिकेरे॥
चाहतकियोस्यामकोजोई॥उन्हेंआनमोसोंकरिसोई॥
सुराश्परसतचरणकरसुराश्लेतबलाय
कहतप्रियाअवमानअजपुनसुनिहाहमखाय
लखि रससखीसिहातचरितललितनंदलालके
मनहींमनमुसकातभरीप्रेमआनंदरस ॥
तवचितयोप्यारीनेननभरी॥प्रायोउधरिलालनोलाकर
स्यामचतुरईमोसोमांडत॥वेगुणतुमअजहूंनहिंछांडत
इनकंदनमेंमानतहीजू॥नीकेसवगुणजानत हौजू॥
रसघातिनमोकोंकरिपाई॥चेवातेंअव देउभुलाई॥
यहकहिवहरिभईरिसहाई॥रहेस्यामगहेसकुचाई॥
गहेग्रीवपटअतिआधीनां॥जलकेनिकटदीनजिमिमीना
फिरपोढीदेपीठस्यामकों॥हढेविरहदलबाधिकामकों
कुरआरसीअग्रलेधारे॥पटअंतरहौंवदननिहारे
रिसवसधरतनहीं मनधीरा॥तलफतहियविरहकीपीरा
इतनागरउतनागरभोऊ॥भलीचतुरईवाक्योदोऊ
जितजितमुखफेरपियारी॥ऋतितीटरिआवतगिरधारी
जोइश्यातभावतहीभावे॥सोइश्वातेंस्यामवनावें॥
कारिलागेछरछंदसबकुसननपावतकाहि

हट छांडति नहिं लाडिली हरि शोचत मनमांहिं
देखि स्याम को दीन विरह विवस प्यारी निकट
सखियां परम प्रवीन तब सब समुझावन लगीं
लखरी कमलनैन तो आगे॥ कबके हाहा करत अनुरागे
तेरे भय तें कुंवर कन्हाई॥ आये तिय को रूप बनाई॥
मधुर २ बचनन बनवारी॥ तोहि मनावत हैरी प्यारी॥
हाहा करि अरु पायन लागे॥ कियो कहां चाहति है आगे
लखि हरि खरे मलिन मुरझाये॥ आदर नहिं चाकिय घर आये
वे तो बन के भवर मुरारी॥ ॥ तोसी और बेलि को प्यारी
करि सन्मानि विहसि करि वैसो॥ कीनो कहा निठुर मन ऐसो
पावत कहा मान के कीने॥ कहा गंवावति आदर दीने॥
होत कहा घूंघट पट खोले॥ कहा नसात तनिक हंसि बोले
ऐसो कहू कों जियत हैरी॥ प्रीतम छांडि राखियत बैरी
निज बस मदन गुपालहि जानी॥ ऐसी कहा अधिक इतरानी
सुख की कहत अनख सी आवे॥ कहा तोहि कोऊ समुझावे
जो नहिं मानत स्याम सों मानी हे राहि हे हाय॥
तब सपने मन जान है जब दहि है रति नाय॥
सो ऐसे कोहू कोन मान प्रिया हम कहति हैं॥
त्रिभुवन ठाकुर जोन सो तेरे बस है परयो ॥
ऐसो समय बहुरि नाहि पैहै॥ सुनरी फिर पाछे पछतैहै॥
यह जोवन धन है सुपने को॥ मान मनायो पिय सपने को
अबे ये दिन रूसन को नाहीं॥ प्रिया विचार देखि मन माहीं
पावस ऋतु कियारी फेरो॥ गरजत घनन भये अंधेरो
बोलत दादुर चातृक मोरा॥ चहुंदिस पवन करत झकझोरा
बरषत मेघ भूमि हरितलागी॥ नारि सकल प्रीतम अनुरागी

अवगुणमनविसराय मिलीप्रियाउठिस्यामसों
हरषिमिलेदोउ प्रीतमप्यारी॥ भईसखीसवनिरखिसुखारी
तवदोउ उवटिसखीअन्हवाये॥ रुचिरसिंगारसिंगारवनाये
मधुरमिष्टभोजनमनभाये॥ दोउ मन एकहिथारजिमाये
दियेपानअचवनकरिवाये॥ सुमनसुगंधमालपहिराये
लैवीराअपने कर प्यारी॥ दीनोंविहसिवदनगिरधारी
तवहिसुफलहरिजीवनजान्यो॥ परमहरषउरअंतरमान्यो
मिलिवैठेदोउ प्रीतमप्यारी॥ तवसखियनआरतीउतारी
अतिआनंदभरे दोउ राजै॥ अरसपरसनिरखतछविछाजै
पायेवसकरिकुंजविहारी॥ विहसिकह्योनवपियसोंप्यारी
सुनहुस्यामवरषाऋतुआई॥ रचहुहिंडोरोअतिसुखदाई
हैमनमनपिययहसाधहमारे॥ सवमिलिझूलहिसंगतुम्हारे
सुनतियवचनस्यामसुषपायो॥ ऐसेंकहिहरिमानछुडायो
छं० तियमानहरिऐसेंछुडायोभक्तिहितलीलाकरी
निगमनेतिअपारगुणसुखसिंधुनंदकुमारहरी
यहमानचरितपवित्रहरिकोप्रेमसहितजोगावही
करिहैजोआदरमानतिनकोसन्तजनसुखपावही
दो० राधारसिकगुपालकौकौतूहलरसकेलि॥
ब्रजवासीप्रभुजननकोसुखदकामतरुवेलि
सो० सुफलजन्महैतासुजेअनुदिनगावतसुनत॥
तिनकौसदाहुलासब्रजवासीप्रभुकीकृपा

॥ अथहिंडोराबनलीला

भक्तिवस्यप्रभुकुंजविहारी॥ भक्तिनहितलीलाअवतारी
सदासदाभक्तिनसुखदाई॥ करतसदाभक्तिनमनभाई

प्रेमभक्ति दृढब्रजकीबाला ॥ भयेवस्यतिनकेनंदलाला ॥
यो२ सुख तिनके मन भावे ॥ सोजोब्रजमे स्याम सनावें ॥
प्रेम रस के सुखद विहारी ॥ करैं तियन संग नंदकुमारी ॥
ग्रीषमगतपावसऋतुआई ॥ परमसुहावनजनसुखदाई ॥
श्रीराधाजनकीरुचिजानी ॥ तवहिंडोवलीलामनआनी ॥
यमुनापुलनगयेमनभावन ॥ वृंदावनघनपरमसुहावन ॥
सखिनसहितसोहतअतिप्यारी ॥ कोटिककृतमनमोहविहारी ॥
अतिआनंदउमंगिचहुँओरा ॥ छमाइरहेपावसघनघोरा ॥
जहांतहांवगपांतिउडाहीं ॥ चपलाचमकघपत[illegible] ॥
गरजतमधुरस्रवणसुखदाई ॥ तैसियवहतसमीरसुहाई ॥
नानारंगखगफूललोगिफललगलगनकेचारु ॥
फणसऋव केरूमकाकालर रूवाऽपपार ॥

शोभित लता वितान अति उतंग तरु सुमन युत
रहे पानमिल पान विविध नगन मानहुजडे ॥
कनकवरन मे भूमि सुहाई । छवि हिंडोर नहिं वरनी सराई
तापर रसिक छबीले दोऊ । उपमा को त्रिभुवन नहिं कोऊ
नंदनंदन वृषभानकिशोरी । गौरस्याम सुन्दर छवि जोरी
चढेउमंग आनंद उर भारी । निरखत छविन मुरवर नारी
मोरमुकुट पीतांवर सोहै । स्याम सुभग तन त्रिभुवन मोहै
प्यारी अंग वैगनी सारी । शोभित चहुंदिस चारु किनारी
युगल अंग भूषण छवि छाये । रचि रुचि सखिन सिंगार बनाये
उर रतन के हार विराजे । सुमन हार अति से छवि छाजे ॥
उतकुंडल इत तरवन छवि । रह्यो लजाय निरषि छवि को रवि
सखिगण छुण लगाते गैनहारे । वारत प्राण गौरू रिझवारे
भरि उछाह ऊंचे सुर गावें । पिय प्यारी को हरषि बुलावें ॥
ताल म्रदंग वांसरी मीना । वाजत सरस मधुर सुर लीना ॥
यह सुख सुनि व्रज सुन्दरी अपर सकल नवबाल
वृंदावन फूलति कुंवरि राधा अरु नंदलाल ॥
चली सकल अतुराय नवसत सातसिंगार तन
ग्रह काज बिसराय मनमोहन के रस पगी ॥
सुन करि पहरि चुनरी सारी । अरुण गुहह चहीको रकिनारी
यूथ यूथ मिल हरि पै आवैं । तिनहिं प्रिया पिय निकट बुलावें
आदर वचन सप्रेम सुनावें । सबके मन को साद पुरावें ॥
एकने लेत निकट वैठाई ॥ एके चढे पंग पर धाई ॥
एक झुलावति अति मचुपाई । गावत एक मलार सुहाई
राग रंग सुख बरन न जाई ॥ रह्यो छाय सुर तन धन जाई
ध्रुव तिवदं चकुं ओर सुहाई । भूषण भीर बरनन नहिं जाई

प्रेम भक्ति दृढ ब्रजकी बाला॥ भये बस्य तिनके नंदलाला॥
यो २ सुख तिनके मन भावै॥ सोजो ब्रजमे स्याम करावै॥
प्रेमे सखे के सुखद विहारी॥ करैं तियन संग नंदकुमारी॥
ग्रीषम गत पावस ऋतु आई॥ परम सुहावन जन सुखदाई॥
श्रीराधाजनकी रुचि जानी॥ तव हिंडोल लीला मन आनी॥
यमुना पुलन गये मन भावन॥ वृंदावन धन परम सुहावन॥
सखिन सहित श्रीहित पति प्यारी॥ कौटिक करत मन मोद विहारी॥
अति आनंद उमंगि चहु ओरा॥ उमडि रहे पावस घन घोरा॥
जहां तहां वग पांति उडाहीं॥ चपला चमक चपत घन मांही॥
गरजत मधुर श्रवण सुखदाई॥ त्रैसिय वहत समीर सुहाई॥
नाना रंग खग फूल लगि फल लग लगन कचार॥
पग भ्रकृव के झूमका झालर रुचा अपार॥

शोभितलता वितान अति उलंगत सुमनयुत
रहे पान मिल पान विविध नग न मानहु जड़े ॥
कनक बरन मे भूमि सुहाई ॥ छवि बिछौरन नहिं बरनी साई
तापर रास कछवीले दोऊ ॥ उपमा कों त्रिभुवन नहिं कोऊ
नंदनदन वृषभान किशोरी ॥ गौर स्याम सुन्दर छवि जोरी
चढे उमंग आनंद उर भारी ॥ निरखत छवि नभ सुरवर नारी
मोरमुकुट पीतांबर सोहै ॥ स्याम सुभग तन त्रिभुवन पी है
प्यारी अंग बैंगनी सारी ॥ शोभित चहुं दिस चारु कनारी
युगल अंग भूषण छवि छाये ॥ रुचि रुचि सखिन सिंगार बनाये
उर रतन के हार विराजैं ॥ सुमन हार अति से छवि छाजैं ॥
उत कुंडल इत तरवन छवि ॥ रह्यो लजाय निरषि छवि को रवि
सखिगण छण तृण तोरि निहारें ॥ वारत प्राण गौर रुरि वारे
भरि उछाह ऊंचे सुर गावें ॥ पिय प्यारी को हरषि बुलावें ॥
ताल म्रदंग बांसरी बीना ॥ बाजत सरस मधुर सुर लीना ॥

यह सुख सुनि ब्रज सुन्दरी अपर सकल नवबाल
वृंदावन कूलति कुंवरि राधा अरु नंदलाल ॥
चलीं सकल अतुराय नव सत साति सिंगार तन
गृह कारज विसराय मनमोहन के रस पगी ॥

जुबक रि पहरि चूनरी सारी ॥ अरुण गुह चहीं कोर किनारी
यूथ र मिल हरि पै आवें ॥ तिनहि प्रिया पिय निकट बुलावें
आदर वचन सप्रेम सुनावें ॥ सबु के मन को साद पुरावें ॥
एक ने लेत निकट बैठाई ॥ एके चढे पंग पर धाई ॥
एक झुलावति सति अचुपाई ॥ गावत एक मलार सुहाई
राग रंग सुख बरन न जाई ॥ रह्यो छाय सुर तन धन जाई
युव तिवृंद चहुं ओर सुहाई ॥ भूषण भीर बरन नहिं जाई

रचहु फागु सुख अब नंदलाला ॥ कर जोरे विनवति सब वाला ॥
सुनि गोपिन के वचन कन्हाई ॥ रची फागु लीला सुखदाई ॥
विहसि कह्यो तब श्री गिरिधारी ॥ सजहु समाज जाय तुम प्यारी ॥
हमहू सखन संग ले आवैं ॥ फागु रंग ब्रज माहिं मचावैं ॥
यह सुनि मुदित भई ब्रजवाला ॥ गये सदन को मदन गुपाला ॥
सखावृंद सब स्याम बुलाये ॥ सुनत सकल आतुर ह्वै आये ॥
हंसि हंसि उन्है स्याम समझायो ॥ आयो फागुण मास सुहायो ॥
भैया हो सब खेलैं होरी ॥ भरौ अवीर गुलालन झोरी ॥
यह सुनि ग्वाल वाल अनुरागे ॥ होरी साज सजन सब लागे ॥
कंचन कलश अनेक सुहाये ॥ केसरि माट सुरंग भराये ॥
अतर अरगजा विविध विधाना ॥ लिये सुगंध भाजन भरि नाना ॥
पीत अरुण वर वसन वनाये ॥ स्नेह सुगंधन अति मन भाये ॥

अंग अंग भूषण ललित उर सुमनन की माल
नैन सैन शोभा हरन वनी मंडली ग्वाल ॥
पान भरे मुख लाल उमकाये वाहें रंग ॥
फैंटन भरे गुलाल पिचकारी कंचन वरन ॥

फैंटा पीत स्याम सिर सोहैं ॥ तुर्रा की झलकत मन मोहै
पापर मोर चंद्र छवि न्यारी ॥ कोटि चंद्र विच छवि वलिहारी
केसर खौर भाल सुभकारी ॥ वीच तिलक की रेख सिंगारी
भौंहें कुटिल नैन रतनारे ॥ कुंडल झलक केस घुघरारे ॥
चारु कपोल मनोहर नासा ॥ मंद हसन दुति सदन प्रकाशा ॥
अधर अरुण सुचि चिवुक छवि सींवा ॥ कुटिल अलक कुंचक सुभ ग्रीवा ॥
झगा झीन रंग पीत सुहायो ॥ शोभित तन छवि सों लपटायो
घेर दार संजाफ जरी की ॥ झमकि रही छवि उमंग भरी की
तैसिय कमल चरण की पनहीं ॥ कंचन मणि मय मोहन मन हीं

सदासुमननवपल्लवडारी ॥ सदात्रिविधमारुतसुखकारी
सदामधुपगधुमातेडोलैं ॥ कोकिलकीरसदाकलवोलैं
सुनि२नारिहृदेसुखपावैं ॥ मनहींमनअभिलासवढावैं
वारि२कहिपियसुखपावैं ॥ ऋतुवसंतआईसमुरावैं ॥
फागुचरितअतिसाधहमारे ॥ खेलैंमिलिसवसंगतुम्हारे

जववनिताहरिसोंहरषिकह्लिसुनहुव्रजराज
देखहुवनशोभानिरषिअतिहिविराजतराज
खेलतहैंदोउफागमानहुंमदनवसंतमिलि
लखिउपजतअनुरागयहरसअधिकसुहावनें

द्रुमनमध्यकेसुतरफूले ॥ करतप्रकाशशशिसमतूले ॥
मानहुनिज२सेरसुहाई ॥ हरषिसवनहोलिकालवाई
कूजकुंजकोकिलसुखदानी ॥ वोलतविमलमनोहरवानी
निलजभईसवकुलकीनारी ॥ गावतिरहप्रतिचढीअटारी
नानाखगकेकीसुकसारी ॥ जहंतहंकरतकुलाहलभारी ॥
मनहिपरसपरनरअरुनारी ॥ देतदिवावतहैंसवगारी ॥
मफुलतिलताविलोकतिभारी ॥ आलिमधुमत्तजातवलिहारी
मानहुंभरिणकादेखिसुहाई ॥ मतवारेलपटतहैंधाई ॥
पहुपपरागअवीरसुहाई ॥ लियेसमीरफिरतहैंधाई ॥
संयोगिनरसभनरसभरहिन ॥ करछांडतमनभायेसवहिन
नवपल्लवदलसुमनसुहाये ॥ घरनघरनविटपनछविछाये
जनुरतिराजसंगछविछाये ॥ वहुरंगभरेलसतजनुठाढे

भवरपुंजनिकरशवदवजततंदसीघारु ॥ ॥
रचीमंडलीमदनजनुजहंतहंविविधिविहार
वृंदाविपिनसमाजकहांलगिवरनवखानिये
कान्हतुम्हारेराजकीडतसवआनंदभरे ॥

ऐसें संग लिये सब ग्वाला॥ करत फागु कौतुक नंदलाला।
भीजि रहे केसर रंग वागे। नखतें सिख गुलाव तें पागे॥
आनंद भरे मुदित सब गावत॥ गुनी जनन के बाल नचावत
वरसाने कौ चले कन्हाई। यह सुधि कुंवरि राधिका पाई
तुरत सखी सब बोल पठाई॥ सुनत सकल आतुर उठि धाई
नव सत सकल मनोहर साजे॥ वरन २ वर वसन विराजे॥
वेंदी भाल विराजति गोरी। मुखतें बोलत तन की छवि गोरी॥
होरी खेल सुनत सब चोपी॥ आई प्रिया निकट सब गोपी
हँसि २ सब सों कहति किशोरी॥ चलहु स्याम संग खेलें होरी
एक रि आज मोहन कौ लीजे॥ मन भाई तिन सों सब कीजे॥
ललितादिक व्रज नागरी मिल सब सजो समाज
तिन मैं श्री कीरति कुंवरि सब हिन की सिरताज
परम रूप की रासि गुण आगर नव नागरी॥
राजति भरी हुलास मन मोहन मन भावती॥
नख सिख लौं सब सुंदरताई॥ रही छाय छवि पुंज निकाई
भूषण जाल लाल नग करे॥ शोभित अंगन सुभग घनेरे॥
मुख छवि वरनि शकै सो को है॥ जाहि देखि मोहन मन मोहै
लसति नवल तन सुंदर सारी॥ केसरिया कीनी जर तारी॥
गुलगच्च कौ लहंगा चटकीलो॥ घेरघनौ अति छवि न छवीलो
कंकण किंकिणि नूपुर वाजे॥ होरी साज सजे सब राजे॥
रंग गुलाल संग सब लीनो॥ सोहति युवति यूथ रंग भीनो
मृग मद केसरि मेल मिलाई॥ मोद २ लीन्हे कलस भराई
हाथन में लीने लव लासी॥ चली स्याम पन पै चपला सी
युवति यूथ ले संग किशोरी॥ नहीं जाय आगे व्रज खोरी॥
उनते आये मदन गुपाला॥ सोहत संग भीर नव बाला॥

कर चूड़ामणि जटित अंगूठी ॥ लसत अंगुरियन आंमिय अनूठी
बाजू बिजौट जटित रतन कौ ॥ चंदन चित्रत स्याम सतन कौ
झलकत मीन मृगा के मांही ॥ सोह्यौ बिम्ब लक्त लस माहीं
कटि पर पट पीरो कसे कनक किनारे चार ॥
तापर रखो से मुरलिका उर स्वतन के हार ॥
तापर ललित बिशाल माल गुलाब प्रसून की
चितवन हंसन रसाल बन्यो छैल नंदलाड़िलो
बन्यौ यूथ सब रंग रंगीलो ॥ माधि नायक नंद नंद छबीलो
खेलत स्याम चले ब्रज होरी ॥ उड़त अबीर गुलाल भकझोरी
बाजत ताल मृदंग सुहाई ॥ डफ मुंहचंग घोन सहनाई
और नगारन की कलजोरी ॥ बीच बीच मुरली सुर थोरी
कोउ नाचै कोउ भाव बतावै ॥ होरी गीत मिलै सुर गावै
ब्रज बीथिन बीथिन सब डोलै ॥ हो हो होरी मिस ते बोले ॥
मिलत गलिन मे जो नर नारी ॥ बचत नहीं दीन्हे बिन गारी ॥
छतर गुलाल ता सुपर डारै ॥ भरि भरि पिचकारी रंग मारै
बोलत होरी बचन सुहाई ॥ करि छिड़त सब मन को भाई
गोरस के रस माते डोलै ॥ घरन घरन के फाटक खोलै
जो कोउ भाजरहत घर बैठी ॥ बरिआई आनत बहिं पैठी
अटन चढ़ीं देखैं ब्रजनारी ॥ छ्यावनतें डारहिं पिचकारी
गावत होरी गीत रव देहिं दिवावैं गारि ॥
डारत भरि भरि गुलाल की झोरी भरि भरि नारि
इत हरि के संग ग्वाल मदित गुलाल उड़ावहीं
पिचकारिन के जाल बरषत हरि के मरल लिव
होत कुलाहल आनंद भारी ॥ रंगो अबीरन महल अटारी
भै गइ ब्रज की बीथिन बीचा ॥ अबिर गुलाल कुमकुमा कीच

ऐसें संग लिये सब ग्वाला॥ करत फागु कौतुक नंदलाला॥
भोज रहे केसर रंग चाये॥ नखतें सिख गुलाब तें पागे॥
आनंद भरे मुदित सब गावत॥ गुनी जनन के घाल नचावत॥
बरसाने कौ चले कन्हाई॥ यह सुधि कुंवरि राधिका पाई॥
तुरत सखी सब बोल पठाई॥ सुनत सकल आतुर उठि धाई॥
नवसत सकल मनोहर साजे॥ बरन २ बर बसन बिराजें॥
बेंदी भाल बिराजति गोरी॥ सुखतें बाल तनन की छबि गोरी॥
होरी खेल सुनत सब चोपी॥ आई प्रिया निकट सब गोपी॥
हंसि २ सब सों कहति किशोरी॥ चलहु स्याम सग खेलें होरी॥
पकरि आज मोहन कौं लीजे॥ मनभाई तिन सों सब कीजे॥

ललितादिक ब्रजनागरी मिल सब सजो समाज॥
तिन मैं श्री कीरति कुंवरि सब हिन की सिरताज॥
परम रूप की रास गुन आगर नव नागरी॥
राजति भरी हुलास मन मोहन मन भावती॥

नख सिख लौं सब सुंदरताई॥ रही छाय छबि पुंज निकाई॥
भूषन जाल लाल नग केरे॥ शोभित अंगन सुभग घनेरे॥
सुख छबि बरनि सके सो को है॥ जाहि देखि मोहन मन मोहे॥
लसति नवल तन सुंदर सारी॥ केसरिया कीनी जर तारी॥
गुलगच की लहंगा चटकीलो॥ घेर घनो शोभित छबि नीलो॥
कंकन किंकिनि नूपुर बाजे॥ होरी साज सजे सब राजे॥
रंग गुलाल संग सब लीनो॥ सोहति युवति यूथ रंग भीनो॥
मृग मद केसरि मेल मिलाई॥ सो थ २ लीन्ह कलस भराई॥
हाथन में लीने लव लासी॥ चली स्याम घन पै चपला सी॥
युवति यूथ लै संग किशोरी॥ नहीं जाय आगे ब्रज खोरी॥
उनतें आये मदन गुपाला॥ सोहत संग और नव बाला॥

आई धाय और सब नारी ॥ लीने पकरि स्याम अंकवारी ॥
हँसि २ कहति सकल ब्रजबाला ॥ दीठ सबहुत दई तुम लाला ॥
सो फल आज तुमहिं सब देहैं ॥ दाव आपनो नीके लैहैं ॥
ठाढ़े हँसत दूर सब ग्वाला ॥ कहत गये पकरे नंदलाला ॥
हँसति कुवँरि राधा दुरि ठाढ़ी ॥ पिय मुख निरखि सकुच उर बाढ़ी ॥
किनहूँ लियो पीत पट छोरी ॥ काजर दियो किनहूँ बरजोरी ॥
काहू बैनी सीस सँवारी ॥ मुख गुलाल लावति कोउ नारी ॥
काहू उर अरगजा लगायो ॥ काहू रंग सीस ढर कायो ॥

गये छूटि मोहन तबै मोहन चले पराय ॥
आय मिले निज सखन में रही नारि पछिताय ॥
कर मीजति पछितात कहति परस्पर बाल सब ॥
भली बनी हीं घात दाव लेन पाई नहीं ॥

गये आज तुम भजि नंदलाला ॥ जैहौ कहाँ कालि गोपाला ॥
करि राखी जैसी तुम हम सों ॥ सो हम दाव लेयँगी तुम सों ॥
पीतांबर अपनो यह लीजे ॥ पठै ग्वाल काहू को दीजे ॥
कै आपही आय लै जाहू ॥ अब हम नहीं पकरि हैं काहू ॥
हँसत सखा सब तारी दै कै ॥ बैनी छोरत हैं कर लै कै ॥
कहत जाहु फिर कुँवर कन्हाई ॥ पीतांबर लै आवहु जाई ॥
भाजत हार लियें तें टूटे ॥ पीतांबर गहने दै छूटे ॥ ॥
तबहिं कह्यो हरि नंद दुहाई ॥ अबहिं पीत पट लेत मगाई ॥
सखा एक हरि निकट बुलायो ॥ युवति भेष करि ताहि पठायो ॥
गयो सो मिलि युवतिन के माहीं ॥ हँसत जाय ठाढ़ो पट पाहीं ॥
कहत देहु पट धरें दुराई ॥ अबनहिं पावहिं कुँवर कन्हाई ॥
अब यह पट हम कौं तब देहैं ॥ दाव आपनो जब हम लैहैं ॥
ऐसी कहि पट लै लियो आयो चमकि गुवाल

पुनि रङ्ग बिसुमन वर षावैं ॥ जै जै करि प्रभु कौं यश गावैं
ऐसें स्याम रंग रस राख्यौ ॥ ललिता आय बीच तब भाख्यौ
आज स्याम तुम औचक आये ॥ हम काहू जानन नहिं पाये
बहुत करी तुम आय ढिठाई ॥ भई मांरू अव कुंवर कन्हाई
कालि प्रात है वार हमारी ॥ देखेंगी मन साध तुम्हारी
ऐहैं नंद गांव लौं प्यारी ॥ रहियो सजग लाल गिरधारी
प्यारी करतें पान लै दीने सखी सुजान ॥
प्रात औध वद खेल को राख्यौ टुढ़ दृति मान
घर आये घनस्याम सखन संग गावत हंसत
गई प्रिया निज धाम सखिन सहित आनंद भरी
परमानंद सकल ब्रज नारी ॥ कृष्ण केलि सुख की अधिकारी
लोक लाज कौ भय नहिं माने ॥ कृष्ण विलास सदा उर आने
श्री राधिका कुंवरि सुखदाई ॥ प्रात सखी सब बोलि पठाई
कियो विचार सकल मिलि गोरी ॥ नंद गांव खेले चलि होरी ॥
मिलि मोहन सों अति सुख कीजे ॥ फगुहा नंद महर सों लीजे
सामा सकल खेल की लीनी ॥ रंग गुलालन सों बहु कीनी
मथि २ विविध सुगंधन लीने ॥ भांति अनेक अरगजा कीने ॥
भरि २ भाजन कनक सुहाये ॥ अमित सुगंधन जाहिं गनाये
लेकावरन अनेक अपारा ॥ चले संग सजि सुभग सिंगारा
ग्वालिन योवन गर्व गहेली ॥ श्री राधा संग चली सहेली
कुंकुम उबटि कनक तन गोरी ॥ रूप रासि सब नवल किशोरी
एक वैश सुन्दर सब राजें ॥ निरखत कोटि मदन तिय लाजें
नव सत साज सिंगार सब अंग २ सब धारि ॥
चंद्रावलि ललितादि सब अमित गोप सुकुमारि
को कवि बरने पार प्यारी सब नंदलाल की ॥

गोपी ग्वाल भरे रूक झोरी ॥ अबिर गुलालन मारहिं गोरी ॥
उड़त गुलाल घटा घन छाई ॥ मांहि केसरि की कीच सुहाई ॥
बाजे सरस मधुर सुर बाजे ॥ गान सुनत गण गंधर्व लाजे ॥
पकरत एक एक छुटि भाजै ॥ गारी पढ़त एक तजि लाजै ॥

हो हो होरी कहत सब भरे परम आनंद ॥
सखिन संग उत लाड़िली इत सखा नंदनंद ॥
औचक धाई बाम गहन होत भये नंदनंद तब ॥
गहि पाये बलराम निकसि गये हरि भागि कै ॥

अति निसंक सब ब्रज की गोरी ॥ तामें अवसर पायो होरी ॥
भरि भरि केसर रंग कमोरी ॥ लै लै हलधर के सिर ढोरी ॥
अबिर उड़ाय अंधेरो कीनो ॥ ललिता गहि हग काजर दीनो ॥
अंग वचन सब कहा तसु नाई ॥ लेहु रोहिणी मात बुलाई ॥
हास बिलास बिविधि कहि गावें ॥ इत उत बल कहूं जान न पावें ॥
कछु मन भावतो मंगाऊं ॥ हलधर छांड़े बिन पकराऊं ॥
हंसत सबन मिलि कुंवर कन्हाई ॥ आये दाऊ आंखि अंजाई ॥
तब हलधर दौं चले हारि कीने ॥ युवतिन धाय स्याम गहि लीने ॥
सिमिट सखा छुड़ावन धाये ॥ युवतिन से हरि छुटन न पाये ॥
लै लै नवल सी नव लाला ॥ दिये हटाय मारि सब ग्वाला ॥
स्यामहि जीत यूथ मैं लाई ॥ भई सबन के मन की भाई ॥
रस लंपट नंदनंद कन्हाई ॥ दीनो आकुल आनि गहाई ॥

लै आई प्यारी निकट हंसति कहति ब्रजबाल ॥
कहिये अब केसी बनी बहुत करत हे गाल ॥
एक कहति मुसकाय बसन हरे ते आपुही ॥
हम हू बसन छुड़ाय लेहिं दाव अब आपनो ॥

कान्ह कह्यो कोरहो कहू मेरो ॥ मोई पाय भयो अब नेरो ॥

शोभाअमितअपारउपमाकौत्रिभुवनमहीं
सुमनसुगंधनगूंथोवेणी॥लटकतकनककचीछविसेनी
मोतिनमांगवनीअतिनीकी॥केसरिआगनटाकटीकी
कुटिलभौंहअलकैंघुंघरारी॥मनमोहनमनमोहनहारी
खंजननैनमधुपमृगहारे॥अंजनरेखसुभगअनियारे
श्रवननतरिवनरविसमजोती॥नकवेसरिलटकेगजमोती
सदनकुंदछविअधरसोहैं॥चिवुकनीलकणछविमनमोहैं
कंठकपोतमोतिउरहारा॥मनुयुगगिरिविचसुरसरिधारा
कुचकंचुकसुरंगविभूषनभूले॥मीनरतिकरीमानहुँदडेकते
करकंकणधूरीगजदंती॥नखमणिमाणिक्यमनरंजनकंती
नाभिहृदेहिकहमकविधरनै॥कटिमृगराजलेतजनुमिरनै॥
घससानूपुरबिछियाबाजै॥चालमरालचलतकलराजै
लहंगाकुसुमपीतरंगसारी॥धमकतपगकेदिसलालिअनी
नखसिखसबशोभाभरीकनीछबीलीमाम
तिनमेंश्रीराधाकुंवरिराजतअतिअभिराम
सखसखनगहिहाथपीरकुमननकौचली॥
होरीहरिकेसाथनंदभांवखेलनचली॥
प्रेमप्रीतिकेसरवसपागी॥नंदनंदनपियकीअनुरागी
बाजेसुघरबजावेगोरी॥गावहिंकोकिलकंठनिहोरी
करतिकेलिकौतुकमनमाहीं॥अबिरगुलालउड़ावतिजाहीं
लीनीघेरिनंदगृहजाई॥जसततहंमनहरनकन्हाई
शोभितरूपलैनासीगोरी॥गावतफागनंदकीपोरी॥
सुनिसुन्दरघरबाहिरआये॥हलधरग्वालगोपालबुलाये
एकतेएकभईसबनारी॥होरीखेलमच्योअतिभारी
मृगमदकुंकुमचंदनघोरे॥लैलेपिचकारीकरदोरे॥

खानपानकरिश्रमहिंमिवारो ॥ वृन्दरि खेलियो निकट संवारो
ल्यावहु अवलाडिल्लीलिवाई । कीरतिजूकी सौंह दिवाई ॥
नवजसुमति पैराधिकाहि ललिताचली लिवाय
सकुच जानिमन स्यामअति छूटेहाहा खाय ॥
हँसे ग्वालमुख फेरि तनशोभा देखत खड़े ॥
बलकोंलीनो टेरि वन्योआज अति सांवरो ॥
कहत सखा सब दै दै सोहन ॥ ऐसेहिं चलौ नंद पै मोहन ॥
चलेभुजागहि तहांलिवाई ॥ छवि अनूप वहु वरनिन जाई
उत सब युवतिन के चित चोरे ॥ चले लाल इत ही अति भोरे
अतिछवि देखि हँसे नंदराई ॥ जननीसुनतिदौरितहँ आई
निरषि हरषिलीन्हे उरलाई ॥ अतिआनंद हृदै न समाई ॥
बारबारकरलेत बलैया ॥ किनयह कीनो हाल कन्हैया
एऐसी सबव्रज की बाला ॥ सकुचत हँसतमनहिं नंदलाला
तुरतस्यामसोइ भेष उतास्यो ॥ काछिपटपीतमुकटसिरधास्यो
युवतिनसहितकुवंरिश्रीस्यामा ॥ आई नंदमहर के धामा ॥
भूषणवसननवीनवनाये ॥ जसुमतिले सबकोंपहिराये ॥
अति सनेह वृषभानदुलारी ॥ अपने हाथसिंगार संवारी
निरषिरूपप्रमुदितनंदरानी ॥ वारतिराई नोन सिहानी ॥
विविधिभांतिमेवामधुरऔरमिठाईपान
सादरसबकीगोद में भरे हरषि नंद रानि ॥
रह्यौ नंद गृह छाय होरी को आनंद अति ॥
कहतिजसोमतिमाय फगुआ कहा सुदीजिये
ललिताकिकह्योऔरकछुनाहीं ॥ लेहिं कान्ह फगुआमाहीं
देखेविन रहि सकहि जु उनको ॥ तो मांगो देहे हम तुम को ॥
बाढ़ो वंदमहर नंदराई ॥ चिरजीवहु वलराम कन्हाई

ऐसेंकहनिरूप अनुरागी॥ मुरलीछोरिबजावनलागी॥
हरिके हाथगहे चंद्रावलि॥ कमललैआई संजावलि
एकनलियोपीतपटछोरी॥ एकरंगगागरि लै दौरी॥
ललितालोचनरंजनलागी॥ एकश्रवणलगिकहु…
एकचिबुकगहिबदनउठावे॥ एकगुलालकपोलनलावे
घेरिरहींपरिघाकीनाई॥ करतिसबे निज मनभाई॥
काहूंवेनीगूंथिसवारी॥ काहूमोतिनमांगसुधारी॥
पहिरावतिलहंगाकोउसारी॥ काहूलेअंगियाउरधारी
निरखिश्यारीमुसकाई॥ रावतआपनकृष्णवड़ाई
काहूव्रदलभूषणलीन्हे॥ नेकहुस्यामपरतनहिंचीन्हे
वधूवधूकहिसवहिंनगायो॥ प्यारीनिकटआनवैठायो
निरखिवदनप्यारीहसीस्यामहंसेसकुचाय
गहिप्यारीनिजपाणितवदीनोपानखवाय
सखियोंकरतिकलोलगांठिजोरिअंचरदई
ब्रजमेंरहौअडोलयहजोरीयुगयुगसदा॥
लीन्हेमध्यस्यामसुखवारें॥ गगनभईअघवपुनसंभारें
पियप्यारीसुखकीछविजोहें॥ अरसपरसदोऊमनमोहे॥
रंगनभरेरंगीले दोऊ॥ ॥ त्रिभुवनछविपटतरघटसोऊ
एकनैनकीसैनमिलावें॥ एकयुगलछविलखिसुखपावे
गावतिएकमहारीकीगारी॥ वजेमंजीराडफ़करतारी॥
भरिभरिमूठगुलालउड़ावे॥ ग्वालनिकटकछुलगननपावे
रहीगुलालघटाछविछाई॥ फूलीमानहुंसांझसुहाई
तवुललिताकीजसुमतिमाई॥ घरभीतरलैवोलपठाई
हांसिकेमहरिवदततनमानी॥ विनतीकरीवहुरिरसदानी
आजभईभोजनकीवेरिया॥ देखहुश्यामराधाकीओरिया॥

सखा संग सब कौं सुख दीनौ ॥ मन भायो गोपिन कौं कीनौ ॥
महर नंद पितु मात कहाये ॥ तिन के हेत देह धर आये ॥
बालकेलि रस सुख करी भारी ॥ दियो परम आनंद मुरारी ॥
गिरि करि ब्रजजन सबही राखे ॥ इन्द्रादिक सुर जे जे भाखे ॥
गाय वत्स बन माहिं चराये ॥ काली नाग नाथ लै आये ॥
करे चरित्र अनेक कृपाल ॥ भक्तन हित प्रभु दीन दयाल ॥

भक्तन के हित लेत हैं प्रभु युग युग अवतार ॥
असुर मारि थापत सुरन हरन भूमि भव भार ॥
गावत संत अपार यश पुनीत पावन करन ॥
पूरि रह्यो संसार करता हरता आप हरि ॥

इक दिन प्रभु भक्तन सुखदाई ॥ नंद हृदय यह मति उपजाई ॥
चालिये आज सरस्वती तीरा ॥ पूजन शंकर सकल अहीरा ॥
लिये संग बल मोहन दोऊ ॥ गोपी ग्वाल चले सब कोऊ ॥
करत कुलाहल आनंद भारी ॥ पहुंचे तहां सकल नर नारी ॥
सरित पुनीत किये अस्नान ॥ मोहे दवन दीने सब दान ॥
देखि देवस्थल अति सुख मानो ॥ संदर पूजे प्रभु भवानी ॥
पूजा करत सांझ ह्वै आई ॥ श्रमित भये सब लोग लुगाई ॥
खान पान करि सहित हुलासा ॥ कियो रैन तहँ वन में वासा ॥
सोये तीर हृदय धर सुखराशी ॥ नव सोये सब ब्रज के वासी ॥
आधी निसि अजगर इक आयो ॥ नंद महर के पग लपटायो ॥
उठे पुकारि चौंकि नंदराई ॥ आये ब्रजवासी सब धाई ॥
अजगर देखि डरे सब कोई ॥ लगे छुडावन छुटत न सोई ॥

हारे यत्न अनेक करि सर्प न छाडै पाय ॥ ॥
कृष्ण कृष्ण करि नंद तब गुहरायो अकुलाय ॥ ॥
सो अति व्याकुल गये ग्वाल नवहीं स्याम जगाय के

मुनिप्रसाद सोरज मैं पाई ॥ कहंलगि मुनिकी करौं बड़ाई
दीनदयाल जगत हितकारी ॥ संतसमान नकोउ उपकारी
ऐसें बिद्याधर सुखमानी ॥ नंदहि अपनी कथा बखानी
बहुरि कृष्णचरणनसिर नाई ॥ गयो लोक निजहर हरषाई
दो॰ नंदादिक आनंद सब महिमा देखि पुनीत
कहत परस्पर कृष्णगुण भई तहां निसबीति
सो॰ आये सब ब्रजधाम प्रात होत आनंद सों
संग स्याम बलराम प्रभु ब्रजबासी दास के ॥

अथ शंखचूड़बध लीला ॥

इकदिन सुन्दर मदनगुपाला ॥ श्रीबलदेव औरसंग ग्वाला
दिवस अंत निससमय सुहाई ॥ उदित उडुप उडुगण छबिछाई
प्रफुलित चाउ मालती सोहै ॥ कुमुद सुगंध पवन मन मोहै
गुंजत भंवर मत्त रस लोभा ॥ चले तहां देखन बन शोभा ॥
ग्वालन मिलगाको दोउ भाई ॥ कबहुंक बजावत बेणु कन्हाई
ब्रजबनिता गण चहुंदिस घेरै ॥ चली सुनत बंसी की टेरै ॥
जिनके तनमन बसे कन्हाई ॥ मगन भई छबि लषि अधिकाई
पहुंची थी वृंदावन जाई ॥ गोपी ग्वाल संग समुदाई ॥
बेहरत वन विहार दोउ भाई ॥ गोपी ग्वाल साथ सुखदाई
महा मंद गति इत उत डोलैं ॥ मृदु मुसकाय ललित मृम मोलैं
रूपरास निधि छबि दोउ बीरा ॥ बैठे जाय जमुन के तीरा ॥
पाछे सखा बृंद सब सोहैं ॥ सन्मुख गोपीजन मन मोहैं ॥
दो॰ करत गान मिलि मुदित सब भरे प्रेमरस माहिं
भये मगन उठ मत्त जिम रही देह सुधि नाहिं ॥
सो॰ बाजत ताल मृदंग बीन चंग मुरली मधुर ॥

सोदुख सबकौं सुरत भुलायौ ॥ परमानंद सबन उपजायौ ॥
करत विविधि विधि हास विलासा ॥ गृह आये पुनि सहित हुलासा ॥
नवकिशोर सुन्दर सुखदाई ॥ ब्रजजीवन बलराम कन्हाई ॥
ग्वाल बाल गायन के साथा ॥ क्रीडा करत ललित ब्रजनाथा ॥
दो॰ देखि देखि हरि के चरित परम चरित्र उदारि
निसि दिन सब प्रमुदित रहत ब्रजवासी नर नारि
सो॰ हरन सकल भय भीर दुष्ट दलन जन हित करन
नंदनंदन बलवीर ब्रजवासी प्रभु सांवरे ॥

अथ वृषभासुर बध लीला

नंदनंदन संतन हितकारी ॥ कमल नैन प्रभु कुंज बिहारी ॥
मुरली मुकट धरैं ब्रज राजे ॥ कोटि काम निरषत छबि लाजे ॥
नित नव सुख ब्रज में उपजावें ॥ सुर नर मुनि त्रिभुवन यश गावें ॥
सुनि रूप आगम कृष्ण गुन गाहा ॥ कंस असुर उर दारुण दाहा ॥
जो जेहि भाव ताहि हरि तैसे ॥ हितको हित औरन को तैसे ॥
हित अनहित यह प्रभु की लीला ॥ सदा स्याम सुन्दर सुखशीला ॥
रीझ खीज हरि को जो ध्यावे ॥ परमानंद परमपद पावे ॥
रहे कंस उर ध्यान सदा ही ॥ नंदनंदन पल बिसरत नाही ॥
प्रभु भाव सोचत दिन राती ॥ नंद सुवन मारौं केहि भांती ॥
असुर एक अरिष्ट नाम बल भारी ॥ एक दिवस नृप लियो हंकारी ॥
तासों करि सब मरम बुझायो ॥ बल सराहि ब्रज माहि पठायो ॥
नंदनंदन मारन के काजा ॥ चल्यो असुर करि गर्व समाजा ॥
दो॰ नृप कौ सासन नाय के कह्यो अरिष्ट सुनाय
कितिक काज महराज यह मैं करि आवत जाय
सो॰ तुम असुरन के राज इतन को सोचत कहा

[illegible] कै परस्यो रसरंग उडनि निरखौं तान की [illegible]
प्रेममगन सब गोपकुमारी ॥ [illegible] विनिरखति मुरली [illegible]
सिथिल बसन कच सीस सुहाये ॥ विहवल तन मन [illegible]
को हम कहां नहीं कछु जाने ॥ नैन स्याम के रूप सुमाने ॥
रहीं श्रवण मुरली धुनि छाई ॥ गेह्यन की कछु सुधि नहि पाई
चन्द्रवदन मृगलोचनि गोरी ॥ हरि मुसक्यान सुनत भई भोरी
तहां यक्ष ओ धनद इक आयो ॥ शंखचूड़ नाम तहीं गायो ॥
सो वह धनद अनुग अभिमानी ॥ प्रभु प्रभाव नहि जानत अज्ञान
देखत ही बलराम कन्हाई ॥ सब गोपिन ली सो अपनाई
घेर लेत जिमि गाय अहेरा ॥ उत्तर दिस ले चल्यौ अंधेरा ॥
जब गोपिन हरि देखे नाहीं ॥ भयो चेत तब क[illegible] मन माहीं
कह्यो जाति हम काके साथा ॥ भई विकल जिमि पंख अनाथा
कृष्ण २ तब टेरन लागी ॥ महा दुखित अति भय सो पागी

सुनत श्रवण आरत वचन उठि आतुर दोउ भाय
आनि समीप गोपीन के तुरतहि पहुंचे जाय ॥
सो० मैं आयो हो धाय मत डरपो तिनसों कह्यो
अब हीं लेत छुड़ाय तुम्हैं मारि या दुष्ट को ॥

शंखचूड़ फिर कै तब देख्यौ ॥ काल मृत्यु सम दुहुवन पेख्यौ
भयो त्रसित तब मूढ़ सभागो ॥ युवतिन छोड़ जी ले भाग्यौ
गोपिन पास राखि बल भाई ॥ ता पाछे पुनि चले कन्हाई
अति ही निकट धाय कै लीनो ॥ लूका एक ताके सिर दीनो ॥
भयो प्राण बिन अधम अन्याई ॥ प्रभु मन आप उत्तम गति पाई
इतौ एक मणि ताके सीसा ॥ सो ले आये हरि जगदीसा ॥
दीनो सो बलकौ नंदलाला ॥ प्रमुदित भई देखि ब्रजबाला
गोपी ग्वाल सहित दोउ भाई ॥ पद्यौ रास कियो सुखधन में आई

आवत जात असुर जब हर्यो ॥ यों वृष मोड़ि धरणि पछार्यो
पर्यो असुर परवत आकारा ॥ मुख ते चली रुधिर की धारा
असुर मारि उत्तम गति दीनी ॥ जै जै ध्वनि देवन नभ कीनी
भये सुखी सब सुर समुदाई ॥ बरषि सुमन अस्तुति मुख गाई

चकित भये लषि परस्पर कहत सकल ब्रजबाल
हम जान्यो कोउ वृष महै यह तो असुर कराल ॥
दुष्टदलन गोपाल मुदित कहत नर नारि सब ॥
भक्तन को रछपाल ब्रजबासी नंद लाडिलो ॥

अब अरिष्ट मार्यो गिरधारी ॥ भयो कंस सुनि बहुत दुखारी
आये ऋषि नारद तिहि काला ॥ कह्यो कंस सों सुनि भूपाला
जिन मारे सब असुर तुम्हारे ॥ ते नाहिं होहिं नंद के बारे ॥
मैं जान्यो निश्चय यह भयऊ ॥ है बसुदेव पुत्र ये दोऊ ॥
कन्या लै जो तुमहिं दिखाई ॥ सो वह हुती जसोमति जाई
भयो कछू यह छल सुन राजा ॥ को जानै करता के काजा ॥
पहलो पुत्र भयो है जबहीं ॥ कही हुती तोसों मैं तबहीं ॥
अपनो सो बहुतें तुम कीनो ॥ सो क्यों मिटै जो बिधि लिषि दीनो
करहु यत्न तुम अबहुं सबारे ॥ यह कहि नारद स्वर्ग सिधारे
उठ्यो कंस सुनि मुनि की बानी ॥ भयो शोच बस मूढ़ अज्ञानी
प्रथम देवकी अरु बसुदेऊ ॥ छोड़ दये बन्द ते दोऊ ॥
बहुत बुरो मान्यो तिन पाहीं ॥ राखे बहुरि बंद के माहीं ॥

कैसे मारौं कहा करौं निसिदिन यहै विचार
साल रहै नृप कंस उर हल धर नंद कुमार ॥
अब धौं पठऊं काहि मन ही मन सोचत खरो
काहू न मार्यो ताहि असुर गये ते सब मरे ॥

अथ केशी वध लीला

कह्यौ जाय आतुर हरि पाहीं ॥ अश्व एक आयौ ब्रज माहीं
अति विकराल न जात बतायो ॥ कैधौं बहुरि असुर कोउ आयो
ब्रज आयौ केशी असुर जान लियो नंदलाल ॥
सन्मुख ताके हरषि कै चले कंस के काल ॥
सीस मुकुट वनमाल कटि कसि बांध्यौ पीतपट
उर भुज नैन विशाल असुर विमोहन सुर सुखद
जब केशी देखे हरि आवत ॥ भयो क्रोध करि सन्मुख धावत
अति बल दोउ चरण उठायो ॥ प्रभु के उर कौं चरण चलायो
देखत डरे सकल ब्रजवासी ॥ गहे बीच हरि अरि अविनासी
छूटन असुर बहुत बल कीनो ॥ ठेलि स्याम पाछे तब दीनो
गिरयो धरणि पर मूर्छित भारी ॥ उठ्यो क्रोध करि बहुरि संवारी
दाव घात करि कै बहु धावै ॥ पुनि २ चरण चपेट चलावै
अति ह्वै वेग हरि जात बचाई ॥ करत युद्ध कौतुक सुखदाई
देखत सुर मुनि चढ़े अकासा ॥ कछु हर्ष मन कछुइक त्रासा
तकत गोप गोपी में बाढ़े ॥ चकित चित्र लिखे से ठाढ़े
बदन पसार असुर तब धायो ॥ चाहत हरि कौ मुख मे नायो
तब हि स्याम यह बुद्धि उपाई ॥ दियो हाथ ताके मुख नाई
दांतन दाव सक्यो सो नाहीं ॥ वज्र समान भयो मुख माहीं
एक हाथ मुख नाय के तुरत केश गहि धाय
बली सुवन नंदलाल के पटक्यो सीस फिराय
शब्द भयो आघात धर कोउ रसुन कंस को
नंद महर के तात जान्यो केशी को हत्यो
देखत सुरगण भये सुखारी ॥ वरषे सुमन सुमंगलकारी
गावत जै यश प्रभु हि सुनाई ॥ असुर निकंदन जन सुखदाई
प्रफुलित भये सकल ब्रजवासी ॥ बढ़ौ हर्ष उर मिटी उदासी

असुरनमाहेंवड़ौवलधारी॥केशीअसुरवीरअतिभारी
केसताहितवेवोलिपठायो॥अतिआदरकरिढिगवैठाये
कहतकंसकेसीसुन मोसों॥जोकीवातकहत मैं तोसों
मोसमानराजाकोउनाही॥मेरीआनसकलजगमाहीं
एसेवकमेरेनहिं ऐसे॥ ॥जैस मैं चाहत हौ तैसे॥
जासौं कहौं वाते मैं जोई॥कारिआवैकारजयह सोई
तातेंमोहियहीपछतायो॥तवकेशीकहिवचनुसुनायो
ऐसौकहाकठिनप्रभुकाजा॥जाकोतुमसोचतहौराजा
तुमहौसवअसुरनकेनायक॥औरकौनदूजौतुमलायक
जाहिक्रोधकरिचितवौजवहीं॥ताकोनासहोयनृपतवहीं
आयसकहामोहिकिनदीजे॥सोकारजअवहीहमकीजे
यहसुनिकंसहरषजियआन्यो॥केशीकोंवहुभांतिवखान्यो

असुरवंससवहीहुतेकाहिकहौंव्रजरान॥
नंदमहरकेछोहराकरिआवैविनमान॥॥
कियौनतिनकछुकाजआगेजेपठयेअसुर
यहसुनिकेसतिलाजमारेसवनंदलालकन

तातेकछुहैहैमैंजानत॥वड़ौवीरताकौमैंमानत॥
ताकारणव्रजतोहिपठाऊं॥वहुतऔरकोहिकहासिखाऊं
जेहितेहिविधिछलवलकरिकेउ॥मारिआवनंदवालकदोउ
खेलैआववांधदोउभैया॥कहौंजिन्हेंवलरामकन्हैया
यहसुनिगर्वअसुरभटकीनो॥चल्योव्रजहिनृपआयसुदीनो
गनैहिकहतदेखौंभौंताही॥केसनपतिडरपतिहैजाही
अश्वरूपह्वैव्रजमेंआयो॥धनिवलगरजहिचहुदिसधायो
वेगवतअतिवपुषविशाला॥अस्तग्रीवपूछविकराला॥
जितातितभाजचलेनरनारी॥भयेविकलसवअतिभयभारी

व्योमासुर यह वुद्धि उपाई॥ प्रथम वालकन लेहु चुराई॥
इकलो करि जव हरि कौं पाऊं॥ तव मारौं के गहि लै जाऊं॥
दो॰ दुरत जाय वालक जहां तहां असुर संग जाय
गाव्हहिं एके एक लै परवत माहिं दुराय॥
रहे गे थोरे ग्वाल जव यों वहु वालक हरे॥
तव जान्यो नंदलाल व्योमासुर के कपट कौं
धरयौ धाय तव कुंवर कन्हाई॥ हरि सौं ताकी कहा विसाई
तुरत असुर लै भू पर पटक्यो॥ प्राण देह तजि सुर गहि भटक्यो
असुर मार के दीन दयाला॥ वालक साधन चले गुपाला॥
ऋषि नारद आये तेहि काला॥ देखि स्याम भुज दंड विशाला
उपज्यो प्रेम हरष उर पावन॥ वीन वजाय लगे यश गावन
जैजै ब्रह्म सनातन स्वामी॥ आदि पुरुष प्रभु अंतर जामी॥
अलख अखण्ड अनंत अपारा॥ जो जाने प्रभु रूप तुम्हारा
सकल सृष्टि के सुरजन हारे॥ पालन लै सव स्याम तुम्हारे
युग २ यह अवतार गुसाईं॥ भक्तन हित प्रभु लेत सदाई
धरणी भार पाइ वहु भारी॥ सुरन संग लै जाय पुकारी॥
त्राहि त्राहि श्रीपति दैत्यारी॥ राखि लेहु प्रभु सरण उवारी
राज अनीति सुरन तव भाषी॥ शशि अरु सुर भये सव साषी
दो॰ क्षीर सिंधु अहि फेण प्रभु श्रवण न परीउकार
तव जान्यो सुर संत महि दुखित दनुज के भार
करयो भूमि अवतार सिंधु मध्य वानी प्रगट
श्रीपति प्रभु अवतार जगत्राता हंता असे
मथुरा जन्म गोकुल हि आये॥ मात पिता सुख हवे पाये
पय पीवत ही वकी विनासी॥ भयो असुर सुनि कंस उदासी
यहि अंतर वहु दनुज पठाये॥ ते प्रभु सव कौतुक हि नसाये

धायधायहरिकौंभवभेटैं॥ धन्यरकहिकहिदुख मेटैं॥
वडोदुष्टमोहनतुममार्यो॥ ब्रजवासिनकोप्राणउवार्यो
कान्हहिसदासहायहमारे॥ धन्यधन्यमोहनगिरिधारे
लियेलायउरजसुमतिमैया॥ पुनिरसुखकौलेतिवलैया
नंददेरिकआनंदअतिकीनो॥ वहुतदानविप्रनकोदीनो
हरिकोलेयपुनिरउरलगावति॥ मुखचूंवतलायि कौसुखपा
केशीमारिस्यामघरआये॥ भयेसकलआनंदवधाये॥
घरघरसवब्रजलोगलुगाई॥ नंदनंदनकीकरतवडाई॥
ब्रजवासीप्रभुजनप्रतिपालक॥ संतनसुखदअसुरकुलघालक

धनिधनिब्रजमैंअवतरेभक्तनकेहितआइ॥
सुखसागरशोभाअधिकवसविधित्रिभुवनराइ
वलमोहनदोउभायथिरजीवहुजोरीयुगल
देतअसीसमनाय ब्रजवासीप्रभुकोसवै॥

अथव्योमासुरवधलीला

दूजेदिनसुन्दरब्रजनाथा॥ गयेवनहिंगायनकेसाथा
वलदाऊअरुग्वालसुहाये॥ शोभितसंगसुभगमनभाये
गईगायवनमेंअगवाई॥ जहंतहंचरनलगीसुखपाई
ग्वालनसंगस्यामअनुरागे॥ चोरमिचौनीखेलनलागे॥
भयेमगनतनसुधिकछुनाहीं॥ दौरतदुरतफिरतवनमाहीं
तवहिंकंसकेशीवधसुनिकै॥ वारवारसोचतसिरधुनिकै
व्योमासुरइकअतिवलवाना॥ मायाचरितवहुतसोजाना
पठयोताकोतवब्रजमाहीं॥ मारनकह्योस्यामकोताहीं
गोपभेषधरिसोब्रजआयो॥ ढूंढतहरिकोवनमेंपायो॥
गयोसमायसखनकेमाहीं॥ सोकोकिनहूंजान्योनाहीं

गायगोपहलधरसोहितभयेपरमआनंद
सोरूसमैंवनसेचलेब्रजकौंश्रीनंदनंद ॥
आयेनंदअवास प्रभुब्रजवासी दास के
गयेकंसकेपास ऋषिनारदमथुरापुरी
नारदगयेकंसकेपासा॥ मनमारे सुख करे उदासा॥
आदरकरिआसन वैठाये॥ हरपिकंसमुनिनिकटवुलाये
कैसें सुख ऋषिमनकौंमारे॥ कहुचिंतामनवढीतुम्हारे
नारदकहीसुनो होराऊ॥ कहवैठेकछुकरहुउपाऊ
त्रिभुवन मेंनाहींकोउएसो॥ देखोनंदसुवनमें जैसो॥
करतकहाराजधानी एसो॥ उपजीतुमकोवातअनैसो
दिनभयौप्रवलवढ़भारी॥ हमसवोहितकोकहतुम्हारी
तववोल्यो नृपगर्वितवानी॥ कहनारदतुमकहावखानी
यदपिकहतहोतुमहितकेरी॥तदपिवरावरवहनाहिंमेरी
कोटिदनुजमोसममपासा॥ जिनकोदेखिसुरनमनत्रासा
कोटिजिनकेसंगयोधा॥ जीतसकेकोजिनकेक्रोधा
तिनकोवलकहाकहवनाई॥ देखतजिनकोकालडराई
रहतद्वारसेतनखरीकोटिभवनकोभीर॥
अतिप्रचडकोदंडधरिमहावलीरणधीर
महामत्तगजएकत्रिभुवनगामीकुवलिया
एसेसुभटअनेकनामीसुभटनकोगने ॥
कहाग्वालकेवालकदोऊ॥ यदपिवलीउपजेहैंकोऊ
भजोलोगब्रजकेसवमेरे॥ सेवाकरतसदारहमेरे॥
तातेंसकुचत होउनकाजा॥घालकसुनतहोतमोहिलाज
भलीकरीयहवातवुझाई॥ मनकीडारीखुटकमिटाई
सुनहुऔरनारदमुनिहमसों॥ कहतमतेकीवानीतुमसों

नंदजसादावालकजान्यौ॥गोपिनकामरूपकरिमान्यौ
धन्यधन्ययेव्रजकेवासी॥जिनवसकियेव्रह्मसुखरासी
मनवुधिवचनतकेन्यारे॥निगमअगमनपरतविचारे
तेव्रजयुवतिनवनहिंविहारे॥कमलनैनप्रभुनंददुलारे॥
नीलजलजतनसुन्दरस्यामा॥मोरमुकटराखेअभिरामा॥
मुरलीधरपीताम्बरधारी॥वनमालाधरकुंजविहारी॥
वसहुरूपयहउरवरपाऊं॥वहुरिनायप्रभुविनयसुनाऊं
यहअबलाजवहिंप्रभुलीनो॥आयसुसुरनयहप्रभुकीनो
दैत्यदहनसंतनसुखकारी॥अबमारहुप्रभुकंसप्रचारी

दो० जवयहगाथागायकैनारदकह्योसुनाय
वोलेप्रभुतवकरिकृपासुधावचनमुसकाय
जाइवेगमुनिरायकरहुसुरनकोकाजयह
पठवहुमोहिवुलायनृपअबआयसुतेंमधुपुरी

जवप्रभुहंसियहआयसुदीनो॥तवप्रणामप्रभुकोऋषिकीनो
हरषिचलेमुनिनृपकेपासा॥येहवुद्धिमनकरतप्रकासा
येहवातहलधरसमुझाई॥जोवानीऋषिगयेसुनाई॥
तुमप्रभुअषिललोककेकारन॥जन्मेहैभवभारउतारन
परमपुरुषअविगतअविकारा॥अविकारीअद्वैतअपारा
सिंधुरूपजनहितसुखकारी॥त्रिभुवनपतिश्रीपतिअसुरारी
शेषधराजवऐसोभाख्यो॥सुनि२स्यामहृदैसवराख्यो॥
तवहंसिकह्यीभ्रातसोवानी॥जोतुमकहतवातमैंजानी
कंसनिकंदननामकहाऊं॥केसगहौंपुहमीरघसीटाऊं
ऐसेंप्रभुहलधरसमुझाये॥वालकवहुरिसाथसवलाये
व्योमासुरमारयोनंदलाला॥भयेमुदितसवदेखिगुवाला
धन्य२सवप्रभुकोभाखै॥कहतआजतुमहमसवराखे

गायगोपहलधरसहितभयेपरमआनंद
सांझसमैवनसेचले ब्रजकौश्रीनंदनंद ॥
आयेनंदअवास प्रभु ब्रजवासी दास के
गयेकंसकेपास ऋषिनारदमथुरापुरी
नारदगयेकंसकेपासा ॥ मन मारे मुख करे उदासा ॥
आदर करि आसन बैठाये ॥ हरषि कंस मुनिनिकट बुलाये
कैसे मुख ऋषिमनक्यों मारे ॥ कहहु चिंता मन बढ़ी तुम्हारे
नारदकही सुनौ हो राऊ ॥ कहहु वैठेकछुकरहु उपाऊ
त्रिभुवन में नाही कोउ ऐसो ॥ देखौ नंदसुवन में जैसो ॥
करतकहा रजधानी ऐसी ॥ उपजी तुमकौ बात अनैसी
दिनभयौ प्रबलबड्भारी ॥ हमसबहितकी कहीतुम्हारी
तब बोल्यौ नृपगर्वितबानी ॥ कहहु नारदतुम कहाबखानी
यदपिकहत हौ तुमहितकेरी ॥ तदपिबरावरवहुनाहिमेरी
कोटि दनुजमो सममो पासा ॥ जिनकौ देखिसुरनमनत्रासा
कोटि ऐजिनके संग योधा ॥ जीतसकैको जिनके क्रोधा
तिनकौबलकहकहूबनाई ॥ देखत जिनकौ कालडराई
रहत द्वार संतनखरी कोटिभवनकीभीर ॥
अतिप्रचंड कोदंड धरिमहावलीरणधीर
महामत्त गज एक त्रिभुवन गामी कुवलिया
ऐसे सुभट अनेक नामी सुभटन को गने ॥
कहा ग्वाल केवालक दोऊ ॥ यदपिवली उपजे हैं कोऊ
प्रजा लोग ब्रजके सब मेरे ॥ सेवाकरत सदा रहे मेरे ॥
तातें सकुचत होउनकाजा ॥ बालकसुनतहोतमोहिलाजा
भली करी यहवात बुझाई ॥ मनकीडांरी खुटक मिटाई
सुनहु और नारदमुनिहमसों ॥ कहत मतेकीवानीतुमसों

सो० हाथ जोरि सिर नाय पुनि बोल्यो सन्मुख रह्यो
लीनौ ढिग बैठाय परम बचन कहि कंस तब
आयहि और तहाँ कोउ नाहीं ॥ बोल्यो नृप सुफलक सुत पाहीं
काल्हि जु गये नारद ऋषि ज्ञानी ॥ सो सब कहि कै प्रगट बखानी
सुनि [illegible] कहत सत ता कौं ॥ स्याम राम सालत उर मो कौं ॥
[illegible] हि लिहि विधि अब उनकौं मारौ ॥ यह कछु दोष हृदै नहिं धारौ
पठहु काल्हि जाहि ब्रज जोई ॥ कहै भाँति करि नंदहि सोई ॥
[illegible] मोहन नृप सन सुहाये ॥ तुमहिं सहित नृप राज बुलाये
[illegible] ॥ है नृप कौ देखन की साधा
[illegible] आये ॥ तब तें नृप के मन तें भाये ॥
[illegible] सीस दुहूँ अब दैहैं ॥ इनके बचन सुनत सुख पैहैं ॥
[illegible] काल्हि कै उनकौं लै आवौ ॥ भेद सु कोऊ जान न पावै ॥
[illegible] काल्हि जब कंस सुनायौ ॥ तब अक्रूरहि धीरज आयौ
[illegible] कहत कहा यह भावै ॥ भेद सो कोऊ जान न पावै ॥
दो० कियो विचार अक्रूर तब कहत जु कछु मैं और
तो मारहि सो माहि यह अब ही याही ठौर ॥ सो०
कह्यौ मानि है नाहिं काल याहि आयो निकट
यह विचार मन माहिं सुफलक सुत बोल्यो हरषि
सुनहु नृपति नीके मन आनी ॥ धनि धनि नारद सत्य बखानी
वे हैं शत्रु हमकौं वे दोऊ ॥ उपजे नंद भवन में कोऊ ॥
[illegible] नृपति यह काजा ॥ तुम सरि और कौन में राजा
सुख तें आय सु जो करि पाऊँ ॥ भोर बेग तहिं ब्रजहि पठाऊँ
सुफलक सुत यह कही सयानी ॥ तब हरष्यो नृप सुनि यह बानी
फिरि [illegible] कहत हिये गर वाइ ॥ प्रात बोलि मारौं दोउ भाई ॥
आधी निसि लौं यह मन कीनो ॥ तब अक्रूर बिदा कर दीनो ॥

पर्यौसेजआलसजियजानी॥सेवाकरनलगीसवरानी
नृकपलकलागीअपकाई।लखेसपनवलरामकन्हाई
कालसरसदोउदेखडरानी॥स्रूकिउमौभरयोससकानी
देख्यौजायतहांनहिंदोऊ॥चकितभईरानीसवकोऊ
ढूंढनलगीसवैअकुलाई॥कहस्रूकेसपनेनृपराई॥
महाराजस्रूकेकहासपनेआजसकाय॥
काहियेकाकोशोचअतिजीमेंरह्योसमाय
तवमनमेंसकुचायसहजाहिरानिनसोंकह्यो
भेदनभयोजनायमनसंकाउरधुकधकी॥
सावधानप्रतिपालकरायो।अहेतहयोधासकलजमायो
स्यामरामभयपलकनलावैं।अंतरशोचनप्रगटजनावैं
जागयौआपसंगसबनारी॥भईप्रभासोनिसिजुगतैंभारी
वैठतकवहूंउठतअकुलाई॥ठाढोहोतकवहूंअंगनाई
द्वारपालीसोपूछपठावै॥वारवारनिसिखवरमंगावै॥
सोचतसवमनहिकहाकरिहैं॥क्रोधमसोनृपकासिरपरिहैं
कहींघरीनिसिगोपिकनवाकी॥इकअसएकपहरगतिताकी
कहैतिअवजाहियोंकाहिपठाऊं॥जासोंकहिनंदसुयनमंगाऊं
पठवौंअक्रूराहिकोंजाई॥त्यावैंव्रजतैंढगिदोउभाई॥
इतदेख्यौसपनोनंदराई॥वलमोहनकहुंगयेहिराई॥
ग्वालनवालसोचनपछताहीं॥कहतस्यामतौअवव्रजनाहिं
संगहिंखेलतरहेहमारे॥निदुरहोयकहुंअनतसिधारे
दूतएककाउआयकैसंगलैगयोलिवाय॥
घाहीकेदोउव्हैगयेव्रजवासिनविसराय
अतिव्याकुलनंदरायसुरछिपरेधरणीसुनत
विवसजसोदामायस्यामविरहव्याकुलसरी

व्याकुल नर नारी ब्रजवासी ॥ पसु पंछी सब परम उदासी ॥
रोवत गिरत धरनि दुख पागे ॥ अति अकुलाय नंद जब जागे
धक धकात उर श्रवत नैन जल ॥ सुत अंग परसन लागे शीतल
सुसकति सुनत अति हि अतुरानी ॥ कह भरम पूछत नंद रानी
वैन नही कछु भेद जनायौ ॥ स्याम हि लषि धीरज उर आयौ ॥
अति प्रभात रवि उगन न पायौ ॥ सुफलक सुत उत कंस बुलायौ
सुनत हि द्वार पाल उठि धायौ ॥ सोवत तें अक्रूर जगायौ ॥
कह्यौ वेगि चलिये नृप पास ॥ समझि मंत्र निसि चल्यौ उदास
ठाढ़ो नृपति द्वार ही पायौ ॥ देखत दूर हि ते सिर नायौ ॥
अति आदर करि निकट बुलायौ ॥ सरोपाव नृप तुरत मंगायौ
अक्रूर हि निज कर पहिरायौ ॥ बहुत कृपा करि वचन सुनायौ
त्याव नंद मह र सुत दोऊ ॥ तुम सम और चतुर नहिं कोऊ

सुख ह रख्यौ अक्रूर सुनि हृदय गयौ बिलखाय
असुर त्रास जिय में पस्यौ वचन कह्यौ नहिं जाय
दीनौ रथ हि चढ़ाय जाहु वेग ब्रज नृप कह्यौ
लै आवहु दोउ भाय अब हि बिलंब न कीजिये ॥

तब अक्रूर कह्यौ कर जोरी ॥ सुनहु देव विनती इक मोरी ॥
बलमोहन भ्रात हि दोउ भैया ॥ बन को जात चरावन गैया ॥
जो उनको घर में नहिं पाऊं ॥ ताते प्रभु यह बात सुनाऊं ॥
आज नंद ग्रह बसिहौं जाई ॥ प्रात हि लै आवहु दोउ भाई
ऐसे जब अक्रूर जनायौ ॥ कंस बात यह मान पठायौ ॥
सीस नाय तब रथ चढ़ि हांक्यौ ॥ सुफलक सुत ब्रज सन्मुख ताक्यौ
बहु प्रसंस सब मल्ल बुलाये ॥ चाणूरादि सकल चढ़ि आये ॥
तिन सों कह्यौ सुनो सब वीरा ॥ ब्रज में रहत जु नंद अहीरा
कहियत बली तासु सुत दोऊ ॥ राम कृस्न जिन कहै सब कोऊ

वहुतअसुर मेरेउनमारे॥ तातें हैवे शत्रु हमारे ॥
उनकोमधुपुर आनवुलायो॥सुफलकसुतकोभेजनपठायो
उनकोमतिजानोशिशु धारे॥ हैवे महाकठिनवलभारे॥
रंगभूमितातें रचोचित्रविचित्र वनाय॥
सावधानह्वै फेनहोरहौमल्लसवजाय॥
सो ऊंचोएकमचानतहं अतिसुन्दररच्यो॥
जहांअसुरपरधानवैठेसवमेरेनिकट॥
योधाओरअनेकवुलाये॥ सावधानकरिसववैठाये॥
तातेंपौरपौर के वाहर॥ रहैकुवलियागजतेहिठाहर
राखोद्वार मीसरेजाई॥ गारूवकरितनअतिधनुषधराई
वहुभटतहांरहै रखवारी॥ अस्त्र शस्त्रधारीवलधारी
ऐसे सजग रहौ सवकोऊ॥ अवआवै वेवालक दोऊ॥
प्रथम धनुषउनसोंचढवावो॥ उन्हें कहोअवधनुषउठावो
जव वे धनुषउठावैंनाहीं॥ घेरलेहु उनकोतेहिठाहीं॥
ताहीठौरमारिदोउलीजो॥भीतरलोआवननहिंदीजो
जोकदापिवहांतेंचलिआवें॥तौगजपैंआवननहिंपावें
डारोगजकेचरणरुंदाई॥तुमसोंराखतअवाहिंजनाई
जोछलवलकरिकैवैविषआवैं॥रंगभूमिआवननहिंपावैं
तौसव मल्लमारिउन लेहू॥ मोसमीपआवनमतिदेहू॥
होयठौरहिठौरसजाय ऐसेसजगरहौइहिभांति
जोहितेहिविधिमारौउन्हेंनहीदूसरीघात ॥
मन मनमोजवढाय ऐसे आज्ञादैसवन॥
गयो सदननृपरायसुनहुकथाअक्रूरकी॥
सुफलकसुतमनसोचअपारा॥ हैनृपकंसवडो हत्यारा
मंत्रकियोमिलमेरेसाथा॥ पठयोमोहिलैनव्रजनाथा॥

कैसें आनिदेहु मैं जाई ॥ मो देखत मारे दोउ भाई ॥
नगर निकसि रथ कीनों ठाढ़ौ ॥ पस्यौ विचार हृदै अति गाढ़ौ ॥
आज मुकुंद चरण सुमिरि कै ॥ आयो नीर लोचन निदुर कै ॥
अति बालक बल राम कन्हाई ॥ कहा करौं कछु गहि विसराई ॥
मोहि मारि औरू वंद कराये ॥ यह विचार करि रथन चलावै ॥
पुनि रक्षक हरे मैं ध्यावै ॥ चलत फिरत कछु ध्यान हि पावै ॥
प्रभु कृपाल सब अंतर जामी ॥ सुफलक सुत मन पूरण कामी ॥
सुमिरत कृष्ण हृदै यह आई ॥ वे श्रीपति प्रभु त्रिभुवन राई ॥
अखिल जगत के कारण कर्त्ता ॥ उतपति पालन अरु संहर्ता ॥
भूमि भार टारन अवतारा ॥ को जाने गुण रूप अपारा ॥

धन्य कंस जिन मोहि ब्रज पठयो लेन गुपाल
जाय रूप वह देखि हौं निगम नेति नंदलाल ॥
यह विचार उर आन रथ हांक्यो अक्रूर तब ॥
भयो शकुन शुभ वाम सुगगण आये दाहिने ॥

दाहिने देखि मृगन की माला ॥ सुफलक सुत उर हर्ष विशाला ॥
कहत आज इन शकुनन जाई ॥ भुज भरि मिलिहौ प्रभु सुखदाई ॥
श्याम सुभग तन परसि सुहावन ॥ इंदु वदन त्रय ताप नसावन ॥
अंग त्रिभंग किये गोपाला ॥ सारस हूंते नैन विशाला ॥
मोर मुकट कुंडल वनमाला ॥ कट कछनी पट पीत विशाला ॥
तन चंदन की खौर बनाये ॥ नटवर भेष मनोज लजाये ॥
ह्वै हैं गैयन के संग ठाढ़े ॥ ग्वालन मध्य महा छवि बाढ़े ॥
सो दरसन लखि होय सनाथा ॥ धरिहौं जाय चरण पर माथा ॥
जे शुभ चरण पितामह ध्यावै ॥ महिमा जिनकी वेद बतावै ॥
जिन चरणन कमला रति मानी ॥ शंभु धत्यो सिर जिनको पानी ॥
सनकादिक नारद यश गावै ॥ जिन चरणन योगी चित लावै ॥

वलिजिनकीमर्यादनपाई॥हारमाननिजपीठिनवाई॥
शिलाश्रापमोचनकरनहरनभक्तउरपीर॥
आजदेखिहौंतेचरणसकलसुखनकीसीर
अरुणकंजकेरंगअंकितपंकुशकुलिशध्वज
गोपवालकनसंगगोचारतवनपाउहीं॥
परिहौंजाइचरणपरजवहीं॥भुजनउठाइभेंटिहैंतवहीं
परसतउरआनंदउपजैहैं॥अंगनपुलकितनोरुहसैहैं॥
देखतदरसपरससुखलैहैं॥प्रेमसलिललोचनभरिजैहैं॥
कुशलपूछिहैमोहिसुखदानी॥कहिहैंनहिंसकिहौंगदखानी
वारम्वारवचनमृदुकैहै॥सुनिश्रवणपरमसुखपैहै
यौंअक्रूरध्यानमैंअटक्यो॥भूल्योपंथफिरतरथभटक्यो
हरिअनुरागवढ्योउरमाहीं॥रहीदेहकीसुधिकछुनाहीं
सोरूभईगोकुलनहिंपायो॥नहिंजानतकोहैकहआयो॥
फिनपठयोकिनजातनजानी॥रथवाहनकीसुरतिभुलानी
भयोहरषउरप्रेमविशाला॥दसहूंदिसपूरणगोपाला
हरिअंतरजामीसवजानी॥भक्तवत्सलहैजिनकीवानी॥
भक्तिभावकरिजोकोइआवै॥मिलतुतिन्हनाहिंविलमलगावै
ग्वालसंगवृंदाविपनचारतधेनुसुजान॥
चलेहरषहलधरसहितभक्तहेतजियजान
यमुनपारकरिगायहेरिगावतहरषहरि
गायनतहांमगायलागेगोदोहनकरन॥
गायदुहनलागेसवग्वाला॥आपहुदुहतभयेनंदलाला
भक्तहेतयहसुखउपजायो॥तहांदरसमुफल्कसुतपायो
रहिनसकोरथपरसुफल्कसुत॥उतरिपरेभूपरअतिअकुलात
भयोमनोरथमनकोभायो॥दौरिस्यामचरणनसिरनायो

पुलकितगात लोचनजलधारा ॥ हृदै प्रेम आनंद अपारा ॥
कृपासिंधु करि कृपा उठायौ ॥ भक्त हेत मिल कंठ लगायौ
भयो जो सुख सो सोई जानै ॥ ब्रजवासी केहि भांति बखानै
जो अक्रूर चरित मन कीनो ॥ तैसिय भांति दरस हरि दीन्हौ
मधुर वचन श्रवणन सुखदाई ॥ पुनि २ पूंछत कुंवर कन्हाई
आनन चारु निरषि सुखकारी ॥ तब बोल्यौ अक्रूर संभारी ॥
कुशल नाथ अबै दरस निहारी ॥ दैत्य दलन भक्तन हितकारी
भई है भेद कंस की बानी ॥ सुफलकसुत सब प्रगट बखानी

सुनत वचन अक्रूर के मुसकाने ब्रजचंद ॥
फरकि भुजा भूभार की टारन असुर निकंद
मिले राम पुनि आइ परम प्रीति अक्रूर सों
उर आनंद न समाय वासुदेव दोऊ निरषि

कहि २ उठत इहै नंदलाला ॥ हमहिं बुलायौ कंस भुआला
लेबे कौं अक्रूर पठायौ ॥ कालहि करि अति कृपा मंगायौ
सुनतहि भये चकित सब बाला ॥ कहा कहत है मदनगुपाला
भये प्रेमबस मति अकुलानी ॥ भरि आये नैनन में पानी ॥
निरषि सबन कौं सुखसुखदानी ॥ तब बोले करि स्याम सयानी
चलहु काल्हि देखहिं नृप कंसा ॥ मति आनौ जिय में कछु संसा
यह कहि चले हरषि ब्रजलालन ॥ कछु हरष संसय कछु बालन
आतिकोमल बलराम कन्हाई ॥ हंसि लीने अक्रूर उठाई ॥
सुमन छंतेह रुव सुखदानियां ॥ दोउ लसत सुफलकसुत की नियां
ग्वाल सकल लीनो रथ डोरी ॥ पहुंचे आय सकल ब्रज खोरी
लखि अहेत हैं ब्रजलोग चकाने ॥ कंस दूत सुनि नंद सकाने ॥
सपनो समझि सोच उर छायौ ॥ मनमन कहत कहा धौं आयौ
आतुर उठि आगे चले चलेलेन उपनंद ॥

देखनधायेघरनतेंसुनत नारिनर वृन्द ॥
स्याम राम उरलाय स्यदंनितजिसुफलकसुवन
आवतलखिनंदराय भयेहरषिविसमयोवस
सादरतिनकौंसीसनवायै ॥ कुशलप्रश्नकरिगृहलेआयै
चरणधायदेटकसुभदीनी ॥ विविधिभांतिभोजनविधिकी
संकरषण अरु कुंवरकन्हैया ॥ मिलगयेअक्रूरहिदोउभैया
सोगणकहोतनहिंनिकनियारे ॥ मनअक्रूरनहिंमतिपारे
तवअक्रूरसंगलयदोऊ ॥ भोजनोकियोलखतसवकोऊ
हरिद्रुतउनफेरतनाहिंआवै ॥ सवव्रजलोगमनहिंमनभावै
उठेअंचेववपानखवाये ॥ आदरसहितपलगवैठाये
पुनिकरजोरिनंदयौंभाख्यौ ॥ कहाकृपाकरिपगइतधार्यो
तवऐसेंअक्रूर सुनाये ॥ वलमोहनकौंनृपहिवुलाये
तुमकौंकह्यौसंग लैआवै ॥ सुनिरगुणमेरेमन भावै ॥
देखनकोंअभिलाषजनायो ॥ तातैंवेगहि मातवुलायौ
व्रजकेलोगसुनतयहवानी ॥ भयेचकितसुधिवुद्धिहिरानी
चकितनंदजसुमतिचकितमनहगमनअकुलात
हरिहलधरकोसैन देसववुलावत जात ॥
मायारहितमकुंद यानावियोगजाकोनहीं
सदाएकआनंद अविगतअविनासीपुरुष
प्रेमभक्तिकीकछुउरलाजा ॥ कीनोचहैभूमिसुरकाजा
जातेंअहिकाहननहेरत ॥ वोलतनहीनैननाहिफेरत
अनुपहिचानकवहुकोनाहीं ॥ लषिरसवडरपतमनमाहीं
हरिसुफलकसुतसौंमनलायो ॥ यहैकहतनृपहमहिवुलायो
इतौंसोयहमहमनमाही ॥ कवहूंनृपतिवाल्योक्योनमही
हंसिरऐसैंकहतिमुरारी ॥ यहसुनिविकलसकलनरनारी

लेहुकंसवरसासकोजीवै नंदनंदविन
कहतिविलषिहरिसोंदुषभारी॥क्योंमोहनममकहसि
येअक्रूर क्रूरकृतरचिके॥आयेतुमहिलैनरथसजिकै
दुखितजानिअपनीमहतारी॥मथुराजाहुन मैंघलिहौ
तिरछीभईकृसगतिआई॥यहभौविधनाकहाअनाई
मोसोंमहरनंदसोताता॥कहतरहतघरए रदोउभाता
तिहिमुषजानकहतहौप्यारे॥कैसेरहिहैंप्राणहमारे॥
मैंवलिऐसीजियमतिधारौ॥मथुरामैंकहकाजनिहारौ
निरषिरूपजुसुमतिअकुलाई॥व्याकुलपरिअसोमुरछाई
काहिअवलेवैप्राणकन्हैया॥हैकैनिठुरतजतहैमैया॥
क्योंअक्रूरगोकुलहिआये॥मेरेप्राणलेनकोधाये॥
नामअक्रूरगुणक्रूरतुम्हारो॥करिहौसूनोभवनहमारो
रोवतवदनरोहिणीमैया॥व्रजकेजीवनयेदोउभैया

दो॰ भयेनिठुरअक्रूरमिलिघरहूआवतनाहि
कहाकरौंकासोंकहौंकोराखैगहिबाहि॥
सो॰ अतिव्याकुलव्रजवामजहांतहांवकतिफिरै
चलनचहतघनस्यामथकजुरहैसषिप्राणतन

कहयहसुखहरिकोसंगसजनी॥विविधविलाससरदकीरजनी
हरिमुखशशिशीतलसुखकारी॥सबचकोरलाषिहतसुखभारी
कहवहसुंदरहासिगरवाही॥पियतअधररसमननैःचाही
जगउपहासससह्यौजिहलागी॥कुलअभिमानसबजसत्यागी
छुट्यौचहतसोहमसोंआली॥करीकाविनविधिकसकुचाली
कहांसखीफिरिकवहएसे॥मिलिहैअवमिलिअहैजैसे

ऐसेंहि सबकौं रात विहानी ॥ भयो प्रात चिरियां बुह्चानी ॥
महरि कह्यौ सब गोपकुलाई ॥ दधि घृत भार सजौ बहु जाई ॥
नृपति भेट हित करहु सजाई ॥ हरि के संग चलौ सब कोई ॥
ग्वाल सखा यह सुनि अकुलाने ॥ चहत स्याम मधुपुरि चहजाने ॥
परयौ शोर ब्रज घर जहताई ॥ हरि मुख देखन कौं सब धाई ॥
सजत ग्वाल चलवे कौ साजा ॥ गैया फिरति दुहन के काजा ॥
कह्यौ स्याम अक्रूर हि तवहीं ॥ जोतहु तात तुरत रथ अवहीं ॥
सुफलक सुत आयसु जव पायो ॥ सहित सकोच रथहि फल्लायो ॥
सुफलक ढिग तें दोऊ भाई ॥ होत नहीं न्यारे कहुं जाई ॥
देखन नही जसुमति अकुलानी ॥ परी धरणि व्याकुल पति विलखानी ॥
विकल कहति मोहि तज्यो दुलारे ॥ जात किये सूनो ब्रज प्यारे ॥
यह अक्रूर ठगौरी लाई ॥ मोहे मेरे वाल कन्हाई ॥

दो० यह सुफल्क सुत वूझिये तुम्हें हरे मो वाल ॥
विरधसमें की लकुटिया मेरे मदन गुपाल ॥
सो० देखहु मनहिं विचार लाभ कछू यामें नहीं ॥
दियौ धरम डर डार क्रूर भयो हूत आइ कें ॥

चलत जानि चितवत ब्रजनारी ॥ विरह विकल तन सुरति बिसारी ॥
जहंतहं चित्र लिखी सी ठाढी ॥ नैनन नीर नदी जिमि वाढी ॥
लगत निमेष कलद उनाहीं ॥ भ्रमति नाव पुतरी ता माहीं ॥
ऊरध स्वांस समीर रूकारत ॥ चित्र कपोल तीर तरु नारत ॥
काजल कीच कुचील किये तर ॥ अधर कपोल उरज अंचल पर ॥
रहे जहां तहं पंथ कज केसे ॥ चरण हस्त मुख वचन थके से ॥
स्याम विरह व्याकुल ब्रजवाला ॥ नीर हीन जिम मीन विहाला ॥
सखन अधर नीर भर आने ॥ मनौ हिम परस कमल कुम्हिलाने ॥
कहति परस्पर वचन अधीरा ॥ गदगद वचन ढरत दृग नीरा ॥

खपहोनातवहुततुमधारे॥ मथुरावसनमेंसहृत्यारे॥
कौंवलरामकहततुमनाहो॥ तुमविनलालमातमकुम
कहतरामसुनुजेसुमातिमैया॥ तुमसतिवारोजानूकन्हैय
मतिहिकंसभयव्याकुलहाहो॥ एकभरोसोहरकोंसोही
मयमाहिवकीकपटकरिआई॥ आतिहिप्रवलविषकुचलं
चारहिदिनकेतवहिकन्हाई॥ तोदेखनहींनाहिनसाई॥
सकटतृणावृतवत्सअन्याई॥ अघअरिष्टकेसीदुसदाई
एकहिपलमेंसकलसंघारे॥ विषजलतेंसवसखाउवारे
गोवर्द्धनजिनकरपरधारयौ॥ महाप्रलयकोजलसवटार्यौ
हरिसमवलीषोसकोउनाही॥ तूमतिसोचकरैमनमाही
इसघालककहतुमैसिखावै॥ धीरधरौहमफिरिआवै
सो॰ सुनिधीरिजगोपालकेउरआयोअवरोहि
जोकछुकरैंसोसत्यप्रभुआयतहैसवसोंहि
सो॰ कह्योनंदतवआयमेलेजैहौंसंगहरि
धनुषयज्ञदिखरायलैऐहौंतुरतहिवहुरि

अथ मथुरागमनलीला

ऐसेंहि सवकौं रात विहानी ॥ भयौ प्रात चिरियां चुहचानी
महरि कह्यौ सव गोपवुलाई ॥ दधिघृत भार सजौ वहुजाई
नृपति भेट हित करहु सजाई ॥ हरि के संग चलौ सब कोई
ग्वाल सखा यह सुनि अकुलाने ॥ चहत स्याम मधुपुरि यह जाने
पर्यौ शोर व्रज घर जहं ताई ॥ हरि मुख देखन कौ सब धाई
सजत ग्वाल चलवे कौ साजा ॥ गैया फिरत दुहन के काजा ॥
कह्यौ स्याम अक्रूरहि तवहीं ॥ जोतहु नाल तुरत रथ अवहीं
सुफलक सुत आय सु जव धायौ ॥ सहित सकोच रथहि फल लायौ
सुफलक ढिगतें दोऊ भाई ॥ होत नहीं न्यारे कहु जाई ॥
देखत ही जसुमति अकुलानी ॥ परी धरणि विलपति विलखानी
विकल कहति मोहित ज्यौं दुलारे ॥ जात कियें सूनौ व्रज प्यारे
यह अक्रूर ठगौरी लाई ॥ मोहे मेरे वाल कन्हाई ॥

दो॰ यह सुफलक सुत वूझियै तुम्है हरे मो वाल ॥
विरधसमै की लकुटिया मेरे मदन गुपाल ॥
सो॰ देखहु मनहिं विचार लाभ कछू यामैं नहीं ॥
दियौ धरम डर डार क्रूर भयो दूत आइ कै ॥

चलत जान चितवत व्रजनारी ॥ विरह विकल तन सुरति विसारी
जहंतहं चित्र लिखी सी ठाढी ॥ नैनन नीर नदी जिम वाढी ॥
लगत निमेष कलटार नाहीं ॥ भ्रमति नाव पुतरी ता माहीं
ऊरध स्वास समीर झकोरत ॥ चित्र कपोल तीर तरु तोरत
काजल कीच कुचोल किछेतर ॥ अधर कपोल उरज अंचलपट
रहे जहां तहं पथ कज केसे ॥ चरण हस्त मुख वचन थके से
स्याम विरह व्याकुल व्रजवाला ॥ नीर हीन जिम मीन विहाला
मुख अधर नीर भर झाने ॥ मनौ हिम परस कमल कुम्हिलाने
कहति परस्पर वचन अधीरा ॥ गदगद वचन ढरत दृग नीरा

हरकै कंस वढ़ गोधन सारौ॥ कैकरि मोहि वंध में डारौ॥
ऐसेहू दुख स्याम सभागे॥ खेलहिंगे मो नैन के आगे॥
यह कौ हमाहि लोटत अकुलानी॥ आनहीं दुखित नंद की रानी॥
गोपीजन विरहानल डाही॥ रह गई प्रेम वियोगनि दाही॥
जिमि कुमुदिन गण नीर विहीना॥ रवि प्रकाश त्रासते दीना॥
स्याम विमुख क्षण २ कुम्हलानी॥ क्रूरौं मिलन कठिन जिय जानी॥
वल वुधि थकित स्रवत जल लोचन॥ चलि न हिं सकी रही पछि सोचन॥
बैठैलौ मव गई विहाला॥ व्रज तजि गवन कियो गोपाला॥
लैगे मधु अक्रूर निकारी॥ मारौ ज्यौं सब दीन विडारी॥
देखत रही थकी ठकलाई॥ जब लगि धूर दृष्ट में आई॥

दो॰ भये ओट जब दृगन तें मुरछि परी विलखाय
कहति गयो रथ दूर अब धूर न परति लखाय॥
कहा करै व्रज जाय मन हरि लै गयो सांवरो॥
परत न आगे पाय पाछे ही लोचन लखत॥

वदन विकल विरहा रस मानी॥ भई न पवन संग उड़ि जानी॥
रजह नहीं विधाता वानी॥ जात कमल चरणन लपटानी॥
भई न रही इकरथ को अंगा॥ जाती चली तहां लगि संगा॥
विछुरे आज स्याम सुख रासी॥ नो परतीत दृगन की नासी॥
उड़ि न हिंगये स्याम संग लागे॥ कृत्म भई नाहि भये अभागे॥
रसिक प्रेम के जगत वखाने॥ रूप लालची सब कोउ जाने॥
सो करनी कछु इन नहि कीनी॥ वृथा मीन की छवि हरि लीनी॥
धनि २ मीन प्रीति पथ सांचे॥ ऐसे ये नैन हमारे कांचे॥
अब ये सूल सहत निज यसोवत॥ उमगि २ भरि २ जल मोचत॥
हरि विन अवलि रिवये व्रज सूनो॥ समय चूक सो है दुख दूनो॥
भई अजान सबै मन माहीं॥ काहू चलन गह्यो रथ नाहीं॥

रथल्याऊकरिकाजनिगासौ॥सह्योदुसहविरहदुखभारा
दो॰ यौंव्रजतियपछतायसवदीपजसोदहिदीन
लैआईसवनंदग्रहकसतनवदन मलीन ॥
सो॰ व्रजतिय परमउदासहरिविनसुषसुपनेभयन
रहेप्राणगहिआसस्यामकह्योमिलिहैंघड़ी ॥
खगमृगाविकलजहांतहांवोलैं॥गायवच्छरांभतसवडोलैं
तरुवेलीफलफूलकुम्हिलानी॥व्रजकीदसानपरतवषानी
चलेनंदगोपनसंगलैके॥व्रजवासिनकौंधीरजदैके॥
ग्वालसवधाहरिकेसुखदाई॥दरसनलागिचलेसवभाई
उतअक्रूरसोचमनमाहीं॥कियोकाजमैंनीकौनाहीं॥
वलमोहनमैया दोउवारे॥अतिकोमलनवनीतनिप्यारे
करिकैजननीजनकदुलारे॥व्याकुलसवेघोषकीनारी
मैंलैजातकंसपैतिनकौ॥मोदरवलमारेगोइनकौं
धृकधृकधृकमुषहियहमेरौ॥जाहैलिवायइन्हैंव्रजमेरौ
कंसआजमारैघरमौंहीं॥हरिकोजायदेउंमोहिंघाई
इहिअंतरयमुनानियराई॥ठाढोकियोतहांरथजाई
अंतरजामीहरिभगवाना॥भक्तिहृदयसंसयपहिचाना
दो॰ भूषलगीतवहरिकह्योहमैंकलऊदेउ ॥
करियमुनाअस्नानपुनितातुमऊकछुलेउ
सो॰ सुनतवचनमृदुकानसुफलकसुतसुनितुरतही
कछुमेवापकवानभोजनदुहुभैयनदियौ
आपस्नानकरनमनदीनौ॥यमुनापैठिसंकलपकीनौ
जवहींसीसनीरमेंडास्यौ॥तवअचरजइकभावनिहास्यौ
रामकृस्नरथपरसुषदाई॥जलभीतरसोभितदोउभाई
चकितभयौजलतेंसिरकाढ्यौ॥देख्यौरथवाहिरसोठाढौ

वहुरो बूड़ि सलिल में पेख्यो॥ तैसो ई पुनि तहां रथ देख्यो॥
क्षण जल में क्षण आये न्हाही॥ पुनि र सभ्रम बुद्धि कियो री॥
स्वप्न किधौं जागृत यह होई॥ कैधौं मो मति में भ्रम कोई॥
कैधौं जल में रथ की छाया॥ कैधौं यह हरि को कछु माया॥
भयो विकल्प तेहि रक कछु नाहीं॥ देखन लग्यो बहुरि जल मांहीं॥
जब अक्रूर बहुत अकुलाये॥ निज स्वरूप तहं स्याम दिखाये॥
देखत भयो तहां जल माहीं॥ सकल देव बाढ़े हरि पाहीं॥
अस्तुति करत चरण चित दीने॥ नमित कंधकर संपुट कीने॥

दो॰ शेष सहस्र फणि मणिन युत जगमग जोति अनूप॥
स्वेत चरण पट पीन युत रजत हलधर रूप॥ सो॰
नव नीरद तन स्याम पीत वासल वण्य निधि॥
भुज प्रलंब अभिराम शोक पंक हरि सोहहीं॥

चारि अरुण पंकज दल नैना॥ चितवन चारु चारु मृदु बैना॥
चारु चिलक वर भाल विराजे॥ चारु कुटिल कंतल छवि छाजे॥
चारु तिलक नासिका सुहाई॥ चारु कपोल अधर पसणाई॥
सुन्दर श्रवन चिबुक दर ग्रीवा॥ चारु दसन विहसन छवि सीवा॥
उर विशाल श्री चिन्ह विराजे॥ उदर उदार रोमावलि राजे॥
नाभि गंभीर क्षीण कटि देसू॥ भुज विशाल वर चारु सुवेसू॥
जंघ गुल्फ अति चारु सुहाई॥ पद कमलन नख शशि छवि छाई॥
नखशिख अनुपम रूप विराजे॥ दिव्या भरण सकल अंग साजे॥
कुंडल मुकुट जटित मणि माला॥ मुक्त माल वनमाल रसाला॥
यज्ञोपवीत पितांबर कांधे॥ कौस्तुभ मणि अंगद कर बांधे॥
कर पल्लवन मुद्रिका राजे॥ शंख चक्र गदा पद्म विराजे॥
क्षुद्र घंटिका धुनि दुतिकारी॥ मणिन जटित नूपुर छवि भारी॥
दो॰ नंद सुनंदादिक जिते दिव्य पारषद आहि

करजोरे ठाढ़े सबै परिचर्म जाके माहिं ॥
सो० ठाढ़े जोरे हाथ माया निजमाया सहित
भक्त भक्त के साथ अंबरीष प्रह्लाद बलि ॥
शिव अज सहित शिवा अस्वानी ॥ सनकादिक नारद अरु ज्ञानी
भक्तन सहित सुरासुर जेते ॥ करजोरे ठाढ़े सब तेते ॥
इंद्र कुबेर वरुण दिकपाला ॥ मनु विसुकर्म धर्म यम काला
वंदन करत चरण धरि माथा ॥ गावत वेद सकल गुण गाथा
जल में लखि अक्रूर भुलान्यो ॥ कृष्ण प्रभाव प्रगट सब जान्यो
चिंता सकल चित्त की राखी ॥ जान्यो कृष्ण ब्रह्म अविनासी
मोहि कृपा करि दरसन दीनो ॥ नहि प्रणाम सुफलकसुत कीनो
अति आनंद बढ्यो मन माहीं ॥ अस्तुति करन लगे मैं हि गाहीं
धन्य २ प्रभु अंतरजामी ॥ नारायण त्रिभुवन के स्वामी
सकल विश्व तुमहीं विस्तारो ॥ विश्व रूप है रूप तुम्हारो
निर्गुण निर्विकार अविनासी ॥ लीला सगुण गुणन की रासी
प्रभु तुम सब देवन के देवा ॥ जाने कौन तुम्हारो भेवा ॥
छं० को जान तुम्हरो भेव हरि तुम सकल देव मई प्रभो
आदकारण सबहि के तुम विश्व सब तुम्हरो विभो
नाग नर सुर असुर अग जग दास सब तुम्हरो हरी
रहत माया वस तुम्हारी जाहि तुम आहि विधि करी
योग यज्ञ अनेक कर्मन कारि तुम्हैं सब ध्यावहीं ॥
जैसो जाको भाव तैसो तुमहि ते फल पावहीं ॥
अति अगाध अपार तुम गति पार काहू नाहिं लह्यो
शंभु शेष गणेश विधि ना नेति निगम ने है कह्यो
भक्त हित धरि विविध तन तुम चरित अद्भुत बिस्तरे
मच्छ कच्छ बराह वपु हो वेद गिरि तुम उद्धरे ॥

ह्वैयपरह्वीभक्ति प्रणकारी सुरनहितवामनभये ॥
भृगुवंशमणिअभिरामतम धरिमानमयछत्रीहये
रामरूप निपातरावण विभीषणं कौंनृप कियो ॥
कंसअरियेवंशभूषणकृष्णवपुछविनिधिलियो
बोधरूपदयाल कलिकोंहिं दासकर्मनभावहीं ॥
निहकलंकमलेच्छहादसरूपश्रुतिनवगावहीं ॥
दो० तवगुणरूपअनंतप्रभुहांअज्ञानजगदीस
यो अस्तुतिअक्रूरकरिनाया पद पर सीस ॥ सो०
तवहिंस्यामसुखदायअंतरहितजल तेंभये ॥
निकस्यौअतिअकुलायतवजल तेंअक्रूरमुनि
लखीकृष्णकीजवप्रभुताई ॥ वढ्यौहरषअतिउरनसमाई
भूलेतेमनकछुकहिजाई ॥ मगनध्यानवलरामकन्हाई
कहतमनहिंमनयेअवनासी ॥ पूरणब्रह्मसकलगुणरासी
हरणकरणसमरथभगवाना ॥ नाहिनदूनसमानकोउआना
किनकुकंसभेदीउरसंसा ॥ येकारिहैंताकोनिरवंसा ॥
चल्योहांकरथतवहरषाई ॥ नंदउपनंदमिलेतहांआई
हरिअक्रूरहिंवूझतजोई ॥ करिसयानमन २ मुसकाहीं
कहीतातातुमअवहरषाने ॥ अर्थहिंकछुवढतमुरझाने
कहोसांचहमसोंसोइवानी ॥ तवअस्तुतिअक्रूरवखानी
धन्य २ प्रभुश्रीनिश्रीकंता ॥ गुणनअगाअपतादिअनंता
निगमनेतिकरिजाहिंवषाने ॥ सहसाननतिनतवगुणगाने
करिकेकृपाजानिनिजदासा ॥ दियोदरससंसयसवनासा
दो० सवमोहिंप्रभुवूझतकहाहमतोत्रिभुवनकेनाथ
करताहरताजगतके सकल तुम्हारे हाथ ॥
सो० कहांवापुरोकंस कहां मल्लकहांकुवलिया

अवकरियेनिर्भैसवेगनाथऐसैंखलन ॥
सुनमोहनसुफलकसुतवानी॥भयेप्रसन्नमंनसुखदानी
जातचलेरथपरदोउभाई॥सन्मुखदृष्टिमधुपुरीआई
तरणिकिरणिमहलनछविछाई॥जगमगातनभसुन्दरताई
सक्रसरिस्वूरुतघनस्यामा॥कहिष्यतयहैमधुपुरीनामा
श्रवणनसुनतरहतहैजाही॥देख्योआजदृगननेताही
कंचनकोटकंगूरासोहैं॥बैठेमनहुंमदनमनमोहैं॥
वनउपवनपुरकेचहुंपाहीं॥अतिभावतमेरेमनमाहीं
लखिरहरिमथुराकीशोभा॥पुनिपुलकतऋषीमनलोभ
तहांजन्मजियमेंकरिजाने॥तातेअधिकहर्षउरमाने॥
बाजतनौबतिनृपतिदुवारा॥होतशब्दघरियालउदारा
सुनिश्रवणआनंदवढावैं॥नगरशोरसुनिरुचिउपजावैं
दो॰ ध्वजपताकतोरणकलसजहंतहंललितवितान
मुक्ताझालरझलमलौंकोकविसकेवखान॥सो॰
निरखिनिरखिहरखातमनमोहनअक्रूरकौं॥
वलहिंदिखावतजातललितलोलकरपल्लवन
कहैअक्रूरसुनौयदुनाथा॥भईआजमधुपुरीसनाथा
तुमहिंविलोकिविराजतऐसी॥पतिआगमसोहैतियजैसी
कसीकोटकटिकिंकिणिमानौं॥उपवनवसनविविधविधिजानौ
मंदिरचित्रविचित्रसुहाये॥जनुभूषणरचिरचिगवनाये
जहंतहंविविधिवाजनेवाजे॥मनहुंचरणनूपुरधुनिकाजे
धामनध्वजाविराजतहैइमि॥संभ्रमहैगतिअंचलचंचलजिमि
उच्चपरनपरञरतुछविछाजे॥जनौउरजआनंदउमगिविराजे
भूलीअतिसुखसंभ्रमनातें॥झांझरझनककलरवकुजाते
मोरवाझ्मरस्रीचीहारा॥लागेविद्रुमकुलिश किवारा॥

मनहुं तुम्हारे दरसन लागी ॥ नैनन रही निमेषन त्यागी ॥
मुक्तामाल गिवां किन राजै ॥ हसनि मनो आनंदल साजै ॥
जगमग जोति रही छवि फूली ॥ जनु तुम निहारत भूली ॥

दो० नीके हरि सब लोकिये पुरी परम रुचि रूप
असुर कंस को जीति कै होउ इहां के भूप ॥

सो० सुनि विहसे नंदलाल लखत वचन अक्रूर के
पहुंच्यौ रथ तत्काल जाय निकट मथुरापुरी ॥

नगर निकट पहुंचे जब जाई ॥ सुफलकसुवन सहित दोउ भाई
गौर स्याम रथ पर दोउ राजै ॥ कोटि मनोज निरखि छवि लाजै
कंस दूत लखि जहं तहं धाये ॥ समाचार कहि नृपहि सुनाये
आये बल मोहन दोउ भाई ॥ सुनतहि नाम उठ्यो थरराई
गहि कर खड्ग चर्म कित लायौ ॥ रंगभूमि के मल्लन आयौ
गज मुष्टिक चाणूर बुलायौ ॥ और सुभट सब वोलि पठायौ
तिनसौं कह्यौ सजग सब होऊ ॥ ठांवहि ठांव रहो सब कोऊ
वहांतिक असुर निकट बैठाये ॥ धनुष पास चहुं सुभट पठाये
पठवत दूत दूत पर धाई ॥ आये कहै लागि देखौ जाई ॥
गरजे कंस सैन सब साजे ॥ द्वारे विविधि बाजने बाजै ॥
पीरो भयौ हृदय डर मान्यौ ॥ सूखत अधर वदन कुम्हलान्यौ
नंद महरि के सुत सुनि आवत ॥ मन रभानन गर्भ वढावत

दो० परो शोर मथुरा नगर आवत नंदकुमार
सुनि धाये नर नारि सब गृह को काज विसार ॥

सो० लाज कान डर डार कोउ सिर किन कोउ सदन पर
कोऊ खडी दुवार कोउ धावत गलियन फिरत ॥

कियो प्रवेश नगर मैं जाई ॥ असुर निकंदन जन सुखदाई
इंदुवसन रथ पर दोउ वीरा ॥ सुन्दर स्याम अवर गौर शरीरा

॥ बढ्यौ प्रेम आनंद उर भारी॥

शशिआनन सदु चोषि किशोरी॥ भये निरीख दोउ नैन चकोरी॥
पुलिक गात रुग आनंद पानी॥ कहन सप्रेम परम पर बानी॥
ये ई सखि बल राम कन्हाई॥ सुनियत जिनकी बहुत बड़ाई॥
नंद गोप के ये दोऊ ढोटा॥ गौर स्याम सुंदर वर जोटा॥
दो॰ मरिण केचन के सिखरि दोउ किधौं मानसर हंस
के प्रगटे ब्रज देन सुख त्रिभुवन के अवतंस॥
सो॰ धनि२ गोकुल ग्राम धन्य स्याम बलराम धनि
धनि२ ब्रज की बाम प्रगट प्रीति पाली जिन्हनि
सुनति इहती पुरुषारथ जिनके॥ देखहु रूप नैन भरि तिनके
अतिहि अनूप देषन ढ सोहै॥ कहहु सो को छवि देषि न मोहै
पूरव जन्म सुकृत कोउ कीनी॥ सो विधि यह नैनन फल दीनी
अति अभिराम स्याम छवि धारी॥ इनही प्रथम पूतना मारी
सकटासुर असुर इनहिं संघारे॥ वत्स बघासुर पुनि इन मारे
इन्द्र कोप वरषत ब्रज कीन्हे॥ इनहीं गिरि कर धरि रख लीन्हे
जल ते काली इन्हें निकारयौ॥ पुनि अरिष्ट केशी इन मारयौ
गौर शरीर राम बल सोई॥ धेनुक औ प्रलंब हा सोई॥
अव अक्रूर पठे नृप राई॥ इहां बोलि पठये दोऊ भाई॥
रंगभूमि रच कियौ अखारौ॥ कहा काज धौं हृदै बिचारौ
जननी धीर धरी धौ कैसे॥ अति बालक पठये हैं ऐसे॥

देहिं असीस मांगि विधि पाहीं॥ इनतइ वार स्वस इनन नाहीं
दो॰ लेत वलैया वारि के आंचर मह कहि नारि
करिहैं इनते कपट नृप तो हैं हैं तन छारि॥ सो॰
सुफल भये मन काम देखि दरस इनको सखी
कुशल जाइ निज धाम देत असीस सुनाय सव
कहति युवति इक सुनहु सयानी॥ मैं जो सुन्यो सुकनि वखानी
येवसुदेव कुंवर सखि दोऊ। ऐसे लोक कहति सव कोऊ
कंस त्रास करि मात पठाये॥ नंद सखा ग्रह जाय दुराये॥
करि दुलार जसुमति पय प्याये॥ हित करि तिनके वाल कहाये
गोरे अंग नैन रतनारे॥ जो प्रलंव के मारन हारे॥
कुंडल एक वाम श्रुति धारी॥ ते रोहिणी सुवन सुखकारी
अति अभिराम महावल धामा॥ तातें नाम धस्यो वल धामा
स्याम सुभग तन उर वनमाला॥ सीस मुकुट दृग नैन विशाला
जिन्है हेत करि संग व्रजवामा॥ मान्यो नाह सकल सुख धामा
जिनके चरण छुवत वड़ पापी॥ पाई सुगति सुदर्सन आपी
अमित प्रभाव कहन सव कहहीं॥ जिनके नाम अधम गति लहहीं
कहत देवकी सुत सव तिन सों॥ कंसराज भय मानत जिनसों
दो॰ आये हैं अक्रूर संग तात मात सुख देन॥
रंग भूमि रिपु जीति के करिहैं यदुकुल चैन
सो॰ सुनि सुनि सुंदरि सुनारि अति प्रिय वानी तासु की
मागत गोद पसारि विधि सों ऐसो होइ सव॥
देत सवन सुख यों मन भावन॥ उतरे जाय वाग इक पावन
गोपन सहित नंद तह रास्यो॥ तव सुफलक सुत सों हरि भाष्यो
कहहु तात आगे तुम जाई॥ आये स्याम राम दोउ भाई
वइरि नृपति जव हमें वुले हैं॥ करि विश्वास हम इत वस हैं

नव अक्रूर जोरयुग पानी ॥ वोल्यौ सुनत स्यामकी बानी ॥
मोहि न्यासहि क्यों करतगुसाईं ॥ मव्यौ किकर दासकी नाईं ॥
कंस दूत मोको जिन मानो ॥ निजसेवक अपनो करि मानो ॥
अरु मेरे मन मे यह आसा ॥ चलि पावन कीजे मो वासा ॥
तव हँसिके वोले घनस्यामा ॥ ऐहौं एक दिना तुम धामा ॥
ऐसे कहि अक्रूर पठाये ॥ विदा होय नृप पास सिधाये ॥
रथ ते उतरि पैरे दोउ भाई ॥ ग्वाल वाल सव लिये बुलाई ॥
सखा भ्रात संग सहज हुलासा ॥ गये यमुन तट नगर निकासा ॥

दो॰ वालवृक्ष सोभित सकल वाल सखन के संग ॥
गौर स्याम सोभा निरषि लज्जित कोटि अनंग ॥
सो॰ अति विचित्र को जान व्रजवासी प्रभु के चरित ॥
अमित सुगुण तकौं गानि जनरंजन दुष्टनदलन ॥

अथ रजकवधलीला

नृपति रजक अंबर नृप धोवे ॥ आवन देखि स्याम तन जोवे ॥
हँसत सगर्व वात यों चाले ॥ कंसराज के उर ये साले ॥
लघु लघु वेस गोप के जाये ॥ बहुत चपल गरीके रिपुभाये ॥
तृणावर्त प्रभु रह्यौ हमारी ॥ इन ही ताहि सिला पर मारी ॥
अति खोटो जोहि नाम कन्हाई ॥ प्रथमहिं ताहि डरे मर माई ॥
हैं वलभद्र नैसोइ खोटो ॥ गोरे अंग महा वल मोटो ॥
ताहू को मारे गो राजा ॥ वोले हैं याही के काजा ॥
ऐसे कहत परस्पर वानी ॥ प्रभु अंतर जामी सव जानी ॥
ग्वालन सहित गये वहि पाहीं ॥ कहेउ कछु अंवर हम पाहीं ॥
तिनको पहिर नृपति पहँ जेहैं ॥ देहैं बहुरि तुम्हें जव ऐहैं ॥
जो पहिरावन नृप सो पे हैं ॥ तामें कछु तुम हू को देहैं ॥

कै पहिलैहीं लेहौं हमसौं॥ वूझत हैं तैसी हम तुम सौं॥
दो॰ हस्यौ वचन सुनि स्याम के कह्यौ गर्व करि वैन
वलके वकरा ह्वै रहे आये है पर लैन॥ सो॰॥
राखै घरी वनाय ह्वै आवहु नृप द्वार लौं॥॥
नव लीजो पट आय जो भावै सो दीजिये॥॥
वनवन फिरत चरावत गैया॥ अहिर जात कामरी उढैया॥
नट को वेष साजि के आये॥ नृप अंवर पहिरन मन भाये॥
जुरिके चले नृपति के पासा॥ पहिरावन लाये की आसा॥
नक आस जीवन की जोऊ॥ खोवन चहत अवहिं पुनि सोऊ॥
यह सुनि स्याम कह्यो मुसकाई॥ देहु वसन है तुमहिं भलाई॥
हम मांगत हैं सहजहिं तुमसों॥ तुम कत करत इती रिस हमसे॥
सहज वात कौ रिस नाहिं कीजे॥ मांगी देहु मान गुण लीजे॥
औं हरएेठि तव रजक रिसान्यो॥ ए नृप वसन नहीं तुम जानौ॥
अवहीं क्षणक सुनत में मारे॥ नंद सहित पकरि वंद में डारे॥
जाहु चले यह तें अव नीके॥ कै है हौ अवहीं विन जी के॥
करत अचगरी मोसों आई॥ तुरत मारि हौं कंस दुहाई॥
यह सुनि कियो स्याम से ख्याला॥ भुजा पकरि पटक्यौ तत काला॥
दो॰ तुरत गयौ तन तजि स्वरग कीनौ रजिक निहाल
जन्म मरण तें छुट गयौ ऐसो कृपा गोपाल॥ सो॰
लखि के गये पराय संगी ताके सव रजक॥
लीने वसन लुटाय स्याम प्रथम ही नृपति के
रजक मारि सव वसन लुटाये॥ आप पहरि ग्वालन पहराये॥
विविधि रंग वहु भांति नवीने॥ निज रुचि ग्वालन सव लीन्हे॥
चले तहां ते सव हरषाई॥ मिल्यौ एक दरजी पुनि आई॥
प्रभु कौ देखि वहुत सुष पायौ॥ चरण कमल के माथ नवायौ॥

घाटवाटजेवसनसुहाये ॥ ते उनकीरिसमतुरितवनाये
ताकेकृतहिमानिप्रभुलीनौ ॥ अभेदानदैनिजपद दीनौ
पुनिइकमालीहुतोसुदम्मा ॥ ताकेद्वारगये घन स्यामा ॥
तुरतआयतिनपदसिरनायौ ॥ हरिहलधरलषिहर्षवढ़ायौ
आदरकरिघरमे लै आने ॥ चरणधोयनिजभागवखाने
नृपतिहेतजेहारवनाये ॥ तैसप्रेमप्रभुकौ पहिराये ॥
होयजोरिवहुविनयसुनाई ॥ कीजैश्रीपतिप्रभु पदराई ॥
मोकौंवहुरिअनुग्रहकीनौ ॥ दीनजानिअपनोकरिलीनौ

दो॰ सुनिसप्रेमताकेवचन रीझे स्यामसुजान ॥
मालीपूरणकामकरि दियौभक्ति वर दान ॥
सखनसहितदोउभाइ वहुरिहर्षआगेचले
तहांपंथमें आयकुविजालै वंदनमिले ॥

निरषिस्यामछवितनसुधिभूली ॥ बोलीहर्षिप्रेमरसफूली
होप्रभुदीनवंधुसुखदाई ॥ तुम्हैनाथचंदनमैंलाई ॥
मोहिकल्पनाथयहजगवंदन ॥ चरचौअंगतुम्हारेचंदन
दासीकुलकुविजाममनाऊ ॥ नृपकेउरचंदनमैंलाऊ
यहैजानकैप्रभुतेहिठाहीं ॥ औरअरुमित्रवसतउरमाहीं
आजदरसप्रभुप्रगटदिखायो ॥ मोजियकोसन्तापमिटायो
अवयेअलयकृपाकरिलीजै ॥ पूरणकामनाथमम कीजै
अंतरजामीप्रभुसुखदानी ॥ भावभक्तिकुविजपहचानी
भावहिकेवसत्रिभुवनराई ॥ हितकरिकुविजानिकटवुलाई
वंदनकीनपूजेदोउभाई ॥ रहीस्यामछविनिरषिभुलाई
तवहरिहलधरसौंयौंभाष्यौ ॥ हेतवडूतइनसवसौराष्यौ
हमहूंकछुयाकौहितकीजे ॥ सुभगअंगनेक करि दीजै ॥
पगरारव्यौपगपींडपरधस्योसीसकरस्याम

नेक उठाई चिबुक गहि भई सुंदरी बाम ॥
सो० कोकरि सकै बखान जाहि बनाई आप हरि
भई रूप गुणखानि कुबिजा मन आनंद अति
सहा कुरूप कूबरी जैसी ॥ परसत भई तुरत रति तैसी ॥
तब कुबिजा अपने मनमान्यौ ॥ मिले मोहि मोहन पति जान्यौ
पुनि२ कमल चरण सिर नाई ॥ हाथ जोरि बहु बिनय सुनाई
जिमि कीनी मोहि कृपा कृपाला ॥ तिमि मम सदन चलहु नंदलाला
अपने चरण कमल तहं धरिये ॥ सुफल मनोरथ मेरो करिहै ॥
तासों बिहसि कह्यो घनस्यामा ॥ कंस देखिहै हौं तब धामा ॥
अपनी करि तिय सदन पठाई ॥ चले धनुष देखन दोउ भाई
ग्वाल सखा संग सुभग सुहाये ॥ कामसैन बर रूप बनाये ॥
पुरजन भीर चहूं दिस भारी ॥ चढ़ी अटारिन देखहि नारी
निरखि स्याम सुख ईदु उदारा ॥ जनु उपरउ दधि तरंग अपारा
जहं तहं कहत सकल पुरवासी ॥ भई सुंदरी कुबिजा दासी ॥
स्याम कछु चेटक सो कीन्हो ॥ अंग सुधारि रूप बर दीन्हो
दो० रजक मारि लूटे बसन करी कूबरी चारु ॥
बालभाव मोहत मनहि है कोउ देव उदारु ॥
सो० सुनत रहे दिन रैन पुरुषारथ इनको श्रवन
तैसे देखे नैन ब्रजवासी प्रभु नंद सुत ॥
गये धनुषसाला दोउ बीरा ॥ देखत चकित भये भट भीरा
अब संभार उठे सकुल [illegible] ॥ देखि थके सुंदर दोउ भाई ॥
धनुष समीप असुर सब ठाढे ॥ अति बलवंत धीर नर गाढे
सहजहि घेर लियो दोउ भैया ॥ बोले उठे सब कुंवर कन्हैया
सुनियत अति बल भुजन तुम्हारी ॥ यह कोदंड चढ़ावो भारी ॥
तिनसों बिहसि कह्यो असुरारी ॥ कहा करत हमसों यह हांसी

कहावालहमवैसकिशोरा॥कहाधनुषअतिगरुवकठोरा॥
सूरवीरगाढेसवलाहिये॥तिनसोंधनुषचढावनकहिये॥
खेलनकह्योखेलकछुहमको॥सोहमखेलदिखावैंतुमको॥
ऐसेस्यामहँसततिनमाहीं॥अरुअक्रूरगयेनृपपाहीं॥
समाचारसवजायसुनाये॥नंदसहितवलमोहनआये॥
यहकहिघरअक्रूरसिधारे॥रजकजायतेहिकालपुकारे॥

दो॰ मारेविनदूषणहमहिं नंदगोपकेवाल॥
लीन्हेवसनलुटायकेपहिरायेसवग्वाल॥

सो॰ सुनतहिंउठ्योरिसायवोल्योमखनृपवलातनृप
करीप्रथमहीआयदेखोइनढीठोवही॥ ॥

अवमारिहौंअवशिदोउभाई॥लेहुआजसवजाहिलुटाई॥
देहुवदमैनंदहिल्याई॥गयेअहीरवहुतइतराई॥
मैसादरकरिइहाँबुलायो॥आगेदैइनरजकमरायो॥
देखौकोउजाननहिंपावै॥असुरजायसवकोगहिलावैं॥
ऐसेकंसकहतरिसिआई॥तवहीदूतनखवरजनाई॥
कुविजासोंहरिचंदनलीन्हो॥ताकोरूपअनूपमदीन्हों॥
धनुषनिकटपहुँचदोउभाई॥यहसुनतहिकछुआयोसुधि॥
वहुरिधीरधरिअसुरपठाये॥तेयहकहनस्यामपहँआये॥
पहिलेतोरिधनुषगोपाला॥कहाखिलायौनिकटभुआला॥
सुनिअसुरन्हकेवचनकन्हाई॥वोलेमनहीमनमुसकाई॥
याहीकोनृपहमहिंवुलायो॥[illegible]तोवारेजानयहपायो॥
गहनलगेतेवालकजानी॥तवहिस्यामकछुरिसउरआनी॥

छं॰ उरआनिरिसगहिपाणितुरतहिंअसुरलेमारेसवै
अतिहिवेगउठायधनुषहिंतोरिमहिडारोतवै॥
उठेतवकरिक्रोधयोधामारमारपुकारही॥२॥

नंदसुतराखीरहो धरधीर असुर संघारही ॥
एक झटकत एक पटकत नैनमटकत फिरतही
एक अकत एक लटकत एक सटकत जहीतही
ताल चटकत चमकि हटकत देखिभटकत नभ्रमले
एक पकरि फिराय पटकत जात ते रूपपहि भले ॥
दो॰ ख्याल हि मारे असुर सब तोरि धनुष नंदलाल
चले सामुहे पैवरी ना कि जहां कुवलिया व्याल ॥
सो॰ देखत चढे विमान ब्रह्मादिक सुर सिद्धि मुनि
डारत सुमन सुजान ब्रजवासी प्रभु हरषि ॥
रंगभूमि हरि हलधर आये ॥ संग सखा नव ग्वाल सुहाये ॥
आप आपनी छवि सब छाये ॥ रविशशि उडगण मोदित अहाये
देख्यो दुरद द्वार पर ठाढो ॥ मनहुं गर्व कौ गिरिवर गाढो ॥
कंधकेसरी गर्भ प्रहारी ॥ चलतन हंसे गयंद निहारी ॥
तासमा की छवि कहि न जाई ॥ कसत पीतपट कटि लपटाई
स्याम सुभग लट घूघरवारी ॥ यागपेंच मिलि पाग सवारी
मधुपुर की युवती सब वाढी ॥ कहत परस्पर महलन ठाढी
लखहु सखी अंग अंग लुनाई ॥ रूपरासि मनहरन कन्हाई
कोटि मदन छवि विधि चुनलीनी ॥ तव यह मूरति सांवरि कीन्ही
अति हि कुमार ये लोषि सुषदाता ॥ हम अभागि के क्रूर विधाता
धन ब्रजतिय इनके संग लागी ॥ निसदिन रहति प्रेम रस पागी
वन वीथिन कुंजन वन डोलें ॥ रासहास रस करति किलोलें ॥
दो॰ हाय हमारे सुकृत कछु सुनहु सखी नो आज
जैसे तोरयो धनुष हरी यो जीते गजराज ॥ सो॰
सुरन मनावति जाति अति कोमल नंदलाल लखि
नचढहु कुशल दोउ भ्रात मात पिता के धन्य ते ॥

भयौ क्रोध हाथी मन माही॥ गंडस्थल मद स्रवु चुचाही॥
पवन वेग ते आतुर धायौ॥ गरज घुमरि दोऊन पर धायौ॥
महाकोप करि गह्ह कन्हाई॥ पस्यौ दसन दै धरणि धसाई॥
डरपि उठे तिहि काल सब सुर मुनि पुरि नर नारि॥
दहू दसन विच व्है कढे वलनिधि प्रभु दैतारि॥
सो॰ उठे गजहि के माथ वङ्गरि खेलई हांक दै॥
तुरतै भये सनाथ देखि चरित सव स्याम के॥
हांक सुनत अति कोप वढाये॥ रूठकि सूंड वङ्गरि गज धायौ॥
रहे उदर तरे दवकि मुरारी॥ गये जान गज रह्यौ निहारी॥
पाछे प्रगटि वङ्गरि हरि टस्यौ॥ वलदाऊ आगे ते घेस्यौ॥
लागे गजहि खिलावन दोऊ॥ चकित भये देखत सब कोऊ॥
चङ्गओ फिरत चक्र की नाई॥ सूंड पूंछ सरर छुै जाई॥
नेक नहीं अवसर गज पावे॥ चारो दिस हरि किनहु न पावे॥
जतन करत मन ही मन माही॥ गज रिस विकल इन्है रिस नाही॥
कवहू पूंछ पकरि के रूले॥ जो वालक वछुरन संग खेले॥
कवहू इत उत ते दोउ वीरा॥ भजत मारि के मुष्ठ गंभीरा॥
कवङ्ग उदर तरे ह्वै कढि जाही॥ नेक छुवन पावत गज नाही॥
नील पीत पट कोनि फहराही॥ चपल नैन दीरघ वर वाही॥
खेलत गज संग चंचल राजे॥ नितन मदन मनहु गति साजे॥
छं॰ जनु मदन नितत साजि गति इम स्याम अरु गज खेलही॥
कवङ्ग खेलत पूंछ कर गहि कवङ्ग आगे पेलही॥
द्विरदल खि डर नारि नर सव विकल विधिहि मनावही॥
वेग मारै स्याम गज को हम निरोष मुख पावही॥
दीन्हौ महावत वङ्गरि अंकुश क्रोध करि हाथी चल्यौ॥
तवहिं हरि गहि पूंछ पटक्यौ नेक नहि भूपर हल्यौ॥

लियेखैंचिमनालज्योरसुमनवरदेवनकरी
दासव्रजवासीहरषसवअसुरकीसेनाडरी॥
दो॰ हँसतहसतमारयोअकलाहूरदकुवलियास्याम
सखनसहितगाढ़ेमदितछविनिरषतपुरवाम॥
सो॰ मारयोगजसवभ्राततहांतहांसवकोउकहत
चिरजीवहुदोउभ्रातप्रभुव्रजवासीदासके॥

अथमल्लयुद्धलीला

चलेजहांसवमल्लगुपाल॥द्विरिददंतधरिकंधविसाल॥
गौरस्यामसुन्दरदोउभाई॥श्रमसीकरमुखकमलसुहाई॥
छविअपारवलनिधिगंभीरा॥संगगोपवालकनकीभीरा॥
सुनतकंसजियअतिभयमान्यो॥नवखगज्योंपिंजरअकुलान्यो॥

भोजन कौं मन माहिं विचारै ॥ भोजन सक्यौ लाज़ को मारौ ॥
गये रंग महिं मोहन तवही ॥ यथा भाव दरसे तहँ सव ही ॥
उठे मल्ल सव संकि अधीरा ॥ वल समूह देखे दोउ वीरा ॥
दुष्ट दैत्य इते तहँ जेते ॥ रूप भयानक दरसे तेते ॥
कंस समीप भूप जे आये ॥ तिन्हें राज वंसी दरसाये ॥
साद्ध सिद्ध देखहिं शुभ धामा ॥ इष्ट देव पूरण सव कामा ॥
देखत सुरगण गगन सुखारी ॥ सब देवन के देव मुरारी ॥
ग्वाल वाल देखत सब ऐसे ॥ सदा संग खेलत व्रज जैसे ॥

दो० महलन तें देखहिं प्रभुहि सकल सुन्दरी वाम
कोटि काम शोभा हरन नव किशोर सुख धाम ॥
सो० देखत अति विपरीति कंस नृपति नंदलाल को
कंस पटौ भै भीत प्रगट काल दरसन भयौ ॥

सर्व भाव पूरण भगवाना ॥ अवलहिं अवल वलहिं वलवाना ॥
ललितहिं ललित साध को साधू ॥ कुलन कुली सव गुण न अगाधू ॥
जो जन जैसें ध्यान लगावैं ॥ ताकौं तेहि विधि दर्स दिखावैं ॥
कहहिं देखि सव सुन्दर जोटा ॥ येई नंद महर के ढोटा ॥
रजक मारि नृप वसन लुटाये ॥ कीने कुविजा अंग सुहाये ॥
इनहीं असुर समूह संघारयौ ॥ धनुष तोरि हाथी इन मारयौ ॥
धरे कंध गज दंत विराजें ॥ वालक गोप सखा संग राजें ॥
देखत असुर वीर चहुँ पासा ॥ जिनके वस सव भूमि अकासा ॥
लीने घेरि कंस भय मानी ॥ तव चाणूर कही हँस वानी ॥
अवहँ स्याम इतहि पग धारौ ॥ सुनत इते वड़ नाम तुम्हारौ ॥
सव कोउ तुम्हें खेलहि वखानै ॥ हारि जीति का को कोउ जानै ॥
कहा भयौ जो गज तुम मारयौ ॥ लरहु आज तुम संग अखारौ ॥

दो० कहा नाम हम सों सुन्यो हँसि वोले घनस्याम

लियेरौंचि मनाल ज्यों दसुमन मर देवन करी
दास व्रजवासी हरष सव असुर की सैना डरी॥
दो॰ हंसत हंसत मार्‍यौ सकल द्विरद कुवलिया स्याम
सखन सहित ठाढ़े मुदित छवि निरषत पुर वाम॥
सो॰ मार्‍यौ गज बल भ्रात तहां तहां सव को उकहत
चिरजीवहु दोउ भ्रात प्रभु व्रजवासी दास के॥

अथ मल्ल युद्ध लीला

चले जहां सव मल्ल भुपाल॥ द्विरद दंत धरि कंध विशाल॥
गौर स्याम सुन्दर दोउ भाई॥ श्रमसी कर मुख कमल सुहाई॥
छवि अपार वल निधि गंभीरा॥ संग गोप ग्वालन की भीरा॥
सुनत कंस जिय अति भय मान्यो॥ नव खग ज्यौं पिंजर अकुलान्यो॥

आपुस में सब करत बिचारा ॥ डारहु मारहु भै सुकुमारा ॥
सुनि रहौ हलधर मुसकाहीं ॥ बोले बहुरि बिहँसि तिहि पाहीं ॥
सुनियै सकल मल्ल समुदाई ॥ यह तुम्हरे मन अब ही आई ॥
नृप पहँ हमैं जान नहिं देहौ ॥ बड़ो सुयश हम सों लरि लेहौ ॥
निपट बोज अब परे हमारे ॥ यह न बसीठ भली तुम्हारे ॥
हम न कहै तौ तुम चित जैसौ ॥ कहत कहा कीजै अब तैसौ ॥

दो० जब हि स्याम ऐसे कह्यौ बिलखि उठी सब नारि
देखौ री मारन चहत मल्ल उभै सुकुमारि ॥ सो०
अति कोमल अति बाल बाचै कैसे हू दई ॥
कहत नैन जल ढार क्यों जननी पठये यहाँ

अतिहि निठुर उर जाति अहीरा ॥ लोभ लागि पठये दोउ बीरा ॥
येतौ बालक अतिहि अजाना ॥ कियो कहाँ उन यह अज्ञाना ॥
हेन चहत अब धौं यह कैसी ॥ कहत बात यह कंस अनैसी ॥
कहत सबै हम कों यह भावै ॥ करी सहाय बिधि इनहिं बचावै ॥
तारसों धनुष हत्यो गज जैसे ॥ जीतहिं स्याम इनहू को तैसे ॥
जारि जारि के बिधि के आगे ॥ आंतर छोरि छोरि सब मांगे ॥
तब चाणूर कृष्ण पहँ आयो ॥ सहज स्याम करि टपटल पठायौ ॥
भुज भुज जोरि भये भिड़ ठाढ़े ॥ ताकि रे दांव चलावत गाढ़े ॥
ऐसे ई मुष्टिक अरु बलरामा ॥ भिड़ बदाय बाद बल धामा ॥
दोउ बीर लरत अति सोहैं ॥ देखत सुर नर के मन मोहैं ॥
दीरघ नैन कमल तें आछे ॥ ललित लाल कछनी कटि काछे ॥
तन चंदन चित्रत छबि जाला ॥ वृषभ बांध उर बाहु बिसाला ॥

दो० सिर सें सिर भुज सों भुज दृष्टि दृष्टि सों जोर
चरणि चरणि गहि रूपटि केल पट झपट झकझोरि
सो० चाहत न न पावत घात छूट जात लपटात पुनि

हमबालकभोरेअवहिँ हमै खेलसों काम ॥
सो॰ कहिये बात विचार हमैं तुमहिँ लरिबो कहा ॥
अपुगति यह ब्यौहार आय देखि देखहु हमै ॥
जानदेहु हमकौ नृपपाहीं ॥ काहे को रोकत मन मांहीं ॥
नृप हमकोकरि हेत बुलायो ॥ तुम यह हमको कहा सुनायो ॥
तब चाणूर कह्यो पुनि ऐसे ॥ तुमको बालक कहिये कैसे ॥
किये कर्म ब्रज मैं तुम जैसे ॥ देखे सुने नहीं कहु कैसे ॥
गिर गोवर्द्धन कर पै धास्यो ॥ जल तें काली नाग निकास्यो ॥
औरौं असुर बीर बल भारे ॥ सुनियत खेलत मैं तुम मारे ॥
सो बल आज देखि हम लैहैं ॥ आगे जान तुम्हे तब दैहैं ॥
ज्यौं ज्यौं कंस लखत दोउ भाई ॥ त्यौं त्यौं भय ब्याकुल अकुलाई ॥
कहि करि बारहि बार पठावै ॥ मल्लन कौं बहु त्रास सुनावै ॥
क्यों रे सकुच करत मन माहीं ॥ मारत वेग अबहु क्यौं नाहीं ॥
जो दोउ बालक आज न मारौ ॥ करौं सकुल तौ नास तुम्हारौ ॥
नृप संदेस सुनि मल्ल डराने ॥ कहत परस्पर मन सकुचाने ॥
दो॰ लीन नृपानि कौ मानिकै नंदसुवन सों आज ॥
लर मरिये कै मारिये करै कंस कौ काज ॥ सो॰
लेहु सुयश नृप पास अब बिलंब नहिं कीजिये ॥
कछु क्रोध कछु त्रास बोलि उठे तब मल्ल सब ॥
हम सों स्याम लरत क्यौं नाहीं ॥ घाटन कछु हम ते बल मांहीं ॥
पसुपालक तुम कुंवर कन्हाई ॥ जीते बड़े नृपन सुनि [illegible] ॥
अब लगि नहीं मल्ल कोउ भेटो ॥ अब तौ हम संग परौ [illegible] ॥
मल्ल युद्ध तुम सों हम लरि हैं ॥ अब नृपति को काज करि हैं ॥
ऐसे कहि २ प्रभुहि सुनावें ॥ भुजा ऐंठि अंग अंग चढ़ावें ॥
ठोंके ताल गाज ज्यौं गरजे ॥ गहे गांस हरि तन न किन तजे

जबहीं स्याममल्ल सब गारे ॥ भजे असुर सब लखि हिय हारे
देखि कंस अति भयो दुखारो ॥ सेनापतिन कहत दै गारो ॥
कोपन लिये खड्ग बड़ क्रोधा ॥ कहत गये कित रे सब योधा ॥
लै नरवारि ढाल सब कोऊ ॥ डारहु मारि नंदसुत दोऊ ॥
डारे मारि मल्ल सब मेरे ॥ तनक छोहरा आहिं रन केरे ॥
डर नहिं करत चले इत आवैं ॥ देखहु जीवत जान न पावैं ॥
असुर वीर अपनी सर जेते ॥ लै लै नाम पठाये तेते ॥
कह्यो द्वारपालन भयवाढो ॥ करहु कपाट पौरि कौ गाढ़ो ॥
नृपभय मानि असुर सब धाये ॥ अस्त्रशस्त्र लै हरि पर आये ॥
भये विकल लखि पुर नर नारी ॥ मन २ देत कंस कौ गारी ॥
कहत कि भई कठिन यह बाता ॥ बचहु स्याम सोइ करौ विधाता
आवत लखो असुर की भीरा ॥ भिरे हांक दै दै दोउ वीरा ॥
छं० अवलोकि असुर समूह आवत हांक दै दोऊ भिरे
मनहु गज गण निरखि के हरि धाय तिन ऊपर परे ॥
सुनत शब्द गंभीर हरि कौ दहरि सेनापति गये ॥
लपकि गहि महि पटकि जहँ तहँ क्रोध कर कलजु हिये
स्याम गौर किशोर सुंदर असुर गण विच यों लरैं ॥
जनौ सांत अरु सिंगार धरि तन वीर की करनी करैं ॥
जात नहिं वरनी चकट कंगहि पटक इत उत धावहीं
भूमि भार अपार अधनिधि असुर निकर न सावहीं ॥
दो० परयो नगर खलभल सकल अति भय व्याकुल कंस
पुनि पुनि मंत्रिन सों कहत वढ्यो अधिक उर संस ॥
सो० कीजे कछु उपाय जियत जाहि नहि वंधु दोउ
मारहु नंद बुलाय भजि कोउ रहन न पावहीं ॥
पुनि वसुदेव देवकी दोऊ ॥ मारहु कठिन वंधु ते दोऊ ॥

शिवविधिपैनगह्यातितिन्हैमल्लचाहतमहन्
स्यामसहजमल्लनसंगखेलै॥पकरि२भुजदूहन
भयेप्रथमकोमलतनताही

नंदसुवनमासुमातवज्ञानी

छं॰परकौचरणगहिफेरिमहिचाणूरसोंनिकसोंवरे
धसगयोधरमाँसिकिअंगसवेकिकरभूल्योदांवरे॥
भयौशब्दघघातसुनिनृपकंसउरधसक्यौपरौ
निरषिपुरनरनारिनभसुरहरषिहियआनंदभर्यो
पकरियेसियभांतिनवकेलरामसुष्टिकमारियो॥
कहतधनिधनिलोगसवजैजैतिसु रनउचारियौ
मल्लेअरुभतिमल्लआदिकमल्लतुहाजितनेहते॥
रूपटिरूपटिपछारिकैपुनिनदंसुवनमारेतिते
दो॰जवमारेहरिमल्लसवपस्योकरटकमहुशोर॥
जिमितारागणरविउदेछिपैप्रसुरचद्रअोर॥
सो॰सखनसहितदोउवीररंगभूमिराजतखरे॥
हरणभक्तिभैपीरव्रजवासीप्रभुनदके॥

बहुरि केस गहि कंस सरीरी॥ दियौ घसीट यमुन जल डारी
कीन्हौ कछुक तहां विश्रामा॥ भयो विश्रांत घाट तिहि वामा
सुनि पति मरन कंस की नारी॥ और सकल भ्राता की प्यारी॥
रोदन करत कीवि विधि विलापा॥ सुमिरि भूप गुण रूप विधाता
निज हित समुझ भयो दुखभारी॥ चहत मरन पति नेह विचारी
गये तहां वहरौं दोउ भ्राता॥ करुणामय कोमल सुखदाता॥
करि प्रबोध वोली सब रानी॥ रहो मरन ते सुनि प्रभु वानी॥
बहुत भांति तिनकौं समुझाई॥ आये महल द्वार दोउ भाई॥
कालनेम के वंस सुहायो॥ उग्रसेन सुनि कै उठि धायो॥
तिन प्रभु चरण आय सिर नायो॥ त्राहि२ कहि वचन सुनायो
छं॰ त्राहि२ सुनाय आरत वचन प्रभु चरणन गिरयौ॥
अब करहु करुणानिधि क्षमा अपराध यह हमतें परयौ
असुर मारे कंस भायन सहित सो उचित करी॥
पर द्रोह रत खल दलन हित अवतार यह तुम्हरो हरी
करि कै कृपा अब प्रजा पालन हेतु प्रभु चित दीजिये
वर बैठि सिंहासन सुभग यह राज मधुपुरि कीजिये
सुनि दीन वचनन हरषि हरि तव उग्रसेन उठाय के
बहुभांति करि सनमान पुनि२ लिये हृदे लगाय के
दो॰ श्रीमुख सों कर जोरि पुनि कह्यौ सुनो महराज
यदुवंसिन कौं श्राप है हमें उचित नहिं राज॥ सो॰
करहु देव तुम राज दूरि करौ संदेह सब॥
हम करिहैं सब राज जो आयसु दैहौ हमें॥
जो नहिं मानै आन तुम्हारी॥ ताहि दंड करि हैं हम भारी॥
और कछु चित सोच न कीजे॥ नीत सहित परजन सुख दीजे
यादौं जिते कंस के त्रासा॥ गाहु सब तजि२ भये ब्रज वासा

वद्धपौंउग्रसेनें को मारी ॥ पिता दोष कछु उरनहिं धारौ
ऐसे सुनिसुनिवचन उचारे ॥ कंपित रिसनखड्ग कर धारे
क्षण वैठत क्षण उठत अधीरा ॥ मारे असुर सकल दोउ वीरा
अतिवलवंतनंदके वारे ॥ तव सकोप नृप और निहारे ॥
गये मचानमचकि चढि दोऊ ॥ वाजरूप देखत सव कोऊ
उडिगयौचकितनृपतिभैमानौ ॥ आयौकालनिकटयहजानौ
रहिगयोखड्गलियेकरमाहीं ॥ हरिकौंमारिसक्यौ सोनाहीं
तवहींस्यामलातइकमारी ॥ गिरिगयोमुकटसीस तें भारी
दीनौं टेलिमंचतें भूपर ॥ कूदिपरे हरि ताके ऊपर ॥
तहाँ चतुरभुज रूप दिखायौ ॥ सोअरूप दै स्वर्ग पठायौ
मार्‍यौकंस कहत सव वानी ॥ जैधुनिसुरगनगगनवखानी
छं॰ जैधुनिसगगनसुरगणवखानीसुमनकौवरषाभई
कहतसवहरिकंससार्‍यौ होकयहत्रिभुवन गई
ब्रम्हादिसुरमुनिसिद्धगंधर्वमुदितमनअस्तुतिभनी
भूमिसुरउपकारहितअवतारधनित्रिभुवनधनी ॥
धन्यगजधनिमल्लमारे धन्य कंसा सुर हनी ॥
परसि तनअनुपमलहीगतिजातनांहिंमहिमागनी
धन्यअखिलब्रम्हाडनायकभक्तहितनरतनधरौ
धन्यब्रजवासीसकलजिनप्रेमकरितुमवसकरौ
दो॰ करिअस्तुतिपुनिहरषिसुमनवरषिसुरवृन्द
मुदितवजावतदुंदुभी कहिजैजै नद नंद ॥
सो॰ मथुरापुर नरनारि अतिप्रफुलितसवकौंहियौ
मनहुंकुमुदवनचारिविकसतहरिससिमुखनिरखि
मार्‍यौकंसजवहिंभगवाना ॥ भ्राताअष्टतासु वलवाना
करिकरिकोप युद्धकौं धाये ॥ तेपुनिसव वलदेव नसाये ॥

वह्नरि केस गहि कंस गरारो ॥ दियौ घसीट यमुन जल डारो
कीन्हौ कछुक तहां विश्रामा ॥ भयौ विश्रांत घाट तिहि वामा
सुनि पति मरन कंस की नारी ॥ और सकल भ्राता की प्यारी ॥
रोदन कर करी विविधि विलापा ॥ सुमिरि भूप गुण रूप विधाता
निज हित समुझ भयौ दुख भारी ॥ चहुत मरन पति नेह विचारी
गये तहां वहरौं दोउ भ्राता ॥ करुणामय कोमल सुखदाता ॥
करि प्रबोध बोली सब रानी ॥ रहो मरन ते सुनि प्रभु बानी ॥
वहुत भांति तिन कौं समुझाई ॥ आये महल द्वार दोउ भाई ॥
कालनेम के वंस सुहायो ॥ उग्रसेन सुनि कै उठि धायो ॥
तिन प्रभु चरण आय सिर नायो ॥ आहि २ कहि वचन सुनायो

छं० त्राहि २ सुनाय आरत वचन प्रभु चरणन गिरयौ ॥
अव करहु करुणानिधि क्षमा अपराध यह हम तें परयौ
असुर मारे कंस भायन सहित सो उचत करी ॥
पर द्रोह रत खल दलन हित अवतार यह तुम्हरो हरी
करि के कृपा अव प्रजा पालन हेतु प्रभु चित दीजिये
वर वैठि सिंहासन सुभग यह राज मधु पुरि कीजिये
सुनि दीन वचनन हरषि हरि तव उग्रसेन उठाय के
वहु भांति करि सनमान पुनि २ लिये हृदे लगाय के

दो० श्री मुखसों कर जोरि पुनि कह्यौ सुनौ महराज
यदुवंसिन कौं आप है हमें उचित नहिं राज ॥ सो०
करहु देव तुम राज दूरि करौ संदेह सब ॥ ॥
हम करि है सब राज जो आयसु दैहौ हमें ॥

जो नहिं माने आन तुम्हारी ॥ ताहि दंड करि हैं हम भारी ॥
और कछु चिंत सोचन कीजे ॥ नीत सहित परजन सुख दीजे
यादौ जिते कंस के त्रासा ॥ गाइ सव तजि भये व्रज वासा

सुखदै भयु रामांकु वसायौ
विप्रधेनु सुर पूजन कीजें ॥ इनकी रक्षा में चित दीजे ॥
यों प्रभु उग्रसेन समुझाये ॥ राज सिंहासन पुनि वैठाये ॥
सिर पर मंजुल छत्र फिराई ॥ निज कर चंवर लिये दोउ भाई ॥
युग २ प्रभु भक्तन सुखदाई ॥ राखत जन की सदा वडाई ॥
वरसि सुमन सुर कहत सुखारी ॥ जै जै जै भक्तन हितकारी ॥
उग्रसेन नृप करि वैठायो ॥ लखि मथुरा लोगन सुख पायो ॥
धनि २ कहत सकल नर नारी ॥ भ्रत्व कीन्हें पितु मातु सुखारी ॥
यह वात सव घर घर माहीं ॥ इन सम और जगत कोउ नाहिं ॥
छं० नर नारि सव यह कहत घर २ और नहिं इन ते कियो
धनि मातु पितु दिन राति धनि सो जनम जगजस हरि लियो
गहि कंस सहित समाज मारौ गैभ रन नहिं गनि न दियो
उग्रसेन नरेस करि पुनि घवर कर अपने कियो ॥
विवुध हरषे सुमन वरषे सुथिर सव यदुकुल भयो
अव पावहीं पितु मातु सुनि सुष सकल दुष उनको भयो
हम जिये सव निरषि सुख छवि जन्म को फल जग लह्यो
जियहु युग भ्रात दोउ यह हरषि पुरवासिन कह्यो
दो० कंस मारि भूभार सव उग्रसेन करि भूप ॥ ॥
कह्यो हमारे मात पितु नव वोले सुखरूप ॥
सो० संग गहि चले निवास्य उग्रसेन अक्रूर सव ॥
राम कृष्ण दोउ भाय व्रजवासी जन दुख हरन
उत वसुदेव सुपन निसि आयो ॥ हृदय हरषि देवकिहि सुनायो
राम कृष्ण जनु मधुपुरि आये ॥ सुफलक सुत संग रूप निकाये
असुर सेन हनि कंस हि मार्यो ॥ उग्रसेन नृप करि वैठार्यो
सुनि तिय कह्यो नैन भरि पानी ॥ कहत कहा गहि यऐसी वानी

सुनिहैं दूत कोउ दुख दाई ॥ कहिहैं अबहिं कंस सो जाई ॥
हम कीनो पाप जन्म जग लीनो ॥ सो फल हमही विधाता दीनो ॥
बधे मात देखत हम आगे ॥ क्यों एक डारि ब्रज ले भागे ॥
ता पर बंदि करे हम दोऊ ॥ ध्रग जीवन पर बस जग जोऊ ॥
हमकों नीच मीच विधि भूल्यो ॥ होइ कंस को वंस निर्मूल्यो ॥
कहै वसुदेव रोव मति नारी ॥ धोवो वदन दीन्ह जल झारी ॥
कहियत है दुख हरन गोपाला ॥ गर्व प्रहारी दीन दयाला ॥
ह्वै है प्रगट कबहुं दुख दाई ॥ तात तुम्हारे त्रिभुवन राई ॥
दो॰ अब जिन होहु अधीर जिय धरहु धीर सुख पाइ
आय तुलानी कंस की देखत जाय बिलाइ ॥
स्वप्न वृथा नहिं जाइ मातु प्रिया मेरो कह्यो ॥
आज काल्ह मैं आइ तोहि मिले तेरे सुवन ॥
इहि अंतर द्वारे हरि आये ॥ वज्र कपाट जहां जड़ि लाये ॥
करुणा करि हरि तिनहिं निहारा ॥ गये सहज सब उघरि किवारा ॥
लखि वसुदेव सामुहे पाये ॥ कहत कुंवर काके दोउ आये ॥
दियो दरस तिन्हि प्रेम सुहायो ॥ जन्म समै सो दरस दिखायो ॥
मिले धाय पितु मात निहारे ॥ कह्यो तात हम सुवन तुम्हारे ॥
रोवत मधुर निरखि सुत दंपति ॥ सुनहिं कंस [illegible] कोपित ॥
तबहीं कृष्ण कह्यो सुन ताता ॥ मार्‍यो कंस सुरन सुखदाता ॥
मल्ल पछारि सुभट सब मारे ॥ छिरित कुवलिया दंत उखारे ॥
यह कहि करि पितु मातु सुखारे ॥ तुरत तोरि [illegible] बंधन डारे ॥
तब जननी निश्चै करि जानी ॥ रोवन लगी [illegible] ॥
वारहि वार कहत दुलराये ॥ मैं नहिं कबहूं नैन दिखाये ॥
द्वादस वरष कहां रहे प्यारे ॥ मात पिता जाहि बलिहारे ॥
दो॰ सुनि जे सुनी के वचन प्रभु करुणानिधि यदुराय

रोये कदली खंभ रसाला ॥ बांधी रचि रुचि वंदन माला ॥
लखि हरि जन्म अनंद वधाई ॥ निधि सिधि प्रगटी सव ही आई ॥
हाटक कलस अनेक विधाना ॥ मंगल द्रव्य रचे विधि नाना ॥
गज मुक्तन के चौक वनाये ॥ मंदिर गलिन सुगंध सिंचाये ॥
सुनि सव मथुरा पुर नर नारी ॥ उमगि उठो आनंद उर भारी ॥
घर घर सव हिन मंगल साजे ॥ द्वार द्वार प्रति बाजन वाजे ॥
नव सत साज सकल नर नारी ॥ सजि सजि मंगल कंचन थारी ॥
गान करत कल कंठ लगावें ॥ श्रीवसुदेव धाम को आवें ॥
दो॰ जाति पांति परजन प्रजा वंधु हितू सव लोग ॥
लै लै आवत भेट साजि हरषत निज निज २ योग ॥
सो॰ भई भवन अति भीर नट नाचत गावत गुणी ॥
धरि धरि मनुज शरीर मानहु सुरवये सकल जन ॥
तव जननी मन अति सुख पाये ॥ उवटन करि दोउ सुत अन्हवाये ॥
निज कर अंग अंगोछि सुहाये ॥ तन दुति लखि दृग तापन साये ॥
केसरि मिलय मिलय कुचि कारी ॥ कियो तिलक वर भाल सुधारी ॥
भूषण वसन सिंगारत जैसे ॥ राज कुंवर वर सोहत तैसे ॥
कंचन मणि मय सुचित नवीनो ॥ कोट मुकुट शोभित सिर कीनो ॥
कलगी ललित जड़ाव जड़ाई ॥ तुर्रा मध्य अनूप सुहाई ॥
गज मुक्तन के कुंडल कानन ॥ अति विशाल छवि शोभित आनन ॥
कंठ पदिक के हार विराजें ॥ उर विशाल पर अति छवि छाजें ॥
पंचरत्न के अंगद नीके ॥ शोभित भुजन भावते जीके ॥
करचूरा नव रतन निकाई ॥ पाणि पल्लवन छाप सुहाई ॥
किंकिणि कोलित ललित रुचि कारी ॥ कटि कहरि पर वलित सवारी ॥
नूपुर चारु मनोहर पायन ॥ चरण कमल भक्तन सुख दायन ॥
दो॰ नील पीत वर वसन तन दोउ सुतन सिंगार ॥

भये प्रेमवस दुखित लाष्यो ले अति सकुचाय॥
सो अलख्यो नभे सो जाय मातकरि मान विसादचित
अवपुरवय दोउ भाय तुम मनके अभिलाष सब
पुत्रजन्म जगमें सुखकारी ॥ तुम पायो हम ते दुख भारी

॥ तजो शोक आनंद उर

पूरव पुण्य फल्यो सुषकारी

अथ वसुदेव गृह उत्सव लीला

दो॰ तुरत बोलि तब तव विप्रवर प्रीति सहित परिपाय
प्रथम हि संकल्पी इती दई लक्ष ते गाय॥ सो॰
औरदियो बहु दान बन्दीजन आये सुनत॥
पौरिता खेसनमान अति उछाह वसुदेव मन

तब देयकी कह्यो पति पासा॥ परो परम आनंद हुलास
प्रगटे आज सुवन मम धामा॥ करहु जन्म उत्सव को कामा
सुनि वसुदेव परम सुख पाई॥ हरष हार दुंदुभी बजाई
यदुवंसी सिगरे जुरि आये॥ ध्वज पताक मंदिरन बधाये

सो० नरतन पाय सुजान अनुदिन गावहि हरिकथा।
सकल भुवन की खान ब्रजवासी प्रभु को सुयश॥

अथ कुबिजा गृह प्रवेश लीला

श्री यदुकुल कुल कमल तमारी॥ दीनबंधु भक्तन हितकारी
करकै जननी जनक सुखारी॥ तब कुबिजा की सुरत संभारी
नृपति भुवन तजिकै अभिरामा। चले बसन कुबिजा के धामा
कृष्ण कृपा सब ही पै न्यारी॥ भवभंजन कुबजा भई प्यारी
सांचो भाव हृदै जन जाने॥ विवस होय तेहि हाथ बिकाने
नारि पुरुष कछु ताहि न भेदा॥ नीच ऊंच नहिं करत निषेदा
प्रथमहि आय मिली मगयाई॥ सो हित मान लियो यदुराई
चंदन चरचि तनक तन दीन्हो॥ मनहुं कोटि तप काशी कीन्हो
अति अकुलीन कंस की दासी॥ परसत पावन भई रमासी
आये प्रभु पुनि ताके धामा॥ भक्त पक्ष है जिन को नामा॥
जब कुबिजा जान्यो हरि आये॥ पाटंबर पांवड़े बिछाये
अति आनंद लयउ उठि आगे॥ पूरण पुन्य पुंज सब जागे

दो० टेढ़ो ते सूधी करी दियो रूप अभिराम॥
दासी ते रानी भई पूरे सब मन काम॥ सो०
कौ करि सकै प्रकाश अति विचित्र हरि के गुणन
सदा सदा को दास भयो रहे प्रभु उनन कौ

पुरवासिन सबहिन यह जानी॥ राजा हरि कुबिजा पटरानी
घर घर कहत सकल नर नारी॥ कियो कहा धौं इन तप भारी
मिली तनक चंदन दे मग मे॥ भई विदित अति पावन जग मे
यह महिमा कछु कहत न आवै॥ को ताकी पटतर सब पावै
भाल कहत कुबिजा जो कोऊ॥ ताहि रिसात उठन सब कोऊ

॥ चारु अलक सुरख शीश कानि त पिज़ात व लिहार

सवे ॥

। विप्र वंद वसुदेव हंकारे ॥

॥ द्रव्य अनेक निछावर दीन्हो ॥

॥ वंधुन सहित सुरन भय शोभावे ॥

॥ रिद्धि सिद्धि सब पद की दासी

दारुणन्नी की ।

सो॰ नरतन पाय सुजान अनुदिन गावहिं हरिकथा
सकल सुखन की खान व्रजवासी प्रभु को सुयश॥

अथ कुब्जागृहप्रवेशलीला।

श्री यदुकुल कुल कमल तमारी॥ दीनबंधु भक्तन हितकारी
करकै जननी जनक सुखारी॥ तब कुब्जा की सुरत सँभारी
नृपति भुवन तजि कै अभिरामा॥ चले बसन कुब्जा के धामा
कृष्ण कृपा सबही पै न्यारी॥ भव भंजन कुब्जा भई प्यारी
सांचो भाव हृदै जहं जानै॥ विवस होय तेहि हाथ बिकानै
नारि पुरुष कछु ताहि न भेदा॥ नीच ऊंच नहिं करत निषेदा
प्रथमहिं आय मिली मग याई॥ सो हित मान लियो यदुराई
चंदन चरचि लन कतन दीन्हौ॥ मन हूं कोटि तप कासी कीन्हौ
अति अकुलीन कंस की दासी॥ परसत पावन भई सुवासी
आये प्रभु पनिता के धामा॥ भक्त पक्ष है जिनको नामा॥
जब कुब्जा जान्यो हरि आये॥ पाटंबर पांवड़े बिछाये
अति आनंद लयउ ठि आगे॥ पूरण पुन्य पुंज सब जागे
दो॰ टहोते सूधी करी दियो रूप अभिराम॥
दासी ते रानी भई पूरे सब मन काम॥ सो॰
को करि सकै प्रकास अति विचित्र हरि के गुणन
सदा सदा को दास भयो रहै प्रभु उनन कौ
पुरवासिन सबहिन यह जानी॥ राजा हरि कुब्जा पटरानी
घर घर कहत सकल नर नारी॥ कियो कहा धौं इन तप भारी
मिली तनक चंदन दै मग मै॥ भई विदित अति पावन जग मै
यह महिमा कछु कहत न आवै॥ को ताकी पटतर सब आवै
भूलि कहत कुब्जा जो कोऊ॥ ताहि रिसात उठन सब कोऊ

सोतौभईकृष्णकौप्यारी॥दासीकहतनइरतनरनारी॥
करतत्रासमनमैसवप्रानी॥डारहिमारिसुनेजोरानी
जापरकृपाकरैयदुराई॥ताहिनहींयहकछुअधिकाई
सदासदाहरिकौयहरीनी॥मानतएकभक्तसौंप्रीती
धनि२कुविजाहरिकीरानी॥धनि२कृष्णप्रीतिकरमानी
धनि२चंदनअंगलगायौ॥धनि२भवनजहांहरिआयौ
कहहि२सवसुरनारिसिहाहीं॥आजकुवरीसमकोउनाहीं
दो०वसेस्यामकुवजासदनतहंकीरिकछुविश्राम
प्रातआयेवसुदेवगृहजननमेनपूरणकाम॥
सो०तवश्रीनंदकुमारव्रजवासिनकीसुरतिकरि
मनमैंकियौविचारअवसवचालियेनंदपय॥
लैवसुदेवसंगदोउभाई॥गयेजहांउग्रसेननृपराई
तहांवड़ारिजादौसवआये॥औरअक्रूरउद्धवहिवुलाये
तनटेरिऐसेवचनसुनाये॥मनहितव्रजवासीसवआये

सो॰ अब कैसे ब्रज जाहिं बल मोहन दोऊ बिना।
अति व्याकुल उर माहिं कब धौं नैनन देखिहैं॥

॥ अथ नंदबिदालीला॥

आये तबही कुंवर कन्हाई॥ नृप वसुदेव सहित दोउ भाई
देखत नंद मिले उठि धाई॥ लिये लगाय कंठ सुख दाई
अब चलिहैं ब्रज को यह जान्यौ॥ अति आनंद हृदय हरषान्यौ
लखि वसुदेव बहुत सुख पाई॥ मिले नंद सौं सादर धाई॥
उग्रसेन तब नंद जुहारे॥ आदर सहित सकल बैठारे॥
उग्रसेन वसुदेव उपगसुत॥ सुफलकसुत अरु यादव गुणजुत
बैठे मिलि हरि हलधर भाई॥ नंदहि लिये निकट बैठाई
और गोप ठाढे सब पेखैं॥ जसुमति सुत को भाव न देखैं
नंद मनहि अति मन अकुलाहीं॥ चलत बेगि अब ब्रज को नाहीं
सबही के मन में यह आई॥ हरि अब हम सों प्रीति घटाई
करत बिचार श्याम मन माहीं॥ प्रीति बिबस बोलत सकुचाहीं
तब हरि यों मुख बचन उचारो॥ बहुत कियो प्रतिपाल हमारो
दो॰ काके घर नंदराय सुनि कहा कहत गोपाल
मोसों कहत कि आन सों किन कीन्हो प्रतिपाल
सो॰ चमकित जिय नंदराय मति सों मोसों कहो
गहबरि हिय भरि आय ठाढ़े सकत नाहि नैन जल
तब हरि मधुर कह्यो नंद पाहीं॥ सुनहु तात हम कहत लजाहीं
कही गर्ग तुमसों जो बानी॥ सो तुम मन निहचै नहिं जानी॥
पुत्र हेत हमको प्रति पारे॥ तात मात जिम अधिक दुलारे
खेलत हंसत बसत ब्रज माहीं॥ जात इते दिन जाने नाहीं
हमको तुम दीन्हो सुख जितनो॥ कह्यो न जात न जानत कितनो॥

तब हलधर नंदहि समुझावत ॥ कहत तात तुम कत दुख पावत ॥
करि कछु काज बहुरि ब्रज आवैं ॥ तुम बिन और कहा सुख पावैं ॥
हरि प्रगटे भूभार उतारन ॥ कह्यो गर्ग तुम सों सब कारन ॥
मात पिता हमरे नहिं कोऊ ॥ तुमरे सुवन कहावैं दोऊ ॥
हमें तुमें सुत पित को नातो ॥ और पस्यो अब होत न हातो ॥
बहुत कियो प्रतिपाल हमारो ॥ जाव कहा उर ध्यान तुम्हारो ॥
जननि अकेली व्याकुल ह्वै है ॥ तुम्हैं गये धीरज कछु पै है ॥
व्याकुल नंद सुनत यह बानी ॥ पुनि २ कहत जोरि जुग पानी ॥
अब के चलहु स्याम मम गोहन ॥ ब्रज में मिलि आवौ फिरि मोहन ॥
मास्यो कंस कियो सुरकाजा ॥ दीन्हो उग्रसेन को राजा ॥
सुख बसुदेव देवकी पायो ॥ भयो सकल यदुकुल मन भायो ॥
तदपि जसोमति बिन गिरधारी ॥ को जाने प्रभु टेक तुम्हारी ॥

दो० ऐसे कहि अति बिकल ह्वै रहे नंद गहि पाय ।
भई क्षीन दुति हीन मति नैनन जल न रहाय ॥
सो० माया रहित मुकुंद नहीं बिरह संयोग तिहि ।
ब्रह्म पूरण नंद सब घट बासी एक रस ॥

देखि बिरह अति कादर नंदहि ॥ सखा वृंद अरु सब उपनंदहि ॥
बिछुरत तजन चहत हैं प्राणा ॥ तब यह चरित रच्यो भगवाना ॥
मेरी अति दुस्तर निज माया ॥ जिन के जीव बिमुख भरमाया ॥
तिन कछु दृढ कियो मन माहीं ॥ तब ह्वै बोध कहत नंद पाहीं ॥
कत पछतात तात हौ एतो ॥ ब्रज पुर अरु मथुरा हि अंतर केतो ॥
कहा दूर तुम तें कछु जाहीं ॥ करि बिचार देखहु मन माहीं ॥
है ब्रज के नर नारि दुखारी ॥ तातें को जात बिहार तुम्हारी ॥
ऐसे बोध कियो ब्रजनाथा ॥ तब नंद कह्यो जोरि जुग हाथा ॥
जो प्रभु तुम को ऐसे भाई ॥ तौ अब मेरो कहा बसाई ॥

जैहै ब्रजप्रभु कहे तुम्हारे ॥
वहुतकरी तुम मम प्रभुताई ॥ मोच्यदसा लै ऊंच चढ़ाई
परम गंवार ग्वाल पशुपालू ॥ भयो धन्य सव जगत विसाल
दो० मेटि पाय संतप सवै कियो सकल को स्वान
भरी सा खि चौदह भुवन सुर मुनि वेद पुरान ॥
सो० ऐसे कहि नंदराय परे वहुरि हरि के चरण ॥
लीन्हे स्याम उठाय कह्यो जानि सनमान तव ॥
तव वसुदेव विनय वहु भाखी ॥ भाग वहुत संपदा राखी
कियो जो हम प्रति तुम उपकारा ॥ ताको वदलो नहि संसारा
वालक ये अपने ही जानो ॥ इहां उहां कछु भेद न मानो
सुनि अनंद महर पछताई ॥ रहे ठगे तन दसा भुलाई
उरध स्वास नैनन वह पानी ॥ कंपित तन न कहि जात न वानी
सो कछु संपति नंद ने लीनी ॥ विनती वहुत स्याम सा कीनी
मांगत हो प्रभु यह कर जोरी ॥ ब्रज पर कृपा राय नहि थोरी
तव सव गोप नृपति पहं आये ॥ वहुत वोध करि ब्रज दिह पठाये
गोप सखा वोधे हरि सवहीं ॥ विदा किये आदर दे तवहीं
चले सकल ब्रज सोचत भारी ॥ हारे सर्वस मनहु जुवारी ॥
कान्ह सुधि कान्ह सुधि नाहीं ॥ लटपट धरत परत मग माहीं
ब्रज तन आत विलोकत मुख वन ॥ विरह वियाकुल व्याकुल तन
दो० भय विरह वारिधि मगन अति अचेत अकुलाइ
स्याम राम तजि मधुपुरी आये ब्रज निय राय ॥
सो० उनहि गये हरि गेह उग्रसेन वसुदेव युत ॥
ब्रजवासिन को नेह पुनि पुनि मुख ते कहत ।
पुनि अनंद कहत पछितानई ॥ चक्र परी हरि को सिवकाई
कहं लगि भानिय यह अपराधू ॥ कियेक में हम मैया मन साधू

कोमल पद वन अति कठिनाई ॥ तेहैं हरि पै हम गाय चराई
रंचक दधि के काज रिसाई ॥ बांधे यसुमति ऊखल लाई
इंद्र कोप ब्रज लोग बचाये ॥ वरुण लोक सम हित उठि धाये
हम मति मंद तऊ नहिं जाने ॥ निकट वसत नाहिंन पहिंचाने
तन धन लोभ कंस भइ पाई ॥ करि दीने आगे दोउ भाई ॥
ऐसे ससुम्भि नंद निज करनी ॥ परे मुरछि व्याकुल अति धरनी
वारवार जोवत मग माता ॥ व्याकुल विन मोहन वलि ताता
आवत देखि गोप ब्रज ओरी ॥ हरषि हृदय आतुर उठ दौरी
धाई धेनु वत्स कौं जैसें ॥ ॥ माखन प्यारे हैं धौं कैसें ॥
कनियां लेवे कौं अतुरानी ॥ आये वलि मोहन यह जानी

दो॰ धाई अति हरषित हिये सुनत रोहिणी आय
दरस आस धाई सबै ब्रज तिय हिय हुलसाय
सो॰ तेहिं अवसर अति आनंद ब्रजवासी ब्रज तिय सबै
अति सकोच वस नंद सौं दुख जान कहौ नहीं ॥

अथ ब्रज की विरह लीला

आतुर सब लगाईं नंद पासा ॥ मनमोहन दरसन की आसा
देखे नंद आय सब देखे ॥ स्याम राम दोऊ नहिं पेखे ॥
बूझत यसुमति अति अकुलाई ॥ कहं मेरे रामस्याम दोउ भाई
सुनत वचन व्याकुल नंदराई ॥ नैन नैं भरि नारि नवाई ॥
देखत सोच गई ब्रजनारी ॥ जनु प्रफुलित कुमुदिन हिम हारी
जान्यौ आन भई विधि सोई ॥ कहि गये वचन गर्ग मुनि जोई
अति व्याकुल सव हिन ब्रजनाथा ॥ भये सकल नर नारि अनाथा
परे भूम सव दूर लगाई ॥ कौन दोष प्रभु हम विसराई ॥
जसुमति अति विलपति विलपानी ॥ कहत सरोस नंद सों वानी

जैसे ब्रजप्रभु कहे तुम्हारे ॥ जातवचनमोपै
वहुतकरी तुमममप्रभुताई ॥ मोसुदसालेऊंच चढ़ाई
परमगंवारग्वालपशुपाला ॥ भयोधन्यसवजगतविशाला
दो॰ भेटिपायसंतपसवैकियोसुकृतकोखान
भरीसाखिचौदहभुवनसुरमुनिवेदपुरान ॥
सो॰ ऐसेकहिनंदरायपरेवहुरिहरिकेचरण ॥
लीन्हेस्यामउठायकह्योजानिसनमानतव ॥
तववसुदेवविनयवहुभाखी ॥ आगेवहुतसंपदाराखी
कियोजोहमप्रतितुमउपकारा ॥ ताकोवदलोनाहिंसंसारा
वालकयेअपनेहीजानो ॥ इहांउहांकछुभेदनमानो
सुनिश्नंदमहरपछताई ॥ रहेठगेतनदसाभुलाई
उरधस्वासनैनन्नवहपानी ॥ कंपितननकहिजातनवानी
सोकछुसंपतिनंदनेलीनी ॥ विनतीवहुरिस्यामसोकीनी
मांगतहौंप्रभुयहकरजोरी ॥ ब्रजपरकृपाहोयनहिंथोरी
तवसवगोपनृपतिपहंआये ॥ वहुतबोधकरिब्रजहिपठाये
गोपसखावोधेहरिसवही ॥ विदाकियेआदरदेतवही
चलेसकलब्रजसोचतभारी ॥ हारेसवेसमनहुजुवारी
काहूसुधिकाहूसुधिनाहीं ॥ लटपटपरतचरणपरतमगमाहीं
ब्रजतेनआतविलोकतमुखकन ॥ विरहवियाव्याकुलतन
दो॰ भयविरहवारिधमगनअतिसोचतअकुलाइ ॥
स्यामरामतजिमधुपुरीआयेब्रजनियराय ॥
सो॰ उतहिगयेहरिगेहउग्रसेनवसुदेवयुत ॥
ब्रजवासिनकोनेहपुनिपुनिसुमिरतकहत ॥
पुनिश्नंदकहतपछिताई ॥ चूकपरीहरिकीसेवकाई
कहेलगिभानियपहअपराधू ॥ कियेकर्महमथिरमअसाधू

पठयौमोहिनोहिहितलागी॥ तव मैंकथन सक्यौनहिंत्यागी
सुनिसदेसजसुमतिदुखपागी॥ रहेप्राणहरिचरणनलागी
एकपलकविछुरतहरिनाही॥ गाहिरहेमिलनकीआसमनमाही
ब्रजघरघरसवकहतगुवाला॥ कियेकृष्णमथुराजोख्याला
मारयौरजकजायहरिजवहीं॥ नहिंजान्यौनिवहे इन तवहीं
चंदनवहुरिकंस कौ लीन्हौ॥ रूप अनूप कूवरी लीन्हौ
वैसौधनुषतोरि पुनि डारयौ॥ फिरि दोउ भायन मजको मारे
रंगभूमिसवमल्ल पछारे॥ असुर अनेक युद्ध करि मारे
कहतहूतेब्रज मैं हरिजैसे॥ कियौजायकंसहू पुनि तैसे
केसपकरिमहितुरतगिरायौ॥ आरियमुनजलमाहिवहायौ

दो॰ उग्रसेन राजाकियौनिजकरछत्र दुराय॥
मथुरानरनारीसवै आनंदे सुख पाय॥ सो॰
पुनिभेंटेहरिजायदेवकिअरुवसुदेवसौं॥
कह्यौपरमसुखपायतातमातकोहभ्रातदोउ

नहींभयौउत्सवअतिभारी॥ दियौदानवहुविप्रहंकारी
हरिकौवसनभूषणपहिराये॥ मंगलसवनरनारिन गाये॥
मथुराघरघरवजीवधाई॥ वहुसंपतिवसुदेव लुटाई॥
अवनहिंगोपग्वालकहावैं॥ वासुदेवसवनाम वुलावैं॥
यदुकुलकमलसकलजगनायक॥ विरहवानवनितनसुखदायक॥
भयेकृष्णमथुराके राजा॥ आहिनदोहिलसगन अवकाजा
पथिग्वालनयहवातसुनाई॥ वसेस्यामकुविजा घर जाई॥
भयेजासुवसफ्रनिहितमानो॥ कीन्हीनारिह आपनीरानी
राजाहरिकुविजाभईरानी॥ गोपिनसुनीजवहियहवानी
गईविरहतननपतिमिराई॥ सौतिसालमान्यौउरआई॥
भयोदुसहदुखरूधस्वासा॥ मिटीस्यामआवनकीआसा॥

॥विदा होत फाटी नाहि छाती

अवरधे वचन सुनत उठि धाये॥ कह्यो लैन सुख ब्रज में आये

दो॰ कैसे प्राण रहे हिये बिछुरत आनंदकंद
सुनी नहीं स्वारथ कथा कहूं श्रवण मतिमंद

सो॰ मैं मधुपुरि ही जाय पौ होंहरि को धाय के
लीजै ठौकि बजाय अब अपनो ब्रजनंद यह

यह सुनि नंद परे मुरझाई॥ अतिब्याकुल ब्रजलोग लुगाई
पुनि ये कहत जसोमति टेरे॥ कहा छांडे दोऊ सुत मेरे॥
जीवन प्राण सकल ब्रज प्यारो॥ छोरि लियो वसुदेव हमारो
सुफलक सुत बैरी भयो भारी॥ लैगयो जीवन मूरि हमारी
होनगई अब संग अभागी॥ सिखये हुते लोग न केलागी
जो मैं जानपावती मोहन॥ तौ क्यों छांडि आवती मोहन
ऐसे रोवत करत बिलापू॥ कहिन जात जसुमति परतापू
हरि बिन सब नर नारि उदासी॥ आये ब्रजहि सकल ब्रजवासी
नहीं स्याम बिन सदन सुहाई॥ मनहु मसान भूमि धरखाई
पूछति बिलपि जसोमति मैया॥ कहौ नंद कहां कह्यो कन्हैया
तुम कौ बिदा ब्रज हि जब कीन्हो॥ हाँसि कछु मोहि संदेसो दीन्हो
तुम कछु हरि सौं बिनय न भाषी॥ कह स्याम मन में यह रक्खी

दो॰ मैं अपनो सो बहु कियो बिभ्र त्रिभुवन नाथ
जो चाहै सोई करै कहा हमारे हाथ॥ सो॰
हरि कहि के नाहि अनाम बहुरि स्याम ऐसे कह्यो
करि के कछु सुर काम मिलिहों तुम सों आय के
पुनि बोले ऐसे बल भैया॥ दुखी होन पावे नहि मैया
धीरज देउ तात तुम जाई॥ कछु दिन में हम मिलिहैं आई

कंसमारिकैसोअवलोन्हो॥ ताकोप्रभुताप्रगटनकीन्ही
व्रजवनितात्यागीअवतातैं॥वूकीसकलस्यामकीवातैं॥
कहतएकतवसुनसखिएरी॥येदिनहरिकौविसरिगयेरी
लियेफिरतहीजवमदकियां॥पाहिरवनमिखएहगतानेयां
घरघरडोलतमाखनखाते॥जसुमतिउरहनदेतलजाते
वड़ारेभयेजसकछुकसयाने॥वारघाटओगुणवहु वाने
जोजोउनहमसोंगुणठान्यौ॥हमसवताहीमैंसुखमान्यौ
जवभजिआपगोकुलमेंआये॥गोपभेषकरिरहेछपाये॥

दो॰ देवमनावनदिनगयेवड़ेहोनकीआस॥
वड़ेभयेतवयहकियौवसेंकूवरीपास॥
जसुमतिलाड़लड़ायवारेतेसेवाकरी॥
ताहूकौविसराइभयेदेवकीपुत्रअव॥

सुनौसखीअवकह्योहमारो॥नाहिंकोजोतिनकौपतियारो
जेजनुजगमैंकृतनहिनमाने॥निजस्वारथलगिवहुगुणठाने
ज्यौंभौंराकलकंजसुहाई॥वैठतचाहिसुमनपरआई
रसलैचाखिपानिहिननहिमाने॥मिलनकुलहिजवहोतसयाने
पालतकागपिकाहिहितमाने॥मिलनकुलहिजवहोतसयाने
सोईभईहमहिंअरुनेहहिं॥कहियेकहाभलागोविंदहि॥
जेखोटेमनकपरसयाने॥ओरपरेपरेंपहिचाने॥ ॥
वैठतअवनपआसनमाहीं॥सुनियतमुरलीदेखलजाहीं
मोरपंखदेखेनहिंभावे॥अजाकोनामलेतवहरावे॥
सुरभीचित्रहुमेंकौहेरत॥तौलजायदूतउलमुखफेरत
हमरोनामसुनतचापिजाहीं॥सुरतकरतग्वालनकोनाहीं
येवहजानेपीरपराई॥जिनकीप्रकृतिखरीयहआई

दो॰ भयोनयोअवराजव्हांगयेमातपितगेह

नैननिजलधाराअतिवाढी॥रहीसोचवैठीकोउठाढी॥
दो॰ जुरिआईब्रजतियसवैसुनिकुविजाकीवात
लागीआपुसमेंकहनमनदुखमन हरखात
सो॰ करीसुहागिनस्यामकुविजादासीकंसकी
आपुनपतिवहस्वामकियोनामतिहूपरविदित
लैप्रीसंडमिलीमगमाई॥सुनियतताने अतिमनभाई॥
वुरीभलीकछुजातनचीन्ही॥वहूनरूपदै समकरलीन्ही॥
वेवढ़रखण नगरकीसोऊ॥वन्योसंगअवनीको दोऊ॥
कहतजुकहसोईअवमानै॥निसदिनवाकेगुनहि वखानै॥
जानिअनोरखीनेहवढावै॥अवनहिंसखीस्यामव्रजआवै॥
अपसकह्योकछुरसजनाई॥स्यामसदाकेऐसे माई॥
जवअक्रूरलैनव्रजआयो॥कालिलागितवयहीसुनायो॥
नईकूवरीनारिवताई॥तवहिगयेताके सग भाई॥
वोलीएकऔरतिनमाही॥कुविजातुम देखी केनाही॥
रही वेषुनतषजातमहोरी॥तवनीकेहमताहिनिहारी॥
अवटेढ़ीमालिनकीजाई॥हंसतजाहिसवलोगलुगाई॥
वसतढिंगनन्रृपमहलनजोई॥सुनियतकेरी सुन्दरी सोई॥
दो॰ कोटिवारदाहीअनलकोटिकसोकिनसोइ॥
तोकतपीतरतेक हकैसुउ सोनो होय॥सो॰
हरितजदीन्हीलाजहमैं होतसुनिकै हंसी॥
जायकूवरीकाज मथुरामारयो कंस नृप ॥
वोली सखीओरइकवानी॥आलियहवातनहींतुमजानी॥
कुविजासदास्यामकीप्यारी॥वेभरताउनकी वह नारी॥
तैसेंनहीं नाहिकुरिदासी॥राखीयेअवगतिगुणरासी॥
रूपरतनकूवरिमें राख्यो॥जिममोतीसीपनमें भाख्यो॥

नईनारिकुबिजामिलीभयेसखानवनेह ॥ सो०॥
बिसरीब्रजकीबात कुंजकेलिरस रास की ॥
गये आपनी घात दिनसुखदनो लही॥ चौ०॥
कौन दाव के करै यरेखौ ॥ सखि अपने जियसोचनदेखौ
ना हरिनातिन यांतिहमारी॥तिनकौदुखमानिये कहारी
गोपीनाथ नंद के लाला॥ अवन कहावतकान्हगुवाला
बासुदेव अबउहांकहावत॥यदुकुलदीपभाटवखानत॥
नहिंवनमालगुंजउरमाही॥मोरपच्छ माथे पर नाही॥
रहवनकीसवप्रीतिभुलाई॥वासुरली संग गई सगाई
अबवहसुरतहमेलकवराजन॥दिनदसप्रीतिकरीनिजकाजन
सबैअजानभई तेहिकाला॥सुनिमुरलीकोशब्दरसाला
अबमनजलनिधिरवाज्योथाके॥फिरअथरराजहेगंजहतकै
तबवहरूपाक्रतीब्रजमाहीं॥रास्योगिरधरकरनलमाही
कहतएकसुनियेब्रजनाथ॥ब्रजअबमानहुदियोअनाथ
बड़ेरोझोरप्रतापकियोरी॥हमहितदावानलचितयोरी

दो० अबयहदोषलगेहमैसऊतसकुचतजीय
भयोवघरहैतेकठिन विछुरतफटै न हीय॥
सो० अबलागोदिनजानसुनसखिमोहनलाल बिन
रहतदेहमेप्रान बिनवहमूरति सांवरी ॥ ॥

रहतवदनदेखेबिननैना॥सखणरहतसुनेबिन बैना
रहतहियोविनहरिकरपरसे॥वेधनवाणमनोभवबरसे
अबसखियोसदिनयदुखभारी॥मनदैनैनतनप्राणहमारे
जबविधिवालकवतसखरयो॥तबहीतेसहुओरयनाय
जनुवैसेईकुवरकन्हाई॥ विरहदृष्टिब्रजओरचलाई
ऐसेमनगुनगुनिगोपाला॥भई विरहवससवब्रजवाला

जोतिहिंकोदिन उपजोदुखमनमें॥व्यापीदई अवस्थातनमें
कोउकहलोचन भरे हमारे। कोजीवहिंबिन स्यामनिहारे
ज्योंचकोरबिनचंददुखारो॥जैसेबिनवारिजविनवारो॥
बिवरनजिमिग्रीषमकेखंजन॥जैसेदुखीभ्रमरबिनकुंजन
स्याम सिधुतेबिछुरपरेरी॥तरफरातज्यों मीन खरेरी॥
भरतहरतपुनिरपैकुलाही॥हरिबिनधरतधीरहगनाही
दो० देख्यो नहीं सुहातकछु गेह हबिन वननंदनंद
बिरह बिथा जागतनहीं भयोनपूनकोतचंद
सो० बिनास्वासको देहजोररूपहोजात जिमि
तिमलागतब्रजगेह हरिबिनसखीभयावनो
इहिंबिरियांवनतेंहरिआवत॥दरमिहितकलवेणुबजावत
कवहूंकपरमचतुरगोपाला॥गावतऊंचे स्वरनंदलाला
कवहूंकलैलैनामसुनावत॥धोरीधूमरिधेनु बुलावत
देतहगनसुखबनतेंआवत॥हमसन मोहनरूपदिखावत
औरसखी बोली इकऐसे॥बहुरी कवहुंदेखय वैसे
वैटेग्वालबालकनसाथा॥बाहनखातअसनब्रजनाथा
इकदिनदधिचोरनमम धामा॥मैंदोरदखिदईकविधामा
वेभाजेमगलखिपरिछाहीं॥तबमैं धायलई गहिवाहीं
मुखकरियोंछिलियेगोहकनियां॥प्रेमप्रीतिरसकेदृषदनियां
रहलागेछतीसोजैसे॥सोवहकहोजातसुखकैसे॥
जिनधामनअबमुषअवलोके॥तेअबधीरखातबिलके
सुमिरिर वेगुणगणनाना॥हरिबिनरहतअधमतमधामा
दो० कहलोगकहियेसखीमनमोहनकेखेल
उनबिनुअबगोकुलभयेज्योंदियाबिननेल
सो० भरत नैन जलछायसुमिरिरगुणस्यामके

नईनारिकुविजामिलीभयेसखानवनेह ॥ सो०॥
विसरीब्रजकीवान कुंजकेलिरस राज को ॥
गयेआपनी घात दिनसुखदूनौ लहौ॥चौ०॥
कौन दांव के करै यरेखौ ॥ सखि अपने जियसोच नदेखौ
ना हरिनातिन पांतिहमारी॥तिनकौदुखमानिये कहारी
गोपीनाथ नंद के लाला॥ अवन कहावतकान्हसुवाला
वासुदेव अवउहांकहावत॥यदुकुलदीपभाटवरगावत॥
नहिंवनमालगुंजउरमाही॥मोरपच्छमाथे पर नाहीं॥
गईवनकीसवप्रीतिभुलाई॥वासुरली संग गई सगाई
अववहसुरतहोतकवराजन॥दिनदसप्रीतिकरीनिजकाजन
सवैअज्ञानभई तेहिकाला॥सुनिमुरलीकोशब्दरसाला
अवमनजलनिधिखगज्यौथाकै॥फिरअरगजहोजिहतांकै
तववहरूपाइतीव्रजमाहीं॥रास्योगिरवरकरनलमांही
कहतएकसुनियेव्रजनाथा॥व्रजअवमानहुकियोअनाथा
वड़ौरोअोरप्रतापकियोरी॥हमहितदावानलचितयोरी
दो० अवयहदोषलगैहमैसकुचतजीय
भयोवज्रहूतेकठिनविछुरतफटै न हीय॥
सो० अव लागेदिनजानसुनसखिमोहनलालविन
रहतदेहमैमानविनवहमूरति सांवरी ॥ ॥
रहतवदनदेखेविन नैना॥सखवण रहतसुनेविन वैन॥
रहतहियोविनहरिकरपरसे॥वेधतवाणमनोभववरसै॥
अवसखियौसविनयदुखभारी॥मनहुनैनतनप्राणहमारी
जवविधिवान्हकवतसुडरयो॥तवहीतेसवहीजवनायो
जनुवैसेईकुंवरकन्हाई॥विरहशंपिकजओरचलाई
ऐसमनगुनगुनिगोपाला॥भई विरहवससवव्रजवाला॥

देगयेविरहसचलतपरतीती॥मिलिहौंआयबहुरीरिपुजी
हारेकैउतहिमगजोवत।रायरायउरकंचुकिधोवत॥
जैसोदिननिसतैसीजाई॥पलभरनींदपरतनहिंजाई
मंदसमीरचंद्रदुखदाई॥इनतेंजरतसेजअधिकाई

दो॰सपनेहूतोदेखिये नींदपरैजो नैन॥
कीनेविविधिउपायमनकोहूलहत नचैन
सो॰बोलिउठीइकवामसुनसखिहौंतासोंकहौं
जबतेंबिछुरेस्याम आजलखे मैं सपन में॥

आयेजनुममसदनगुपाला॥हँसिभुजधारिगहेनंदलाल
कहाकहौंअरिनीतिमईरी॥एकछिनरीनहिंऔररहीरी
ज्योंचकईलखिनिजपरछाहीं॥पतिहिजानिहरषीमनमाहीं
तबहींनिठुरबिधाताआई॥दियोपवनमिसदलडुलाई
मेरीदसाभईसखिसोई॥जोजागैंतौढिगनहिंकोई॥
देखकुलाअधिकअकुलाई॥विरहजरीअरुकासजराई॥
कहाकहौंकेहिदोषलगाऊं।सपनोचूकसमझिपछिताऊ
बिछुरतहीनहिंक्योंसरीरा॥समुझिपरीतबहीयहपीरा
महादुखितअबअंगहमारे॥भयेसखीदोउनैनपनारे॥
अतिहीभ्रमसातेबिनदेखे।चाहतरूपस्यामकोपेखे॥
रसनायहनेमगहिराख्यो॥हरिबिनऔरनचाहतभाख्यो
जबतेंबिछुरेकुंवरकन्हाई॥तबतेंभयेसबैदुखदाई॥

दो॰वेईनिसवेईदिवस वेईऋतुवेईमास
बेदलसबैस्वभावजनुबिनहरीमदनबिलास
सो॰चलीओरहीबालअबया ब्रजमेंएसखी
बिमुखभयेगोपालभयेदुखदजेसुखदसब

रहाकंदरा तेजभईसखी।रातिकोकिरनिप्रभुसबनुखी

कोहियेकह्यासुनायभयेपरायेकान्हअव
एकप्रलापकरततिनमाहीं॥ कहैंजायकोउनेहरिपाहीं
लैकेआयनिजगायघनेरी॥ फिरतनाहिंग्वालनकेफेरी
विहरीफिरतसकलवनमाहीं॥ तुमविननाहिंकाहिपतियाहीं
अपनेजानसंभारलैआई॥ मोतिविसरीव्रजहेतकन्हाई
विलखतगायवत्सअवग्वाला॥ नेकसुनावहुवेणुरसाला
वूडतविरहसिंधुमेंनारी॥ लेहुआयनिजभुजानिकारी॥
कोउकहतकहूंकोउजाई॥ वसौफेरिव्रजकुंवरकन्हाई
अवनाहिंतुमसौंगायचरावें॥ नहिंजगायवनप्रातउठावें
माखनखातवरजिहैंनाहीं॥ नहिंडरहनजसुदहिलेजाहीं
मेहदीवरजिसुमतिकोदेहैं॥ नहिंअवऊखलसेंवंधवैहैं
चोरीप्रगटकरैंनहिंकाहू॥ नहींजनावेंअवगुणताहू॥
वेनीफूलगुहननहिंकैहैं॥ नहींमहामवस्तुचूराणदिवैहै
दो॰ मागतदाननवरजिहैहठनाहिंकरिहैमान
आयदरसअवदीजियेरहतनतुमविनप्रान
सो॰ ऐसेकहिगहिपायल्यावहिंफेरिमनायहरि
वसहिवहुरिव्रजआयतोनंदनंदनसांवरो॥
एककहतअवहरिनहिंआवें॥ नृपपदतजिकोग्वालकहावे
जहंगजरथघोडचलतकन्हाई॥ कहांसोगायचरावहिंभाई
उहांपाटवरपाहिरदिखावें॥ इहांकामरिकोंमनभावे
अवउनजसुमतिमातविसारी॥ कौनचलावेवातहमारी
वोलीअपरसखीविलखाई॥ भयेनिठुरअवकुंवरकन्हाई
करीप्रीतिहमसौंहरिऐसी॥ सुनसखिवेललितमीनकोजैसी
तलफतमीनेनिकटअकुलाने॥ नीरककुदरपीरनजाने॥
इन्नोदरदयानहिंकीन्हो॥ वीतीअवधिखवरनहिंलीन्हीं

दैगयेविरहमचलतपरतीती॥मिलिहौंआयुवहुरीरिपुजीती
हारेनैनउतहिमगजोवत॥रोयरोयउरकंचुकिधोवत॥
जैसोदिननिसतैसीजाई॥पलभरनींदपरतनहिंजाई
मंदसमीरचंद्रदुखदाई॥इनतेंजरतसेजअधिकाई
दो॰सपनेहूतोदेखिये नींदपरैजो नैन॥
कीनेविविधिउपायमनकौंहूलहतनचैन
सो॰वोलिउठीइकवामसुनसखिहौंतोसोंकहौं
जवतेंविछुरेस्याम आजलखेमैं सपन मैं॥
आयेजनुमममदनगुपाला॥हंसिभुजपारिगहेनंदलाला
कहाकहौं आलीतिमईरी॥एकहुछनहिंजोरहीरी
ज्यौंचकईलखिनिजपरछांही॥पतिहिजानिहरषीमनमाहीं
तवहींनिठुरविधाताआई॥दियोपवनमिसमेलिउडाई
मेरीदसाभईसखि सोई॥जोजागींतौढिगनहिंकोई॥
देखहुकहाअधिकअकुलाई॥विरहजरीअरुकामजराई॥
कहाकहौंकेहिदोषलगाऊं॥अपनीचूकसमुझिपछिताऊं
विछुरतहीनहिंतज्योसरीरा॥समुझिपरीतवहींयहपीरा
महादुखितअवअंगहमारे॥भयेसखीदोऊनैनपनारे॥
आनिहींभ्रममातेविन देखे॥चाहतरूपस्यामकोपेखे॥
रसनायहनेमगहिराख्यौ॥हरिविनऔरनचाहतभाख्यौ
जवतेंविछुरेकुंवरकन्हाई॥तवतेंभयेसवैदुखदाई॥
दो॰वेईनिसिवेईदिवसवेईऋतुवेईमास
वेद्दलसवैस्वभावजनुविनहरीमदनविलास
सो॰चलीओरहीवालअवयाब्रजमेंएसखी
विमुखभयेगोपालभयेदुखदजेसुखदसव
गृहकंदरातेजभईसखी॥मानिकमोतिहीरपरापूलसुखी

सीचुत अलीमलय घसनीरा॥ होत अधिकता वे उर पीरा
फूले ... फूलवन डारी॥ करत दीखियत अनङ्ग अंगारी
हरिबिन फूल लगत बिन कैसे॥ मनहु त्रिसूलसूर उर जैसे
नुवदू नत रुन अमृतफल लागे॥ अवते फल सर्व विषरसपागे
तप्त तेल सम वारिद पानी॥ उवत दहै सम चातक बानी
त्रिविधि समीर तीर सम लागे॥ कोकिल शब्द अग्नि ज्वर दागे
सुन सखि चातक दोष न दीजे॥ ज्यो ये पाप कोसी के जीजे
जैसे पिय पिय हम रटलावत॥ तैसे ई कहि कहि यह गावत॥
अतिसुकंठ पीनमहितमानी॥ प्राणनहि रटत रहत पिय बानी
आपसुधा रस खीसुख पावे॥ टेरि टेरि विरहिन को ज्यावे
जो यह खग नाहि करत सहाई॥ लहत प्राण तो दुख अधिकाई

दो॰ या पक्षा सम और को जु अस मिव सुकृत समाज
सुफल जन्म है तासु को जो पावे पर काज॥

सो॰ मगन सकल ब्रजबाल ऐसे हरि के विरह सन
नहि विसरत नंदलाल सोचत जागत दिवस निस

पथिक जात मधुवन तन हेरे॥ ताहि धाय ब्रजजिय सब घेरे
कहल परी हम पाय तुम्हारे॥ सुनहू च यही वचन हमारे
उत है वसत कूसवकुज नाथा॥ कहियौ तिनसौं ब्रज कीगाथा
तुमजो इन्द्र कौ यज्ञ नसायौ॥ पुनि गिरि कर धर व्रज हि बचायौ
मो अव बुड़ विरह है आयौ॥ चाहत है ब्रज फेरि वहायौ
वरसत निसदिन दृग घन कारे॥ वढ़त अपन विच सलिल पनारे
ऊरध स्वास पवन झकझोरे॥ गरजत शब्द पवन घन घोरे
महाबच दुख दुगवृक्ष उपाडारे॥ व्याकुल अंग सकल अतिमारे
विथा प्रवाह वढ़्यो अतिभारी॥ वूड़त विकल सकल ब्रजनारी
चितवन मग सब नाथ तुम्हारी॥ जानि आपनो आय उवारी

गयेमिलनकाहू श्रीसुखवानी ॥ अवधिपियदीतेसचुहिसिरानी
तुमबिनतलफतप्राणहमारे ॥ जैसेमीनसलिलतें न्यारे ॥
दो० एकबारफिरिआयकेदेहुसुदरसनस्याम
तुमबिनब्रजऐसोलगतज्यौंदीपकबिनधाम
सो० मिलतेबैनबजाय अबतुमकृपाभईकहा
प्रानिकहफोरिहौंआयप्राणगयेब्रजआवते
सुनहुपथिकतोहिरामदुहाई ॥ काहियोयहमोहनसोंजाई
तुमबिनराधेकेतनुआई ॥ भईसबविपरीतिबनाई ॥
बदनछपाकरियोनिछपानो ॥ अबराहिगईकलंकनिसानो
आंखियांकूतीकमलपखरीसी ॥ सोअबमनहूंरंगनिचुरीसी
आंचलगेकंचनजिमिकाचो ॥ तिमितनबिरहानलकोमाचो
कदलीदलसीपीठसुहाई ॥ सोअबमानोउलटिमगाई
सुखकीसंपतिसकलनसानी ॥ जारतभईकोकिलाबानी
अवसविसादमानकीनासी ॥ ह्वैरहितुम्हरेदरसपियासी
चातकपिकमृगपतिकुलजाता ॥ तवइनकोदेखनअनखाता
अबतिनसोंपूछतहैधाई ॥ तुम्हरेचरणकमलकुम्हलाई
ललितादिकसखियनलखिधाई ॥ जातिपराचढ़िगर्वबढ़ाई
अबकहिसखीतिन्हेंअकुलाई ॥ मिलैरायकेकंठलगाई
दो० सुधिबुधिसबतनकीगईरह्यौबिरहदुखपाइ
होनचहतदसईदसाबेगिमिलहुतोहिआइ
सो० ऐसेनिजनिजहेतकहन संदेस स्याम सौं ॥
पथिकहिचलननदेत [illegible] सांझताकोतहां
बिरहिबिकलसबब्रजकीबाला ॥ हरिबियोगदुरपीरबिशाला
हरिदरसनकोकलनहिपावे ॥ जिहि [illegible] काहूउरखियाजगावे
जबपीरहादलननिमिआई ॥ कहतताहिकोऊअनखाई

सींचत अलीमलय घनसीरा ॥ होत अधिक ताते उर पीरा
फूलें [illegible] य फूल वन डारी ॥ झरत देखियत मनहु अंगारी
हरि बिन फूल लगत तिन कैसे ॥ मनहु त्रिसूल सूर उर जैसे
नव द्रुम नतरु न अमृत फल लागे ॥ अब ते फल सब विषरस पागे
तपत तेल सम बारिद पानी ॥ उठत दाह सम चातक बानी ॥
त्रिविधि समीर तीर सम लागे ॥ कोकिल शब्द अग्नि जनु दागे
सुन सखि चातक दोष न दीजे ॥ ज्यों ये पाप कौन सी कीजे
जैसे पिय २ हम रट लावत ॥ तैसे ई कहि २ यह गावत ॥
अति सुकंठ पीतम हित मानी ॥ इहि मन हरि रटत रहत पिय बानी
आप सुधारस सखी सुख पावे ॥ टेरि टेरि विरहिन को ज्यावे ॥
जो यह खग मन हित करत सहाई ॥ लहत प्रान तौ दुख अधिकाई

दो॰ या पक्षी सम और को जु जस सिव सुकृत समाज
सुफल जन्म है तासु को जो पावै पर काज ॥

सो॰ मगन सकल ब्रजबाल ऐसे हरि के विरह सन
नहिं बिसरत नंदलाल सोचत जागत दिवस निस

पथिक जात मधुबन तें न हेरे ॥ ताहि धाय ब्रज जिय सब घेरे
कहत परी हम पाय तुम्हारे ॥ सुन कहु यह ही बचन हमारे
उत ह्वै बसन कृष्ण ब्रजनाथा ॥ कहियो तिन सों ब्रज की गाथा
तुम जो इन्द्र को यज्ञ नसायो ॥ पुनि गिरि कर धर ब्रजहि बचायो
सो अब बहु विरहा ह्वै आयो ॥ चाहत है ब्रज फेर बहायो
बरसत निसदिन दृग घन कारे ॥ बढ़त सुचन बिच सलिल पनारे
ऊरध स्वास पवन झकझोरे ॥ गरजत शब्द पवन घन घोरे
महा बज्र दुख दुग द्रुम डारे ॥ व्याकुल अंग सकल अति मारे
बिथा प्रवाह बढ़्यो अति भारी ॥ बूड़त विकल सकल ब्रजनारी
चिन्तवत मग सब नाथ तुम्हारो ॥ जानि आपनो आय उबारो

दो॰ कोऊ ऐसें कहि उठत वरजहु वोलत मोर ॥
र ह्यो परत नहिं टेर सुनि विन श्री नंद किशोर ॥
सो॰ वोलत करत विहाल मोरहू सखी वेरी भये
वसे विशेष गुपाल ये वन तें न मरे टरे ॥ चौ॰
विरह मगन यों व्रज की नारी ॥ नहीं कृष्ण सों पल भर न्यारी
रही कृष्ण छवि हृग न समाई ॥ रसना कृष्ण नाम रट लाई
मन में गुणहिं सदा गुण हरि के ॥ श्रवण रहैं हरि कौ यश भरि के
वसी स्याम मूरति उर माही ॥ विसरत सुरत एक पल नाही
वैठत उठत चलत घर वाहिर ॥ स्याम सनेह गुप्त अरु जाहिर
सोवत जागत दिन अरु राती ॥ प्रीतम कृष्ण प्रीति रस माती
सव अंग कृष्ण प्रेम रस पागी ॥ भई कृष्ण मय सकल सभागी
धनि सो प्रीति कृष्ण सों लागी ॥ धनि सो सुरति कृष्ण रस पागी
धनि सो सुख हरि संगति हारी ॥ धनि सो दुख हरि विरह दुखारी
धन्य परख्यो हरि सों जाई ॥ धन्य सरे खो हरि को होई ॥
धनि सो ज्ञान ध्यान धनि सोई ॥ जप तप धन्य जो हरि हित होई
धन्य जन्म जो हरि के दासा ॥ सव विधि धन्य जिन्है हरि आसा
दो॰ नंद यसोमति गोपि कन निसवासर हरि ध्यान
व्रजवासी प्रभु दासकी आस रहे लगि प्रान ॥
सो॰ विसरे सव व्यवहार और न दूजी गति कछू
अवलकोटि आधार एक सुरति नंद नंद की ॥

अथ यज्ञोपवीत

रहे जाय मथुरा हरि जव तें ॥ नित नव मोद होत तहं तव तें
देवकि मन अभिलाष पुरावें ॥ निरषि रहौ उसुत सुख पावें
परमानंद मगन वसुदेऊ ॥ सुखी सकल यादव गण तेऊ

हौंतौविरहजरीसंतापी॥तूकतजारतरेखगपापी
पियु२कहिअधरातपुकारै॥मृतकमनकअवलनकतमारै
तूनहिसुखितदुखितविनुनारी॥तेऊनसमुझतसवपरपीरा
कातकहाइतनीकठिनाई॥हरिविनवोलतअजुपरभाई
उपजावतविरहनउरआरत॥काहेअगिलेजन्मविगारत
एककहतचातकसोंटेरी॥हैसारंगहमचेरीतेरी॥
पौढहोहिंजहांसुखदाई॥ऊंचेटेरसुनावहुजाई॥
गईग्रीषमपावसऋतुआयो॥सवकाहूचितवाकुआयो
तुमविनअजुतियडोलतऐसे॥नावविनाकरियाकीजैसे

दो॰ भलेंगेतेरीकह्यौतेरेहितघनस्याम॥
लेहुसुयशचातकवडोलेआवहुसुखधाम
सो॰ सुनिचातककेवैनकोऊसखिऐसेकहत
यहनिहगसुखदैनसाषिमोहिप्यारेपीवते

निसदिनपियु२रटतविचारौ॥पीकेविरहभयौजरिकारौ
स्वातिवूंदिलगिरहतदुखारौ॥तज्योसिंधुजलकौकरिखारौ
आपपारिपरपीरहिपावै॥जियकौजीवननामसुनावै
अभवाणलागयौजिमिहोई॥जानेवियाप्रेमकीसोई
कोऊकहतकोकिलेटेरी॥मनोसिखीसीखहुकमेरी
वसतजहांहितुकपंकन्हाई॥फिरआवहिचारिकतहंजाई
तूकुलीनकोकिलसयानी॥सवहिसुनावतमीठीवानी
तोसमकोइनहींउपकारी॥जानतहैविरहिनदुखभारी
उपवनवसिस्यामकोवेरी॥कहियाअवननमन्मथघेरी॥
मधुरसुनायमधुरकलवानी॥व्रजलैआवस्यामसुखदानी
कहुहैंतिनमोहनहमचेरी॥गावहिगीकलकीरतितेरी
मपनरूपलदोमिलतनहियेरी॥मतसुविकतसुयशकोटेरी

दो॰ कोऊ ऐसें काहि उठत वरज द्वोलत मोर॥
रह्यौ परत नहिं टेर सुनि विन श्रीनंद किशोर
सो॰ बोलत करत विहाल मोरऊ सखी वैरी भये
वसे विशेश गुपाल ये वनतें न मरे टरे॥ चौ॰
विरह मगन यों ब्रजकी नारी॥ नहीं कृष्णसों पलभर न्यारी
रही कृष्ण छवि हग न समाई॥ रसना कृष्ण नाम रट लाई
मन में गुणहिं सदा गुण हरिके॥ श्रवण हि हरि को यश भरिके
वसी स्याम मूरति उर माही॥ विसरत सुरत एक पल नाही
बैठत उठत चलत घर वाहिर॥ स्याम सनेह गुप्त रू जाहिर
सोवत जागत दिन अरु राती॥ प्रीतम कृष्ण प्रीति रस माती
सब अंग कृष्ण प्रेम रस पागी॥ भई कृष्णमय सकल सभागी
धनि सो प्रीति कृष्ण सों लागी॥ धनि सो सुरति कृष्ण रस पागी
धनि सो सुख हरि संग तिहारी॥ धनि सो दुख हरि विरह दुखारी
धन्य परख्यो हरि सों जोई॥ धन्य सरे खो हरि को होई॥
धनि सो ज्ञान ध्यान धनि सोई॥ जप तप धन्य जो हरि हित होई
धन्य जन्म जो हरि के दासा॥ सब विधि धन्य जिन्हे हरि आसा
दो॰ नंद यसोमति गोपिकन निसवासर हरि ध्यान
ब्रजवासी प्रभु दासकी आस रहे लगि प्रान॥
सो॰ विसरे सब व्यवहार और न दूजी गति कछू
अंधलकुटि आधार एक सुरति नंद नंद को॥

अथ यज्ञोपवीत

रहे जाय मथुरा हरि जवतें॥ नित नव मोद होत तहं तवतें
देवकि मन अभिलाष पुरावें॥ निरखि रहाउ सुत सुख पावें
परमानंद मगन वसुदेऊ॥ सुखी सकल यादव गण तेऊ

मुदितसकलमथुरापुरवासी॥ देतसवनसुखप्रभुसुपरासी॥
एकदिवसवसुदेवसुजाना॥ वोलेजोकुलमध्यप्रधाना॥
करिसादरमानतोवडाई॥ तिनसोंकहियहवातसुनाई॥
रामकृष्णअवलौंदोउभाई॥ ग्वालनमध्यरहेहरिजाई॥
यदुवंसिनकीरीतिनजाने॥ हैंअवहींकुलधर्मअयाने॥
तातेयहविचारउरकीजे॥ यज्ञपवीतदुहुनकोदीजे॥
सुनियवचनसवनमनभाये॥ गर्गआदिसवविप्रवुलाये॥
पूछिसुदिवसशुभलग्नधराई॥ यज्ञकाजसवसाजमगाई॥
सकलतीरथनतेजलआये॥ रामकृष्णतासोंअन्हवाये॥
दो॰ सकलवेदविधिमन्त्रपढिकरिअभिषेकपुनीत
दोउभायनकोगर्गमुनिदियोयज्ञउपवीत॥
सो॰ अतनपावैशेशवेदव्यासजाकोसकल
ताहिदियोउपदेशगायत्रीगुरगर्गमुनि
दियोदानवसुदेवअनेका॥ पूजेसवदुससाहितविवेका॥
सवनरनारिनमंगलगायो॥ वदीजननद्रव्यवहुपायो॥
सखिकौतुकसुरगणसुखपावैं॥ वरषिसुमनदुंदुभीवजावैं॥
अतिआनंदभयोसवकाहू॥ तातमातउरपरमउछाहू॥
पुनिइकदिनवसुदेवसुज्ञानी॥ यहइच्छाअपनेमनठानी॥
पंडितभलोकहूजोपैये॥ तौविद्याअवसुतनपढैये॥
काहूतवयहवातवषानी॥ सांदीपनपंडितवहज्ञानी॥
रहैअवंतीपुरीकेमाहीं॥ तासमपंडितकोऊनाहीं॥
यहसुनिकृष्णसकलगुणषानी॥ पितुकोमनकोरुचिपहिचानी॥
ह्वैकेनम्रसहितदोउभाई॥ विद्यापढनगयेयदुराई॥
वेदविहितसेवाहरिकीन्ही॥ अल्पकालविद्यासवलीनी॥
लषिप्रभावगुरुपत्निसुषपायो॥ जानिजगतपतिअतिहरषायो॥

नवहरिगुरुसोंजोरिकरबोलेसहितसनेह
चाहियगुरुकछुदक्षिणामांगिसोहमसोंलेह
सो० तबगुरुकह्योविचारितुमप्रभुकेसजगतके
बालकनैइहोनिजनारिजोंवहकहैसोदीजिये ॥
तबसंदीपनतियपैआई ॥ वचनकृष्णकेताहिसुनाई
कहिहरिदनदक्षिणाहमकों ॥ मांगोकहसाबूझैतुमकों ॥
मरेहुतेनाकेसुतदोऊ ॥ तिनमांगेहरिसोंपुनिसोऊ ॥
कृष्णसकलजीवनकेस्वामी ॥ जलथलसबजिनकेअनुगामी
गयेबहुरिभक्तनदुखहारी ॥ जगउतपतिपालनलैकारी
चाहैकियोहोयसबसोई ॥ आनिदियेगुरुकेसुतओई
भयेसुखीद्विजअरुद्विजनारी ॥ सुतमेंपातमिटोदुखभारी
हैप्रसन्नगुरुआसिषदीन्हों ॥ नमस्कारप्रभुगुरुकोकीन्हों
गुरुआयसुलैपुनिदोउभाई ॥ आयेमधुपुरिजनसुषदाई
तातमातलषिअतिसुषपायो ॥ भयोमनोरथसबमनभायो
राजकाजपुनिप्रभुसबकरई ॥ उग्रसेनआयसुअनुसरई
हितजनुपरजननरअरुनारी ॥ सुखीसकलहरिवदननिहारी
दो० ऊधोअरुअक्रूरयेसखास्यामकेसाथ
मिलबैठनखेलतहसतइनकेसंगयदुनाथ
सो० ब्रजवासिनकोध्यानब्रजवासीप्रभुकेसदा
यदपिब्रह्मसुखखानतदपिभक्तवशप्रेमरस

अथउद्धवब्रजगमनलीला

ऊधोयदुपतिसखासज्ञानी ॥ रहब्रह्मसुखसोंरतिमानी
हरिकोनिगुणरूपकरिमाने ॥ प्रेमकथाकछुइनहिंजाने
तबहरीब्रजकीबातचलावें ॥ तबऊधोहसिकेउचटावें

हरिलखिमनहीमनपछिताहीं॥भलीवानियाकीयहनाही
रूपरेखजाकेनहिंकोई॥धरौनेमउरमेंद्रढ़सोई॥
निर्गुणकथायोगकीगावै॥जामेंकछुरसस्वादनपावै
मानतएकब्रह्मअविनाशी॥जानगर्वमेंरहतउदासी
बिछुरनमिलनदुःखसुखनाहीं॥नहिंप्रेमउपजतमनमाहीं
कनककलशपानीविनजैसे॥याकोरूपवन्योहैतैसे॥
जोहोंकहौंकहायहमानै॥निंदाघोरहमारीठानै॥
कहियेकाहिप्रेमकीगाथा॥वन्योहैसवायसकोसाथ॥
ब्रजकोध्यानसदाउरमेरे॥प्रेमभजेनयाकेनहिंनेरे

दो० कहांयसोदानंदकेसुखदलालनघरमात
कहंकहंसुखब्रजधामकोनहिंविसरतदिनरात
सो० कहांसखनकोसंगकहांकेलिवृंदाविपिन
कहंवहप्रेमतरंगवंशीवटयमुनानिकट॥

कहांनवलब्रजगोपकुमारी॥कहौराधावृषभानुदुलारी
कहंवहप्रीतिरीतिसुखसंगा॥कहौंरासरसरंगतरंगा
कहांकुंजवनकेलिनकाई॥कहांमानलीलासुखदाई
कहंलगिब्रजकेसुखनसँभारों॥जोहिलगिपुरवैकुंठविसारों
कहियेयहरसकाकेआगे॥ऊधौसुनतप्रेमकीभागे
कैसेप्रेमहोयब्रजमाहीं॥मेरेकहेमानिहैनाहीं॥
ब्रजमेंयाकोदेहुपठाई॥पैहैप्रेमतहांयहजाई॥
याकेमनअभिमानघटाऊ॥कहिगुवतिनकोप्रीतिसुनाऊं
यहवातयदुपतिउरआनी॥पठऊंब्रजयहिनाथसुजानी
कहौंवाधतिनकोकरिभावो॥प्रेमभिराखज्ञानसमुझावो
जैहैतुरतसुनतयहवाता॥कहिहैहरिजानतसबज्ञाता
कारिअभिमानतुरतब्रजजैहैं॥व्हांतेजायसाधुह्वैऐहै

दो० ऐसे हरी वैठे करत अपने मन अनुमान ॥
ऊधोके उरते करौं दूरी ज्ञान अभिमान ॥ सो०
आय गये तिहि काल ऊधो जी हरि के निकट
विहसि मिले गोपाल सखा २ कहि अंक भरि
अति सुंदर सांमल छविछायौ ॥ जनु हरिकौ प्रतिबिंब सुहायौ ॥
अंश भुजा देकै यदुराई ॥ ऊधो सौं व्रज बात चलाई ॥
ऊधव सुनौ कहौं तुम पाहीं ॥ व्रजको सुख मोहि विसरत नाहीं
नेकऊ नहीं इहां मन लागत ॥ उठि २ पुनि उतहींको भाजत
यह मन होत तहींपुनि जैये ॥ गोपी ग्वालन मैं सुख पैये
कहं वऊ हेत यशोमति मैया ॥ दै दै माखन लेत वलैया
नहिं विसरत मन तें विसराई ॥ वह राधा की प्रीति सुहाई
गोपसखा वृंदावन गैया ॥ नहिं भूलत वंसी वट छैया ॥
त्याग सखा वऊ तसुख पायौ ॥ मिटत नहीं मन मैं पछतायौ
ऊधोसुनि वोले मुसकाई ॥ कहा कहत हरि यो अकुलाई
सदा रहत यह हित थिर नाहीं ॥ जग व्यौहार सकल मिथ्याहीं
मोसों सुनौ बात यदुराई ॥ एकै ब्रह्म सदा सुखदाई ॥
दो० जव ऊधो ऐसे कही विहसि ज्ञान की बात
तव यदुपति सुख पायकै पुनि वोले हरषात
भाई मो मन माहिं ऊधव कहीजु वात तुम ॥
तुम समान कोउ नाहिं सखा और मेरो हितू
ऊधो तुम व्रज वेगि सिधारौ ॥ करि आवऊ यह काज हमारौ
पूरणब्रह्म अलष अजजोई ॥ मात पिता ताको नहिं कोई
रूप न रेख जाति कुल नाहीं ॥ व्यापि रह्यो सव घट २ माहीं
होंताकौ ज्ञाता तुम ज्ञानी ॥ गोपी सकल प्रीति रस मानी
यह मति तिन्हें वाधकरि आवो ॥ प्रेम मेटकै ज्ञान दृढ़ावो

अरु नर नारि सकल ब्रज जेते। प्रीति जनाय लिखे सब तेते॥
लिखि गोपिन कौ योग पठायो। भावज्ञानका हू नहिं पायो॥
लेहु हटाय प्रीति ब्रजवाला। यह भानी उर मे नंदलाला॥
लिखि पाती ऊधो कर दीन्ही। औ सम्माख विनती कीन्ही॥
नीके रहियो यशुमति मैया। कछु दिन मे ऐहे दोउ भैया॥
दो॰ कहा कहौ जा दिवस ते जननी बिछुरी तोहि।
ता दिन ते कोऊ नहीं कहत कन्हैया मोहि॥
सो॰ कह्यौ संदेसन जात अति दुख पायो मातु तुम।
अब मोको निज तात देवकि पुरु वसुदेव कहै॥
कहियो नंद बवा सों जाई। कहु मन धरो इती निठुराई॥
जब ते दियो इतै पठवाई। बहुरौं सोध लयो नहिं भाई॥
वारिक बरसाने लौ जैयो। समाचार सब तहं के लैयो॥
ग्वाल बाल सब सखा हमारे। द्वै हैं वे मम विरह दुखारे॥
तिन्है जाय मम दिशि ते भेटो। काहू से दशा तिन को दुख मेटो॥
ब्रजवासी जेते नर नारी। गाय वत्स खग मृग वन चारी॥
जो जेहि विधि ता सों तेहि भांती। सरस परस कहियो कुशलाती॥
मित्र एक मम दरशन पैहौ। देखत ताहि परम सुख लैहौ॥
वृंदावन मे रहत निरंतर। होत नहीं कबहू उर अंतर॥
सघन कुंज तरु लता सुहाई। मिलियो ताको सीस नवाई॥
यहि विधि ऊधो सो यदुराई। कहि सब मन की बात सुनाई॥
वहु करतो को प्रेम जनायो। ज्ञान गर्व ताकु उर छायो॥
दो॰ रसिक ऊधो सो करी प्रगट स्याम सो प्रीति
ऊधो तिनको ज्ञान लै चले करन विपरीति॥
सो॰ लखि ऊधो को जात हलधर लियो बुलाय ढिग।
समुझन ब्रज की बात आये जल भरि नैन युग॥

चले उपगसुतजव हरषाई। गोपिन मन तब गयो जनाई
धाने २ भ्रमर भ्रवण लगि आई। भयो कछु कछु दुख कछु हर्षन
ममहि मोस सुणदरस अनुरागी। जहँ तहँ कागउडावेन लागी
दो॰ जो गोकुल हरि आवही नौ मू उडरे काग ॥
दौधभात नतो हि देव की अरू अचाका पाग
सो॰ सुनें गोपिन के वैन उठवे ठत वायस अनत
लो खिपावत सब चैन करत परस पर आप मे
सखी आज गोकुल हरि आवें। के धौ कान्ह ब्रजहिं पठावें
नीकी वात सुनावे कोऊ। फरकत वाम वाहु भुज दोऊ
विनवयार खेवर फहराई। टूटि टूटि कचुक वद जाई
उठि उठि वैठत काग कहते। उमगत मन आनंद लहते
भ्रमर एक चढ़ि दिस मडराई। पुनि पुनि कान्न लगत है आई
दोत शगुन सुदर सुभ भाल। आवन हार भये नंदलाल
जो न तभाग दशा विधि फेरी। दरि करी अव दुख मन केरी
वहुरि गोपाल मिले जो आई। सुख सनेह कमिलो जमाई
आसन हृदै कमल पै दीजे। मम भजन कपपना करि लीजे
देखत रूप मानतजि दीजे। नैनन निरपि वदन छवि लीजे
आवे जो व्रज कुंज विहारी। वड भागिनी सवे ब्रजनारी
घर यशुमति सरिव सुख पावें। अति वड भागिनि कहा रि कहई
दो॰ घर घर सब पुनी विचार हो ब्रज युवती वड भाग
ब्रजवासी प्रभु दरश को सव के मन अनुराग
मथुरा तन ढक लाव अनुदिन पथ निहारहीं
कव आवहि ब्रजराय यह केरत अभिलाष सव

अथ ऊधवब्रजगमनलीला

ऊधौ चले ब्रजहि समुहाये। मथुरा तजि गोकुल नियराये

रथपरवैठेशोभितकैसें ॥ दूजेनंदनंदन हैं जैसें ॥
वहैमुकुटपीतांवरकाछे ॥ श्यामरूपशोभितअंगआछे ॥
दूरिहितेंरथकीउजियारी ॥ देखतहरषींब्रजकीनारीं ॥
जान्योंआवतकुंवरकन्हाई ॥ आतुरजहंतहंतेंउठिधाई ॥
कहतपरस्परदेखहुआली ॥ मधुवनतेंआवतवनमाली ॥
गयेश्यामरथपरचढ़िजाई ॥ तैसोइरथआवतअवआई ॥
तैसोइमुकुटमनोहरराजै ॥ तैसोइपटकुंडलछविछाजै ॥
रथतनसवदेखतअनुरागीं ॥ सपनेकोसुखलूटनलागीं ॥
ज्योंज्योंरथआतुरचलिआवै ॥ त्योंत्योंपीतांवरफहरावै ॥
भईसकलसुखव्याकुलनारी ॥ प्रेमविवशआनंदउरभारी ॥
जौलौंरथआवतनियराई ॥ तौलौंमानोंकल्पविहाई ॥

दो० यहशोरब्रजघरघरनआवतहैंनंदलाल
देखनकोंनिकसेहरषितरुणवृद्धअरुवाल
सो० सुनतयशोदानंदलेनचलेआगेहरषि
भयेपरमआनंदतेहिछनब्रजकेलोगसब

जवकछुरथआयोनियरायो ॥ तवसंदेहसवनमनआयो ॥
श्यामअकेलेरथकेमाहीं ॥ हलधरसंगदेखियतनाहीं ॥
कोउकहतिनाहिंब्रजनाथा ॥ जोपैहलधरनाहिंनसाथा ॥
इतनीकहतनिकटरथआयो ॥ ऊधोनिरखिनैनजलछायो ॥
रहीठगीसीसवब्रजवाला ॥ नूतनविरहभई वेहाला ॥
मनहुंगईनिधिकहुंपाई ॥ वहुरिहाथतेंतुरतगंवाई ॥
उड़िगइसपनेकीरजधानी ॥ जागतकछुनहींपहिचानी ॥
जवहींकह्योस्यामतौनाहीं ॥ जहंसोतहंरहीमुरझाई ॥
परीविकलयसुमतिजेहिठाईं ॥ ब्रजतियधायतहांसवआईं ॥
स्यामविनारथलषिअकुलानो ॥ जहंतहंसवैरहीअरुझानी

रुदनकरतव्याकुलअतिभारी॥लईउठायपोंछिदृगवारी
यसुदहिबोधकरतसबवाला॥ऊधोकोपठयोगोपाला॥
दो॰ भलीभईमारगचल्योसखापठायोश्याम
उदहूबूझियेहरिकुशलकहतिमहरिसोंवाम
सो॰ सुफलघरीहैआजकरूजानिरहमनलगए
गावनकोंब्रजराजइनकेकरकैहैलिख्यो॥
यहसुनिउठीकछुकसुषपाई॥ऊधोनिकटैपूछंचोजाई॥
हरिकेरूपनिरषिसुषपायो॥स्यामसखाकहिसबनसुनायो
ऊधोनिरषिकहतब्रजनारी॥सुन्दरसरलसुशीलमहारी
ताहीतेंहरियाहिपठायो॥लैसंदेहमोहनकोआयो॥
नीकेनीकेवचनसुनैहै॥सुनिसुनिश्रवणनहियोसिरैहै
यहजानिहैंवेगिहरिऐहैं॥याकेमुखअबयहसुनिपैहैं॥
चहुंदिशघेरलियोरथजाई॥नंदगोपब्रजलोगलुगाई॥
गयेलिवाइनंदनिजद्वारे॥ऊधोरथतेंहरषिउतारे॥
अरघदेइघरभीतरलीन्हो॥धनिधनिदिनकहिआदरकीन्हों
चरणधोयआसनबैठाये॥बहुप्रकारभोजनकरिवाये
विविधिभगतिकरिकेपहुनाई॥नंदस्यामकीवातचलाई
ऊधोकहोकुशलदोउभैया॥अरुवसुदेवदेवकीमैया॥
दो॰ कैसेंतहमारीसुधिकवहूंकहुऊधोबलवीर
पुलकितगातगदगदवचनपूछतनंदअधीर॥
सो॰ चूकपरीअनजानकहतपछतातआजके॥
घरआयेभगवानजानेहमनिअहीरकरि॥
प्रथमगर्गमोहिकह्योवखानी॥भूल्योसंगदोषहितजानी
अबऊधोविछुरेगिरिधारी॥मरियतसमुझिभूलसोभारी
कह्योयशोमतिदृगभरिपानी॥ऊधोहमएसीनहिजानी

सुतकौं हिनकरिके हम माने ॥ हरिह्वै वासुदेव प्रगटाने ॥
जासु विरह शिव ध्यान लगावै ॥ निसदिन अंग विभूति चढावै ॥
सो बालक हम अंत न हि अयान्यो ॥ ऊषल सों बाध्यो गहि पान्यो ॥
फाटत नहीं वज्र की छाती ॥ अव यह समुझि हृदय पछिताती ॥
वैसें भाग कवहूं अव पैहें ॥ बहुरि श्याम को गोद खिलै हैं ॥
जवतें हरि मधुपुरी सिधारे ॥ तवतें ऊधो प्राण हमारे ॥
तलफत मीन नीर विन जैसें ॥ देख्यो श्याम मनोहर तैसें ॥
उठि के प्रात जात हैं खरिका ॥ देखत दुहत और के लरिका ॥
उठत सूल ऊधो मन माहीं ॥ क्यों धौं प्राण निकस नहिं जाहीं ॥
दो॰ ग्वाल सखा संग जोरि के कें गैया लै जाय ॥
के आवे संध्या समै वन तें गाय चराय ॥ सो॰
काहि लेहुं उर लाय आंचर सों रज झारि के ॥
का कीलेहु वलाय चूम मनोहर कमल मुख ॥
मैं वलि सांची कहियो ऊधो ॥ कैसे श्याम रहत हां सूधो ॥
दही मही माखन नित जाई ॥ खात कौन के धाम कन्हाई ॥
कौन ग्वालवालन के साथा ॥ भोजन करत तहां ब्रजनाथा ॥
कौन सखा लीन्हे संग डोलै ॥ खेलत हंसत कौन सों बोलै ॥
काके माखन चोरे जाई ॥ देत उरहनो का अव काई ॥
वन में यमुना तीर कन्हाई ॥ किन गोपिन सों रोकत जाई ॥
किनको दध दही ढरकावे ॥ किन सों दधि को दान चुकावे ॥
इतनी वूझत जसुमति माई ॥ भई विकल गुण सुमिर कन्हाई ॥
बोले विलषि नंद तव वानी ॥ कहियो ऊधो सांच वखानी ॥
स्याम कवहुं वहुरी ब्रज ऐहैं ॥ ब्रजवासिन को ताप नशैहैं ॥
मो हित तात यसुमति सो माता ॥ सदा कहत हैं गी मुख दाता ॥
कहि गय चलती वार मुरारी ॥ मिलिहों बहुरि तात इकवारी ॥

दो॰ हरिहै सो अपनो वचन कह्यो बड़ श्याम प्रतिपाल
कहु ऊधौ तुम मोकछु कह्यौ कि नाहि गुपाल ॥
सो॰ भये सकल कृश गात श्याम विरह व्रजनारिन
युग सम दिवस विहात ऊधौ हमको हरि विना
लखि ऊधौ व्रजरीति सुहाई। रह्यो कछुक ऊधौ सकुचाई
सुनत नंद यसुमति की वानी। बोल्यो हृदय परम सुख मानी
कोह दोउ भाइनकी कुशलाती। दई श्याम दीनी सो पाती
हरिकौ कह्यौ संदेश सुनायो। हलधरकौ सवकह्यो सुनायो
पाती वांचि नंद उरलाई। भेटे मानहु कुंवर कन्हाई ॥
लिखी श्याम के करकी पाती। यसुमति लै लै लावति छाती
दुसह विरह को ताप नसावै। हरि संदेश सुनत हि सुख पावै
पुनि वसुदेव लिख्यो जो होई। ऊधौ दियो नंद को सोई ॥
वाचत नैन नीर भरि आये। कहत श्याम अव भये पराये
सुनि वसुदेव लिखी जो वाता। वोली विलखि यशोदा माता
यद्यपि हरि वसुदेव कुमारा। उदर देवकी के अवतारा ॥
तदपि मोहि धायो किहिनाते। वार एक मोहन मिलि जाते
दो॰ ऊधौ यद्यपि हम सवै समुझावत व्रजलोग
उरत शूल तद्यपि निरषि माखन हरि सुख योग
सो॰ छोटी मृदु नवनीत विन मांगे उठि खात हैं
कौ देहै का प्रीति तिन्है वानि जाने विना ॥
यद्यपि देव गृह सव सुष भोगा। हैं वसुदेव सदन सव योगा
हम पसुपाल ग्वाल व्रजवासी। दही मही अनपोषानवासी
रज्जु लुपन कोउ कोटिलड़ावैं। तहं माखन नाहिं हरि सुख पावैं
निशिदिन रहत यहै उर पाचू। किहि हरि वहां करत सकोचू
एकवार गोकुल फिरि आवैं। मनकौ माखन भोग लगावैं

सपथ रहै गोकुल में नाहीं ॥ उलटि वहौ मधुपुरी कौं जाहीं
ऐसें कहि यशुमति विलखाई ॥ ऊधौ चरण रहे शिर नाई
तव ऊधौ वोले सुख पाई ॥ धन्य यशोमति धनि नंदराई
धन्य धन्य हैं भाग तुम्हारे ॥ जिनको कृष्ण प्राण तें प्यारे
पूरण ब्रह्म कृष्ण सुखरासी ॥ जगदातम प्रभु सव घटवासी
हैं व्यापक पूरण सव ठाहीं ॥ जैसें अग्नि काठ के माहीं
मति जानौ हरि हमतें न्यारे ॥ वे हैं सव जग के रखवारे

दो० मति जानौ सुत कौं रहै वे सव के करतार
नात मात तिनके नहीं भक्तन हित अवतार
सो० हम नहैं सव अज्ञान प्रभु महिमा जानैं नहीं
वे प्रभु पुरुष पुराण जन्म कर्म तैं रहित ॥

हम सव अपने भ्रम हि भुलाने ॥ नर सम मानहिं कौं कौ आने
ज्यौं शिशु आप चक्र सम फिरई ॥ ताकों फिरत ज्ञान सव परई
तातें प्रभु जानि हरि ध्यावौ ॥ जातें मुक्ति पदारथ पावौ ॥
ऊधौ जो तुम हमें सिखावत ॥ हम वहुतक मन मांहि समुझावत
तद्यपि वह रुद्र रूप कन्हाई ॥ देखे विना रह्यौ न जाई
सव व्रज कौ जीवन हरि वारे ॥ ऊधौ कैसें जात विसारे
जा दिन मोहन वन नहिं जाते ॥ ता दिन वन खग मृग अकुलाते
नहिं अघात देखत वह मूरति ॥ रूप निधान सांवरी सूरति
सो मृग तृण मुख दै न खाहीं ॥ भये रहत अब श्याम विनाहीं
मुरली धुनि खग मोहें जाई ॥ सो अव सुख फल खात न काई
जु वन मृदान चलन सुखदाती ॥ ते अव सूखे जारण पाती
कोकिल कीर मोर नहिं वोलें ॥ व्याकुल भये सकल वन डोलें

दो० जिन्हें चरावत श्याम जो फिरत दुखारी गाइ
जहं जहं तहं गोदोहन कियौ सूंघत तहं तहं जाइ

सो०॥सवब्रजविरहक्षधीरयुगसमवीततपलहमै
ऊधोमनमोहनविनाच्यौ०

॥ह॥

॥भोसिवारलोचनडारतिपानी
ब्रजघरसवहोतवधाई॥कहतकान्हकीपातीआई
निपटसमीपीसखासुहायो॥ऊधोकोह्मब्रजहिपठाय
कंचनकलशदूवदधिरोरी॥नदसदनलेआवतगोरी
गोपसखासवकृष्णउपासी॥आयेधायसकलव्रजवासी
ऊधोकोह्मसरूपनिहारो॥भयेसुखीसवनरभूरनारि
ब्रजयुवतीसवतिलकवनावे॥करिप्रदक्षिणशीसनवा
कहतपाइकेदरशतुम्हारो॥भयोसुफलभवजन्महम
वूझतकुशलसकलनरनारी॥नंदयशवासभीरभईभा
ऊधोलषिब्रजप्रेमजकेसे॥बोलसकतनहिरहेथक
इकवकानचहूदिशसवठाढे॥ऊधोरहेमौनगहिगाढे

दो०ऊधोकोलखिकेदर्शब्रजजनमनअकुलात
कयोऊधोतुमकहतनहिंश्यामकुशकुशलात॥
इकक्षणयुगसमजाहिहमसुनिविनप्राणहारि
पावनकह्योकिनाहिंब्रजहिंकृपाकरिसांवरे

तवऊधोबोलेधरिधीरा॥सदाकुशलहरिहलधरवीरा
दियोतुम्हैनिषपत्रसंदेशा॥सबश्रीमुखयहकह्योसदेश
करिसमाधिअनरमाहिंध्यावो॥गोपसखाकोमतिचितला
होअनादिभविगतिअविनाशी॥सदाएकरससवघटवासि
निर्गुणज्ञानविनमुक्तिनहोई।
तातेदृढकरियहमनधारो।

ऊधो कही जवहिं यह बानी॥ गोपीजन सुनि कै बिलखानी॥
इतनी दूरि बसत सुनु आली॥ अब कछु औरभये वनमाली॥
रही विरह की वात विचारी॥ बूडी सकल मनहु बिन वारी॥
मिलन आस गई सुनत सँदेशू॥ उपजो उर अति कठिन अँदेशू॥
फैल गई जहं तहं यह बानी॥ कहत परस्पर सब अकुलानी॥
दो॰ यहसब दोषलगो हमै कर्म रेख को जान॥
प्रेम सुधारस सानि के अब लिखि पठयो ज्ञान
सो॰ इक रीसे यह देह रही कुरसि बिरहानल
कैलाहूं ते खेह अब आयो ऊधो करन॥
रूपराशि जो सब सुखदाई॥ ब्रज को जीवनमूरि कन्हाई॥
बिछुरे जिन्हें इतो दुख पायो॥ सो इन हिरदे माहिं पठायो॥
तिन्हें कहत चितवो मन माहीं॥ वे हैं पूरण भरि सब ठाहीं॥
जाको यत्न करत हैं जोगी॥ निर्गुण निराकार निर्भोगी॥
सो करि कृपा आय के ऊधो॥ वीथिन मांरु विहायो सूधो॥
अबलन कारन श्याम पठायो॥ व्यापक रूप गहि गेहा बन आयो॥
भजो आय विरहिन सबकोई॥ गायो निर्गुण निगमन जोई॥
जो समदृष्टि एक रस मोहन॥ तो कित चित्त चुरायो गोहन॥
ऊधो यह हितलागै काहे॥ जो पै इष्ट कृष्ण हिय माहे॥
निशदिन स्याम दरस हितजागत॥ पलनाहिं परत पलक नहिं लागत॥
चहुं दिश चितवत विरह अधीरा॥ बिलखि भरि हग महिं नीरा॥
ऐसहुं दुख प्रगटत क्यों नाहीं॥ जो पै श्याम हिय ही छूटत नाहीं॥
दो॰ रहन देहु ऐसेहु हमहिं अब धरयासकी याहि
फिर चाहो नहिं पाइहो ढोटा रूप गुणमयाहि॥
त्यागे युवतिन योग जो योगिन को भोगतुम
हम तब भरवौ वियोग यो अधिक स्वाम वनसुनि

तहिं सराऊधो दरसादिखायो ॥ तबधीरजसबके मनआयो
संगी सखा श्याम को चीन्हो ॥ सबनि प्रणाम जोरिवत कीन्हो
ऊधो लखि अति भये सुखारी ॥ मनहुं विकल जल पायो वारी

दो० तब ऊधो रथ तें उतरि बैठे तरु की छांहिं ॥
भई भीर गोपीन की अति आनंद मन माहिं ॥
अति प्रिय पाहुन जान सुधि ल्याये ब्रजराज की
करिकै अति सनमान प्रेम सहित पूजे सवन

हाथ जोरि पुनि विनय सुनाई ॥ कहिये ऊधो निज कुशलाई
वहुरि कहौ मधुवन कुशलाता ॥ है वसुदेव देवकी माता
कुशल छेम कहिये बलदाऊ ॥ पुनि अक्रूर कुशल कुबिजाहू
बूझत श्याम कुशल अकुलानी ॥ नैन नीर सुख गदगद बानी
लखि गोपिन की प्रीति सुहाई ॥ प्रेम मगन भये ऊधो राई
पुलिक गात अँखियां जल छाई ॥ गयो ज्ञान को गर्व हिराई
पुनि रथहै कहत मन माही ॥ ऐसी हरि को भूलिय नाहीं ॥
ब्रजनारिन को योग पठावै ॥ चितलै ब्रज की प्रीति मिटावै
पुनि ऊधो उरमें धरि धीरा ॥ बोलि सोधि नैन को नीरा ॥
सब विधि कहि हरि की कुशलानी ॥ दीन्ही प्रथम स्याम की पाती
लै लै करन मिलन सब पाती ॥ कोउ द्दग कोउ लावत छाती
काहू लै कर सीस चढ़ाई ॥ बूझत आदर अलिखी कन्हाई

दो० अति हित पाती श्याम की सब मिल रथ सुखपाइ
ऊधो कर दीन्ही बहुरि दीजे वांच सुनाइ ॥ सो०
ऊधो सबन समोधि वांचि श्याम की पात्रिका
लागे करण प्रबोध ज्ञान कथा विस्तारि कै ॥

मोको हरि तुम पास पठायो ॥ आत्मज्ञान सिखावन आयो
जाते पाप नहीं नियराई ॥ मनतें विषय देहु बिसराई

॥हरिआपुहिंनरआपुहिंनारी

।भ्राता

॥आपुहिंराजाआपेहिं रानी

॥आपुहिंदहतद्रुहमवनजाई
॥आपुहिंज्ञानविनाजगमूल
एवरकेदूजानहिंकोई॥आपुहिंआपनिरंतर होई॥
ज्योंवहुदीपज्योतिहैएकू॥तैसेइजानोब्रम्ह विवेकू॥
इहिंप्रकारजाकोमनलागे॥जरामरणनाशैभ्रम भागै
योगसमाधिब्रम्हचितलावै॥ब्रम्हानंदसुखहितत्वपावै
दो॰सुनतहिंऊधोकेवचनरहीसवैशिरनाय
मानहुंमांगतसुधारस दीन्होंगरलपियाय
सो॰रहीठगीसीनारि हरिसंदेसदारुणसुनत
वोलीधडूरिसभारिऊधोसों कर जोरि कै॥
भलेभलेतुमऊधो राई॥भलीआइकुशलात सुनाई॥
कछुयकहुतीमिलनकीआसा॥कियोसाइनाकौतुमनाशा॥
इनवातनकेसंमन दीजे॥श्यामविरहतनपल २ छीजे॥
विनदेखेवहमूरतिप्यारी॥कुंडलमुकुटपीतपटधारी॥
ऊधोकहोकौनविधिजीजे॥योगयुक्तिलेकेकह कीजे॥
कोइकभक्तनंदनदनप्यारो॥कोलाषिपूजेभीतिपगारो
हमअहीरगोरसरसभोगी॥योगयुक्तिजानेकोउयोगी
ऊधोतुमसेसाचवखानै॥प्रेमभक्तिअपनेमन मानै॥
हमकोभजनानंदपियारो॥ब्रम्हानंदसुखकहाविचारो
व्यावरिविथाकिवंध्याजानै॥येहगहरिदरशनसुषमानै
पनिपुनिहमैवहैसुधिआवै॥कृष्णरूपविनऔरनभावै

नवकिशोरकोनैन निहारैं ॥ कोटिजोतितनूऊपर वारैं ॥
अधरअरुणमुरलीधरेलोचनकंजविशाल
क्योंविसरतमुरलीहमैमोहनमदनगुपाल
सो०सजलमेघतनश्यामरूपरंगग्रानंदमयो
मोहीसवब्रजवामग्रौरनजानतब्रम्हहम ॥
ऊधौसुनिगोपनकीवानी ॥ बोलेक्रूरसोजिज्ञानी ॥
जोलगिहृदैज्ञाननहिंनीके ॥ तौलगिसब पानीकोलीकें ॥
बूझेविनसपनोसब होई ॥ विनविवेकसुखपावन कोई ॥
रूपरेखवाकेकछुनाही ॥ नैनमूंदचितवोमनमाहीं ॥
हृदयकमलमेंजोतिविराजै ॥ अनहदनादनिरंतर बाजै ॥
इडापिंगलासुखमननारी ॥ सहजसन्यमेंवसतमुरारी ॥
नाशअरुब्रम्हकोवासा ॥ धरहुध्यानतहज्योतिप्रकाशा ॥
क्रमक्रमयोगपंथअनुसरहू ॥ यहप्रकारभवदुस्तरतरहू ॥
ऊधोहमगोपालउपासी ॥ ब्रम्हज्ञानसुनिआवेहांसी ॥
तापैरूपरेखनहिंचीन्हा ॥ हाथपाँवमुखनैनविहीना ॥
ताहिमुदाकहुकाकीजायो ॥ काकोपलनापालिझुलायो ॥
कैसेऊखलहाथबंधायो ॥ चोरिचोरिकैसेदधिखायो ॥
कौनखिलायेगोदकरिकहेजुतुतरेबैन ॥
ऊधोताकोन्यावदेजाहिनसूझेनैन ॥
सो०नटवरवेषप्रकाशश्रीवृंदावनचंदतजि
कोखोजेआकाशसुन्यसमाधिलगायकै ॥
जानिबूझिमतिहोअयानो ॥ मानहुसत्यहमारीवानी ॥
भजोब्रम्हब्रम्हेसवहोहू ॥ छांडिदेहममताअरुमोहू ॥
मायाकितआंधरोनबूझै ॥ ज्ञानअनंतनैनसवसूझै ॥
मैयहकहतकृष्णकीभाखी ॥ देखहुबूझिवेदसवसाखी ॥

लगेआगघरघूरजरावैं ॥ कोनिजगृहतजिघूरवुझावै
घरिकरीवलयोगसंवारों ॥ भक्तिविरोधीज्ञानतुम्हारों
योगकहासवछोडिविछावैं ॥ दुरहूवचनहमैनहिंभावे
अवलनआनसिषावतयोग ॥ हमभूलीकैधौतुमलोग ॥
ऐसेंकहिगोपीअनखानी ॥ मेनमेंश्यामपरेसोआनी ॥
ताहीसमभ्रमरइकआयो ॥ सहजहिमानहुनैनसुनायो
तासोंकहिसवुवातसुनावें ॥ ऊधौप्रतिवङवचनजनावैं
वचनस्वभावत्रिगुणअनुसारी ॥ लागीकहनसकलव्रजनारी
दो॰ कोउऊधोसोकहतकोउअलि प्रतिवात ॥
निजनिजमनकीउक्तिकरिअपनीरघात ॥
सो॰ ऊधोभूलेज्ञानउत्तरवोलनआवहीं
रहेमौनसोमान सुनत वचन नारीन के ॥ चौ
वोलिउठीऐसेंइकवारी ॥ आइसुनोरीसवव्रजनारी ॥
आयोमधुपदेनपत्नीको ॥ लीन्हेसीशसुयशकौटीको ॥
तजनकहतभूषणपटगेहा ॥ सुतापितुवाधतसुजनसनेहा
सीसजटाअरुभस्मलगावैं ॥ सगुणछोडिनिर्गुणमनलावै
आयोकरनतियनपरछोहा ॥ वस्तीछोडवसावतखोहा ॥
सुनिसखिकहतऔरइककेवाला ॥ यदोउमधुपुरवसतमराला
वअक्रूरऔरवेऊधौ ॥ निरवारकपानीअरुदूधौ ॥
जानतभलीभांसकीवात ॥ इनहीकंसकरायौघात ॥
इनकेकुलऐसीचलिआई ॥ प्रगटउजाफरवंशसदाई ॥
अवकरिकृपाव्रजेउठिधाये ॥ अवलनयोगसिषावनआये
ऐसेएककहतअरुग्वारी ॥ येदोऊइकमनसुनिआली
तवअक्रूरअवहिएऊधौ ॥ व्रजआखेटकियोइनसूधौ ॥
वचनफांसिफंसिहरिहंसउनलियौरथचढाय

हरिराणीलौं इन गोपिका हँती ग्यान ग्रसाद ॥
देखवइ दियो लगाय चहुंदिश दावा योगको
भई कठिन अति आइ अव धौं कह चाहत कियो
लागी कहन और इक वारी ॥ मधुकर जानी वात तुम्हारी
तुम जो हमै जोग है आनौ ॥ करी भली करणी सो जानौ ॥
इक हरि विरह रहीं हम जरिके ॥ सुनतहिं अधिक उठी हम वरिके
तापर अव जिन लौन लगावौ ॥ मनहिं पराई वान चलावौ
दई श्याम तुम्हरे कर पाती ॥ सुनिके वहुत सिरानी छाती ॥
कीन्हौ उलटो न्याव कन्हाई ॥ वहे जात मांगत उतराई ॥
इक हम दुसह विरह दुष पावें ॥ दूजे लिखि२ योग पठावैं
मधुकर श्याम भेद अव पायो ॥ नेह रत उनके हँग नायो ॥
पहिले अधर सुधा रस प्यायो ॥ कियौ पोष वहु लाड़ लडायो
वहुरो शिशु कौ खेल वनायो ॥ गृह रचना रचि चलत मिटायो
सांप केंचुरी ज्यों लपटाई ॥ रोमी हितकी रीति दिखाई ॥
वहुरो सुरत लई नहिं जैसे ॥ तजी स्याम हम कौं अव ऐसे
करउ काज जह जाउ तह लेहु अपन शिर भार ॥
दीजत सवे असीस यह न्हात हु खसौ न वार ॥
सो० वहु रंगी सुख मूल जितहिं जात तितहीं सदा
इक रंगी दुख मूल चातक मीन पतंग गति
मधुप कहा कहि तुम्हैं सुनैये ॥ कारे के अंगेत सवै पछितैये
निवहेगी ऐसी हम जानी ॥ उनलेके कछु औरै ठानी
कारे तनको कह पतियारो ॥ मृदु मुसुकानि मन हर्यो हमारो
तवका हम न रहत न जान्यो ॥ हँसि हँसि सव लोगन सुष मान्यो
वस्वाहि कुविजा कीन्हा नीको ॥ सुनि२ मधुप मिटत दुष जीको
वह नतन कश्याम उर धरिके ॥ अौसर पंस पियो सव भरिके

जैसे कुलहंसमो हरिकीन्हो ॥ ताकों दाव कुवरी लीन्हो
बोलीऔरएकजो वानी ॥ भागदरशऊधीकिनजानी ॥
बिलपतरहतसकलब्रजनारी ॥ कुविजाभईस्यामकीप्यारी
खातवच्छोपसुरनकीजाई ॥ सवकुलवधूकहावतमोई
राजकुमारिकोऊ हरिवरते ॥ तोकछुहमचितमेंनहिधरतें
वन्योसाथअवआतेहींभागर ॥ कागोऔरमरालउजागर
दो॰ अववेलतदोऊलाजतजिवारहमासीफाग
लोंडीकीडोंडीवजी होंसीअरुअनुराग ॥ सो॰
हमेंदेनवैराग आपनदासी वस भये ॥ ७ ॥
चतुरचधोरतआगऊधीयहअचरजवड़ो
ऊधौहरिऐसेंकाजनकरि ॥ सुयशरह्योत्रिभुवनमाहीभरि
आयेअसुरजितेब्रजमाहीं ॥ मारयोअसुवच्योकोउनाहीं
विषजलसींसवग्वालजिवाये ॥ कालीनागनाथलैआये
इन्द्रमानमलिव्रजहिंवचायो ॥ गोवर्द्धनकरिवामउठायो
जवविधिवालकवच्छचुराये ॥ करिकैयत्नओरउपजाये
धनुषतोरिगजप्रवलसंहारयो ॥ मल्लनसहितकंसनृपमारयो
कीन्हींउग्रसेनकोराजा ॥ भयेसकलदेवनकेकाजा ॥
ऐसीकीरतिकरिसवनाशी ॥ कीन्हीनारिकुवरीदासी ॥
कहांपतित्रिभुवनसुखदायक ॥ अखिललोकब्रम्हांडकेनायक
ब्रम्हाशिवइन्द्रादिकदेवा ॥ करतनिरंतरजाकी सेवा ॥
ऊधोकहांकंसकीदासी ॥ यहसुनिहोतसकलव्रजहांसी
कनमारतयदुकुलकोलाजन ॥ एवकरिहैंहरिऐसेकाजन
दो॰ गावतसवजगगीतअववाचेरीकेकाज ॥
ऊधीयहअनुचितवडोचेरीपतिव्रजराज ॥
सो॰ ऊधोकहियोजाय अवहैचेरीपतिहरे

उरचिंताकंचुकीउसासा॥जीवनरहैअवधिकीआसा
बीततनिशागनतनभतारे॥दिवसनकतपथलोचनहारे
रहीनहीसुधिबुधिमनमाहीं॥विरहानलतनजरतसदाहीं
सुमिरिसुमिरिहरिगुणग्रामा॥दुखअधिकातसुहातनधामा

कहलोकहियेनिजवियाअरुहरिकीनिठुराय
तापरलायेयोगअलिज्वलनकरणसहाय
सोअतिकठिनविरहकीपीरजेहिव्यापैसोजानहीं
क्योंधरियेमनधीरसुनिअलिवचनभयावने॥

जेकचफूलफुलेलसवारे॥निजकरहरिगूथेनिरवारे॥
कहपठयोतिनकोंअवभावन।भसमसानिकैजटाबनावन
रत्नजटिततारंकसुहाये॥जिनकाननमोहनपहिराये
तिनकोंअवमुद्रामाटीके।ल्यायेहैऊधोगढिनीके॥
भालतिलकअंजननकवेसर।मृगमदमलयजकुमकुमकेसर
उरकंचुकीमणिनकेहारा।सकतनिकहतलगावहुछारा॥
जेहियरस्यामसुभगभुजमेली।परइतोहैमृगीफरुसेली
पहिरैजातनचोरसुहावन।ताहिभगोहौकहतरगावन॥
जासुरवपानसुगंधसहाये।निजहाथनब्रजराजखवाये
रसविवादवकतानतरंगा।सावनकहतरहतहरिसंगा
मदनविलाससहासरसभाख्यो।हरिमुखअधरसुधारसचा
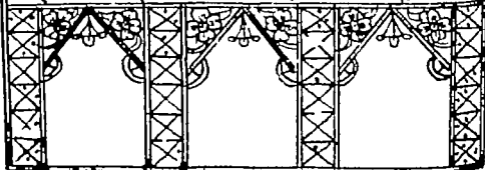
तिन मुख मौन कौन विधि कीजै। ऊरध स्वांस घूंटि किमि जीजै

दो० ऐते हो हरि अति हि कठिन जानी तिन को घात
मधुप तुम्हें नहिं चाहिये कहत कठिन यो बात
तव व्रज जाय मृदु वैन अधरा तन वोली वनी है
कियगास रस ऐन अव कटु वचन सुनाव ही

मधुकर मधु माधो की वानी। सह सव जिमि माखी लपटानी
उड़न हिं सकी फसी हीं तामें। आवत शोच कहत अव तामें
जिमि अहार वश मीन विचारे। कंटक लगत कठिन अनियारे
अटकत कुटिल हृदै दुख वाढ़े। वड़शी कोन विधि तिनको काढ़े
जैसे विधिक सुनाद सुनावे। मृग मन मोहि समीप वुलावे
वड़री करत धनु शर संधाना। तुरत हि मारि हरत है प्राना
जिमि सनेह वल दीप प्रकाशे। रजनी कैतम को दुख नाशे
रूप लोभ शल भहि न दिखाई। क्षण में तिनको देत जराई
जिमि ठग मद मोदक न खवावे। पथिक जनन सो प्रीति जनावे
रस विश्वास वढ़ावत भारी। प्राण सहित ग्रंथ हरत पछारी
जिमि मदु मस कनिक नहिं चुगाई। खग जिमि हम व्रज नाय कमाई
पाछ अव करणी वह कीनी। योग कुरी सव के गर दीनी

दो० हरि हम सो ऐसी करी कपट प्रीति विसराइ
वई विरह विष वेलि व्रज रसकी ऊख उखार॥
कीजै कहा वखान जिन सो हित यह भांति किन्हें
हरे हमारे प्रान हम हरि के भाये नहीं॥ चौ॥

यह सुनि कह्यो और इक वाली। कहत कहा मधुकर सो आली
रनहीं को संगी यह जोऊ। चंचल चित्त श्याम तन दोऊ॥
वे मुरली धुनि जग मन मोहनु। इन की गुंज सुमन दल जोहनु
वे निशअपन तप्रात कड़ आने। एवास कमल अनन रुचि मोने

वे द्वैचरण सुभगभुजचारी ॥ येखटपददोउ विपिनविहारी
वे पटपीत मंजु दोउ काछे ॥ इनके पीत पंख दोउ आछे ॥
वे माधौ ये मधुप कहावत ॥ काहू भांति भेद नहिं आवत
वे ठाकुर ये सेवक उनके ॥ दोऊ मिले एक ही गुनके ॥
कहा प्रतीति कीजिये इनकी ॥ परी प्रकृति ऐसी यै जिनकी
निरखि जान भाजत फलमाही ॥ दयाधरम इनके कछु नाही
मन दै सर्वस मथन खवावै ॥ बहुरैता के का मन आवै ॥
इनको प्रीति किये यों माई ॥ ज्यों भुजपर की भीति उठाई

दो० कह्यौ एक नियसुनि ससी कारे सव एक सार
इनसों प्रीति न कीजिये कपटिन को चट सार ॥
देखा मन अनुमान करे आहे कारे जलद ॥
कोविजन करत वखान भ्रमर काग कोइल कपट

गिरि विमेटारे जो आहे कारे ॥ पर्योपवाय भूमि हित प्रतिपारे
कुलसुभाव सो हांसि भजि जाही ॥ यद्यपि निर्हेलाज कछु नाही
जलद सलिल वरखत चहुं पाही ॥ भरत सकल सर सरिता माही
निशदिन ताहि पपीहा धावै ॥ एक बूंद कोउ तोहि न वरसावै ॥
भ्रमर मालती सों मन लावै ॥ भौंवरि दै दै प्रीति बढावै ॥
जब रस होत हीन वा माहीं ॥ निरमोही तजि ताहि पराही
सुनियत कथा काग पिक केरी ॥ अण्डन सेक करावत हेरी ॥
वडे होत निजकुल उड़ जाही ॥ वे उनजाइ मातु पितु माही
ये सब कारे हरि पर वारे ॥ सब ही नमे अति ही ये न्यारे
सब को उपमा भक्तगुण योगू ॥ न्याय देत पटतर सव लोगू
अलिकुल अलक कोकिला वानी ॥ भुजभुजग गति जलद समानी
समर्थ वात भाजय कह सारी ॥ वान कपट को कुंज विहारी ॥
मृदु असकनि विषडारि कै गये भजन लौ भाग

नंदयशोदा योंतजो ज्यों कोकिल कोकाग ॥ सो०
गये प्रीति यों तोरि ज्यों अलि रसलै सुमन सों ॥
घनलौं भये कठोर चातकलौं हम रटत सब ॥
ऊधौ सुनो एक और बखानो ॥ वाजो लांत संग पहिचानो ॥
हरि आगे तुमसे अधिकारी ॥ क्यों नहिं दुख पावैं ब्रजनारी ॥
कहत सुनत लागत हो ऐसे ॥ मीठा कहत गरल सो जैसे ॥
पायो छोर कपट को तवही ॥ लिखि आयो निर्गुण पद जवही ॥
योग जहां अधिकार हि पायो ॥ क्यों न हि तूं वात वहां बचाये ॥
सुनि लीजे ऊधो जी हमसों ॥ राजकाज चलिहै नहिं तुमसों ॥
करिये पोष आपनी काया ॥ आये दूतै करी वड़ि दाया ॥
जो तुम है हमरे हित आन्यो ॥ सो हम सिर चढाय सब मान्यो ॥
सुनि कै सब ब्रज लोग अनंद्यो ॥ नरनारी पर ब्यो कर वंद्यो ॥
अब सम्हारि अपनो यह लीजे ॥ जिन तुम पठये तिन्हीं दीजे ॥
उनही में यह जोग समै है ॥ इहां न काहू पै निरवै है ॥
हम ब्रजवसन अहीर गुवारी ॥ योग सोग को नहिं अधिकारी ॥
दो० अंध आरसी वाधिर सुनि रोग ग्रसित मन भोग ॥
ऊधो तिन को न्याव है हमैं सिखायो योग ॥ सो०
हमैं योग जो योग सोई योग मिलाइये ॥
कहै न जाने राग कहा वीदि सो कीजिये ॥
ऊधौ जाउ भले तुम ओऊ ॥ अपने स्वारथ के सब कोऊ ॥
निर्गुण ज्ञान कहां तुम पायो ॥ कोने या ब्रज तुम्है पठायो ॥
औरो कह्यो संदेशो कोऊ ॥ कहि निवरो अब सुमिये सोऊ ॥
तब अक्रूर आय वह कीन्ही ॥ सिगरे ब्रज को सुख हरि लीन्हो ॥
तुम आये ऊधो यह ठाटो ॥ अन्न छुड़ाय खवावत माटी ॥
जो पढ़ते ज्ञान की गाथा ॥ तौ कित रास नचे ब्रजनाथा ॥

मन हरि लीनौ वेनु वजाई ॥ आधी निसि सव नारि वुलाई
रस लीला वृंदावन ठानी ॥ अव मथुरा है वैठे ज्ञानी ॥
तव समता कौ नहि उरधारी
वृज़िपरे नीके सव कोई । इतौ कछुक आसा सव सोई
पढे सवै एकै परपाटी ॥ अधिक एक ते एक न घाटी ॥
हम वावरी चली नहि त्यों हो ॥ ज्यों जग चलत आपनी गो है
मन की मन ही मैं रही कहिये काहि विचार ॥
हम गुहार जित ते चही तिन ते आई धार ॥
जानत है सव कोई जैसी तुम हम सों करी
हमसहि लीनी सोई पावौ गे अपनी किया
ऊधौ जू पूछन हम तुम कौं ॥ यो हरि योग सिखावत हम
तौ करि रूप आप किन आवै ॥ योग ज्ञान को हमें सुनावै
जो उपदेशी निकट न आवे ॥ तो स्त्री ताकि हिं विधि मन लावै
अव लगि सुनी न काहू आनन ॥ संचदान लागि विकानन
जव लगि सिद्ध न सिद्ध वनावै ॥ तव लगि साधक कैसे पावै
हम गोकुल वै मथुरा माही ॥ रवते होत संदेश तनाई
जो पै करो श्याम यह साधो ॥ करे और नौ इतनी दाधो
दरशन प्रथम दिखावे आई ॥ करहि पवित्र चरण पघराई
योग जानि कै नगर तियागें ॥ सघन कुंज वन मन अनुरागें
आसन मौन नेम आचारा ॥ जप तप संजम व्रत व्यौहारा
योग अंग काहियत है जेते ॥ वुन ही मैं वनि आवे तेते ॥
फिरि प्रवोध करि मोय छुवावो ॥ होहि सिद्ध फल तौ सुख पावो
तव तौ खेलत सौं हकार राख्यौ कछु न सुहाय
अव यह योग मिल्यो कहा ऊधौ कहियो जाय
सोऽहम कौ निर्गुण ज्ञान जहं स्वारथ तहं सगुण है

लिखिपठयो निर्वान चारे महन लगाय कै
बोली और एक रिसमानी ॥ मधुकर समुझि कहत किन बानी
परमधु पिये जात नहिं दीजे ॥ मुख देखो को न्याव न कीजे
बीचहि परै सत्य सो भाषै ॥ राव रंक की शंक न राखै ॥
मूकन परै दिवस औ राती ॥ बात कहत हो वकर सुहाती
ब्रज युवतिन को योग सिखावत ॥ वृषभ जोनि सुरभी नभावत
रेक नव लंपट विभचारी ॥ कोरति यह आनि विस्तारी
हम जान्यो अलि है रसभोगी ॥ कत सीख्यो यह योग कुयोगी
जे भयभीत हों इलाषि माला ॥ ते क्यों छुयें भयानक व्याला
को सठ वकन छांडि लज्जाडर ॥ कहं अवला कहं दशा दिगंबर
साधु होय तो उत्तर दीजे ॥ कहा तोहि कहि अपयश कीजे
भई वायु सी देखत ताहीं ॥ इनबातन डर लागत माहीं
प्रथमहि यत्न आपनो कीजे ॥ ता पाछे औरन सिख दीजे

कत श्रम करि वक वक मरत सुनत कौन तुव बात
घन कोरायो होत है उठि किन ह्यां ते जात ॥ सो०
देखु मूढ चित चाय कहं परमारथ कहं विरह
राजरोग कफ जाहि ताहि खवावत हो दही ॥

बोली और एक कोउ नारी ॥ सुनिये ऊधो बात हमारी
प्रथमहिं ब्रज की दशा विचारौ ॥ पाछे योग सिद्ध विस्तारौ
जा कारण पठयो है माधो ॥ सो विचार कछु जिय में साधो
के तिक बीच विरह परमारथ ॥ देखो जो मैं समुझ्यो यथारथ
परम चतुर हरि के निज दास ॥ रहत सदा संतन के पास
जल बूड़त प्रानि अकुलाई ॥ कहा फेन पकरत हो धाई
सुन्दर श्याम कमल दल लोचन ॥ सबै बाध सुषद सकल दुषमोचन
ब्रज को जीवन नंददुलारो ॥ कैसे उरते जात विसारो ॥

सुन्दर स्यामरूप रससाने ॥ श्रीगुपालतजिऔरनजाने
जोतजिस्यामऔरकौंध्यावैं ॥ विभिचारीतेंभक्तकहावैं
विद्यमानतजिसुरसरितीरा ॥ चाहतकूपखोदकैनीरा ॥
सुनैकौनयहसीखतुम्हारी ॥ अतिअनन्यमंडलीहमारी
योगमोटतुमशिरधरिआली ॥ सोनहिंब्रजबासिनमनमाली
इतनीदूरजाइलेकाशी ॥ चाहतमुक्तिकहांकेवासी ॥
हमकहंकरैंमुक्तिलेराखी ॥ अवलास्यामसंगकीभूखी
औरनप्यासकौनविधिजाई ॥ जबलगिनीरपियेनअघाई
ऐसेंबातकहौंअलिहमसों ॥ तजोशोचमिलिहैंहरितुमसों
हेतहमारेजोपगधारे ॥ तौहितकरिदुखहरोहमारो ॥
करौसोयतस्यामजिमिआवै ॥ प्रगटदेखिजिमिहमसुखपावैं
दो० सत्यज्ञानओध्यानअलिसांचोयोगउपाय
हमकौंसांचोनंदसुतधर्मकह्योसमुझायसो
वशाकीन्हीमृदुहासहमचेरीनंदनंदकी ॥
नखशिखअंगविलासतिनहींदेखेजीजिये
इतनेहीसोकाजहमारो ॥ मिलिहैंफेरब्रजचंददुलारो
औरअनेकउपायनिहारो ॥ राजकरहुअलिहमैनप्यारो
तुमतोमधुपप्रीतिरससानो ॥ हमकाजेकतहोतअयानो
सबसुमननमेंफिरआवत ॥ क्योंकमलनमेंआपबंधावत
जोहैबलकाठफोरिबेकबहू ॥ कोनकमलदलटारतनबहू
रंगेश्यामरंगजेपहिलेसे ॥ चढतऔररंगतिनपरकैसे
पारसपरसजोलाहसुहायो ॥ सोफिरकिमचुबकिलपटायो
श्रीजिनमुरलीधुनिकमनन ॥ सोकिमसुनकोगुरीतानन
वसैजासुउरकुंअरकन्हाई ॥ कैसैंनिर्गुणतहांतसमाई
यहमनश्यामस्वरूपलुभान्यो ॥ कहाकरैलेयोगसयानो

सिंहसदा आमिषरुचिमाने ॥ तृणानभ खेचरप्राणपराने
हरितजिओरन हमैसुहाई ॥ कोटिभांतिकोउकहेबुझाई ॥
दो० द्वैदृग रूपविराटकेकहियत एक समान ॥
ताहूमे हितचंद्रमा नही केचोत्रहि मान सो०
लोचनरूपअधीन सगुणसलोनेश्याम के ।
क्योंसचुपावें मीनजल विनडारे दूधमे ॥
नहिमानत ये नैन हमारे ॥ सचुनलहतविनकान्हनिहारे
भयेश्याम छविजलकेमीना ॥ मुरलीधुनिकेस्रगआधीना
अलिदृग लोभिकंजपदकरके ॥ कोकिकोकनदद्युतिसिकरके
वदन इंदुके कुमद चकोरा ॥ तनधन छविकेचातकमोरा
यहिरूपपरिगटजव देखे ॥ जीवनसुफलतवहिकर लेखे
विगरीपरेमनमधुप हमारे ॥ ज्ञानवचन नहिसुनततुम्हारे
ललितत्रिभंगरूपरससाने ॥ खरेचकितनातेजगजाने
स्वानपूंछलोंसमनहिंहोई ॥ जोवहुयत्न करेपचिकोई
सोमनगयेश्यामकेसाथा ॥ सुनेकौनअब निर्गुणगाथा
एकेमन एकै वह मूरति ॥ अटकोताहि नतजैसुहरति
जो होतो दूजो मन कोऊ ॥ तौ हमलै धरती तह सोऊ
ऊधौहरि हैं ईश हमारे ॥ तेअब कैसे जात बिसारे ॥
जोगदीजियैलै तिन्है जिनके मन दसवीस
किनडारत निर्गुण इते ऊधौ व्रज में खीस
सो० गुणकरमाही श्याम कोनिवाहोनिर्गुणहि
कियेजन्मकेकामक्यों तजियेनंदनंद विन ॥
कहतमधुपतुमवातसुहाई ॥ कहनाहसुगमकरतकठिनाई
प्रथमअग्नि चंदनसीजानी ॥ सती होनउमहसुखमानी
ताकौनपत्त पार सियएई ॥ कहहकौन पाछे ते आई ॥

बैठत सुभट यथा रण जाई ॥ कुसुमलता सम रवइ सुहाई
दियो अपनपो सूर उदारा ॥ को अब करे नासु निरवारा ॥
ये मनमोहन सों उरझाने ॥ दुखसुख लाभ हानि नहिं जाने
प्रेम पंथ सूधो अति ऊधो ॥ मति निर्गुण कंटक ले गूंधो ॥
नेह न होय पुरानो क्योंहू ॥ सरित प्रवाह न यौं नित ज्यों हो
निरषे आनद रूप छकी जल ॥ रवि प्रति तन नहिं मीन उचरे पल
बूड़त उमहिं सिंधु के माहीं ॥ ये तउ नीर न पियत अघाहीं
दिन २ बढ़त कमल जल जैसे ॥ हरि छवि दृगन लालसा तैसे
बसे गुपाल हृदे अंबुज अलि ॥ निकसत नाहि सनेह रह्यो रलि
योग कथा अब मति कहो ऊधो बारहि बार ॥
भजै आन नंद नंदन जि ना को जननी छार ॥
यहै हमारे भाव अब कोउ कछु वे कहो ॥
जैवो होय सुजाव रहो प्रीति नंद लाल की
रहैं प्राण तन प्रेम माहि खोई ॥ कौन काज आवै पुनि सोई
विना प्रेम शोभा नहिं पावै ॥ निशागय शशि जिमि न सुहावै
विन प्रेम जग खग वूझ न रे ॥ चातक यश गावत सब टेरे
प्रेम सहित मीन न की करणी ॥ नेनन अछत देखइ जग वरणी
हम ते प्रेम जात नहिं दीन्हो ॥ दुहूं भांति हम तो यश लीन्हो
मिले श्याम तो अधिक सुहायो ॥ नातर सकल जगत यश गायो
कहां हम या गोकुल की नारी ॥ वरन हीन घट जात गंवारी
कहं वे श्री कमला के नाथा ॥ बैठ पांति हमारे साथा ॥
निगम ज्ञान मुनि ध्यान अतीता ॥ सो ब्रज भये हमारे मीता
तिन्हे संग ले रास विलासी ॥ मुक्ति इते पर काकी दासी
यह सुनि बोल उठी इक आनो ॥ मेरो बुरो न कोउ मानो
रस की बात रसिक कहि जाने ॥ निरस कहा रस की पहिचाने

दो॰ दादुरकमलननिकटवसतजन्ममरणपहिचान
अलिअनुरागीजानिकेआपवधावतआन॥ सो॰
जानैकहामिठासगूंगीबातसवादकी॥
॥ मानहुंकाटोघासइनसोंकहिबोप्रेमरस॥
धनि२ऊधौतुमबड़भागी॥हरिसोंहितनाहिंमनअनुरागी
पुरइनवसतयथाजलमाहीं॥जलकोदागनलग्योकहुंतासों
गागरनेहनीरमेंजैसे॥अपरसरहतनभीजततैसे॥
पैरतनदीबूंदनहिलागी॥नेकरूपसोंदृष्टिनपागी॥
हमसबब्रजकीनारिअयानी॥ज्योंगुड़सोंचेंटीलपटानी
अबकासोंयहव्यथानबखानैं॥लागेविनऊधौकोजानैं
हृदैदहैनितशोचतरहियै॥पशुवेदनज्योंमनरसहियै
सबतेंपीरलगनकीभारी॥यहरहितसुखदुखतेंन्यारी
मंत्रयंत्रउपचारनपावै॥वैदकहांलगिनाहिबतावै
घायलपीरजानिहैसोई॥लाग्योघावजाहितनहोई
प्रेमनरुकतहमारेवूते॥गजकहुंबंधतकमलकेसूते
कैसेंविरहसमुद्रसुखाई॥योगअग्निकीतनकलुकाई
दो॰ यद्यपिसमुझायेबहुतहमकरमनहिंकठोर
तदपिनक्योंहूभूलई ऊधौनंदनदकिशोर
सो॰ क्योंसुखपावैंप्राणपलकुलगततवसहतनहिं
लागेवरषविहान अब बिन देखे श्यामके॥
नवषटमासरामकेमाहीं॥एकानिमिषसमजानेनाहीं
अविसौरैगनिविनाकन्हाई॥गाकएकपलकल्पविहाई
नवबनवनहरिसगविहारी॥अबब्रजमेंयहदशाहमारी
ज्योंदेवीउजारपुरमाहीं॥कोपूजैकोउमाननेनाहीं॥
कहनऔरजोवनअबऐसो॥चित्रअधेरेघरकोजैसो

तव शशि अति शीरो अवतातौ ॥ भयो सकल सुख की रनहातै
कतकारि प्रीति गये मन भावन ॥ जासो हम लागो दुख पावन ॥
फिरि २ यह है समुझि पछताही ॥ कह्यो ऊ तो आवन हम पाही ॥
यायो आस प्राण तन माही ॥ वारिक बहुरी मिल्यो ही चाही ॥
ऊधो हृदय कठोर हमारे ॥ फटे न बिछुरत नंद दुलारे ॥
हमतें भली जलचरी होई ॥ अपनो नेह निवाहत जोई ॥
जो हम प्रीति रीति नहि जानी ॥ तो ब्रजनाथ न जो दुख मानी ॥
दो० कहहैं लोग कहिये आपनी ऊधो तुमसों चूक
हम ब्रजवास वसी मनो सबै साम हैं मूक ॥ सो०
ऊधो कह्यो न जाय मोहन मदन गुपाल सो ॥
नैनन देखो आइ एकवार ब्रज की दशा ॥
बोली और एक ब्रजवाला ॥ ऊधो भली करी गोपाला ॥
अब ब्रज में आवै न कन्हाई ॥ मथुरा हि रहै सदा सुखदाई
इहां चली अब उलटी चाली ॥ देखत दुख पै है वनमाली ॥
तपत इंदु सूरज की भांती ॥ चंदन पवन सेज सब ताती ॥
भूषण वसन अनल सम दागे ॥ गृह वन कुंज भयानक लागे ॥
जित तित मार द्रुमन को डारन ॥ धनुश र लिये करत है मारन ॥
हमतो न्याय सहत दुख एतो ॥ ब्रजवासिनी ग्वालि जड़ ते तो ॥
वे मधु भोग संयोग भुवाल ॥ क्यों सहि है कोमल तन ज्वाल ॥
ऊधो कह्यो संदेश सिधारो ॥ जान्यो सब परपंच तिहारो ॥
बातन कहा हमैं भरिमावत ॥ जल मथ सुन्यो न माखन आवत ॥
सगुण निकट लखत है जिनको ॥ निर्गुण ओट बतावत तिनको ॥
जो यै निज तुम यह है बखानो ॥ प्रभु पूरण सब में हम जानो ॥
तौ तुम काप करत हो ऊधो आवा गौन ॥
को नेरे को दूर है उहां कौन हियां कौन ॥

उरझरह्यो नंदलाल प्रेमरस। नेकु न चलत गयो गाढ़े फस॥
जो हौं मिलत जानि हूँ परते। तो लै योग सीस पर धरते॥
यह लै लेहु तिन हिं फिर जाई। जिन पठये तुम इतहिं सिखाई॥
लेहिं न वेहु जान हमारे। देखियत माथे परयो तुम्हारे॥

भूले योगी योग जिन तुम सों कियो बखान।
जान्यो गयो न पचमरे ब्रह्म रंध्र तजि प्रान॥
हम उर जाको ध्यान हमहिं दिखावो ज्योति सों।
निपटहिं कछु अज्ञान ऊधो कहा सुनावही॥

ऊधो जबतें श्याम निहारे। नबतें योगी नैन हमारे॥
सिखा सीख गुरुजन की टारी। धरयो जनेऊ लाज उतारी॥
पलक वसन घूंघट गृह त्यागे। दशा दिगंबर मन अनुरागे॥
सजत समाधि रूप टकलाये। भये सिद्ध नहिं डिगे डिगाये॥
ताके बीच विघन के करता। पचि २ रहे मातु पितु भरता॥
अब ये और योग नहिं जानैं। वही श्याम छवि मस्त भुलानै॥
भये कृष्णमय नयन हमारे। नहीं कछु हमतें कछु न्यारे॥
हम सों कहत कौन की बातैं। गयो कौन हमको तजि ह्यांतैं॥
मथुरा जाय रजक किन मारयो। धनुष तोरि कपि छ्द्र पछारयो॥
किन मल्लन पथिक सब हाय्यो। उग्रसेन किन बंद छुडायो॥
को वसुदेव देवकी जायो। तुम किनके पठये ब्रज आयो॥
कुंडल मुकुट गुंज उर राजे। गोकुल यशुदा नंद विराजे॥

को पूरण को अलख गति को गुण रहित अपार।
करत व्यास वकवाद कत निद्रा हर वधनंद कुमार॥
जात चरावन धेनु दिन उत ग्वालन संग मिल।
मधुर बजावन बेनु आवत संध्या के समै॥

जिन ऊधो मथुरा तन देखो। ब्रजवसि जन्म सफल कै लेखो॥

॥परिहौघोरराजविपक्षमे
॥घररमारखनरवानचरइ

कैसेंगोपग्वालसवआये॥निर्तत वेष विचित्र बनाये॥
कैसेंदधिकीकीचमचाई॥ब्रजसबभईअनंदवधाई
बालविनोदकौनविधिकीन्हौ॥कैसेंगोवर्द्धनकरलीन्हौ
कैसेंदधिकौदानचुकायौ॥शरदशशिसुषकिनउपजायौ
यहरसप्रेमकथाचितलावौ॥अपनीनीरसकथावहावौ
निगमनेतिनिर्गुणक्योंधावौ॥कौनहिंप्रगटदरसदिखलावौ
भावतहैजोकृष्णकोंयोगसोहमसोदेखि
ऊधौसघनतनखेहकरिसुमतिहोइ के पेष॥
सकअंगकारीके कानबैठौसनहिवटोर के,
तजज्ञानअभिमाननौयहअर्थसुनावही
नहीजटानाहिंभस्मलगावें॥रूधेस्वांसन मृंगवजावें
नहीवेदनाहिंपढेपुराना॥समदमनेमनसजमज्ञाना
हमश्रीगोकुलचंदअराध्यौ॥प्रेमयोगतनपतिनसोंसाध्यौ
मनवचकर्मऔरनहिंजानैं॥लोकवेददुखसुखभ्रममानैं
मानपमाननिंदकुलकरसौ॥पाप्रिअंचगुरुजनवचुसरसौ
हलनितापचहूंदिशननदेखौ॥पियतप्रेमउपहासविशेखौ
वारिसुप्रेमनदनजगवेदन॥कर्मधर्मकामना निकंदन
हमजुसमाधिप्रानिवानिकहरि॥संगमाधुरीहृदैरहीधरि
निरषतरहतनिमषनत्यागत॥यहरूपसुरागयोगनितजागत
सरगुणरूपरंगरसरागे॥भ्रकुटिनैननैननलागिलागे

हसन प्रकाश सुमुख कुंडल दुति॥ शीश अरु छर दे पीय ऐ उद्योत
मुरली अधर मधुर सुर गाजै॥ अब अनाहद धुनि सोई बाजै
बरषत रस रूच मन अचै रह्यौ परम सचुमान
अति अगाध सुख संग कौ पद आनंद समान
सो मन्त्र दियो रति प्रीति भजन ज्ञान हरि कौ मर्म
गुरु कै अब कौन कौन सुनै फीकौ मर्म॥
ऊधौ ब्रजकी रीति निहारी॥ भये विवश निज नेम बिसारी
लाग्यौ कहन धन्य ब्रजबाला॥ जिनको रसवश मदनगुपाल॥
धन्य २ यह प्रेम तुम्हारो॥ धन्य कृष्ण पद दृढ व्रत धारो॥
मैं जड़ कीनो और उपाई॥ अब तुम दरश भक्ति निज पाई
तुम मम गुरु मैं दास तुम्हारो॥ दीनी भक्ति किया निस्तारो॥
ऊधौ आयो योग सिखावन॥ सीखे प्रेम भक्ति अति पावन
भये मगन रस प्रेम विशाला॥ लागे गावन गुण गोपाला
लोटत कबहुँ कुंज महँ जाई॥ कबहूँ बिटपन भेंटत धाई
कबहूँ ब्रजरस सीस चढ़ावै॥ कबहूँ गोपिन पद शिर नावै
पुनि २ कहत धन्य ब्रजनारी॥ धन्य ग्वाल गैयां वनचारी॥
धन्य भूमि यह सुखद सुहावन॥ धन्य धाम वृंदावन पावन॥
ऐसे प्रेम मगन मन फूल्यो॥ कान्हों कित आयो सुधि भूल्यो
ऊधौ मन आनंद अति लाषके प्रेम विलास
आयो हो दिन दोय कौं बीत गये षट मास॥
सो० तुव उपज्यो उर सोच वचन कृष्ण के सुरत करि
मन में करत संयोग बोल्यो ही प्रभु वेग मुहिं
तब रूपंगासुत यहि पलान्यौ॥ मथुरा चालिबे को अतुरान्यौ
ऊधौ जात गोपकन जानी॥ आई धाय सकल अकुलानी
तब ऊधौ सबकौ शिर नाई॥ हाथ जोरि कै विनय सुनाई

सोऽपराधकर्मोऽपूकीजै

अंतवड़ैसबभांतितुमहमनिदान नडरम्बारी
सो० होइनशीलसमानलघुदीरघ नाते भये॥
भृगुकीन्होऽपमानश्रीपतिकरभूषणलिये
कहौगरलसेवचनहमारे।।कहूँअतिशीतलमृदुलतुम्हारे
तुमहितकह्यौहमैंसुखमानी।।नरणउपायवेदविधिवानी
हमगँवारिउभरीसववूरी।।कहौकटुकतुमसोंजोसूरी
लोकवेद छोंहो हमजैसो।।ताकोफलसुभगततहूतैसो
कहाकरैमनवहुसमुझावै।।श्यामदरशविनुसचुनाहिपावै
दुलभदरसतुम्हारो हमको।।कहियेजानकौनविधितुमको
करिकेकृपाकीजियेसोई।।जैसेदरशश्यामको होई॥
जानतहौयातनकोदहवो।।समौपायहरिआगेकहवो
घावबसंतकीचूकहमारी।।मुनमाहिंधरेलालगिरधारी
जानिहमैंअतिदीनदुखारी।।करैकृपामनगुणहिविचारी
आवनअवधिकहौहीजोई।।धरिहैवचनसुरतिचितमोर
कहतकहाकहियेब्रजराजहि।।गहिहैंघाहगहेकीलाजहि

प्रभु दीनन पतिदीन हित यही हमारे आस
कबहूं के दरस दिखाइ के हरिहै लोचन प्यास
सो॰ ऐसें कहि ब्रजबाम भई बिरह सागर मगन
ऊधौ करि परनाम आये यशुमति नंद पै॥
मांगी बिदा जोरि कर दोऊ॥ तुम सम धन्य और नहिं कोऊ
रामकृष्ण सुत करि जिन पाये॥ बालभाव करि गोद खिलाये
धनि गोकुल धनि गोकुलवासी॥ किये प्रेमवस जिन अविनासी
मो हि कृपा करि कृष्ण पठायो॥ जातें दरस सबन को पायो
अब तुम मोको देहु निदेशू॥ जाय स्याम सों कहौ संदेशू
सुनि सप्रीति ऊधौ की बाता॥ बवा अरु यशुमति माता॥
उमग्यो प्रेम नयन जल बाढ़े॥ भये जोरि कर आगे ठाढे॥
उर वर स्याम बिरह की पीरा॥ कहत संदेस बहत दृग नीरा
ऊधौ हरि सों कहियो जाई॥ यशुमति की आसीस सुनाई
कमल नैन सुंदर सुखदाई॥ कोटि युग नु जीवहु दोउ भाई
कहियो बहुरि इतौ समुझाई॥ तुम बिन दुखित यसोदा माई
इतनी दया मातु पर कीजै॥ एकबार दरसन फिरि दीजे॥
दो॰ नंद दाहनी भरि दई कह्यौ नैन भरि नीर॥
बा धौरी को दूध यह भावत हो बलवीर॥ सो॰
दई यशोमति माय मुरली ललित गुपाल की
ऊधौ दीजो जाय प्यारी ही अति लाल को॥

अथ ऊधौ मथुरागमन लीला

ऊधौ लै माथे पर लीन्ही॥ लोष प्रभु प्रीति दंडवत कीन्ही
चल्यो योग की नाव बुडाई॥ ह्वै गयो आप गोप ब्रज आई
जाइ कृष्ण पद शीस नवायो॥ प्रभु सादर उठि कंठ लगायो
कहिये सखा कुशल शों आये॥ ब्रज में जाय बहुत दिन लाये

तिनकी दशा विलोकि मोहि युग सम बीती राति
नंद यशोदहि पाय गयो प्रात वृषभान पुर ॥
सुनि सब आई धाय धाम काम तजि वाम तहं ॥
मोहि तुमारो निज जन जानी ॥ मनमान्यो सबही सुख मानी
लषि पट भूषण चिन्ह तुम्हारी ॥ भई प्रेम वश सुरति सम्हारी
शिथिल अंग भरि आये नैना ॥ पूछी कुशल सु गदगद बैना
जब मैं कह्यो संदेश तुम्हारो ॥ सुनतहि आयो सबन तमारो
बीती घरीक धीर उर आन्यो ॥ मेरो कह्यो सांच नहिं मान्यो
दूषण सब कुबिजा को दीनो ॥ कछुक परखो तुम सों कीनो
तिनकी बात न जात बखानी ॥ प्रेम पंथ वे सकल सयानी
वह रस रीति देखि उनकेरी ॥ कटुक कथा लागी मुहिं मेरी
यद्यपि मैं बहु बिधि समुझाई ॥ ग्रंथ उक्ति सब कथा सुनाई
कोहि वे मैं कछु शंक न राख्यो ॥ भयो पवन ज्यों भुस सम भाख्यो
ज्ञान पंथ जो मो मुख बानी ॥ सो सब तिनकौं भई कहानी
कै कै कहें बनाय अनेका ॥ उनके हृदय रत पति रत एका
गह्यो एक हू ज्ञान उन मोटवे दविधि नीति
गोपी वेष भक्ति सांवरे रह्यो विस्वव रजीति
सो नहिं सोवे सिख भान जो विधजाइ सिषावहीं
तुमहू बड़े सुजान उहां जाउ तो जानहू ॥
क्षमा करो आय सुजो पाऊं ॥ तो अपनी सब विपति सुनाऊं
कथा योग कहि अबलन पाहीं ॥ उपजे इतो दुःख कोनाहीं
मैं निर्गुण गुण एक बखानो ॥ सो ऊपूरो कोहु नाहि जानो
वे सब उमगाहि वारि भर्योंहीं ॥ जामें थाह न पावें क्योंहीं
वहाँ एक मैं पहर कमाहीं ॥ वे कोटिक क्षण में कोहु जाहीं
कौन कौन को उत्तर आवे ॥ सुनत सबै उनहीं के भावे

॥मैं शठ्वारहखेरी पठाऊं
॥भई अग्निज्यौं घृतकेपैरे

दो॰ सगुणप्रेमदृढउनगह्यौअपयापपीहार्पैद
जानिलेउ प्रभुतुमयहै कह्यानिरोमाहिंवेद॥
सो॰ तिन्हैनिरंतरध्यानस्यामरामरूपंकजनयन
लागोफीको ज्ञान भव लोकत उनकोभजन
मैदेखौखटमाससोजकर॥ एकैरीतिसवे व्रज घर घर
ज्यौंकुरुखेत दियेवाढतधन
प्रगटतुम्हारेगुणचित दीन्हे॥
कोउकहतगये गोचारण॥ कोउकहगये अघासुरमारण
कोऊकहत इन्द्र जलजाई॥ गोवर्द्धन कर लियोकन्हाई
कोऊकहतयमुन सुनिकाली॥ नाथन गयेनाहिवनमाली
घर२दुहतकहतकोउवाला॥ कोउकहवनखेलतनंदलाल
कोऊकहतकुटिललंपटहरी॥ वसेआयरी भ्रोकाके घर
एककहतवनवेणुवजावहिं॥ चलोसुननपींकोहुउरि
ऐसीलीलाप्रगटवखाने॥ मेरोकह्यो न कोऊ माने॥
हरिमाधी निजमतिघटज्ञानी॥ सुनलीनीउनकी मैं वानी
प्रीतिरीतिलषितहोइलाज्यो॥ नाथतुम्हारीसुरतिभुलान्यो
दो॰ तुमसोआवनकहिगयौ वेगाहेव्रजतेनाथ
उनलगिउनसोरहुगयो गावन उन के साथ॥
सो॰ वीतगये खटमास सखाऊपरीआयोरहा

तव उपज्यो जिय त्रास भाजि चलऊ देशान कहं
बद्रीकहां मोको सुखवेसो ॥ रसलीला विनोद ब्रज केसो ॥
कहत न बने देखताहि भावे ॥ यह सुख बड़भागी सोइ पावे ॥
बस्यो न पांचो दिन उनमाहीं ॥ तासु जन्मजगमाहि वृथाहीं
नहि श्रुतिशेष ब्रह्म सुष पायो ॥ जो रस ब्रज गोपिन मिलि गायो
निरषत यदपि यहां यह मूरति ॥ तदपि जाय उतहीं मन पूरति
बरही मुकुट गुंज की माला ॥ सुख मुरली धुनि बेणु रसाला ॥
अंग धेनु रेणु मंडित तनु ॥ तिरछी चितवन चारु हरत मनु
गोपी ग्वालन सों हँसि बोलत ॥ खेलत खात हरषि ब्रज डोलत
तब वह सुख सुमरत मन भावे ॥ इत यह लषि कछु कहत न आवे
तुमरी भक्त कथा तुम जानो ॥ मैं कह समझों मूढ़ अयानो ॥
ऐसो मोहि वहुत यह शाले ॥ तुमतो प्रभु करुणा के आले
होत कठोर कठिन मन का है ॥ वनत कौन विधि विना निवाहे
दो० निगम कहत वश भक्त के पूरण सब सुख काज
करि सुहृष्ट ब्रज परिखये गहो विरद को लाज ॥ सो०
आति हि दुखी तन क्षीन ब्रजवासीन विरह वश
तुम तन घन मन लीन रटत चातकी लौं सबै ॥
कहौं कहा प्रभु गति राधा की ॥ जैसी विथा विरह वाधा की
भूषण विन अतिक्षीण शरीरा ॥ वसन मलीन स्रवत जल नीरा
सुधि बुधि कछु देह की नाहीं ॥ रहत बावरी ज्यों घर माहीं
कबहुँ कृष्ण रटलावे ॥ कबहुँ कनाम आपनो गावे
विविदिशि सगृक जकास जेसे ॥ सहत विरह दुख दुन्द सतेसे
लहत न क्योंह शीतल ताई ॥ कबहुँ रहत मौन शिर नाई ॥
रहजन देखि रदुख पावे ॥ नहि कछु सुनत कोटि समुझावे
सूखी जिमि नलिनी विन पानी ॥ युगवत यदन सखी सयानी

कृष्णप्रेम मूरति ब्रजनारी ॥ कबहूं नहीं कृष्ण तें न्यारी ॥
नित्य नवल नित वनहिं विहारा ॥ ब्रजविलास नित नवल उदारा ॥
नित्य धाम वृंदावन पावन ॥ नित्य रास रस परम सुहावन ॥
शिव सनकादि शेष जेहिं गावें ॥ सुर नर मुनि सब ध्यान लगावें ॥
ब्रजगोपिन की महत बड़ाई ॥ एक समय ब्रह्मा सन गाई ॥
भृगु नारद आदिक हरि भक्ता ॥ पूछत भये विनय संयुक्ता ॥
तिनसों विधि यह बात बखानी ॥ वेद ऋचा सब ब्रजतिय जानी ॥
इन सम सत्य कहौं तुम पाहीं ॥ मो तिय शिवा लक्ष्मी नाहीं ॥
नहीं कृष्ण तें एक क्षण न्यारी ॥ इनतें औरन कोउ अधिकारी ॥
इनके भाव कृष्ण जो ध्यावे ॥ प्रीति ऐनि दृढ़ करि मन लावे ॥
नारि पुरुष कोई किन होई ॥ वेद रिचा गति पावे सोई ॥

दो० परसे इनके चरणरज वृंदावन सों हिं माहिं ॥
सोऊ गति इनकी लहै यामें संशय नाहिं ॥ सो०
यों विधि कही सुनाय महिमा ब्रज गोपीन की ॥
व्यास कही सो गाय वावन वृहद पुराण में ॥

तातें भृगु आदिक नारद मुनि ॥ इंद्रादिक सुर शिव विरंचि पुनि ॥
अरु हरिभक्त जगत तें अहहीं ॥ वृंदावन रज वांछित रहहीं ॥
ब्रजरज अति दुर्लभ श्रुति गावें ॥ बड़भागी जब तेई पावें ॥
हित धरि सो इ ब्रज रज रासा ॥ ब्रजविलास गायो ब्रजदासा ॥
कृष्णचरित ब्रजवनन कुंजको ॥ सार सकल सुख सुकृत पुंजको ॥
सार ध्यान विज्ञान ज्ञान को ॥ वेद शास्त्र अरु सकल पुराण को ॥
सार वद्री इतिहास भजन को ॥ योग जाप तप अरु सत यतन को ॥
सार प्रेम मुनि संतजनन को ॥ हरिपद पंकज प्रेम मगनन को ॥
सार जन्म अरु सुगति मुक्ति को ॥ परमानंद रूप विमल भक्ति को ॥
सार सकल रस रसिकाई को ॥ परम मधुर सुंदरताई को ॥

सारसारकौपरम सुहायो
सहितस्वभावप्रीतिजोगेहै
छं॰ यहव्रजविलासहुलाससोनरनारिसुनहिंजेगावही ॥
सीखैसिखावैपढैरुचिकरिप्रेम मन उपजावही॥॥
धरिभाव भक्तारुक्मसोंउरकमलपदनिनिलाइहैं
हरिराधकापरसादतेंब्रजगोपिका गति पाइ है ॥
पूरण सकलमनकामसव सुखधामयशनंदलालको
दलन दारिद दोष दुषभवभय हरणयककालको॥
यहजानगावहि सुजनगायोजिन्हे आनंदपूलहो
तिनकीकृपावलपायकछु इकदासब्रजवासीकह्यो
दो॰ व्रजविलासव्रजराजकोकोकहि पावेपार॥
भक्तिभाव गावत भगतभजन प्रभावविचार
सिगरे दोहा आठसौ और न वासी आहि ॥
औरइतनेसोरठा व्रज विलास के माहि
दससहस्र छहसौ अधिक चौपाई विस्तार
छंद एक शतखट अधिक मधुर मनोहर चार
सबको नृष्टुपछंदशर दशसहस्र परमान
खंडित होन न पावई लिखियो जान सुजान
विधिनिषधजानेनकछुजन व्रजवासी दास
ज्योंजानेत्यों राखिहे नंद नंदन की आस॥
नाहितपतीरथ दानवल नही कर्म व्योहार
व्रजवासीके दासको व्रजवासी आधार॥
व्रजवासी गाउसदा जन्मजन्म करि नेह ॥
मैरजपतपव्रत दइहे फल दीजे युगि एह॥

इतिश्रीव्रजविलासेसवसुखप्रसेभक्तिप्रकाशेकृतव्रजवासीद

अथसूचीपत्रब्रजविलासकालिख्यते

सारसारकोयरस सुहायो ॥ ब्रजविलास भक्तनमन भायो
सहितस्वभावप्रीतिजोगेहै ॥ तेजनगतिगोपिनकी पैहै॥
कु॰ यहब्रजविलासइत्यासमोनरनारिसुनहिजेगावहीं ॥
सीखैसिखावैपढैरुचिकरि प्रेम मन उपजावहीं ॥
धरिभावभरताकृत्यसोंउरकमलपदनित्लाइहै ।
हरिराधकाप्रसादतेब्रजगोपिकागतिपाइहै ॥
पूरणसकलमनकामसवसुखधामयशनंदलालको
दलनदारिददोषदुषभवभयहरणयककालको॥
यहजानगावहिंसुजनगायोजिन्हेंआनंदपूल्लह्यो
तिनकीरुपावलपायकछुइकदासब्रजवासीकह्यो
दो॰ ब्रजविलासब्रजराजकौकोकहि पावेपार॥
भक्तिभावगावतभगतभजन प्रभावविचार
सिगरेदोहाआठसो औरनवासी आहि ॥
औरइतनेसोरठा ब्रज विलास के माहि
दससहस्त्र छहसोअधिकचोपाईविस्तार
छंदएकशतखटअधिकमधुरमनोहरचार
सबकोनृषुपछंदशरदशसहस्त्र परमान
खंडितहोननपावइलिखियोजानसुजान
विधिनिषधजानेनकछुजनब्रजवासीदास
ज्योंजानेत्योंराखिहेनंद नंदन कीआस॥
नहिंनपतीरथदानबलनहीं कर्मव्योहार
ब्रजवासीकेदासकोब्रजवासी आधार॥
ब्रजवासीगाऊसदाजन्मजन्मकरि नेह॥
मेरेजपतपब्रततहे फल दीजे पुनि एह॥
इतिश्रीब्रजविलासेसबसुखरासेभक्तिप्रकाशकृतब्रजवासीदा

अथसूचीपत्रब्रजविलासकालिख्यते

सूचीपत्र